

हिन्दी विद्यापीठ ग्रन्थ-वीथिका

[इस ग्रन्थ-वीथिका में अप्रकाशित हस्तलिखित ग्रन्थ तथा
अप्राप्य ग्रन्थ प्रकाशित किये जाते हैं]

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
१. जाहरपीर: लोकवार्ता गीत सम्पादक डॉ० सत्येन्द्र	१
२. मैनासत—साधनकृत सम्पादक—श्री अग्ररचन्द नाहुटा	१०७
३. नलदमन—सूर कृत सम्पादक—डॉ० वागुदेवशरण अग्रवाल	१२७
४. सिद्धान्त माधुरी—श्री रूपरसिक जी	१४१
५. विरह शतं—(१६ वीं शतों का एक अप्रकाशित ग्रन्थ) सम्पादक—अग्ररचन्द नाहुटा	१४५
६. सिंगार शतक भाषा (सं १७२२)	१५५
७. (अ) सवाई पचोसो —फिसोर पोष्करणो कृत दिल्ली में (ब) सवाई वतीसी — मुनि कान्तिसागर जी के सौजन्य से	१६१
८. ब्रजभाषा व्याकरण—श्री लल्लूजी लाल	१७१
९. प्रकाश नाममाला—श्री नूरमुहम्मद	२६५

लोकवार्ता गीत

जाहरपीर

[गायक लोहबन के मट्टानाथ]



मट्टा नाय

जाहरपीर की कथा का विश्लेषण

जाहरपीर पर एक पुस्तक लिखी जा चुकी है, उसमें कहा है कि यह विभिन्न संप्रदायों की संज्ञा के अन्तर्गत आता है। उसकी कथा पर अभी तक विचार प्रयोग नहीं किया है, इसमें यह प्रमाण प्रदान है कि यह कीचड़ का अशुभ होने का प्रमाण है, और इसकी प्राप्ति के लिए संतान-प्राप्ति का प्रमाण है कि इस कथा का निरूपण और किया जाय।

प्रथम दृष्टि में यह एक विशेष विचार है कि इस कथा में निम्न अनुसूची है—

१. जाहरपीर की संज्ञा का अर्थ।
२. जाहरपीर की विशेषता का अर्थ।
३. जाहरपीर की प्रकृति का अर्थ।
४. जाहरपीर की विशेषता का अर्थ।
५. निरूपण की विशेषता का अर्थ।

यहनी कथा में निम्न विशेषता है :

१. राजा रानी संतानाभाव में पीड़ित—

योंही कथाकार ने इसमें कई विशेषताओं को उल्लेख कर इस संतानाभाव की विशेषता की छानबीन प्रस्तुत की है :

- इसमें
१. संतान की आवश्यकता प्रकट है।
 २. योंही-विशेषता विशेषता के विशेषता प्रकट है।

इन तथ्यों में यह स्पष्ट हो जाता है कि राजा ही नागपहीन है।

३. वाग-व्यवहार है।
४. वाग के फल मूल राजा के अन्तर्गत में कुम्भित होते हैं। रानी उन्हें वागों बनाकर संतानाभाव करती हैं।
५. वाग में राजा जाता है तो वाग मूल जाता है।
६. उनका माद, उसे अन्तर्गत में नहीं अन्तर्गत देता।
७. राजा राजपाट छोड़ कर चल देता है, वाद्यन नाथ जाती है।
८. अन्तर्गत: राजा नोटता है।

२. संतान-प्राप्ति के लिए जोगी-सेवा—

१. गोरगनाथ के अन्तर्गत से वाग हरा हो जाता है।
२. वाद्यन गोरग की सेवा करती है।
३. पहली सेवा का फल न मिलने पर फिर सेवा करती है।

३. जोगी से फल प्राप्ति—

१. वाद्यन की पहली सेवा का फल घोखा देकर उसकी वहिन काछल ले जाती है।

२. काछल को बाछल समझ गुरु उसे दो फल देते हैं।
३. बाछल को दूसरी सेवा पर एक जौ या गुगुन भिस्तता है।

४. फल का उपयोग—

१. काछल दोनों फलों को धकेली खाती है।
२. बाछल गुगुन या जौ को पांच व्यक्तियों में बांट देती है। वे पांच हैं:
 १. यह स्वयं।
 २. घोड़ी।
 ३. चमारिन।
 ४. महतरानी।
 ५. ब्राह्मणी।

५. बाछल पर लांछन—

१. बाछल गर्भवती।
२. ननद से बिगाड़।
३. ननद द्वारा बाछल के चरित्र पर लांछन।

६. बाछल का निष्कासन—

१. जेवर बाछल को मारने का प्रयत्न करता है पर तसवार नहीं चसती।
२. निष्कासन।

७. मार्ग में बाधा—

१. बाछल के बैस को सर्प काटता है। यह सर्प स्वयं गर्भ स्थित जाहुरपीर की पेट्टा से घायल है।
२. पिता और ससुर सेने घायल : जाहुर ने दोनों को करामात बिसायी, जिससे दोनों बाछल को सेने घायल।

८. गृह प्रतिवर्तन—

बाछल सासुरे भाई।

९. संतान प्राप्ति—

बाछल के जाहुरपीर हुआ ग्रन्थ
चारों के नी संताने हुई ये पंच पीर कहलाये।

इस कथाया में ७वें अधिप्रायः को छोड़ कर छेप सभी सामान्य लोक-कथाओं के तत्व हैं जो ग्रन्थ प्रसिद्ध कथाओं में भी मिल जाते हैं। संतानामाव का अधिप्राय राम के पिता-माता से भी संबंधित है। वही योगी नहीं अधिप्राय है। अधिप्राय यज्ञ करता है उससे यज्ञ पुरुष ने निकल कर सीर दी है। जिस प्रकार सीर तीन रातियों में बाँटी गयी है, उसी प्रकार यहाँ गुगुन पांच में बाँटा गया है। मनद की शिकायत का तत्व लोक प्रचलित सीता बनबाम

की कथा में भी है। यह लांछन की बात और लांछित को मारने या निकालने की बात सीता वनवास में भी है और राजा नल की माता मंभा से तो एक दम बहुत मिलती है। निष्कासन के उपरांत का तत्व जाहरपीर में अनोखा है। पीर का गर्भ में से जाकर वासुकि को विवश करना, अपने नाना और बाबा को विवश करना। ये इस कथा के अनोखे तत्व हैं।

दूसरे कथांश के अभिप्राय ये हैं--

१. स्वप्न में सिरिअल के दर्शन और आधी भावरें।
२. सिरियल की खोज में अकेले प्रस्थान।
३. गुरु गोरखनाथ से सिरिअल का पता।
४. घोड़े पर चढ़ कर समुद्र तट पर वैमाता को जूड़ी बाँधते देखना।
५. घोड़े ने सिरिअल के देश में पहुँचाया।
६. सिरिअल के बाग में सिरिअल की शैया पर शयन।
७. सिरिअल का आना, मिलन, सार-पाँसे।
८. सिरिअल के पिता ने विवाह का प्रस्ताव ठुकराया।
९. जाहर का वन में जाकर बंशी बजाना, नागों तक को मुग्ध करना।
१०. वासुकि ने तातिग नाग को सहायता के लिए भेजा।
११. तातिग ने सिरिअल को स्नानोपरान्त डसा।
१२. तातिग संपेरा बन राजा से बचन लेकर कि सिरिअल का विवाह जाहर से होगा, सिरिअल को ठीक कर देता है।
१३. एक अन्य दूलह का भी आगमन और जाहर का भी।
१४. दोनों बरातों का युद्ध।
१५. दैवी हस्तक्षेप।
१६. सिरिअल से विवाह।

इस समस्त कथांश में कुछ भी असामान्य तत्व नहीं, सभी अभिप्राय अत्यंत प्रचलित लोक-प्रेम-कथाओं में मिल जाते हैं।

तीसरे कथांश में ये अभिप्राय हैं--

१. बाछल की बहिन के लड़कों ने राज्य में से हिस्सा मांगा।
२. बाछल हिस्सा देने को तैयार।
३. जाहरपीर ने अस्वीकार कर दिया।
४. क्रुद्ध भाई मुसलमानी शासक को चढ़ा लाये।
५. सिरिअल का हठ पूर्वक भूलने जाना और अपमानित होना।
६. सिरिअल ने ही जाहर से साक्षात्कार की विधि बतलायी।
७. सेना ने गायें घेर लीं।
८. जाहर ने गायें छुड़ाने के लिए युद्ध किया और दोनों भाइयों के सिर काट लिये।

गायों के लिए युद्ध ऐसा तत्व है जो अत्यंत लौकिक हो गया है, विशेषतः राजस्थान

में। पाबूजी से भी गायों के लिए युद्ध किया है। मुसलमानी शासकों को चढ़ा साने का भी अभिप्राय इतिहास तथा लोकतत्व दोनों से संबद्ध है।

चौथे कथांश के अभिप्राय हैं—

१. आहर मां को सूचना देता है कि उसने दोनों माइयों को मार डाला।
२. मां का क्रुद्ध हो भ्रायेण देना कि वह भ्रातृ-हन्ता उसे मुह न दिखाये।
३. आहर का पृथ्वी में समा जाने की इच्छा।
४. मुसलमानियत स्वीकार की।
५. तब पृथ्वी में वह षोड़े सहित समा गया।

चौथा अभिप्राय आहरपीर के किसी किसी संस्करण में ही है। यह कथांश संपूर्ण ही धनोष्ठा है। साधारणतः लोक में प्रचलित नहीं।

पाँचवें कथांश में—

१. सिरिप्रस के वियोग में आहर प्रेत रूप में ही प्रकट होता है।
२. प्रति रात्रि जब मां सो जाती है तो सिरिप्रस के पास जाता है।
३. सिरिप्रस से बचन कि मां से नहीं कहेगी ?
४. सिरिप्रस गर्भवती होती है अथवा उसकी सासु उसे सौभाग्य चिह्न धारण किसे देखकर संदेह करती है।
५. सिरिप्रस मां से भेद खोस बेटी है भीर मां को दिखा देने का बचन बेटी है।
६. आहर को पता चल जाता है। नहीं जाता।
७. मां का उसाहना।
८. सिरिप्रस काग से संवेद्य भोजती है। देवी से चौपर ऐसता मिसता है आहर।
९. आहर सिरिप्रस का मिमत्रण मान लेता है।
१०. सिरिप्रस से मिसता है अन्तने सगता है तभी सिरिप्रस मां को आते हुए आहर को दिखाती है।
११. मां आवाज देती है तभी आहर सिरिप्रस के साथ अन्तिम रूप से भूमि में समा जाता है।

यह अन्तिम कथांश पुनरुज्जीवन अथवा प्रेत-प्राप्ति का है।

इस विस्तरेण से स्पष्ट विदित होता है कि समस्त कथा में वास्तविक डीपा प्रेम-गाथा का है।

पहला कथांश प्रायः सभी लोकप्रिय प्रेमगाथाओं में मिसता है। नम-दयमन्ती संबंधी लोक-कथा में भी नम के पिता पिरयम निपुत्री हैं। उन्हें पुत्र की बहुत कामना है। अन्य अनेक लोक-कथाओं में ऐसा ही उत्सेस है। प्रेम-कथा का नायक असाधारण प्रकार से ही उत्पन्न होता है। जन्म से ही उसे सिद्ध या देवी देवता का पोषण मिसता है।

दूसरा कथांश शुद्ध प्रेम-कथा है। स्वप्न में सिरिप्रस को देखना उसे पाने के लिए पल पड़ना। बायाएँ, उनका समन। योगी होना या योगी गोरख की इया पाना। देवी

देवताओं की कृपा होना और प्रेमिका की प्राप्ति । इसी को जाहर की इस कथा में विशेष रूप में रख दिया गया है ।

तीसरा कथांश प्रेमकथा या प्रेमगाथा के मिलनोपरान्त की बाधाओं से संबंध रखता है । पद्मावत में जिस स्थान पर अलाउद्दीन से युद्ध आता है प्रायः उसी स्थान पर गोगा का शाही सेना से युद्ध आता है । पद्मावत में भी अलाउद्दीन को चढ़ा लाने वाला घर का भेदी है, जाहरपीर में भी ऐसा ही है, जाहर के मौसरे भाई ।

चौथा कथांश प्रेमगाथा के नायक की मृत्यु का एक रूपान्तर ही है । साधारण प्रेमगाथा में नायक मारा जाता है । यहां जाहर ने शत्रु की पछाड़ा है, फिर स्वयं पृथ्वी में समाये हैं । यह ऐसे ही है जैसे जायसी ने अलाउद्दीन के हाथ से वचा कर एक अन्य राजा से लड़ते लड़ते रत्नसेन का मरना दिखाया हो ।

पांचवां कथांश प्रेमिका के चितारोहण के समान है परन्तु पीर की प्रेत-लीला दिखाकर इन प्रेमी प्रेमिका को इस कथाकार ने साथ साथ पृथ्वी में समाते दिखाया है ।

अतः मूलतः जाहरपीर की कथा प्रेम कथा है जैसे राम कथा मूलतः प्रेम कथा है । पर, उसको एक विशेष धार्मिक ढाल में ढाल दिया है । प्रेम कथाएँ प्रेम की पीर पैदा करने के लिये लिखी जाती थीं । अथवा किसी प्रकार की शिक्षा देने या मनोरंजन के लिए । जाहरपीर की कथा इनमें से किसी अभिप्राय से नहीं लिखी गयी । एक और अभिप्राय भी कथाओं का हुआ करता था, वह था उनका माहात्म्य । शब्द-वृक्ष-मंत्र और फल के अनिवार्य संबंधों के कारण अथवा तांत्रिक प्रभाव के कारण अथवा तांत्रिकता के दूषित प्रभाव को रोकने के लिए कथाओं के साथ माहात्म्य की बात जुड़ी । इन कथाओं को पढ़ने या सुनने से ही विशेष फल मिलने की बात पर विश्वास किया गया । पुत्रों के कल्याण के लिए अहोई आठों की कथा, पति के कल्याण के लिए करवा चौथ की कहानी, भाई के कल्याण के लिये भैया दूज की कहानी, सर्प से रक्षा के लिए नाग पंचमी की कहानी । कलंक से मुक्ति स्वयमंतक मणि की कथा दिलाती है । समस्त विघ्नों का नाश गणेश कथा से होता है । सब प्रकार की समृद्धि आती है सत्य नारायण की कथा सुनने से । इसी प्रकार यह विश्वास प्रचलित है कि रामकथा के सुन्दरकाण्ड का पाठ करने से रोग दोष नष्ट होते हैं । यही कारण है कि अकेले सुन्दरकाण्ड की हस्तलिखित प्रतियां बहुत मिलती हैं । तिजारी रोकने के लिए उषा कथा का महत्व है । जाहरपीर की कथा ऐसी ही माहात्म्य कथा है ।



जाहरपीर

गुरु गैला^१ गुरु वावरा^१ करै गुरुन की सेवा है
 गुरु ते चेला अति बड़ा^२ तीउ करै गुरु की सेवा है
 महरी^३ पै बादर ओलर्यी बरसै कौदार है
 रानी कौ भीजै कांचुओ^४, जाहर मिरगुल^५ पाग है

१. ये दोनों नाथ गुरुओं के नाम प्रतीत होते हैं : गैलानाथ तथा वावरानाथ ।
२. गुरु से चेला बड़ा माना गया है । इसमें एक सिद्धान्त तो यह विदित होता है कि चेला गुरु का ज्ञान तो प्राप्त कर ही लेता है, अपनी सिद्धि से उसे और आगे बढ़ाता है, गुरु गोरखनाथ और मत्स्येन्द्रनाथ की शक्तियों और सिद्धियों पर जब ध्यान जाता है तो विदित होता है कि गुरु गोरखनाथ अपने गुरु मत्स्येन्द्रनाथ से बढ़े-चढ़े थे । उन्होंने गुरु का 'त्रिया-देश' में से उद्धार भी किया था । यह कथन साम्प्रदायिक भावना से भी कहा गया होगा । नाथ-संप्रदाय के प्रवर्तक गोरखनाथ हुए । गोरख-संप्रदाय के अनुयायी अपने गोरखनाथ को सबसे बड़ा मानेंगे ही । अतः अपने गुरु को सब से बड़ा मानकर अपनी भक्ति की सार्थकता प्रकट की और उनका गुरु सब से बड़ा होते हुए भी अपने गुरु की सेवा करता है, इस कथन से गुरु का शील भी प्रकट किया ।
३. 'महरी' को जगदीशसिंह गहलौत ने गोगाजी का गाँव माना है । पर गोगा जी का गाँव 'ददेरा' है । महरी तो वह स्थान है जो गोगा मेरी या गोगा मेंढी के नाम से प्रसिद्ध है । गोगा का गाँव नोहर तहसील में बीकानेर में है । वहीं गोगा मेरी या मेंढी हैं । इस मेरी या मेंढी का शुद्ध रूप 'महरी' हो सकता है । 'महल सुखाइ देउ कांचुओ महरी' मरद की पाग, में महरी का अर्थ गायक ने ही मंदिर बताया था जो ठीक प्रतीत होता है । मंदिर अर्थात् पूजा का स्थान । यह संस्कृत 'मह' शब्द से बना है । (H. H. Wilson) विलसन महोदय ने अपने कोष में लिखा है : मह-r. 1st and 10th cls. (महति महयति) To revere, to worship, to adore (ह) मह m (-हः) 1. A festival, 2. Light, Lustre, 3. A buffalo 4. Sacrifice oblation. f. (हा) 1. A Cow. 2. A plant 'मह' धातु के जितने भी अर्थ ऊपर बताये गये हैं प्रायः 'गोगा महरी' स्थान पर सभी का समावेश मिलता है । यह पूजा का स्थान है । मेला लगता है, बलि से संबंध है, गोगा और गोगानो का 'गाय' से संबंध है, पशुओं का मेला लगता है, जिनमें गाय का बाहुल्य होता है । गोरखनाथ की समाधि भी गोरख मेंढी, गोरख मेंढी, गोरख मंडी कही जाती है जो 'महरी' का ही रूपान्तर है ।
४. चीर
५. पाग

कहा सुकाइवें कांचुभो, कहाँ मरव सेरी पाग
 महस सुसाइ देठ कांचुभो महरी^१ मरव की पाग
 जाहर के बाजार में सौनीं गढ़े सुनार
 घोडे कू गढ़ला धाबुका, रानी सिरियस की सिंगार
 जाहर की गैस में स्यापु सहरिया खेइ^१
 पापी खेला छसि लए वाता ऐ वर्सन देइ ।
 राना हे
 सोखे भाग जगे मगिनियां, तू बालक कित धायो
 नागिनि नाग जगाइ वै अपनौ में बाइ जाँचन धायो
 मारयो टोल गैद गई वह में, गँद के सग ई धायो ।
 मारी फुसकार स्याप भयो कारो, गौरे से हे गयो कारो ।
 ठाठी जसोदा भर्ज करे मेरो नागू छोडिबे कारो ।^२
 मानसी गगा राजा मान नें खुदाई
 जाके बीच में गिरवर धार्यो

६. मन्दिर

१ जाहरपीर और गुरु गुग्गा को एक माना जाता है, टैम्पस महोदय ने श्री लीजैण्डस भाव पंजाब' में संख्या (६) के धारम्भ में लिखा है, गुग्गा की समस्त कहानी महान् अधकार में पड़ी हुई है, आजकल वह प्रमान मुसलमान फकीरों में है अथवा सब प्रकार की बीच जातियों का पूजा पात्र है और जाहरपीर के नाम से भी विख्यात है। श्री जगदीशसिंह गहलीत ने लिखा है गोगा जी... यह जिला हरियाना के गाँव महरी के चौहान राजपूत थे। सं० १३५३ में दिल्ली के शावदाह द्वितीय के सेनापति अबुबकर से युद्ध कर ये वीर यति को प्राप्त हुए। हिन्दू इन्हें देवता तुल्य मानकर भावों वदी १ को इनकी जयन्ती मनाते हैं। मुसलमान इन्हें जाहरपीर के उपनाम से पूजते हैं।

२ बंगाल में पट-गोतों में से एक गीत का अर्थ यों है :

कालीबहेर कूसे धिस केसि कदम्बेर गल
 ताते चड़े कृष्णचन्द्र दिये छिसेन भूप ।
 कालोभाग आज आहार बसे सकसे घेरिस
 नागवती दुइटी कन्या उपस्थित हइस ।
 मागेर मापाय पग दिये, देखना, ठाकुर नाधित सागिस ।

“बाइसार मोक साहिय पृ० १५५”

इस से यह अनुमान किया जा सकता है कि जाहर के गीत में कृष्ण का यह वर्णन पटबों के पुराने अर्थात् के कारण आ गया है। पहले ये कृष्णचन्द्र के पट दिखाते होंगे, बाद में जाहर का दिगाने सने। और पुराने कृष्ण गीत का अर्थ स्मृति के रूप में रह गया।

सिगमरमर कौ बन्यौ मुकरवा^३ हरदम द्वारा न्यारा
 काली दह में गाय चरावै कंबर ओढ़ै कारा,
 गज और ग्राह लड़े जल भीतर लड़त लड़त गज हारे
 गज की टेर द्वारिका लागी नंगे ई पैरन धाए ।
 जौ भरि सूंड रही जल ऊपर जब हरि नाम पुकारे
 गोविन्दौ हरि आप बनायौ
 एकसे एक लगै बिसकरमा रोजु एक नाइ आयौ
 भिलनी के बेर सुदामा के तन्दुल, रचि रचि भोग लगायौ
 नाग नाथु रेती में डार्यौ नगह तमासे आयौ
 पंचबीर^४ पंचों में भाई, धुर मक्के में जात लगाई
 धरथरी^१ का भरथरी
^२अलील का बन्द
 जोगी खेलै नौऊ खंड
 मांगू भिच्छा तारू गाम
 अलख पुर्स का सुमिरूं नाम
 दे ताका भी भला न दे ताका भी भला
 बंकी महरी बनी पीर तेरी गचकीली और कलई सेत
 चारौ खूंट की आवै मेदिनी कादिम^३ लैत पीर तेरी भैंट
 पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन धामत ऐं तोय चारों देस
 नाथन की करवाई मान्ता^४ राखी लाज भेस की टेक ।
 मानसरोवर राजा मान की जा घरु कुमरि लियौ औतारु
 एक बरस की है गई दूजी लागनहार
 द्वै ई बरस की रानी बाछिला जाकौ निकरयी बाछल नाँउ
 तीन बरस की रानी बाछिला चौथी में पगु धार्यौ ऐ
 पांच बरस की रानी है गई, छैई बरसु में पगु धार्यौ है
 सात बरस की रानी है गई, आठैई में पगु धार्यौ है
 नौ बरस की रानी है गई, दसई में पगु धार्यौ है
 ग्यारह बरस की रानी है गई, बारही में पगु धार्यौ है^५

३ चबूतरा ।

४ जाहर ।

१. धरथरी—धारानगरी ।

२. कपर ।

३. मुसलमान सेवक—(खादिम से व्युत्पन्न)

४. इस पंक्ति से विदित होता है कि जाहरपीर के कारण नायों की मानता हुई ।

५. लोक गीतों की यह शैली दृष्टव्य है । समय के व्यतीत होने का ज्ञान कराने की यह विधि मनोविज्ञान के अनुकूल है ।

घर को बोस्यो नाई बामना है ।
 घर दूबन हम जाय हूं
 पांच सुपाड़ी एक मारियल से बिरमा भोली डारे हूं
 चले चले म्वा गए, पहुँचे बागर देस हूं
 बैठयोई पायी राजा उम्मद तखत पै
 कहाँ ते भाये कहाँ जाउ मुस के बषम सुनाभो है
 ब्या घर घेटी जनमी राजा मान कें
 ब्या के भेजे भाए हूं
 तो घर देवराय सामु है, करन सगई भाए हूं
 सहर दलेला भारी राव कौ, ब्या घर देवराय सामु है
 बैठयोई पायी राजा बंगला उमरू ब्याकौ नाम है
 बुरी करो तो हे, माऊ बामना, बीरोन घर करि भाए काबु है
 इकबसिया कौ माहयो, द्वादस निरमस कन्या कौ ब्याहू है
 राजा नें सगुन लई लिखबाइ
 नेगी सए बुसाइकेँ जानें नेगोमू दई गहाइ
 तुम ठी मेरे महाराज धी तुम ते कछू न बस्याइ
 माऊ हों तो ठी ब्याइ वेंतो मरबाइ
 लै नेगी न्यातें चले पहुँचे सैर^१ दलेके जाइ
 बैठयो पायी राजा उमरू तखत पै बीहोत भये लुसहास
 तीमर मे हमारी लई तीमर करत बिचार
 इतनी बात कही उम्मर मे जाते छमामन्त भए पिरोट महाराज
 इतनी बात म्यौ मति कहियो राजा छोइ जिघ्र ते डालें मारि
 पयो कुमर की तेलु रहसि हरदो चढ़वाई
 रोरो मरुप्रति घुरे बंठि कें कजर सगायो
 चुझी नाऊ फिरं नगर में बैठ बुनाए
 भूप जसो ज्यौनार पांति कू सनुई बुनाए
 भूप जसे ज्यौनारि जोरि पंगति बंठारी
 या के दीनां पतरि फिरं हाथ गगरो भीर पानो
 सुबई, पूरो, मगध, कचोरी
 बूरो, दही पांति दई गहरी ।
 सो ऐसी पांति दई ब्या राजा मे सो दाश मेरे
 नगर में हीति यइई सो भूकौ ग्यातें ना फिरं ।
 गुरसुवी भाट बुसाइ तुरोत की जाति निकारी
 घोष की याछ भीर दस्त किसोरा । ऊपें परबत मांभी
 ताजी तुरकी सजि गए बंश । गुरख बनात नारि में गंश ।

ऊंट परवती सजे तुरकी ऐराकी
 रथबहली सजि गई धरो हाथिन अम्बारी
 कैसोंड़े के चारि नगर परिकम्मा दीनी
 लसकर फिरै नकीब देर काए कू कीनी
 सो उड़ि उड़ि धूरि लगी अम्मर में दादा मेरे
 सो भानु गर्द में अटि गयो ।
 म्वांते उमरू चल्यौ सुरति जानें बिरज की लगाई
 नाऊ नेगी नांहि गैल हमें कौन बताई
 म्वांते राजा चलि दीयौ और मानसरोवरि आय
 मानसरोवरि आइकें राजा मान के घटाए मान
 वामन राजा ते पिरोत ते मेरी कछु न बस्याइ
 सो हात जोरि तेरे करूं निहोरे दादा मेरे
 मेरी कछु न बस्याइ, सो सादी कुमरि की है गई ।
 नेगी लीनों बोलि भूप प्याऊ करवाई
 तुम राजा के पास जाउ, नेग करवाओ
 नेगु कछु मति लइयों, नेगु चहियतु नाँय,
 बोटी की भांमरि डारि कें तुम कुमरि ऐ लै जाउ
 चमरा लीनों बोलि घास दानों मंगवायौ
 मेख दई गइवाइ ।
 अरे राजा ऐसी बात चौं करतु ऐ सो मेरे आए नौहूँक हजार
 करीं तैयारी वरैनुआं मंगवाओ
 जौ ढाकरौ^१ लावै वरौनियां तौ हमारी ज्याई रुपैगी रारि
 उम्मरु गयो दहलाय पुरोत अपनौ बुलवायौ
 तुम लै जाओ वरैनुआं महाराज ।
 मान राजा के मान, मति घटाओ, सो हम लेंइ कुमरि ऐ व्याहि ।
 लै वरैनुआं पिरोत गयो राजा भयो खुस्याल
 सो जल्दी करौ भामरि तुम डारी सो दादा मेरे
 सो मैं भोर हौंत विदा ज्यांते करि दऊं ।
 दै वरैनुआं म्वांते आये, उम्मर नें जब वचन उचारे
 कहौ महाराज राजा नें क्या वचन उचारे
 पांति फांति की कहा चली राजा लीजौ भांमरि डारि
 ऐसी जगिग करी तैने म्वाँई, ऐसी ज्यां मिलिवे की नांहि
 नाऊ दीजौ भेजि भामरिन कौ सामान मँगाओ
 मति करौ अवार जल्दी भांमरि गिरवाऊं
 सो पांति के भरोसें तुम मति रहियौ दादा मेरे

नंगर ते विगे निकारि, करम लिखी होगी सो हम् मुगतिगे ।
सीमों कुमरू चौक बँडार्यौ, बँदी पंभित नें रचवाई ।

सखियां गाइ रहीं मंगसघार

सो मुहरी बांधते आ कुमरि कें सो बैरीन घर है गो काज ।

रोसमन्त है गयौ मान नें वादर फारे

सखियां देति बिरहैन

मोसौ राजा कैंसैं जीबैगी बैरीन घर कर दो कानु ।

भांमरि दीनीं गेरि बसुसी भयो उम्मह राजा ।

बेटी अहिमत नाइ ।

बेटी ऐ तुम भपने घर राखी भपने साला की करि लूंगे बूखरी ब्याहु

हाप जोरि मान भयो ठाढ़ी

तुम बेटी लै जाउ दमाद हमारौ दिवसा ई लागे

ठीक सनुने की ली कहा अनी मेरें नित भाभी नित जाउ

बेटी तो मेरी बहुत ऐ प्यारी, दमाद के मूंगी भादर माव

पौफाटी पिघरा भयो, भयो ऐ सकारौ हां ।

रानी बाछसि सपत रसोई है हां

आ मेरी बांदी जा मेरी बांदी राजै बोसिता

घरे सिरकार क मेरी हां

विरम सकुट सई हात में राजा ऐ बोनन पाइ

सार खिभसे सारिया राजा तोह कौसी सार सुहाइ

महम बुभाए होला पदमिनी राजा जी खली राउ जी हमारे साथ ।

सार कड़ाई सई, ठै करी, फासे परलु समहारि

गल मासा रदराख जी राजा मुझ ठै राम अपाइ

भामत देखे बातमा, रानी पतिका देति नवाइ

राजा कू तो पतिका नवायौ

डिग बँठि गई मूढ़ा कारि

मोरछलीन की बीजना, रानी राजा की बोरति ब्यारि

ठँडे पानी गरमु घरबँ जल सियरे संति समोइ

अंदन चौकी कारि फैं रानी राजा ऐ उभटि न्हवाबै ।

पीताम्बर करी घोबती राजा मूरज ध्यान सगारि

हुलसे ये अंदनु चित्यौ राजा नरसीगी खौरि अढ़ाबै

सना पहर सुमिरिन करयो राजा जोबू बेड़ पहर दिन भावै

न्यायो भोयो सापरेराजा मुफि चौका में भावे

बाए के पार में भोजन परोसे रानी बाए बटोरा में दूध

सोने के पार में भोजन परोसे राजा चाँदी बटोरा दूध

पहली विरास घरखी घर्यौ राजा दूजौ गाइ गिरामु

तीजौकौर मुख में दीयी राजा जाके गिरी नैन ते धार ऐ
 जौरे ठाड़ी गौरै गंगा भमानी पूछै राजा से बात ऐ
 कै बलमा मेरे भोजन बिगरे खाली परी ऐ सिकार ऐ
 कै काऊ बैरी नें बोल बोले राजा, कै काऊ ने आय दाबी सीम ।
 कै तेरी घोड़ा हट्यौ कै रन लोटी तरवारि
 नां चातुर तेरे भोजन बिगरे ना खाली परी ए सिकार
 नां काऊ नें बोल बोले रानी ना काऊ नें दाबी सीमएँ
 ना चातुरि मेरौ घोड़ा हट्यौ ना लौंटी तरवारि
 अन्न बिछना जग बग सूना, बस्तर सूनी काया ।

[हे रानी यह लाख खानू है

तोपन पै तोरा, बह के गीत, मंगल चार कौन कै गवि रहे ऐँ

‘आपकी बस्ती में एक साहूकार ऐ श्रीमहाराज उसके नांती पैदा भयौ ऐ, हुब्ब के
 गीत उसके गवि रहे हैं, रानी घन्नि हमारी परालबदि ता दिनां ब्याहि कै लाये
 ऐसी मौज कबऊँ न भयो] ।

नीम दैकै जनमु जाहरपीर कौ होइ

पन सारदा सुनै बोलौ बागर के बीर की मदद ।

काऊ कै पुन्न परताप ते सभा जुरी आय

आपु नईं उठि जाइयै गाय बजाय रिझाय

खरिया ओढ़ि बुलाए राजा नें गोला कौ दह्यौ लगाय

साडीमान बुलाए राजा नें कासी कूं दए खंदाइ

कासी सहर ते बिरमा बुलाइ लए कथा दई बैठाय

देस देस के पंडित आये कथा रहे बे बांचि

विरमा बांचै बदे कूं राजा ऐ गाय सुनावें

एकु बिरामनु ज्यौं उठि बोल्यौ सुनि राजा मेरी बात ऐ

बेटा की तौ कहा चली राजा करमन में तौ बेटी नाएँ

इतनी बात सुनी राजा ने मारयौ गादी तै हातु ऐँ

जमदर काढ़ि म्यान ते लीयौ हियरा कूं लायौ राजा हात ऐ

काए कूं जननी में तै जन्धौ बिसु दै डारयौ न मारि

ए बिरामनु ज्यौं उठि बोल्यौ सुनि राजा मेरी बातऐ

वार्ता--

काऊ के परताप तै सभा जुरी आय

आपु ईं उठि जाइये गाय बजाय रिझाय

खरिया ओढ़ि बुलाए राजा नें गोला कौ दह्यौ लगायौ

खोदत खोदत गए पातालै जाकौ अमिस्त पानी पायौ ।

बेलदार राजा नें बुलवाए बागन की रौस डराई

धुर काबुल ते पौधि मंगाई, धरवायौ लखेरा वागु ।

बाग बीच एक बारहद्वारी, फूला माली कीयौ रखवारी ।

गरमी की मेवा फाससे लगाये राजा जाड़े की मेवा दास ऐ
 धामरे धामनि धामिन जम्हीरी फरीसौ कसन्दरी गहर सूं गमीरी
 सैलुत ताता किलौदे न बरनी धासले फाससे बहुत धामे खिरमी
 मए नारियल दास कारी धिरोजी कंजा जु रीठा कँठोर पान ही मगत बहुत मीठा
 मगठि बैरि मीठी भोज गोजा
 सेंभतो कचनार सीसों मबोजा
 रही बांस मंडकाय खन्दन खमेसी
 सुतगुरू गुलीग गुमीन मुभंगा
 नौरंग खमेसी रूब रंगा
 कमल लैन रट्टी दौता जु मरुमौ मियं सात खंडी
 खैरा जु धौपरी गुलकंज तोरा
 सूरजमुखी फिरछि नारि मोरा
 लौंग रे इलायची की सदै ब्यारी
 धुके मद धरं जाय बारी
 कीकडि करीसा छए बांस गूबर
 रंमजा धौकरा धौन धौरी
 हीसिया पीनुभा फेरि मोरी
 हीसिया हंसं डा बारि के बीस गंगा
 परी पापरी खैगर सिहोरे ह्यासिनि इतेक रुस जोरे
 धलू धरलू पसेंदू कवम कुंड बिराज
 माधुरी मतान ज्यां सबन में बिराज
 ज्यां सात लैदू
 मपट नाग दौनी
 धामिन्न धनमिन्न सीदी
 रौसन बबूरा सदारम सरद
 हसायन धवायन बबी येसि पाई
 धरि बेसि गुलम धरि जोरि महुषा रायन लभेओ गौंदी न गइया
 आंकुमर धाड़ बाहु बरौंदा न करेरे
 सट्टा जु मिट्टा निबुषा खनेरे
 देसे बादाम देरे जो धगुरा
 कीकरि बड़ीला छए बांस धारी
 केतकी न बेसा केपड़ी नबीला
 कंतन के पेड़ मये जां धामी म धौकरा
 खान्धारि के पेड़ देरे बहुत ई मलूक जायें धामनी के पेठ बहुत ई बीना
 रामन जमाभन बर के धौपा
 रमासिनि धाई धां सीमनाई पाई
 धड़े बड़े पेड़ ज्यां पीपर के भाई

नीब की निबोरी लगी, अम्मारतीन के फूल झरे
 वनकाट की लकड़ी रौस पै ठाड़ी ऐ
 फेरि आए फुलवारी की बहाल तौ देखि रहे
 मरूए की छबि न्यारी है
 मरूए की छबि न्यारी गोल के नीचें ढारी ए ।
 मोरछली के पेड़ राजानें फुलवारी के बीच घरे
 गुमटी दुरंटा की भारी ऐ ।
 एकु पेड़ पसेंदू कौ आयौ छबि जाकी न्यारी
 ढरवारि भाइ जाइ, बेला कौ तमासौ एक फुलवारी न्यारी ऐ
 फूलन के हजार देखे फुलवारी एक
 हजार गँदा कौ भारी ऐ ।
 खसबोई तौ आमति न्यारी न्यारी
 झूटी साखि बमूर नें डारी ऐ
 भौंतु तौ सुहामनों फूल एकु देख्यौ
 गोरखमुंडी एक खेतन में न्यारी ऐ
 अरे जारे माली के एक गोरख मुंडी न लाए
 सँति मैति की एक किसानु फुलवारी ऐ

वार्ता--

बांस की डाली केरा के पत्ता फूल लए फल चारि
 लै डाली म्हांतै चलयौ राजा की कचहरी आया
 डाली घरी उतारि मालीनें नबि नबि कें मुजरा कीया
 मैं तोइ पूछूं हीरामनि माली मेवा कहाँते लाया
 जो राजा तुमनें बाग लगायौ मेवा राम बाग ते लाया
 खुसी भयौ रे देसापति राजा माली कूं दैतु इनामु ऐं
 चढनौ तौ जानें घोड़ा दीयौ, उड़नो बाजु ऐ

वार्ता--

जादिन वागु व्याहिबे कूं आमें तेरी राजी करि आमें
 फूला माली बिदा करि दीयौ फुलवारी डाली पै आई राजा की आंखें
 फिरि राजा नें माली बुलवायौ बेटा बासी मेवा लायौ
 अरे राजा परि सिंगमरमर की बनी कचहरी पानों से बंगला छाया
 परि लागी भभैक मेवा कुम्हलानी मैं फूल कालि के लाया
 घनि घनि रे माली के बेटा तैनें राख्यौ सभा में मानु ऐं
 लै डाली म्वां तें चलयौ आया बाग के बीच ऐ

वार्ता--

लै डाली मालिनि चली रानी के रावर आई
 परि डाली घरी उतारि मालिनी मुरि मुरि पैरों लागी

मैं ठोड़ पूंछू भर की मालिनि जा बाकी में कहा साई
 तुमनें रानी बागु लगायी मेवा राम बाग ते साई ।
 खुसी भई देसापति रानी मालिनि कू देति इनामु ऐ
 परि दखिन का चीर, मुल्तान की छांगी मालिनि कू देति गहाइ ऐ ।
 परि मुहुर रूप्यों से भरी छबरिया मालिनी विवा हो घाई
 परि आ दिन बाग व्याह्रिसे भामें तेरी राजी करि भामें
 परि सांझ भई दिन गयी मुँदन कू राजा राजनि धायो
 लै मेवा भागें धरी आ साइ सेठ राज कुमार ऐ
 परि साइ सेठ पीलेठ बिलसि सेठ राजा करि सेठ जिम की सार ऐ
 करद निकारी फौसाद की फस पै भरसु जमाइ ऐ
 राजा नें ली करद जमाई रानी नें पकरुयी हासु ऐ
 परि मवारे बाग की मेवा न खागें ब्याह्र करै अब खामें
 होते में खायी नाइ राजा पहरयी नाइ भुल्हासु ऐ
 मरघट दिगें बोलना सूम उतारयी भाइ ऐ
 माया दीनी सूम कू ना बिलसै ना साइ ऐ ।
 धरे राजा सरग हमारी झोंपडा ज्यां ली घाषा पार ऐ
 जेसैं बडा दाइ की धियो मुछोका जाइ ऐ
 कस्लि करै सो घग्ग बरि राजा कासि करै सो हास
 धरे तु कस्लि ली ऐसी घाषी दोळन की है जाइ कासु ऐ
 बोली बागर के पीर की मदद ।
 राति जगावै जोरै चिरागी
 जनम सुनै खाकी थरि की कान
 रिखि सिखि देता बहुमेरी कमी न घाषै बिसकें हानि
 गोधंन के माली नें धायी गूसका बचन हुमा परमान
 हीरासाल बनिया ने धायो घुसने राजा निज कर राम
 भपमों ई पोड़ा है धरे सजवाइ लै
 मारु देस के हीरा हो उम्मर की हायी सजवाइ
 राजी की बोसा सजवाइ, जाते बाइस मार्ग रे कहार
 पाछें ते जाकी बांदी ऊ जाइ
 दगरे दगरे जाकी फौज हकिगी, जाकी ससकद भूमतु जाय
 धरे वागन में राजा पहुंथ्यी जाइ
 वागन में जै जै ई जै जै होय
 राज नें संभू दिये ली डरकाय
 जाकी गडि गई पककी मेस
 राजा की सिधि गई रेसम डोरि
 धरे जाते जरदी मार्गें नाम कनाव

राजा नें भट्टी दर्ई खुदवाइ
 जानें खांड दर्ई गरवाइ
 जानें नेगी लिए ब्रुलवाइ
 हरी हरी गिलम बिछी दरियाई, मुरबन जू ठसकत पांय
 सोभा पातुरि राजा नें ब्रुलवाई, ठनवायौ वागन में नांचु
 छोटे छोटे छोरा नाचें ब्रजवासीन के चुटकीन में उड़ाइ रहे तान ऐ
 डोला में ते रानी बोली करि लोजौ वाग की व्याहु ऐ
 काए काए में राजा मेरी सींग रे मढावै
 काए में खुरी मढवावै
 सोने में राजा मेरी सींग रे मढावै
 रूपे में खुरी रे मढावै
 अगिनि कुंड राजा नें खुदवायौ हुतिवे कूं नागर पान ऐ
 हुती ऐ लोंग समद चंदन की और नागर पान ऐ
 सुर गायन के धीअ्र मंगाये राजा अ्योई देंतु ऐ ढरकाइ ऐ
 एक भर तौ पाताल जायगी वासुकि देवता मगन है जाय
 धनि धनि रे देवराय से राजा तैरैं होंइ वेटन औतार ऐ
 एक भर तौ आगासै जाइगी इंदुर देवता मगन है जाइ ऐ
 वेटीन की तौ कहा चली राजा लाल तौ रोजु ई हुंगे
 अरे राजा काए काए की तौ भामरि लेगी
 काए की परिकम्मा देगी
 गोला ते भामरि लेगी तुलसी की परिकम्मा देगी
 परि वागु व्याहु ठाड़ी भयौ राजा विरपन कूं देंतु इनामु ऐं
 परि विरपन कूं तौ गैया दीनी, भाटन कड़े पहिराये
 डोमन कूं तौ चीरा दीने मीरासीन गाम इनाम ऐं
 इक तखता में विरामन जैमें दूजै में भैया वन्द ऐं
 इक तखता में अम्यागत जैमें चौथे में और भिकरींड़ि ऐ
 परि सबकूं पांति जुगत तै परसौ मति करौ पांति में दुभांति ऐ
 एकु एकु रुपया एकु एकु लडुआ विरफन कूं देंतु गहाइ ऐ
 हुकमु करै तौ गौरै गंगा भमानी करि जाऊं वाग की सैर ऐ
 एकु विरामनु अ्यों उठि बोल्यौ मति जइयौ वाग की सैल ऐ
 चारि धरी तौपै मूल की निछुत्तर मति जइयौ वाग की सैल ऐ
 तुम तौ राजा नित नित आओ कव जावै राजकुमारि ऐ
 अस्त्री पुरुख की संगु मिल्यौ ऐ जुरि मिलि कें करि लेंइ सैल ऐ
 कौन के हाथ रे गड़ुअरा सोहै कौन के कुस की डार ऐ
 रानी के हाथ गड़ुअरा सोहे राजा के कुस की डार ऐ
 परि दिवराइ राजा हेरूं हांकैगी भोरी वांघति राजकुमारि ऐ
 परि मुहरन कै तौ कूंड लगावै मोतीन के जइया चारि ऐ

परि बिरपन की कहनों नाइ मान्यो भुकि प्रायो बाग के बीच ए
 भागें भागें देखें तमासी पाछें तें पतकर होइ ऐ
 बोली बागर के पोर को मखद,
 नाम की खातरि रानी ब्याही साहिब में राखी बाँधि ऐ
 परि नाम की खातरि बागू सगायो मेरी सूख्यो साखा बागू ऐ
 परि तेगा काडि म्यान से सीयो हियरा कू लायो हातु ऐ
 और ठाडी गौरें गंगा भमानी राजा की पकरति हातु ऐ
 काए कू जननी तें मी जन्यो बिसु दै डार्यो न मारि
 नाम की खातरि मेने रानी ब्याही करता नें राखि बई बाँधि ऐ
 नाम की खातरि मेने बागू सगायो, मेरी सोऊ सूख्यो बागू ऐ
 पहलें बलमा मोइ माझारी, फिरि करियों अपभातु ऐ
 तोइ ना मारें, हम ना मरिगे, तजि जांगे ठेरा देख ऐ
 परि देखे पीडि जेट में रोवें दै मारें रीसन से मूँइ ऐ ।
 मेरी सूख्यो ऐ नीलसा बागू राम तेंने कछू न करी
 धरे दीना सूख्यो मधमौ सूख्यो रामबेन खमेली
 सबरे पेइ मारियल सूखे सूखि गई ऐ बनराय, सूखी तो खपे की डरी ॥ मेरी०
 धरे परि तिरिया नें मति हरी राजा रे साङ्गू के वगसा प्रायो
 परि भामतु देख्यो देसापति राजा काटिकु दयो सगाम ऐ
 परि मेरी कचहरी मति प्रावै राजा सीने के सम्म दहलाइ
 सम्मू गिरै छग्यो गिरै कदि मरै पधेरी कौ सोगु ऐ
 पहलो योगु सोइ बो सभ्यो पतिभरता रहि गई बाँधि ऐ
 धरे साङ्गू मति बोली मारै, सासा बोली मति मारै
 बिन दिन कू भूसि गयो ऐ, रोसिक ते भाग्यो प्रायो ।
 धरे पामन में पन्हई नाई, तेरे छिर वै पगड़ी नाई ।
 धरे बडिबे कू घोड़ा नांमो, बडिबे कू घोड़ा दीयो ।
 धरे तोइ प्रायो राजू दीयो, धरे रहन कू महल दीने ।
 धरे बरम्बरि की भैया कीयो, धरे साङ्गू मति बोली मारै ।
 धरे बलतर कू फोरि गई ऐ, धरे पिजर कू तोरि गई ऐ ।
 धरे गोली की घाव भसा ऐ ।
 धरे बोली ते ससक्यु रहवा, धरे गोली ते डीर रहवा ॥ रे गो०
 साङ्गू मति बोली मारै
 साङ्गू मारै बीसना भए बरेजा सासु ऐ
 परि जलटी घोड़ी केरि के राजा प्राया महल के बीच ऐ
 घोड़ी वै ते ज्यों गिरै राजा गिरह कबूतर गाय
 घोड़ी वै ते ज्यो विरयो रानी में पकरयो हातु ऐ
 रानी नें सो राजा पकरयो नै गयो महम के बीच ऐ
 धरो हम तो पते बनबास कू रानी नू जाने ठेरो वामु ऐ

बोलौ बांगर के बीर की मदद ।

बाछलि को पूत बांजन कूं भूत, परचै की खातरि धाया ई ऐ
अजी हिन्दू मुसलमान दोनों दीन धामें, बादशाह नहीं आया ई ऐ ।

गुसा भया बागर कोई राना, जब घोड़ा सजवाया ई ऐ
घोड़ा मारि गयौ डिल्ली कूं बास्याइ जाइ जगाया ई ऐ
अजी लाल पलंक पै सोवै बास्याइ पलके ते औंधा मारा ई ऐ
अजी दौरौ आई बास्याई तेरी अम्मा कौनें मरद सताया ई ऐ
पांच मौर और एक नारियल पीरजी कौ पंजी उठाया ई ऐ
जब मेरौ मालिकु महरि करै, सबु कुनबा जारति आया ई ऐ
महलन में राजा देवराय निरपु दुख्याइ

भली सी रानी किसिमिति में ई फलु नाइ
जोगी जती सेऐ मैंने इन पै मैंने डार्यौ सुवाल
रानी और संकलपी गाय, रानी किसिमिति में तो फलु नाइ
अरे भली सी रानी०

रानी माल परगनों बहुत ऐ बैठी भूंजी राजु
राजा माइ बिना कैसौ माइकौ, पिय बिन कैसौ सिंगार
घन बिनु नाइ धनेसुरी राजा ऋतु बिन नाइ मल्हार
महलन में रानी ज्यों रही ऐ समभाय ।

अरे संग सहेली बोलि कै करि आमें गाइ बजाइ
पिया पनारे पीरि जूं धनि ठाड़ी पकरि किबार ऐ ।
अरे बांह छड़ाए जांतु ऐ निबल जानि के मोय ऐ
परि हिरदे में ते जाइगौ राजा मरद बदंगी तोय ऐ
जो तेरी मनसा जोग पै काए कूं कीयौ ब्याहु ऐ
परि नौ सै घोड़ी ले चढ्यो बाबुल जी की पीरि ऐ
बनजारे की आगि ज्यों गयी सिलगती छोड़ि
अरे मेरे राजा जी तेरी मनसा जोग पै तपौ हमारे द्वार ऐ
मढ़ी छवाइ दऊं काच की मढ़वाइ दऊं हीरा लाल ऐ
परि गंगा मंगाऊं हरद्वार की नित उठि करौ असनान ऐ
भूखे तो भोजन करूं हारे दाबूं पांइ ऐ
ज्यों जोगु बनै रानी ज्यों बनबे कौ नाइ ऐ
परि ऐसे जोग नां वनें रहे भोग का भोग ऐ
अरे राजा साधू जन थमते भले जी मति के पूरे होंइ
अरे राजा बंदा पानी निरमला जो जल गहरा होइ
साधू जन थमते भले मति के पूरे होंइ
अरी रानी बंदा पानी गांदला बहता निरमल होइ
साधू जन रमते भले जाते दागु न लागै कोइ
अरे राजा गलखासा जामा बोरि कै किया भगम्मर भेस ऐ

धरे आना किया मगम्मर बना धरे रानी नांदन में गेरू पुरबायें
धरे धपनी बादरि मगवाई, आनें चिट्ठी बादरि बोरी ।

रानी मासा हात गही ऐ

गुलसी की मासा हात बिराजें गोरख कूं रखी मनाइ ऐ

प्रसी जीजू बसमा दीसते बम ठाड़ी पकरि किबार ऐ

बब बसमा दीसे नई जे उसटी खाति पछारि ऐ

धरे औपडिया के नीबरा तोइ डारूं कटबाइ ऐ

परि तोसर बसमा पीड़ते में मिसती सी सी धार ऐ

राजा की सीसी झुलमें धान पै पिन्नरा में गगारामु ऐ

राजा नें प्रंगसा बंगला बैठक छोडी धीर गैदा फुसवारि ऐ

समम्भरौ नगर के सोग मात मेरी काए कूं रोबै

पोरे से पीतब के काजें बाँ नैनन कूं खोवै

धरे टाप बे परती से मारें

बै बै मुंह में सूड़ि पौरि प हाथो जिघारें

धरी मात तोइ जवर चोट सामो

तेरो राजा जोगी भयी करो जानें बनोवास तयारी

भागें भागें दिबराय राजा पीछें राजकुमारि ऐ

एक बन नाभयो, दोसरो, तीजे बन है गई सांरु ऐ

फिरि पाछे कूं देखतु ऐ राजा जि धामति राजकुमारि ऐ

गाम गैस दीसति नाइ राजा कहां करे गुजरान ऐ

गाम गैस दीसत नाइ रानी यहीं करे गुजरान ऐ

पात बिछामो बनफल खायो रानी पातन में गुजरान ऐ

कहां रहे सीरि निहासिया कहां रहे राते पसंग

कहां रहे राजा मूंबा बंठना, कहां रही राजकुमारि ऐ

पर रहे सीरि निहासिया रानी पर रहे राते पसंग ऐ

पर रहे मूंबा बंठने रानी पर रही राजकुमारि ऐ

हां सकडी कंडी जोरि के राजा मेरे बंठी धांच बराइ ऐ

धरी सोइ जा राजकुमारि धरे तेरो पहरी दुंगी

धजी में ना सोऊं महाराज परयारी तिहारी नाइ

जब सोऊंगी महाराज रुपट्टा के छोर सी गहाइ ऐ

हाप की उंगरिया मेरे मुहड़े में सगाइ दे

घांटू ऐ सिरहाने सगाइदै

सोइ गई राजकुमारि बिपति की मारी

जि काए कूं गैस बसी ऐ

जाके पांच धारि बांटे सामे

मेरे राजाजी की हंसु उदयी ऐ

जे सहर दलेले में आयी
 खासे के घोड़ा जाके फाके में बंधे ऐं
 मकुना हाथी जाकी ज्योंई धूमतु ऐ
 नंगर की प्रजा जाकी रोवै, ऐसी राजा फेरि न मिलंगौ
 अजी कौन के हाथी कौन के घोड़ा अपनी जानि मरदौ फाके में परी ऐ
 अरे भोर भयो ऐ परभात, रानी वाछिल जागै
 वोलो वागर के पीर की मदद ।

६. देवी सोइ गई भमन में नीरंग पलंग नवाई
 अरी नीरंग पलंग नवाई
 आइंत पांडत गेंदुवा ठाड़ी वालम डोरै व्यारि ऐ
 धूर उडी नजरज की अजी जिन गलियन की धूरि ऐ
 अजी जिन गलियन की धूरि अंग लागी लिपिटि नहीं
 जम भाजे जांत ऐं दूर ऐ ।

वार्ता--

अरे चलि मेरे बेटा डिगरि चली हतिनापुर मनुआ ढारया
 कैती रे गुरू गंगाजी न्हाइ दे नाती छोड़यी जोगु ऐ
 तो पै तै गुरू जांड न्हाइ लेंड गोरख सी गंगा
 अरे मैं मिलूं कुटम में जाइ वाजरी वै लुंगी वंगा
 तम्मू मेख उखारि मेसे चेला कसना लियी बनाइ ऐ
 मजल्यो मजल्यो जोगी चाल्यो मजल्यो ऐ आसन माड़यो
 आसन मांड़ि भगम्मर तान्यो वावा वैठयो जल थल पूरि ऐ
 अजमति के गुर तम्मू तनाए अनहद के वाजे नाद ऐ
 विन खूंटी विन डोरि मेरे वावा अघर भगम्मर तान्या
 परि सोमत जागे पांची पंडा छठी कमंता माइ ऐ
 अरी ए कैरी टिडोरी^१ कै वंजारी कै कौरों दल आये
 कै सिपाई कै रंगीली कै जरजोधन आयी-
 अरे बेटा ना सिपाई नां रंगीली ना जरजोधन आयी
 परि न टिडोरी ना वनजारी ना कौरों दल आये
 परि कजरी वन का गोरख जोगी^२ परभी न्हाइवै आयी
 अरी माता जा जोगी से वादु करुंगी मेरी भुमि नाद बजायो
 भाई जोगी जती से वादु न करना रहना दोऊ कर जोरै
 परि घुटी दवाई मुडिया जोगी जे तो अपरंपार ऐ
 जोगी जती से वाद न करना रहना दोउ कर जोरै
 सेर चून दे पांड पूजना जे जोगिन का वादु ऐ

१. टिडोरी से अभिप्राय टिड्डी दल से प्रतीत होता है ।
 २. गोरख नाथ को कजली वन का जोगी बताया गया है ।

७. कमर मुलका गस में सेली, भंग मभूति सगी बलबेली
 नागर पान बबाइ रह्यौ वीरा, सुघड़ नाथ खनारे नैना
 जाकं छोटी छोटी बाबरी, जाके कंधा भोरी फावरी
 पाइ पदम कलकें भाला, जाके गुदी परी बँजतो मासा
 पाइ पदम कलकें भारो, सदा नाम कौ भाजाकारी
 जाये मसमस की गूदरी, धरे सीनेउ को मूंदरी
 सो हीरा साज सगे नग सांभे म्हा गुदरो में
 सो कामरि भोडी स्याम कारी जि परमी बूझनु जांतु ऐ
 धरे सै पत्तुर भोपरिया^१ बस्यौ
 गामु नंगर पूछत फिरयो
 गंगा दगरी कितमें गयो
 धरे राजन की ड्यौड़ी पै गयो
 राजन कें परवन की रीति
 तुम मति बूसौ महस के बीस
 जब जाइ सुरति जोग की भाई
 हमकूं परदा कैसी रे भाई
 सन्तनाम सै बलस जामायौ
 निच्छावारी जाइ कहुं न पायो
 तुही तुही करि बोस्यौ वानो
 बौकि परी कौंता पटरानी
 मोती मूंगा मुकटा माल
 भरि साई सीने के धार
 भरि साई सीने की धारी, जे भाइ मई ड्यौड़ीन पै बाड़ी
 नैम धरम कूं कौंता डरो, दे परिकम्मा पाइनु परी
 सो भूके सो तो मोजन जें सेउ, प्यासे सो तो पानी की सेउ
 ए धाबा जी, रहि जाइगी नामना^२ तिहारी
 सो ई पा जोगेसुर मोइ भासिका^३
 धरी माठा काकर पापर क्या दिखसावै

१. भोपरिया = भोपड़ नाथ

२. नामना = मस ।

३. भासिका—(भासिका (पा) = भासीप, भासीबाद ।

मोइ परभी की वखतु बतावे
 एसा बात माइ ना सूभं परभी जाइ पंडवनु बूभं
 अरी कहां खेलें तेरे पांचो वीर अरजुन, भीमा सहदेव भीम
 सो गचकीली की वन्यी ऐ चींतरा ए बाबाजी
 सो गचकीली की वन्यी ऐ चींतरा ए बाबाजी
 देखि सीतल पेडु री मल्हारी
 म्वा खेलें पांचो पंडवा
 मातु कमंता भेटु बतायी, जब श्रीघड पंडन ढिग आयी
 भीमसैन भीयी कीनी, अत्र सहदेव नें दात्रु दीयी
 गाड़ि कचैरी पांड नाटु फूकि दीयी
 अरे राजा बैठे न्यावु चुकावें, इंदरु बैठे जलु वरसावें
 बैठे जंगल चरती हिरनी ।
 हम जोगी कूँ बैठें ना वनें, नवै कंठ पदमिनी फिरती, सिध गोरख जाग
 अरे वेटा उड़ता तीतुर उड़ता वाज, उडती जंग हिवाई
 हम जोगी से उड़ता ना वनें पांचो जनों से टक्कर खाई, सिध गोरख जाग
 अरे हम भी मरसी^४ तुम भी मरसी, मरसी कोट अठासी
 वेद पढ़ते विरमा मरिगए, जे परी काल की फांसी, सिध गोरख जाग
 अरे काकी गुरु तू काकी चेला, कहा तो तिहारी नामु ऐ
 अरे चेला गोरखनाथ की श्रीघड़िया मेरी नामु ऐ
 अरे वेटा कजरी वन मेरी स्थान, गुरु हमारे विद्यामान
 हम आए तेरी परभी न्हान
 तेरी कवै परैगी परभी पंडा वेद की बताइ
 अरे परभी पूजै सेठ साहूकार दुनिया श्रीर राजा
 भैनि भानजी न्योति जिमावै, जोरा श्रीरू तीहरि पहरावै
 जे करै गऊन के दान सीने में सींग मढ़ावै
 सो सिर पै टोपी, गांडि लंगोटी, वूझन आए ए बाबाजी
 तुम दान ती करीगे परमाधारी
 सौ कहा गंगा में तुम जी ववी
 गरव की बोली जी मति मारी पंडवा, वचन करीगे यदि ऐ
 जा बोली की म्यानों दुंगो वेटा, असलि गुरु को चेला
 परि छिमा खाइ श्रीघरिया चाल्यी आयी गुरुन के पास ऐ
 जै लै बाबा भोरी पत्तुर नांइ सधै तेरी जोगु ऐ
 परि जोग नांइ जोहर भयी बाबा विन खांडे सगरामु ऐ
 वेटा के पंडन्नें मार्यी, छेड़्यी के पंडनु दई गारिं

४. 'मरसी' शब्द का रूप राजस्थानी मारवाड़ी प्रतीत होता है ।

धरे बाबा ना पंडनु मे मारुयो छेइयो ना पंडनु दई गारी
धरे सबद की मार दई पंडनने लीया करेया काहि ऐ
बोसो बागर के पीर की भवद

८. मैं सई स्याम सरनि जमुना की तेरे धरन धिर साग्या ध्यान
धब जोगी बची सखी संन्यासी भगन हौठ धरि तेरा ध्यान
चारयो पहर भजनो में रह्ये प्राठ होठ गंगा धस्नान
तोनि लोक ते वारी न्यारी मयुच वेदन गाई ऐ
चौबीस घाट की कहा कहे महिमा धिष बिसरौति बनाई ऐ
उज्जलि कुम चीबे गुजरयो अपनो देह पुजाई ऐ
भूतेसुर कृतवास सहर में केसवदेव ठकुराई ऐ
धमख निरंजन तेरो अस गामे
मयुरा जी की पदम सदन में वह चमी जमुना माई ऐ
धरे घेठा कै पंडन कै प्रगिनि सगाइ दऊं कै कोड़ी करि डारौं
प्रगिन म देना, कोडी न करना बडा लगै अपराधु ऐ
बड़ी जामे गंगा माई की हरिसं गंगा माइ ऐ
धरे सबरे चेसा भरजी करौ सँ चीपी जोसी में धरी
बुम पंडवन के मारो मान, गंगाजी हरी,
धरे बेटा सब तीरथ हरि साधो, मान पंडन के मारो जी
सँ पत्तुर भौपरिया बन्पी, गाम भंगर पूछतु फिरयो
गंगा दगरी कितमें गयी धजी गाय पछरि बूडा पीपरो
बाबाजी म्वा गंगा कौ मारगु दन्यौ
जाकी नजरि परी पाठजी करके पै डाड़ो भयी
धरे हाथ जोरि गंगा सड़ी
जासते धीनद्यास महुरि माप नें करी
धसलि गुरू के चेसा हरिसं मोइ पत्तुर बीष
धरी हटि हटि गंगा बाबरी, हाथ मेरे फाबरी
जिया जस्तु धन तोमैं ध्याइ, कोडी ग्हाइ कंसकी ग्हाइ
हस्पारी ग्हाइ मरपारौ ग्हाइ, धव माउय ग्हाइ भनिया ग्हाइ
धरे मेरे हुकमू गुस्म की माई, गंगाजी तोमैं धोरुं न पाई
धरी कि माता तेरो जम पाराधन नाई, हम तेरे जम में कबऊन ग्हाइ
जोगी मिठ लोक से छुटी घाट, सिबसंकर में धोडयो भार
धीकृपन के धरन रही, मैं महादेव के सीस रही
मोइ करि सेवा भागीरपु सायो
धरे के बाबा जोरे में साइ डारो, मंज सोक घाइ डारी
दुनियां न्हाति मोम पाप की भरी

अरे ज्या पत्तुर में कबऊ न आऊं बाबा घर घर मांगी भीक ऐ
 भोरी हमारी कामधेनु, संसार हमारी बारी
 अरे जल कौ छोड़्या करै जुवाब, सुनि री गंगा मेरी बात ।
 क्या लगायी जोगी ते वादु, तुम ऐसी लहरि वही पटरानी
 जोगी और जोगी को तौमरा, काऊ लोक कूं बहि जाइ
 बैठि मगरु खार के बीच, जाइ काकरी सौ खाइ
 अरी माता आइजा पत्तुर, है जा पवित्तुर, गुरु करें निस्तारा
 बाबा नें पहला पत्तुर बोरा दरयाइ में पहला समंद समाना
 दूजा पत्तुर बोरा दरयाइ में दूजा समंद समाना
 तीजा पत्तुर बोरा दरयाइ में तीजा समंद समाना
 चौथा पत्तुर बोरा दरयाइ में चौथा समंद समाना
 पांचा पत्तुर बोरा दरयाइ में पांचा समंद समाना
 छठवां पत्तुर बोरा दरयाइ में छठवां समंद समाना
 सतवां पत्तुर बोरा दरयाइ में सतवां समंद समाना
 सातौ समंद आठई गंगा नौसै नदी नवाडा
 ताल पोखरा सबुई समाइ गए पत्तुर भरि ऐ नांइ ऐं हां हां ।

६. मूंगानाथ गामें, गुरु गोरख उस्ताद कूं मनावें
 सुन्दरनाथ अर्थामें छवि महरी की न्यारी ऐ
 चोआ चंदन और अरगजा आमै म्हक भारी ऐ
 भीतर परसि कें आए पीर, भीतर ऊते आए
 छवि डूंगरऊ की न्यारी ऐ
 डूंगर की छवि न्यारी, डोरी नाथ नें उतारी
 डोरी तौ उतारी जाकी सोभा वरनी न्यारी ऐ
 ऐरापति हाती सजवाए, लख चौरासी घंट लगाए
 नकूल कुमर हौदा बैठारे ।
 गुनु झाऊन में उड़ति दिखी रेती
 चली रे बेटा परभी सींमोती परी
 गैयन के से छूटे भुंड रीते पाए राधाकुंड
 ददवल कुंड, सकल बल तीरथ गंगा में जलु नाएँ
 हम परभी काए में न्हामें ।
 बारू रेत के जमि रहे खासे
 लैकै बंद सहदेव बांचें
 माइ कभंता पूछी एक पोथी वा पै धरी
 माता बाचि रही असलोक, कौ गंगाजी भई अलोप
 कौ सिवसंकर संग गई
 मोइ ब्वाई कौ भरमु समानों, गंगाजी मेरी ब्वाई नें हरी
 अरी माता सबरी पीहमि पै ढूँढ़ि ढूँढ़ि मारुं मेरी गंगा कहां लै जायगी

धरे गंगा में जलू माएँ मेरे बेटा समद करो प्रसनान ऐ
 गंगा ते चसो समद पै भाए समंदुर में जलू हतु माएँ
 समंदर में जल माएँ मेरे बेटा कूभा करो प्रसनान ऐ
 समंद चले गोला पै भाए, गोला में जलू न पायो
 धरी गोला में जलू नाएँ मेरी माता कहां करे प्रसनान ऐ
 गोला में जलू नाएँ मेरे बेटा महल करो प्रसनान ऐ
 गोला चले महल में भाए, महलमू में जलू माएँ
 नैक टिकी मेरे अजूम बेटा, ठाकुर पूजा जाके
 जली जमी मंदिर में घाई, जल की घडिया पाई ।
 परि मन चंगा कठौटी में चंगा, परमी लई ऐ साधि ऐ,
 राजाबाबू उंगरी कू बोरे बहुधरे म्वन लोटे ।
 धरे बेटा के धारी के बंगन छोरे के पनवारी के पान ऐ
 कै ती प्यासी गाय हटाई कै नीजे बामन लसकारे
 कै कोई जोगी कै कोई जंगम कै कोई सिद्ध सतायो
 धरी माता ना धारी के बंगन छोरे ना पनवारी के पान ऐ
 ना ती प्यासी गाय हटाई ना बामन लसकारे
 ना कोई जोगी न कोई जंगम ना कोई सिद्ध सतायो
 परि भूरंगा सी एक जोगना परमी बृहान भायो
 परि परमी नाई बतार्ई मेरी माता न्योई दियो बहनाय ऐ
 परि जानि गई पहिचानि गई बे भाइ गए गोरखनाथ ऐ
 ध्याकी रे धौपरिया चेसा हरि सँ गयो गंगा माइ ऐ
 गंगा बूडन निकरे हां, कौंती के पांशों हां ।
 भटकत बिकट उजार है हां ।

धजी कंधा गजा भीम से धरी, माइ बर्मता संग लई
 जे गंगा बूडन चले, के पंखा परबत पै चड़े
 धजी घामत देखे पांशी पंडा, पारवती म्यां छोटे भंग
 जे पडम देखि हसे, कि बाया गुफा में पंसे,
 धरे जोगी धय कहां जातु ऐ बदन दुराई
 दूर जा मेरी गंगा माई
 परबत की करि बालं धार
 मेरी गंगा थी हरि साए, बब की ही दामनपीर

भीम—

कुंती—

सिद्ध—

सखर बुभकारे खोर में परो, हाथ जीरि पामन तर परो ।
 धरे बेटा एक गंगाजी भापीरप सँ गयो राजा सगर की माती
 राजा सगर की माती बेटा दिमीप की, राजा
 से गंगा थी ज्योते अस्यो दाने' में लई ए छुड़ाइ ऐ

१. पुराण के जगु 'दाने' हो गये है ।

जब दाने की जाँव चीरी गंगा ने लीयौ परभाइ^२ ऐ

वार्ता—

गोरख— मेरे पास भभूत कौ गोला जल में दुंगो डारि ऐ
जल में दुंगो डारि पंडवा सूखौ लेउ निकारि ऐ
सूखौ लेउ निकारि मेरे बेटा घिसि घिसि अंग लगाऊं
सकल बरन ते कपड़ा उतारे कूदि परे जल बीच ऐ
परि पहली डूबक मारी पंडवा सीने के जौ लाए
परि दूसरी डूबक मारी पंडवा चाँदी के जौ लाए
परि तीसरी डूबक मारें पंडवा तांबे के जौ लाए
चौथी डूबक मारें पंडवा लोहे के जौ लाए
परि पांचई डूबक मारें पंडवा पाँडौ माटी लाए

कुंती— अर बावा सैर दलेले की रानी बांझ, रोवति ऐ सबेरे सांझ
बुन की कोखि हरी करै बावा तेरी जब जानूं करामाति

बाछ०— अरी मैना तेरे ऐ तीरथ कौ धाम, जोगी जती करें असनान
कोई पूरौ सिद्ध आवै बेली बांगर भेजि री

गो०— अरी हतिनापुर की रानी, तैनें बात कहीए स्यानी
मेरे हिरदैं बीच समानी
तोइ गंगा दीनी कौल की, तोइ परी का और की
तुम लंबी कूच करौ, क बेली बागर कूं चलौ
बोलोई बागर कौ पीर मदद ।

१०. चलि मेरे बेटा चलि मेरे बेटा
डिगरि चलौ औघरिया चेला हां
चलि मेरे बेटा डिगरि चलौ नगरी कौ लोगु दुख्याना
तम्बू मेख उखारि मेरे चेला कसना लीयौ बनाय
देसु भलो रे पच्छिम की घरतो और मिठ बोला लोगु ऐ
पानो मांगे दूध रे पिलामें देसु भलौ हरिआना ।
घर घर गोरी हांसिली मिरगा नैनी नारि
पानी मांगें दूध रे पिआमें देसु भलौ हरिआना
देसु भलौ हरिआना बेटा दही दूध कौ खाना
अजी काम जाम हांकि दीए, लंबे ऊँकूच कीए
जाते बौलै गोरखनाथ बेटा देस कौन रे

औ०— बौबाजी चलतूं अगारी, बागर छोड़ि दई पिछारी
सैर कामरू धना

आसनु करौ बनाइ, तम्बू नाथकौ तना
हाती पीलमा लाए, तम्बू ठाड़े करवाए

रूपि गई तम्बून की कनाठ, जुरि गई जोगीन की जमाठि ।
 जिनने भासनु करयो बनाइ, कि तम्बू मीरे पै तनी ।
 पायो भूमरिया चेसा, दीयो पोबिन के डेर
 पोबिन घादर भाव कीयो, जानें मूड़ा डारि दीयो ।
 जानें पड़ि पड़ि सरसों मारी, नाय की घकसि गुम्भ करि डारो
 जानें बकरा गया बनायो, हाकि पूरं पै दीयो
 पायो कानी का चेसा, दीयो धीमरि के डेर
 धीमरि घादर भाव कीयो, जानें मूड़ा डारि दीयो ।
 जानें पड़ि पड़ि सरसों मारी, नाय की घकसि गुम्भ करि डारो
 जानें बकरा करि बिरमायो, बाधि छूटा छे दीयो ।
 बेटा बस्ती बड़ी सम्यौ परकोटा, सङ्ग बस्ती की एकु सपेटा
 तुम छोरो कुंडी पटकौ सोटा
 तुम भाव भूमति सै घाघी चेसा बेगि जाठ रे
 कामरु की मारी, घञी विद्यामान भारी
 छोड़ि बरितास छोड़ो कासिका भमानी,
 मंडा घोर बकरा कोए जोगीन के बासरा
 धीघड़नाथ गए छेमी के मुंडा बंसु बनायो हाकि पाटि में दीयो
 घञी दम्भकः दम्भा पानी पेने, तेसिनि हातु सबेरो फेरै
 धुनी चोकसे बेनई रांइ, घञी पीता में मुंह मारें, प्याह तैनिनियो करै
 हायु झोरी में डारयो, चेसा मोरनायु काइयो
 कर जोरि नयो ठाड़ो
 में हुकमु नाय पाऊं, गड़ कामरु चेताऊं
 गुरु ने पंजो धरि दीयो, नीरु मोलि मरु सीयो
 दुनिया प्याम ठी मरी
 जब जेहरि परि मई मीम नारि पानी कू जमी
 मनी मुपनेमी छोड़ै प्रेम पीताम्बर मारी
 घांगो गान न मरुहारी
 घासि मपुर मी पारी
 जेहरि परी उतारि नजरि नाय की परी
 मोरगनाथ पारी, विद्यामान गे रे भारी
 इनने विद्या दरनामी, बिद्या बाधि मरु मई
 जब मपई हरि के मारि हाकि मीम में मई
 कामरु देग की गबरी मरुहिया मरु मपई हरि डारी
 परि मरुनों रूनी दान चबानी बहु पूति करि डारी
 एक जाट में बरी मुदाई रोटीन की नेड़ी देन
 बीयो बांगर के पोर की मरुइ

वार्ता--

११. चलि मेरे बेटा डिगरि चलौ हरिआने कूं करौ कूंचु ऐ
 उखरी तम्मू और कनात, चलि देई जोगीन की जमात
 जाते बोले गोरखनाथ
 बेटा हरिआने कूं चलौ
 मजल्यौ मजल्यौ जोगी चाल्यौ मजल्यौ पै आसन माड्यौ
 आसनु माँड़ि भगम्मरू तान्यौ बैठ्यौ जलु थलु पूरि ऐ
 हरिआने की सीम में बाबा नें वजाइ दयौ नांड ऐ
 हरिआने को रानी बोलो, जे आइ गए भीलानाथ ऐ
 अरे जा मेरे बेटा डिगरि चलौ दूध के भोजन लाइदै
 अन्न के भोजन नां मैं जेऊं बेटा दूध के भोजन लाइदै
 अजी लै पत्तुर औघरिया चल्यौ
 ओघड करी नाद में घोर, जब चौकें जंगल के मोर
 हाजुर ऐ सौ भेजि माता
 बाबा दूधाहारी ऐ
 अन्न के भोजन नांइ लेइ माता बाबा दूधाधारी
 कै तो माता दूध री पिलाइ दै नां तौ ओटि सरापु ऐ
 नाद में नाएँ, गोद में नाएँ दूध कहां ते लाऊं
 पार के नाएँ परौसी कै नाएँ दूध कहाँ ते लाऊ
 गाम में नाएँ परगने में नाएँ मैं दूध कहां ते लाऊं
 अरी कै तौ माता दूध री पिलाइदै ना तौ ओटि सरापु ऐ
 अरे न्हाइ धोइ कुमरि चौकी भई ठाड़ी, सुरति करताते लगाइ लई
 बाबाजी मेरे ख्याल परयां ऐ
 बेटा जसरत के उदई के नातीं, मेरी तुमई ते डोरि लगी ऐ
 जाकी छ्ठी कुचा ते धार धार पत्तुर में आइ गई
 जानें पत्तुर भरयौ ऐ अकोरि दुआ मेरे गुरु की आइ गई
 अरे क्या तुम देऊ भीलानाथ कहा मेरें हतु नाएँ
 अजी जे तुमनें माग्यौ नाथ दूध मेरें हतु नाएँ
 अरी माता नौ कोठी मारवाड़ में
 छप्पन कोट हरिआनों
 बारह पालि भेवाति ऐ
 अन्न चाल परि जांय
 पानी के जवाल परि जांइ
 परि दूध घनेरा होइगा
 बोलौ बागर ई पीर की मदद ।
१२. किए कूच पँ कूच संग सवु चेला लै लीये
 राजा उम्मर के बाग नाथ ने डेरा दै दीये

सूखे बाग में मलि रहे बाबा काळ हरियस में खलि रहना
 सूखी से तो हर्षो है जाइगी भान बाग गुजरान ऐ
 नगरी ते कुरी बटोरिसा बेटा जामे दै दै प्राणि ऐ
 धूनी दई धूधां धूमइानी मोर रही बनराय ऐ
 परि हरी डारि पं हरियस बोल्पी मुनिया सास सिगारे
 परि सासामी धोपरिया मार्यी गिर्यी खोडिगी केसा
 भरे बाबा गलगली बोलि गलगला बोल्पी
 स्यांपु सिगारयी कलजुग की बिलैया बोली
 मूं सौ बूकतु भायो
 परि सुपरमात करन की ऐ पहरी नगर समासे भायो
 परि भनि धनि रे कलि गोरख जोगी हर्षी जियी धेने बागु ऐ
 भरे बेटा भूक प्यास की कोई नाइ भूके दंडीतन के डेर ऐ
 भरे प्यास लग्यो धोषइिया चेसा पूंटक पानी प्याइ ई
 परि बाबा औरे बाग में गोसा हों ती बागु सूति चो जासी
 भरे बेटा जा राजा में बागु सगायी पहरे सुदायो होगी कूमा ।
 पीर को मदद

१४. भरे सँसई तोमा डोरि

नायु गोसा पं भायो
 कूमा पं जी पाए श्रीक्रीदार भरे ती जसु जहइ बतायो
 जस मठ पीवं नाय भरे पीयत मरि जाइगी
 राजा नें रसबारी बँटारे
 मारें दहसति के मारे
 मने जी बूड़े तीनों सोय जहर मोद बहूँ नाइ पायो
 में धाइ गयी बागर देस जहर कूमा में पाइगयो
 चेसा के जी मन में पाप नाय को टोनी सुंगी
 संगोटी सुंगी
 बाबाजी की बनमक बटुमा सुंगी
 पाइ लटाळ हाडीदांत की बँजती माता सुंगी
 बाबा की सीहरी गुमिरिमी हात की ऐ सँ सुगो
 मूगेरी छोटा सँ सुगो
 जाकी कोलत पोड़ा सुगो
 मथरी मउ घसमाइ नाय कू ठोकि लखइिया दुयो
 दतना पायु बिपारि नाय नें तोमा फारिनी
 तोमा दोयां फामि नाय ऐ जसु मांइ पायो
 देने बाबरी सास नाय गहमरि के रोयो
 राजा की माइ दोमु दाग धाने करपन की
 जो दुग निगो ऐ निनार नाय गाई मूजरयो बहिये

मन में बड़ी घबड़ानों
 अरे आयी गुरु जी की नामु गोला तो मुंहड़े जूं उमग्यी
 पानी पाछे भूमारियौ, मरुए ते लाग्यी
 अरे डोंडा चलि बाज्यौ फुलवारी में लाग्यी
 अरे तौमां भर्यौ ऐ भुकोरि नाथ के आसन आइ गयी
 अजी तौमा धर्यौ ऐ अगार सरकि पीछें भयौ ठाड़ौ
 बरकिगे भोलानाथ चेला तौ मेरौ कहां गयौ ऐ
 बाबाजी मैं पाछें ठाड़ौ
 अरे बेटा नैक आगें आइजा, कुल्ला करवाइजा
 अरे नैक थोरौ सौ पीलै पानी
 पानी के बंदा जौरें न जाइगौ
 बाबा सुनि आयौ मैं पानी की बतायौ
 जहरु ऐ पानी, पीऐं ते है जाउगे नाथ गुरमानी
 अरे बाबाजी पीवै तौ पीलै नाथ अरे नई लुढकाइदै
 अरे नई उल्ले तै पल्ले ऐ प्याइ दै
 अजी आकनाथ, ढाकनाथ पत्थरनाथ
 नई सबु चेलनें प्याइदें
 पानी के जौरें न जांगौ

वार्ता—

रंगी चंगी बौ भौनारी, खोटी भींह मुलम्मे डारी ।
 घिसि घिसि एड़ी धौबै नारि, उनके गोरख द्वार न जाइ
 वाती खैचि चूलिह में देई. हौलै हौलै मेरी चन्दो मगरे लेइ
 झंगा विछावै सोवै नारि, पार परोसिन जौरें न जाइ
 हींसतई व्वाइ छोड़ी कंठ, सोमत ई व्वाके देखौ दंत
 रोमंति पीसै, सिनकित पवै, सदां दिलदर उनकें रहै
 तिल भौरी मांथे मसौ
 और कनफुटी लीक, भाजनों होइ तौ भाजि कंता नई बेगि मंगावै भीक ।
 अरे बनि ठन औघडनाथ बस्ती में आइगयौ
 मांगत जी मांगत नाथ पल्ली होर कूं निकरि गयौ
 नाऊन के मांड
 जाते कोई माई मुखना बोलै, औघड़ गलियन में डोलै
 कुअटा पै चवैया, गलियन में गैरा
 एक सखी ज्यों कहै राज की ऐ बेटा
 जाके गुरु नें खंदायौ जे तौ मांगि न जानै भीख
 जाके घर में नारि करकसा
 जाकें मारी बोली, जाई ते भैना है गयो जोगी

गुबर पार्यंती नारि धरे भसनाए खिसावै
 धरे पसना में भुसावै
 धरे तुम कहाँ गये भोसानाय धरे मोह न बतावै
 मैया री मेरी में मांगन घायी भीस भेरे गुरू में खंदायी
 जिध देखि राजकुमार क मेरी तौमा रीतौ
 जा नंगर कौ पापी राजा रैयति संगयी डाड़ि ऐ
 राजा में सब परजा डाँड़ी काळ में घासति भाएँ
 धरी मोह भोख न डारै
 भलो रे मगर, धरमातमा राजा, बाबाजी तुम धभाये डोली
 ऊँपी पीरी बक दुबारी एक दता भूमँ द्वार
 रानी बाघिस मगर दृहाई जब रैयति धर पावै
 बुनकैते सै भावै रे बाबा जब रैयति धर पावै
 गोई खेई महस बताइदँ ठकुरानी माध निवाजँ तोइ
 माध निवाजँ सब दुस भाजँ
 जो तुम करौ सोई तुमँ छाजँ
 रानी बाघिस की पीरि पै श्रीपड़ की वाग्यो नादु ऐ
 पीर की मदद ।

१४.

शिर उतारि धरयो री रानी में सिर से सोटा डारयो
 एक हाथ से सोटा डारै दूजें सँ मोड़ें पीठि ऐं
 सुनिसै री रुकमा पै बाँदी बाबा कँ डारि जा भीक ऐ
 भीक सै तो भीक दैघा नहीं बातन में धिरमाइसै
 पार भरे री यजमानिक मोतो पार बाधी भरो मिच्छा सार्व
 सँतु ऐ तो दू सै यजमारे मारुँ डकेसा धारि ऐ
 परि बाँदी ते बाँदी कही तव मन में है गई धागि ऐ
 पकरि पांम भोखटि से मारुँ डाड़ दांत जाइ टूटि ऐं ।
 डाड़ दाँति जाइ टूटि यजमारे करि करि हनुमा छाइ ऐ
 परि बाँदी गारो दै गई सतपुर की जीतय भाएँ
 परि धागें धा मैया धागें धा तेरे सऊँ हाथ की भीक ऐ
 परि धागें सई मुसाइ बाबनँ स्वाकी दई बिछाइ ऐ
 पहलो सोटा ऐसो मारयो गयो हाथ से धारुँ ऐ
 दूजो सोटा ऐसो मारयो भयो बुरीनु को डेरु ऐ
 तीसरी सोटा ऐसो मारयो डारयो कमफटो फोरि ऐ
 डारि मोरिया छिबिरी गया जब बग करि बत करिहोइ ऐ
 परि धापनु रानी न्हयन संजोबँ जोपोन पै पिटबावै
 बे बाबा ते पर पर डोलें बे कऊ मा मारें
 तुम बाबा से कुबधन बोपी बाबा में गया लगारै
 परि घात कड़ाँ तेरो, भुम मरिबाइ दऊँ बाबाजी ऐ सारुँ दै बोमि ऐ

अरे रानी जहां भेजै भवां जाऊं मेरी रानी बाबा मांऊ अब न जाऊंगी
परि भकर भकर बाकी आंखि बरै सोटन की मार लगावै
अरी महल चढ़ी तोइ बोलै कमंता सुनि बाबाजी बात ऐ
पीर की मदद ।

१५.

पतिभरता के द्वार नाथ नें नादु बजाइ दयौ
धार भरे गजमानिक मोती रानी भिच्छा लावै
लीजौ रे परदेसी बाबा जोगी आस्या लागी तेरी
तेरे हात की भिच्छा न लुंगी माता बालातन की बांभ ऐ
बांदी आई मेरी मारि कें बिड़ारी मोइ का ऐबु लगावै
नांती हमारे पलना में भूलें बाबा बेटा गए रे सिकार ऐ
पांच चारि तौ घर आंगन खेलें द्वै भैसिन पै ग्वार ऐं
जो मैया तेरें लालु घनेरे एक फलु माग्यौ देना
तीरथ बरत करावें बहुतेरे तेराहुँ तोइ मिलायें
सुनियों री मेरी पार री परौसिन जा बाबा के बोल ऐं
में आई बाबा पै मांगन बाबा बेटा मागै
तुम रे गुरु मैंने सेए घनेरे पूरी मेरी काऊनें न पारी
हां जो सेअ्री जो निगुरी सेअ्री सतगुरु भेंद्यू नांइ ऐ
जाइ नांइ सेवै माता मेरे गुरु ऐ हरयी री कीयी तेरी वागु ऐ
नामु सुन्यौ रे जानें हरे रे वाग कौ सीतल भयौ रे सरीरु ऐ
कौन गुरु रे तुम का के चेला कहा तिहारौ नामु ऐ
चेला गोरखनाथ कौ औघड़िया मेरौ नामु ऐ
नामु सुन्यौ गोरख जोगी कौ जाकौ सीतल भयौ सरीरु ऐ
हां बाबाजी बैठि जा गुरु कह देउ मन की बात ऐ
चारि घरी रे बातन बिरमायी तौजूं भोजन है गए त्यार ऐ
आ बाला जी बैठिजा गुरु बैठि कें देंउ जिमाइ ऐ
लै पत्तुर आगे धरयी जाइ भरि दै राजकुमारि ऐ
दाबि भरुं तेरौ पत्तुर फुटै बहि में भोजन छोजै
छोटौ पत्तुर मुकति घनेरी कहौ नाथ क्या कीजै
सैज ई लैन सहन ई दैना सहज करौ ठकुरानी
सहज ई सहज करौ ठकुरानी पत्तुर सब की करै सम्बाई
अरे बाबा बारह भेंगी पकमान समाइ गए दस बूरे के मांट ऐ
परि सोलह कलस जामें घी के समाइगए पत्तुर भरिए नांइ
उभकि उभकि पति भरता देखै भरै न रीतौ होइ ऐ
पत्तुर पूजि छत्तरू पूजि कालकंट भाजै दूरि
जा भंडार ते आवै सदा भरपूर
अलहदास करते की बानी
क्या करंते कूं क्या करे

रोते मंदिर फेरि मी मरे

जो बाबा महूरि करे ।

भागें भागें धौधर बेला जाके पीछें राजकुमारि ऐं
जबई बाग किनारे भाई सतगुर की सुनि गई तारो
में भावरिया नगर सदायी बेटा घरबारी बनि भायो
करे ठगो संनें गई माई करेठग्यौ घरबारी
नाइ ठगो गई माई नाइ ठग्यौ घर बारी
सबा साख बागर की रानी सेवा करन तेरो भाई
सेवा करन तेरो भाई सटभारी बाबा भोजन भौतिक साई
जा मैया वं सेवा न होइगी बेटा जा परू राजू रिस्पाइ ऐं
जोगी नाब परी मन्डभार पार मोइ करबा रे जोगी
मामना बाबा रहि जाइगी तेरो

मो घर कोई न रिखाइ पिया परवेस गयी मेरो

घासरी बाबा भाइकेँ नियो ऐं तेरो

परि जे कचन सी देह खाक में सगाइ सठं ठन में

सेबा की बाबा साधि रही मन में ।

धरी माता तिहारो तौ रहमों महरो मन्दिर न्यां जगल की बाधा
धरे बाबा तुम तौ रहियोँ महरो मन्दिर में न्याई करूँ गुजरान ऐं
धरी माता तिहारो तौ खानी पानु मिठाई, हमारो भाक धतूरो
धरे बाबा तुम तौ खद्यों पानु मिठाई भाक धतूरो साठं
परि दाब' काटि करि सीयो बिछोना घासन भेंटि बनाइ ऐं
परि चौदहसौ धूनी रोजू सगाबैं चौदह संनु डारि डारि धारें
परि मूठ छबरिया हात बुहरिया केसन के पग भरें
परि एक हात ते सूभा पढ़ावें दाए ते डीरठि म्यारि ऐं
परि सूभा पढ़ामति गनिका ठरि गई बाछमि ठरि गई गोरख ठे
चारि महीना पड़े जड़कारे जाड़न के जमि गए पारे
चारि महीना परी घोपरी रमि गयी घोसन हारी
परि बोलन हारी रमि गयी मोटी रही निषान ऐं
पच्छिम दिसा की प्रांभी भाई बाछिस की बंध्यो मटूसा
चारि महीना घोरि घोरि बरस्यो ऊपर पासु हरियाणी
जानों में पछी भडा धरि गए सिक्कसा है उड़ि जाना
परि बाछमि बमई है गई सरप रहे भिपटाइ
बारह वर्ष में तीनि दिन बाफी जामे गोरखनाप ऐं
परि मुनिसें रे धौपड़िया बेसा बो माई कहाँ गई ऐं
परि कुड अराइ दई प्रागि राबरि मोइ नाइ रही ऐं

१. दाब—दाम, दुर्बा ।

परि जोगी उठियौ लहराइ हात लई पावरी
 सीसु बचायौ नाथ पिंजरा भारि डारयौ
 परि सिर पै धरि दीयौ हातु भमानी करि डारी ऐ
 तू अपने घर जाउ तपस्या पूरन भई
 मैं सोइ गई भोलानाथ तपस्या नांइ भई
 अरी ऐसे भोजन लाउ ब्वा दिन लाई री
 हुकम देउ तौ जांउ बे हुकमें नां जाइबे की ।
 अज्ञा मांगि भोरी माइ महल पग धारै
 पीर की मदद ।

१६. सब पीरों में पीर औलिया जाहरपीर दिमाना है
 दोनों जोरुआ मारि गिराए कीया राज अमाना ऐ
 डिल्ली के आलमसाह बास्याइ विदरगाह बनाई ऐ
 हेम सहाय ने कलस चढ़ाए, दुनिया भारत^१ आई ऐ
 मकुवा हाती जरद अम्बारी जिही तुमारे काम का
 नवल नाथ सांची करि गायें वासी बिन्दावन धाम का जी
 ठगन बिरानी आस ठगिनी आमति ऐ
 मैना मिलि लै कंठ मिलाइ मौतु दिन बिछुड़ी जी
 अरी जोगी का दोसु सरीरु तुजाइ लौ री
 गुर गारी मति देइ कोढ़िन है जाइगी
 गुरुन के पूजों पाइ गुरु नीति जिमाइ लै री
 गुरु मेरे भोलानाथ भैनि मति कोसै री
 कासी सहर ते पंडित आए री पुस्तक लै आए री
 पुस्तक लाए मेरी भैनि भौतु समभाई री
 अजी आजु नगर में तीज मैना कपड़ा मोइ दे री
 जे कपड़ा ना देंउ और लै जइयौ री
 अरी गुन में दे दे आगि पुराने भैना मोइ दे री
 अरी दुहरे तिहरे थान रेसमी जोरा री
 कम्मर के लै जाओ जामें बड़े बड़े इब्बा री
 नैनू की चादरि लैजा जामें जरद किनारी री
 मिसरु की चादरि लैजा जामें गोटा लगि रह्यौ जी
 अरी ऐसे मति बोलै बोल करुंगी हत्यारी
 बगुदा लै लीओ हात बुरज पै चढ़ि गई री
 सुनौ बस्ती के लोग याइ हत्या दै देंउ री
 तेरे पिछवारें नदी जाई में बहि जाऊंगी री
 तेरे अंगना में कुइया भड़कि मरि जाऊंगी री

धरी छै पसरी बिमु खांड टका भरि तोइ वेंक री
 पीनी ते फारू पेटु सरबा में डूबू री
 धरी ना कपड़ा देइ माइ मुख ते बोसै री
 कलिकी असलि ममानी जानै बगदि बुसाइ लई री
 कपड़ा दिए उतारि जब मन फुली री
 फुली अंगना समाइ कुठीसा रानी है गई री
 धरे सेरक चामर रीषि नाथ पै धारै री
 भोजन धरे ऐ अगार सरकि पीछेई ठाड़ी री
 धरे भाजन भोग सगाइ महरि करि मोपै री
 बाबाजी भोजन भोग सगाइ महरि करि मोपैरे
 अजी बरकिगे भोजननाथ बेटा बे माई नाए रे
 अजी औभब भरि ययो साखि औष ना धारै रे
 बी माई पिधरी पिधरी ब्याइ बोसै बोसु न धारै रे
 बेटा बो माई हति नाइ हलमुष्टी कहति धारै री
 बेटा बो माई हति नाइ बेटा जीम घनेरी लाई री
 धरे बेटा बुही ऐ गाई गुई है माई सा घटुमा दरिधारै
 अजी घटुघा में डारयो हातु आस है जो पाए री
 धरी संत के तो लं जाइ फसै औष फूसै री
 धरी बै सत के सजाइ होंत भरि जाइगी री
 अजी डाढ़ी में है दऊ प्रागि नाथ मति कोसै रे
 पीर की मदद ।

- ७ धरी मना जोगी डिगरै जाइ रांड छेनें सेए री
 धरे भरि घहगीनु भें मालु बाग पगु धारै री
 ठाड़ी रहौ जोगी छनक तुम ठाड़े बाबाजी
 गाइ दुहाई मने खीरि रंघाई सई जोगी जी
 गाइ दुहाई मने खीरि रंघाई सौ मन कीमी सपसी
 ए तेरे काजें मने गूदरी सिमाइ सई तेरे खेतन कूं टोपी
 मने तो जानी सतगुरू मिल्यो धरे बाबा निकरथी ऐ असलि बरीसु
 याबाजी बिरफत है गई ग्यास जी
 ए पति पै खेमी नौऊ स्योखा
 धरे बाबा संपति पै उजई ग्यास जी
 धरी ऐसी फाबरी मारि बेटा ठगिनी धारै री
 ऐसी फाबरी मारि बेटा इतमें न धारै री
 मुन्यी फाबरी की नाठ मया पहभरि रोसै री
 ठाड़ी रहै बीरा रे बाट बटोहिया मेरे मा बे जाए होजी
 धरे तनें कहुं देसै गोरननाथ जी
 धरी धूनी न मंतें भौरा बच्यो धरी माता बना पूछति ऐ मोइ

अरे जिन धूनी में भोरी जरि मरीछु अरी मैं फूल पहुँचाऊं बाके गंगाजी
 बाबाजी पेड़ जी बए बमूर के मैं आम कहां ते खांड ए
 मैया परि तेरी सूरति तेरी मूरति तेरे नगर कोई और ए
 बाबाजी मेरी सूरति मेरी मूरति मां की जाई बहना
 मेरी सूरति मेरे कपड़ा मांकी जाई बहना ।
 परि महलन में तौ मोइ ठगि लाई भांग प्याइ गई तोइ ए
 मैया ब्वा ठगिनी ए ठगि लै जानदे माता ग्वाइ ठगे भगमानु ए
 परि सेवा मारी गई मैया और करै फलु पावै
 बाबाजी अब सेवा कैसें करूं जोगी डिगबिग डोलै नारि ए
 परि अब सेवा कैसें करूं माता धीरे परि गए बार ए
 बाबाजी अब सेवा कैसें करूं बाबा हालन लागे दांत ए
 बाबा परि मौति बूढ़ापा आपता सबु काऊ कूं होइ ए
 पीर की मदद ।

१८. अरे दाब काटिकरि लीयौ बिछौना आसन लेति बनाइ ए
 अरे खलका छोड़िकें गोरख चाले ठाकुर पै कीनी फिरादि ए
 ठाकुर ज्ञानी ज्यों उठि बोल्यौ चों आयौ मारे लोकों में
 रानी बाछलि करी तपस्या फलु दीजौ पति भरता कूं
 परि नांद में नांए, बेद में नांए, फलु नांए चारौ जुग में
 गोरख चाले ठाकुर चाले जब आए सिवसंकर पै
 महादेव जोगी न्यों उठि बोल्यौ चों आयौ म्हारे लोकों में
 अजो बाबा पति भरता ने करी तपस्या फलु दीजौ पति भरता कूं
 ठाड़ी गवरिया गुदरी हलावै फलु न पायौ गुदरी में
 अरे जोगी नांद में बेद में नांइ फलु ना पायौ गुदरी में
 परि गुदरी में फलु नांइ चारों जुग में
 परि तीनों मिलिकें म्वातें चालें तब आए ब्वा जोटों में
 अरी बरती जोति में गोरख समाने भभूति लाए मांस भरि
 अंगु मैलया मथि मल्या गूगर की डरी बनाई
 परि निरंकाल की करी खोखला अन्तर के भीतर लाया
 परि जा गूगुर कूं लैजा माता होइगा गूंगा पीरु ए
 बाबाजी हाल की आई तोते ब्दै फलु लै गई
 मोह गूंगा गैरा दीयौ
 अरी गूंगा नांए बाबरा नांए सच्चा जाहर पीरु ए
 अरी जोरन की ना पैदि करै वांगर कौ भंजे राजु ए
 अरी जोरन की नापैदि
 पीर की मदद ।

घरी छे पसैरी बिनु कांठ टका भरि छोड़ देंऊ री
 पौनी ते फारू पेदु सरबा में डूबू री
 घरी ना कपड़ा देइ नाइ मुख ते बोसै री
 कलिकी अससि भमानी जानें भगदि बुसाइ लहं री
 कपड़ा बिए उतारि जवै मन फूसी री
 फूसी प्रंगना समाइ कुठोसा रानी है गई री
 घरे सेरक चामर रींधि माप पे घाबै री
 भोजन घरे ऐं भगार सरकि पीछेईं ठाड़ी री
 घरे भोजन भोग सगाइ महुरि करि मोपै री
 बाबाजी भोजन भोग सगाइ महुरि करि मोपैरे
 भजी बरकियो मोनानाप बेटा भे माई नाएँ रे
 भजी भौभड़ भरि गयो साखि भौध मा घाबै रे
 बी माई पिभरी पिभरी ब्याइ बोसै बोसु न घाबै रे
 बेटा भो माई हति नाइ हलमुष्टी कहति घाई री
 बेटा भो माई हति नाइ बेटा जीम भनेरी लाई री
 घरे बेटा कुही ऐं गई गई है माई सा बटुभा दरिघाई
 भजी बटुभा में डारयो हातु जाल ई जो पाए री
 घरी संत के लो सं जाइ फसै भौध फूसै री
 घरी बै सत के संजाइ होंठ भरि जाइगी री
 भजी डाढ़ी में दै दळ भगि माप मति कोसै रे
 पीर की मदद ।

१. घरी मैना जोगी डिगरं जाइ रांड सैनें सेए री
 घरे भरि बंहगीनु में मासु बाग पगु धारै री
 ठाड़ी रहै जोगी सनक सुम ठाड़े बाबाजी
 गाइ दुहाई मनें खीरि रंघाइ सई जोगी जी
 गाइ दुहाई मनें सीरि रंघाई सौ मन कीनी भपसी
 ए तेरे काजें मनें गूदरी सिमाइ सई तेरे खेसम कू टोपी
 मनें लो जानौ सतगुरू मित्यी घरे बाबा निकरधी ऐं अससि करीनु
 बाबाजी बिरफस है गई ग्यास जी
 ए पति पं खेसी मौऊ म्योरता
 घरे बाबा संपति पं उजई ग्यास जी
 घरी ऐसी फाबरी मारि बेटा ठगिनी घाबै री
 ऐसी फाबरी मारि बेटा इतमें न घाबै री
 सुन्यी फाबरी को मांठ मैया महभरि रोबै री
 ठाड़ी रहि बीटा रे बाट बटोहिया मेरे मा के जाए होबो
 घरे सैनें कहुँ देखे घोरसनाप जी
 घरी घूनी न मँते भौटा बन्वो घरी माता बया पूछति ऐं मोइ

अरे जिन धूनी में भोरो जरि मरीछु अरी मैं फूल पहुँचाऊं बाके गंगाजी
 बाबाजी पेड़ जी बए बमूर के मैं आम कहां ते खांउ ऐ
 मैया परि तेरी सूरति तेरी मूरति तेरे नगर कोई और ऐ
 बाबाजी मेरी सूरति मेरी मूरति मां की जाई बहना
 मेरी सूरति मेरे कपड़ा मांकी जाई बहना ।
 परि महलन में तौ मोड़ ठगि लाई भांग प्याइ गई तोइ ऐ
 मैया ब्वा ठगिनी ऐ ठगि लै जानदे माता ग्वाइ ठगे भगमानु ऐ
 परि सेवा मारी गई मैया और करै फलु पावै
 बाबाजी अब सेवा कैसें करूं जोगी डिगबिग डोलै नारि ऐ
 परि अब सेवा कैसें करूं माता धौरे परि गए बार ऐ
 बाबाजी अब सेवा कैसें करूं बाबा हालन लागे दांत ऐ
 बाबा परि मौति बूढ़ापा आपता सबु काऊ कूं होइ ऐ
 पीर की मदद ।

१८. अरे दाब काटिकरि लीयौ बिछौना आसन लेति बनाइ ऐ
 अरे खलका छोड़िके गोरख चाले ठाकुर पै कीनी फिरादि ऐ
 ठाकुर ज्ञानी ज्यों उठि बोल्यौ चों आयौ मारे लोकों में
 रानी बाछलि करी तपस्या फलु दीजौ पति भरता कूं
 परि नांद में नांऐ, बेद में नांऐ, फलु नांऐ चारौ जुग में
 गोरख चाले ठाकुर चाले जब आए सिवसंकर पै
 महादेव जोगी न्यों उठि बोल्यौ चों आयौ म्हारे लोकों में
 अजी बाबा पति भरता नै करी तपस्या फलु दीजौ पति भरता कूं
 ठाड़ी गवरिया गुदरी हलावै फलु न पायौ गुदरी में
 अरे जोगी नांद में बेद में नांइ फलु ना पायौ गुदरी में
 परि गुदरी में फलु नांइ चारों जुग में
 परि तीनों मिलिके म्वातें चालें तब आए ब्वा जोटों में
 अरी वरती जोति में गोरख समाने भभूति लाए मांस भरि
 अंगु मैलया मथि मल्या गूगर की डरी बनाई
 परि निरंकाल की करी खोखला अन्तर के भीतर लाया
 परि जा गूगुर कूं लैजा माता होइगा गूंगा पीरु ऐ
 बाबाजी हाल की आई तोते व्दै फलु लै गई
 मोह गूंगा गौरा दीयौ
 अरी गूंगा नांऐ बाबरा नांऐ सच्चा जाहर पीरु ऐ
 अरी जोरन की ना पैदि करै वांगर कौ भंजे राजु ऐ
 अरी जोरन की नापैदि
 पीर की मदद ।

१९. धरे लई ऐ बराती हात रानी बांटे ओ बनार्य री
 धरी खाइ भे मेरी भेनि तेरे नरसिंह होइगी रो
 होइगी पूत सपूत बड़ी मरदानों री
 धरी खाइलें खजुभा की मारि तेरे मजुभा होइगी री
 धरी होइगी पूत सपूत बड़ी मरदानों री
 लीली बँधी ऐ घुबसार जानें सबदु सुनायो री
 दूध कुड़िमा मंगवाइ गूगुर घुरबायो री
 धरी खाइलें मेरी बीर तेरे लीला होइगी री
 होइगी पूत सपूत बड़ी मरदानों री
 धरी गोरखनाथ मनाइ रानी गूगुर बायो री
 धरी गोरखनाथ मनाइ रानी घट में डारै रो
 धरी घोरानी जिठानी भेना जुरि भाषी री
 धरी घोरानी जिठानी जुरि भाषी घांगन भरि भाषी री
 घोरानी जिठानी बँठि मंगस तुम गाषी री
 धरी सब सब के सैरी तुम पैरों लागो, धरी तुमारी होइ सलना घोतार
 बड़ी बड़ी रानी ब्याई बँठी लखत पै, लस लस के बंगला हो जी
 कुपरी गई ऐ जाकी सुपरी ए भाई, धर कर की कामिनि हो जी
 नांदी भी बाड़ी धिरजी जी जीभौजी, मेरो बाछलि भेना हो जो
 धरी कि तेरे होइ बेटन घोतार
 धरी कि तेरे धरिगे सांतिए द्वार जी
 सब सब के ली रानी पैरों लागी, सोनमतिन रानी है जो
 धाजू धपनी मंदुलि के लागी हति नाइ
 मेरे मेरे पैरों रो तू लो माइ लगे मेरी भावज प्यारी हो जी ।
 धरी तोइ धाजू नंगर से वेउनी निवारि हां हां जी
 मेरे मेरे पैरों री तोइ लो नंगर से मं ली ऐसी निवारि दू जी
 मेरी भावज प्यारी हो जी
 जैसें ब्रुभ मसारी ही जी ।
 तेरे तेरे पैरो मं ली बबळ म लागू मेरो मंदुलि प्यारी हो जी ।
 मेरे हुकमू गुरू की माइ
 धरी तू ली री मंदुलि ऐसें बनाई जैसें भगनी की हाई हो जी ।
 धरी ब्यानें सीया ऊ दई ऐ निवारि*
 तेरे करेले भेना बछुना होइगी मेरी मंदुलि प्यारी जी

* लोक-कवि में लोक-कथा को ही प्रामाणिक माना है । प्रति प्रसिद्धि लोक-कथा में 'मन्द' में मोता को बनबाम दिनाया था । मन्द में पहुँचे तो मोता ने राजा का धिज बतवाया । फिर स्वयं ही राजा को धिज दिगाकर मोता को घर में निवासवा दिया ।

मो पै किरपा करिगे गोरखनाथ जी
 मान हरायौ जे तो, म्वां तै आई ननदुलि छबीलदे अपने बाबुल ते चुगली खाई
 हो जी
 लाज वी घनेरी जी, परदा घनेरे मेरे, गरूए से बाबुल होजी
 आजु बहूजी नें परदा डारयौ ऐ फारि होजी
 सोने की नांदी रेसम की भोरी अरे कि जानें जोगिन कूं दई ऐ गहाइ ऐ
 बड़े बड़े लट्ठा जानें धूनी में जराए मेरे गरूए से बाबुल हो जी
 अरी सबरी दौलति दई लुटाइ जी हां ।
 हां दौलति लुटाई जानें भली रे करी ऐ मेरे गरूए से बाबुल हो जी
 बारह बारह वर्ष जे तो बागन रहि आई माधारी राजा हो जी
 अजी जै तौ जोगिन कौ गरभु लैकें आई आं होजी
 राजा रे बाबू कोई सुनि जौ रे पावै मेरे मेरे गरूए से बाबुल जी
 मेरे सगाई ब्याह बंद है जांगे जी हां ।
 अपने बीरन को मैं तौ ब्याह करवाऊं मेरे गरूए से बाबुल जी
 अजी अपनी ननदुलि कौ डोला लैकें जाऊं हो जी हां
 बेटा री होंतो में तो ब्वाइ समभामतो मेरी बेटी छबील दे हो
 अजी कि मेरी बहू जी ते कछू न बस्याइ जी हां
 सुघरी गई ऐ जाकी कुघरी जो आई मेरी बेटी छबीलदे हो
 अरी क मैंने बेटा ते प्यारी राखी जी
 सेवानु करिकें जाकौ बेटा जो आयौ अरे कि जानें बाबुल ते मुजरा कियौ आयजी
 तेरी तेरी मुजरा मैं तो कबऊं न लुंगौ मेरे देवराय लाला हे
 अजी कि बहू जी नें परदा डारयौ फारि हां ।
 दूजौ २ मुजरा जानें उम्मर मांऊं कीयौ मारू देस के राजा हां
 जानें नीचे कूं नबाइ लई नारि हों ।
 तीजौ २ मुजरा जानें बाबुल माऊं कीयौ देवराय लालाजी
 अरे कि जे तो मुजरा पै देंतु जुबाबु जी
 तेरी तेरी मुजरा मैं तो जबई रे लुंगौ मेरे देवराय लालाजी
 आजु तुम बहूजी ऐ जो मारौगे डारि
 म्वति चलयौ मारू देस कौ राजा पहुंच्यौ ऐ महलन जाइ
 जुरि आई घर घर की कामिनि जी
 जे तो गामें बघाई हां जी
 अजी कि जाकौ लौट आयौ राजा जी
 ऐव असबाव जाके सबु ढकि जांगे
 अरीक जाके धरिगी सांतिए द्वार हां
 रानी तौ जी ठंडे तौ पानी गरम धरावै बेटी सजा की जी
 अजी अपने बलमे उवटि न्हाइ रही जी ।
 बलम न्हायौ जाइ दिल् न सुहायौ घर घर की कामिनि हो जी

भजी के मोपे हुगे बाबा सहाइ जी ऐ हां ।
 तेरो बेछलि के मैं तो पैरों न सागो मेरे पर के बसमा हो जी
 भजी क तिहारी भैना तें खुगसई बाबुस से साइ सई जी
 सोने की धारो रे भोजन साई तुम बें लेऊ राजा हो जी
 भजी क तुम तो भोजन जें लेउ चित्त सगाइ जी हां
 जैमत हो सो हम जैं तौ खुके है मेरी पर भामिनि है
 मोइ राम जिमावै अब खैऊ हो जी
 ऐसी तो रानी मोइ फिर न मिलंगो मेरे करतमकरता हो जी
 ऐसी सोने में मिल्यो ऐ सुहागु जी हां ।
 ऐसी पति भरता मोइ फिर न मिलेगो मेरे गरूप से बाबुस हो जी
 भजी पति भरता ऐ सगाइ रह्यो दोसु जी हां
 बाबुस को तैं मैं तौ कहनो न मानू मेरे सिरी ठाकुर हो
 भजी कि भबई सतजुग पहरो बलि रह्यो जी हां ।
 एक दिन ऐसी भावै सतजुग जावै कमजुग भावैगी मैं गए से बालम हो जी
 भजी क जाकू बेटा दिये बाबुस ऐ फिटकारि हां जा
 मैं तो तेरो तेरो कहनो रे मामि तौ रह्यो ऊं गरूप से बाबुस जी
 भाजू पतिभरता ऐ बासंगी मारि जी ए हां ।
 तोपै तो बेंटी बावेल मारी न जाइगी जानें कौन से गोत की बेंटी हो जी
 जा भगनी के पीछें मारुं जी हां ।
 सांभ भई ऐ साई भयी तौ भंघारयो मेरे गरूप से बाबुस हो जी
 म्वति बनैगो मारु देव की राजा देवराय सासा हो जी
 भजी क जितौ पहुंभ्यो ऐ महम मभार हां जी
 बंदन किधारी मारी खोलि खोलि दीजी मेरी पर की री कामिनि हो जी
 भजी क जाने कुधी तौ दीनी ऐ खोलि जी हां ।
 रानी भी सोई जाकी राजाऊ सोयो मेरे करतम करवा हो जी
 भजी क जा राजाए नींद न पाबेजो हां
 साधी रे निकरि गई जाकी भघर रैनि साई हो जी
 भजी क जानें खांडी तौ सीयो निकारि ए हां
 पहलो पहलो खांडी जानें रानी माऊं धोय्यी हो जी
 भजी क जापै हंगमे गोरखनाथ सहाइ
 दूजी दूजी खांडी जानें धोय्यी रे देख की राजा ने जी
 भजी क जापै दुरगे भई ए सहाइ जो एहां ।
 तीजो तीजी खांडी रे जानें माऊं माऊं धोय्यी देम के राजा हो
 तीसु बर्षंगो जाकी ठोठो बटि जाइगो मेरे करतम करवा हो

टैम्पल महोदय ने जो स्वांग दिया है उसमें इमका नाम गाबिर देई है :

टैम्पल महोदय के स्वांग में यह नाम 'जैवार' है जो देवराय का धर्मनंद हो सकता है ।

अजी क राजा रोबै जार बेजार हां जी
 बारह बारह बर्स तू तौ उघटि न्हायौ खांडे दुधारा हो जी
 अजी क गांडू तू न भयी सहाइ जी
 अरे क तैनें रानी डारी गांडू मारि हां ।
 गोरख तुही ।

× × × × ×

राजा उम्मरु नें तो जल्लाद बुलाए
 रानी बाछल ऐ जंगल में आम्नी भैया डारि
 भ्वांते चले ऐ जाके घर के कमेरे
 उम्मर कौ कहनौ डार्यौ हतुनाँए ।
 भ्वांते चले ऐ रे
 यह जन आए
 फाँटिकु खूल्यौ पायौ नाहिं ।
 अवाज दई ऐ तूतौ
 सुनि तौ री लीजौ संजा की बेटौ
 आज तेरे सुसर नें बादर डारे फारि ।
 बोल सुन्यौ ऐ जानें हुकमू सुनायौ
 मन की तौ कह दै बोरा बात
 तेरे सुसर नें री दीयौरी निकासी
 बाछल बहना हाँ
 मेरी तौ सुनि लै बहना बात
 मान सरोवर रे मान की बेटौ
 तौ सुनिलैरी भैना बात
 इतमें लजायौ री सासुरौ
 दोउकुल खोइ दई तैनें लाज
 भ्वांते चले ऐ चार्यौ
 जल्लाद आए
 उम्मर ते करत जुवाब
 तैनें कही तौ रे !
 मरी तौ जे पावै, जिन्दी तौ पाई बैठी आज ।
 “भैया बुही तौ रे गाढ़ा, बुही रामू गड़वारी
 ब्वाई में बैठि घर जाई
 “कितनी रे गाढ़ी रे, कितनौ सहाबी,
 कितनी हजारी संग भीर
 तेरे वाबुल नें तो कूँ गाढ़ी दीयौ ।
 मेरी बाछल भैना

बुहो गड़वारी तेरे साप ।
 सोने को लोटा ढोकूं नहीं ती री बीनी
 बुहो रेसम बोरि बाके हात ।”
 “भैया चंदन रुख कटाइ
 रानी रघु बनवायो ।
 लादयो भन्होईनु मानु रानी
 पोहर भासै री
 बे सुरई के बैस रायगठ वारे री ।
 सात परिकम्मा रानीमें खैरी की बीनी
 ‘सूबस बसियौ रे मेरे सहर वरेरे म्हारे सुसर के लरे
 तेरी पर अँयो पातास
 रे हाँकि गाडी मेरे, रामू गड़वारे
 सासा बुरख पहुँचाइ ।
 रुदन मचायो धाने गामु जगायो,
 पुरिघायो कुटमु परिवार ।
 रामू गड़वारी आकौ तड़कि में बोसयो
 ‘घरी सुनि सीखी भैना बात।
 मेरी री खैरो होतों संजाजी को
 घाजू उम्मेरे डारि छी दँ छी मारि ।’
 बैस जो जोरे रानी रघु बैठारी
 मान की बेंटी जानें रघु सीनी बैठारी
 म्वाँ छे रे गाड़ा जानें ऐसी रे हाँकयो
 दीनो बनी में जानें हाँकि
 घरे एक बनी गुजरान
 दूजे बन घाव ।
 दूजौ तीबो घाइ हरयो वनुपायो ।
 पायो बरी को पेड़
 रानी रघु बिरमायो री ।
 रघु सीनी बिरमाइ
 जानें पसंगु बिछायो री
 घरी अँमठि राजकुमारी
 जिमायो गड़वारी जी
 पीयो जोहड़ की पानी
 जाइ जिहा घाइ गई री
 बैस बाँधे ऐँ घरी की डार,
 जगायो गड़वारी री ।
 व्यास सगी ऐँ बीरा मोद

नैक पानी प्याइ दै रे
 कूआ नांएँ बाबरी नांएँ
 जल कहाँ ते लाऊं री ।
 अरे सोइ गई राज कुमारि
 सोयी गड़वारी री ।
 गूंगा गरभ कौ राउ
 गरभ में सोचैगा ।
 अरे जौ नानी कें लै जाइ
 निनुआ मेरौ नामु परै
 भाई दिंगी बोल हरामी लाई री
 नाना मामा कहें टूकन तें पार्यो ऐ ।
 गूंगा गरब का राउ गरभ में सोचैगी ।
 तोरि दूब को पेड़ु इकु सरप बनावैगौ ।
 सरपु बनाइ बनाइ बाँबी में डारैगौ ।
 उठि रे बासुकि राइ, तेरौ बैरी आयी ऐ ।
 बासुकि पूछै बात क कैसौ बैरी ऐ ।
 अरे जब लैगौ अवतार पीरु बिसु हरि लेगौ ।
 रहेगी जाकी छूँछि लीला घोड़ा ऐ हाँकैगी ।
 धरती के बासुकि राउ इकु बीरा डार्यो ऐ ।
 सबुई गये सिर नाइ बीरा काउ नै न खायो ऐ ।
 कारे को असवार पौनियाँ धायो ऐ ।
 चलयो ऐ कारौ नागु बाछिल दिंग आयी ऐ ।
 पलिका की लगि रही आनि
 चढ़ैगी बैरी कित है कें ।
 जाहर सोचै बात जाइ परचौ दिदै रे ।
 एक कला ते बाहिर आयी—
 जानें चौटी खोली ऐ ।
 लगे गिल गिले बारु बहियन ते जाइ लिपिट्यो ऐ ।
 छाती पँ बैठ्यो जाइ
 द्वै जीभ निकारैगौ ।
 कहाँ डसूँ मोरी माइ तुरत मरि जाइगी री ।
 जौ अम्मा ऐ डसि जाइ जनमु कहाँ लुंगो रे ।
 मारी गरभ में ते थाप,
 गाँडै सरपु खिस्याइ गयो ।
 गयो ऐ खिस्याइ खिस्याइ
 डसे दोऊ नागौड़ी ।
 भोर भयो भरमात रानी बाछल जागैगी ।

उठि रे बीरा गाड़ीयान गाड़ी जोरीये ।
 भौंगी सै लई हात बैस पै धारंगी ।
 धरी क्या जोखं मोरी भूमि
 बधिया ती दोऊ हक भई ।
 'पीहरिया मरि जाऊँ
 रीड़ में भौं धाई
 भूमि गई माया मांसु
 भटकत मेरी जनमु गयी ।
 गूंगा गरब को राउ
 गरम में बोसैगा ।
 कै तू भूत पसीठ देव कै दानो रे ।
 मा में भूत पसीठ देव मा दानो रे ।
 सेयो गोरखनाथ दुभा को बासकु रे ।
 मिटि जइयो गोरखनाथ मोइ कहा खवाइ गयो ।
 जमइ दे गयो मोइ गरम में बोस्यो ।
 छेरे भरे जिबाह दळ बैस दगदि भर पामं रे ।
 सोटा सै सीयो हात नीर कू धारं रे
 गोसा की गहि सई गैस हरीसिगु पाइ गया ।
 धोसै राजा बात मेरी सुनै मेरे भाई रे ।
 जे सोटा तो बाछलि कू धीयो
 जाइ तू कहीं ते सायो रे ।
 छेरो बहनि कू धीयो ऐ निकासो
 गरमू सै धाई रे ।
 कितनी नीर सहायो साई रे ।
 धरे बूही बंदल को ए गाइ
 युही रामू गड़वारी रे ।
 बूही सुरही के बैस, बूही ऐ गड़वारी रे ।
 ख्याई बटि जंयो मेरे धीर
 पिता ते मिति धाऊँ रे ।
 म्बति कमर बन्धी जाइ
 मानसरीबरि घायी ऐ ।
 मानु जू भूमि बात कसै पित्त उदामी ऐ ।
 धरे बादर डारे पारि
 गरमू सै धाई ऐ ।
 गूंगा गरब को राउ
 गरम में तड़वयो ऐ ।
 धरे पसका ते धीयो मारि

कहां फेरि भड़क्यी ऐ ।
 खूननु रक्तु बहाइ
 परची जानें दीयी ऐ ।
 गूंगा गरव कौ राउ
 वागर में आयी ऐ
 उम्मरु राजा बैठ्यी तखत पै
 तखत ते औंघी दीयी मारि ।
 (दोनों ओर के दल आए) बाछल बोली—वापनें हाथ पकड़ा
 'तूतौ हटि जा मेरे घरम के बाबुल
 गोता गयी ऐ खाइ
 तू वो हटिजा मेरे बाबुल प्यारे
 तू अपने घर जाउ
 'अपनी सहावी तू ती लैके रे जैयो
 मेरे गरव गुमाने बाबुल,
 मेरी सहावी ती रे मेरी गोरखनाथ
 सीक समाइ तहाँ जाँउ ।

(बाछल ते जाहर ने कही—सवासौ गज का निसान, गैलमा डंका तो पै से लै लुंगो)
 भादों आघी राति औलियाँ जनमु लियो
 मथुरा में जनमे कान्ह वागर गूंगा भयी
 हम्ब्रै हम्ब्रै कोयल वीली पापियरा भिगार्या
 भाई के मैदान में चौहान खेलन आया ।
 जिन धाया, इन पाया, वागर में सच्चा पीर रे कहाया ।

जाहर का विवाह—

सूवसु वसौ ढकपुरा गामु तरै हाथुर सी भाई
 हेमनाथ नें कथी जोरि चेता नें गाई
 ऊँचा अटा पीर की भारी
 विधि रह्यी पलंगू लगी फुलवारी
 सोइ पीर नें कीयी चैनु
 खुलि गये पलकु लैन नापैनु
 भोर भये माता पै आयी
 आइ माता कूँ सीसु नवायी ।
 सुनि री माता मेरी वात ।
 कहा कहूँ सपनें की वात ।
 साँची कहूँ समाइ न गात ।
 सुघड़ नारि सपनेन में देखी ।
 तिरिया देखी अति परभीन
 भामरि लै गई साढे तीन ।

- सो भाषी व्याहृ भयो बंगला में माता मेरी
 भाषे के कौल ती करार रो
 सपनी देखी रैनि की ।
२. घंटा सपने में सोयी कंगालु
 भन बीलति ब्याह पायी मालु
 मोरु भयी मलु बैठ्यो भयो ।
 न जानू घमू कित में गयी ।
 सुनियी रे मेरे जाहर बेटा
 बात जु कहूँ झूठी
 करम सिन्धी सो हीइगी बेटा
 सपने की सब झूठी
 भाई सगुन न बेटे बतासे
 सो जाहर बेटा नाइ तेरी भाई रे सुगाई
 सब सुपने को झूठी बात ऐ ।
३. मति रोबै मेरी भाखति माइ
 भाबै बहू सर्ग तेरे पाइ
 पीका दे मोरु तर्प रसोई
 मेन नजर मरि देखि महस में नौएँ कोई ।
 सिरिपस गोरी भधिक सतीना ।
 देह बनी ब्याकी निरमस सीना ।
 जीम कमस कौ फुनु मनी सांभे में डारी
 ब्याकी मेन घाम की सी फाँक, नाक ब्याकी सूधा सारी ।
 पायजोब बाँबी पहारार्य
 पाँव धरँ जैसे नीहबति बाजै
 मेनु की चढ़रि मुक्क तारी भजमति को फुलरी
 गुसीबन्द पञ्चमियाँ चारी
 सो भाषी व्याहृ भयो बंगला में
 भाषे के कौल ती करार ऐ
 सो गंगा जो घाड़ी दी गई
४. सात घुष्टि का बीर ऐरे तेरे बाबुस का
 छोड़ कोई डारै मारि कें बाइँहुँ दुनी में ।
 गादी बें जाइगी डूबि कें रे राजा देबराइ की ।
 धरी मोर्य री स्वार्प री सहाय ऐ बाबा गोरपनाम
 से तारी बताइ दीरी, धरी मोइ पोड़िसा
 धरी गुरु भाई भेदा प्कानु
 मेरा री दिन उमड़ा मुगरारि कूँ
 री तुं दिन मगरी कूँ

मेरा री दिल हरि जौ लै गई
 बेटी राजा की ।
 बिनु व्याहें हे मानू नहीं ऐ बाछिल दे माइ
 अच्छा बेटा जी सात सगाई उठी जा देस में
 करि देंउ बेटा तेरे सातौ व्याह
 म्वांकी सगाई हम ना करें जी ।
 डारूं री पजारूं तेरे व्याहु ने
 बुन सातौ नें ।
 मेरा दिल री हरि जौ लै गई
 बेटी संजा की ।
 द्वै व्याहि दऊंगी गंगा पार की
 झरपेटो नारि
 द्वै व्याहि दऊंगी संकल दीप की
 चंदवदनी नारि
 द्वै व्याहि दऊंगी जा देस की
 लड़ि हारी नारि ।
 इक व्याहि दऊंगी जा विरज की
 लड़िहारी नारि ।
 करि दुंगी रे तेरी सातौ व्याह
 म्वां की सगाई हमना करे वावरिया पीर ।
 चलयौ रे पीर भीरे में आयी
 आइ भीरे में ठोकर मारी
 लीला हंस्यौ थानते भारी
 छै महीना ते तिनू ना दयौ
 अब लीला तोकू कोतल भयो ।
 छै महीना ते जल नाइ प्यायो
 कहा कामु लीला ढिग आयौ ।
 पकरि बकसुआ लै चलि भाई
 चांदनी चौक जाइ ठाड़ी कीयो ।
 पहले न्हायौ कच्चे दूध
 जा पीछें गंगा जल नीर ।
 पटने से रंगरेजनि आई ।
 नादन में महंदी घुरवाई ।
 तुम हरियल महंदी लाओ सुघड़ बांगर की चोखी ।
 मस्तक गोरख लिखूं लिखूं लीले कें चोटी ।
 गले लिखूं लीले कें गंडा

लिखि दऊं सुरजमानु लिखू मांभे वै चंदा ।
 पहलें लिखू सुरसती माई
 आ पीछें गंगा महाराणी
 भरत भरत ओड़ी लिखि दीनी
 कलि गोरख में जूरी दीनी
 कसि गोरख की कर्हें बड़ाई
 मीर परै जहूं होइ सहाई ।
 भम्मच भम्मस पेच बन्ध तंग जोरि खिचाए
 ऊपर गट्टे खोसि पीर म्भे सट काए
 सास दुसासा बारि पीर भासण बनबाए ।
 सोने की जीनु जड़ाऊ काठी
 खूब सज्यो रै भबतक ताजी ।
 घोड़ा सज्यो पीर को भारी
 आकौ बजै खून खुना सोभा न्यारी ।
 सखि सीसा तैयार भयो म्बा जाहर को
 दाया मेरे
 इंद्र भलाइ पोड़ा जाई, मसि इंद्र पुरी कूं जातु ऐ ।

५. ठंडे पानी गरमु चार कट्ठों से ताए ।

पंचन पीकी बारि कें मसि जाहर न्हाए ।
 वैरु दास कबास चार घुनि घुनि पहराए ।
 मोषो की साया मोष बढ जूठा गुसजारी ।
 भंग भंग पहरी भंगरखी क फूली फुसवारी
 जामा पहर्यो घेर वार संधा फनिहारी
 पगड़ी बांधी डोरिडोरि सोने की तारी ।
 नेजा हाय पचास का कडिगसगी सुपारी ।
 कर में कंकल बांधि भंन में सुरमा सारयो
 पहरि सई पोसाक पीर भग्मा को थ्यारी ।
 खोसि कृपा ते धार चिला की धार उड़ाई
 जे जाहर हटने नहीं जिन मेरा पीया खीर
 दगा बेइ मासूक कू घोड़े
 हो जाऊंगी दामन गौर ।
 ठाड़ी सीसा ते कहि रही ।

६. जब सीसा में बही भात पों सगुनु बिगारै
 पगु घातों पगु मीघरें पगु छोड़े पति जाइ
 जो तेरो जाहर जूमि जाइ तो घाति के दऊंभी गूरे बिसाद
 ठाड़ो भग्मा ते कहि रह्यो ।
 हुस हुस बटोरा भरि परी रन बाई पटि जाइ ।

जो तेरो जाहरू जूझिजाइ तो बांगुर भे खबरि पहुँचै आइ ।
 सो आघौ व्याहु भयो बंगला मे माता मेरी
 आघे के कौल रे करारी
 सो जाहर व्याहिवे जांतु ऐ ।

७. कमची मारी लीला के गात
 लीला उड्यो पमन के साथ
 हुआ हुस्यार लगी नाइ चोट
 फांदि गयो खाई अरु कोट
 म्वां जाहर ने दहसति खाई
 मति रोवै जाहर गुरु भाई ।
 घरम सुम्म लीला दयो टेकि ।
 जाहर हँसे समद कू देखि ।
 समुदर देखि छूटि गई आस ।
 जूरी देंत मिली वहमाता ।
 कौन कामु ज्याँ उतनु तिहारौ ।
 जाई कौ भेदु वताइदै न्यारी ।
 सासु बहन है गई लराई ।
 मनु फटि गयो डिगरि चौं आई ।
 बा दुसमन नें वादर फारे ।
 तो बुढिया कू दए निकारे ।
 सुफेद वस्तर घौरे केस ।
 बुढिया रहंति कौन से देस ।
 उज्जलि गात भान कीसी लोइ ।
 जिया जन्त भकि जांगे तोइ ।
 बूढी उमरि कठिन की विरिया ।
 चोरे पट पर खाइ जाइ लिरिया ।
 न्यां बैठी तू कहा करतिऐ, हमें तू देइ न रे बताई
 जंगल में बैठी कहा करै ।
८. जब बुढिया नें कही कुमरमै तोइ समभाऊं
 आरे जाहर पीर भेद मै तोइ बताऊं ।
 मेरा नंगरु इंदुरपुर गाम
 वहमाता ऐ मेरी नाम ।
 जूरी को बांधू संजोग
 करनी करै सो पावै भोग ।
 मो लिखनी में असुर संहारे
 पांचौ पंड हिवारे जारे ।

सिखि वळ सूरजमानु सिखू मांभे पै अवा ।
 पहलें सिखू सुरसती माई
 आ पीछें गंगा महारानी
 अरु भरत जोड़ी सिखि दीनी
 कसि गोरख नें जूरी दीनी
 कसि गोरख की कसूँ बड़ाई
 मोर परं जह होइ सहाई ।
 धम्मच दम्मस पेच वन्द तग जोरि सिखाए
 ऊपर गट्ठे खोसि पीर ऋब्बे सट काए
 सास दुसाला डारि पीर घासन बनबाए ।
 सोमे कौ जीमु जड़ाऊ काठी
 खूब सग्यो रे प्रबतक ताजी ।
 घोडा सग्यो पीर की भारी
 आकौ बजै सुम झुना सोभा म्यारी ।
 सधि सीसा तैयार मयो ब्या जाहर की
 दाया मेरे
 इंद्र भलाड़े थोड़ा जाई, मति इंद्र पुरो कूं जांतु ऐ ।

५. ठंडे पानी गरमु चार कट्ठों से छाए ।
 खंवन चौकी डारि के मसि जाहर न्हाए ।
 देरु दास कवास चार चुनि चुनि पहराए ।
 मोषी कौ साया मोष बंद जूठा गुसजारी ।
 भग भंग पहरी भंगरखी क फूली फुसवारी
 जामा पहर्यो घेर वार संजा फनिहारी
 पयड़ी बाधी डोरिडोरि सोने की तारी ।
 नेजा हाथ पचास का कडिगसगी मुपारी ।
 कर में ककन बांधि नैन में सुरमा सार्यो
 पहरि लई पोसाक पीर धम्मा कौ प्यारी ।
 खोंधि कुचा ते धार सिला की धार उड़ाई
 जे जाहर हटने नहीं जिन मेरा पीया खीर
 वगा देह मासुक कू बोड़े
 हो आर्जगी दामन गीर ।
 ठाड़ी सीसा ते कहि रही ।
६. जब सीसा नें कही भाठ चों सगुनु बिगारें
 पगु भागें पगु नीघरें पगु छोड़ें पठि जाइ
 जो ठेरी जाहर जूझि जाइ तौ घानि के वळसी
 ठाड़ी धम्मा ते कहि रखी ।
 तुम दूध कटोरा भरि धरी रन चाई फटि जाइ

निरखत परखत चालें चाह
 जाहर पीर देखि लै न्या उ ।
 सिंगमरमर की पटिया सेत ।
 मिहीं काम रानी कौ देखि ।
 बांच्यौ आंकु रही घन क्वारी
 फिरति आनि राजा की भारी ।
 नर बच्चा कोई न्हान न पावै ।
 उड़त जिनावर राजा मारै ।
 सोने की सिङ्गी दूध सी पानी
 कौन रजन की आमें रानी ।
 गोता लेंतु ताल के बीच
 लीला घोड़ा ऐ देंतु असीस ।
 नीर सीर बाछिल के जाए ।
 तैनें घोड़ा ताल न्हाए ।
 पहली लोटा भर्यौ ढारि अर्जुन ले (घरती) दीयौ
 दूजौ लोटा भर्यौ ध्यान गोरख की कीयौ ।
 तीजौ लोटा भर्यौ जापु सूरज की कीयौ ।
 चौथो लोटा भर्यौ नीरु घोड़ा कूं दीयौ ।
 हंसत पीर लीला ढिग जाई
 लीला घोड़ा रिस है जाई ।
 दांके दांके फिर्यौ ऐड़ दै खूब भजायौ ।
 छिन मंतर के बीच पीर मैं तोड़ लै आयौ ।
 तोकूं जरा मोहना आयौ ।
 आपुन जाइ ताल में न्हायौ
 मेरी तेरी टूटी रीति
 मेरी सुधि ना विसराई
 सो आपन न्हायौ बहू के ताल में ।
 १०. तुंदिल नगरी जाउ जहां सुसरारि तिहारी ।
 गुन महलन के बीच प्यारु करै सासु तिहारी ।
 मौहरौ पट्टौ दिपै दिपै माथै पँ चोटी
 सहर दलेले जाँउ कहूँ बाछिल ते खोटी
 तेरी जाहर मरचौ जिलौ भंगा अरु टोपी ।
 दांत तिनूका दै लिए आड़े
 हात जोरि जाहर भये ठाड़े
 तुही मेरी भैया बंद तुही मेरी मा कौ जायो ।
 परदेसन में मोइ लै आयौ ।
 अब का लीला मोने रुते

मेरी तेरी संगु मरते छुटे ।
 सो मैं ऊँ न्हायो तूमी न्हाइ लै ।
 मति करे सोग हँसाई
 सो न्हाइसै ब्याई तास में ।

११. बाहर सोस खुन खुना सीयो
 सीला हूलि ताल में बीयो ।
 इतकी पैर्यो इतमें भायो ।
 भयक पयक भौरु बुप्यी बुप्या में न्हा भायो ।
 तँ सरवर खुसि दुंदु मभायो ।
 जो कहूँ भीष संज की भावै
 नौकर सेगी बोलि मार लोमें सगबावै
 तँनें लीसा करे गजब के टूंक किसे की ईंट दुवारवै ।
 इतनी सुनि कँ बास ज्वाबु सीलानेँ बीयो ।
 बागर वारे पीर तँनें बड का कौ कीयो ।
 क्या सिपाई करे किसी के हाथ न भाऊं ।
 भागास लोक नै उहूँ किसी के हाथ न भाऊं ।
 इतनीं मुकिसान कर्यो लीसानेँ
 बाग की सुपति रे भगाई ।
 नौसकवा बागु जानेँ कौसी होइगी ।

१२. म्वाते बाहर लने शेरि बागन में घाय
 बागमान जल्दी बूसबाए ।
 हुकमू करे तो सोसूँ ठारौ ।
 तखता पट्टी बग्यो बागु संधि में डार्यो ।
 रीस हजार खिल्पी फूभू गेंबा कौ पीरी ।
 कसंगा करे बहार केवइँ प्रति मुन फूस्यो ।
 जो कहूँ भीष संज की भावै ।
 नौकर सेगी बोलि, मास मोमें सगबावै
 नौकर ब्याई नारि कौरै क्यारी ऐ नारि जी
 नौकर नाऊँ सेरे बाप कौ
 साठ टका दुंगो गांठि के रे माभी फांटिकु वीजी खोलि ।
 नौकर नाऊँ सेरे बाप कौरै, नौकर हूँ ब्याई नारि कौ रे
 बूहू संज की भीष
 बाधि कँ बी भौकड़ी कूडि जी पर्यो लीला पोड़ा रे
 इक तखता कीसैर करी दूजे में भायो
 तीज में भौहान पीर कूँ मरभौ पायो ।
 पोस्त डोर्य गांजी भांगा बागन परे कोटना घाम

चार तखता की सैर करी जाहर नें दादा मेरे
 फिर बंगला की सुरति लगाई क जानें बंगला कैसी होइगी ।
 म्वांते जाहर चले पीर बंगला में आए
 चार्यौ और बंगला फिर आयौ
 बंगला कौ दरवज्जी न पायौ ।
 ऊपर कोट नीचे ऐं खाई ।
 जाहर ऐ गैल बंगला की पाई
 चार्यौ कौन पींजरा आठ
 पढ़वैन की म्वा बिछि रहीं खाट
 कमरि मर्द के बंधी दुलाई
 जो पलिका पै भारि बिछाई
 तान दुपट्टा जुलमी सौयौ
 छैमासी नींद रे सुहाई
 दादा मेरे
 सोयौ बहू की सेज पै ।
 रेसम के रस्सा तोड़ारे ।
 अनबोला के बाग उजारे ।
 दांतों से नारंगी खाईं
 भरिगौ पेटु जम्हाई आई
 फोरि फुहारौ पानी पीयै ।
 लीला नें दुंदु बाग में कीयौ ।
 इतनों नुकसान बाग में कीयौ व्वा
 घोड़ा ने दादा मेरे
 तो जूं आइ गईं तीज रे हरियाली
 सो पिछले पाख की
 पिछले रे पाख तीज जब आई
 सिरियल नें नांइनि बूलवाई
 घर घर नांइनि फिरै नगर में देंति बुलाए ।
 तिरियन लगे उमाहु फौज के से बंधे तुलाए ।
 तरुनी और नादान सिमिटि भईं सबु इकि ठौरी
 बटै सुपारी छाल और पानन की डोली
 सिरियल नारि मात ते बोली
 मेरौ डोला दै सजवाइ संग चौदह सैं डोली ।
 पाइजेब बांदी पहिरावै ।
 पाउ घरै जैसे नौबति बाजै ।
 नैनू की चद्दरि बूक्क खड़ी अजमत की फुलरी ।
 नैन आम कीसी फांक. नांक जाकी सआ सारी ।

नाहनि धतुर सुजान गुही मांघे पं बंती
 कवारी के बंदी कबहुं न मगामे
 संग की सहेली पान पवामे ।
 प्रसगून प्रसयून खूयु बनामे ।
 बागन में कारी मागु जु धार्व ।
 भूसा पै धनि तोइ देखि खार्व ।
 वागर बारो हू देखि जूलमी
 तासे भैना देखि दुही खंदाव ।
 बसि जाइ नागु हात मा धार्व ।
 सात दिना देखि बांक बजार्व ।
 धिरबाजा बबुस पै भरवार्व ।
 मरी रे क्रुमरि सिरियस देखि प्यार्व ।
 सो सखि बखि धीम संज की ठाढ़ी
 दादा मेरे,
 धम्बर में भीजूरी रे धमारी,
 छत्रे पं कौंवा लं रहीं ।

१३. साध सै डोसा रानी के धामें जसैरे
 सात सैं जाके जसैं पिछार
 कसुधा भीमर ज्यौं उठि बोस्यो ।
 संजा तेरी बेटो में बजनु गायी धाइ ।
 फांसे हाथ में सँसए
 जानें बादर फारे फारि, साङ्गिले,
 बेटो में बजनु कौंसें बड़ि गयी ।
 धरे डोसा धरे ऐं तास पं धाइ
 डोसा में छे ऐसे मिकरी, भैना ज्यौं पूर्यो कौ सो प्राडु
 म्वांते जसैं तासन पं धाई
 जानें कौनें मेरी सरवर दीयो ऐं बिगारि ।
 तुम न्हाओ वो न्हाइ लेच री
 में न्हाइवे की माई ।
 मोती में जसु ना मिले, भैना में न्हाइवे की माहि ।
 चोर सही करि बीजियो ऐं बनिया की भीष ।
 जोगयी बागन में,
 खोज पकरि ठाढ़ी भाई ए जंपा वे भीष
 जे गयी भैना जे गयी बागन में
 म्वांते डोसा जसे फेरि बागन में धाए
 बागमान जस्वी बुसबाए
 चोर सियो पुबकाइ मार तो में लगबाळ ।
 तनें करे गजब के टूंक किते की ईं'ट बुबाळ ।

बागर बारी तैनें राख्यौ ।
 नैक अदल बाबुल कौन राख्यौ ।
 घोड़ा वारों ज्यातें कहां निकार्यौ ।
 इतनी सुनि के बात हींसि घोड़ा नें दोनी
 भ्वातें रानी वहां गई घोड़ा के पास ।
 बीरा तेरा रे चढ़ता कहां रे गया लीला घोड़ा रे
 “मेरा भी चढ़ता भीजी सोवै तेरी सेज पै”
 “क्वारी से तैनें भीजी चों कहीं दई मारे रे !
 बीरा भी कहिकें टेरतएँ हमारी तुं दिल में ।”
 “भौजी भी कहिकें टेरतएँ हमारी बागर में ।
 मैं जानि गयौ रे जानिगौ धनि सिरियल तेरौ नामु ।
 सपने में वात जौ तेरी है जो गई जुलमी जाहर ते ।
 पाँच-सात कमची सड़-सड़ मारि जो गई लीला घोड़े में ।
 “मैं भी तो जानुंगो री आइ गयौ फागुन मासु
 हम तुम होरी खेलिलें री ओ संजा की धीअ ।
 संग की सहेली रे बोलि फूल उन पै तुरवावै ।
 जानें गोदी भरि लई बेगि फूलमाला पहरावै ।
 तेरौ पति सोइ रह्यौ बंगला माल व्वाकें नहि डारै ।
 जौ सुनि पावै बापु तेरौ हमें माड़ारै ।
 तू राजन की धीअ कहा गजबानी फारै ।
 तेरौ बाबुल सुनिकें वात हमें माड़ारै ।
 तुम ज्याई ठाड़ी रहौ पास बंगला मैं जाऊँ ।
 अपने बाल मैं जाइ जगाऊँ
 व्वाते रे फाँसे मैं तो खेलूँ ।
 मैं घोड़ा लुंगी जीति किले की ईंट ढुवाऊँ ।
 फूलन ते भरि लीनी गोद ।
 रानी रहै कमल कौ फूल ।
 तैनें बाजू हमतें खेली
 तैनें बुलाइ लई संग सहेली
 गलमाला अवकें पहराऊँ
 अवकें चौपड़ फेरि विछाऊँ ।
 साँची कहूँ बागर वारे गूंगा राना
 मानि लीजी वात हमारी
 नारि तिहारी मैं है गई ।

१४ संग की सहेली कहें वात सुनि लीजो हमारी
 कहा माया तैनें फँलाई
 जिही वात हम पै वनि आई ।

रम बहली सजिगईं घरी हाथीनु धम्मारी
 ठाजी सुरकी सजिगी बंदा ।
 सुरख बनाठ नारि में गंदा
 घोडा सजि गए मोर कराई
 जब कछवाइनु नें सुरधि सगाई
 एक बरन के सजौरे सिपाइ
 पुम्बिन नगरो की सुरधि सगाई
 नारि में तोरा दुहरी कठी
 सो एक बरन के सजे सिपाही
 सो दादा मेरे
 सोमा बरमि न जाई
 सो पुनहा ठाखे (काने) कूं हम कहा करें ।
 केसौंके के नारि नगर परिकम्मा दीनी
 ससकर फिर मकीब वेर काए कूं कीनी ।
 कटि कटि धूरि उड़ी धम्मर में
 दादा मेरे
 सुरख में ओठि रे छिपाई
 सो मान गरद में भटि गयो ।
 साहब सींग नें कही देरकाए कूं कीनी
 सुमि सेठ मेरी रे धात सेख नें सींद न कीनी
 तुम धलि सेठ मेरे संग
 ओ कछू होइगी बीतना, मेरी सखी साहिबी संग ।
 स्वांते साहबु जन्मी सुरधि तुंदिन की सीनी
 सखिमां गामें सीत,
 ऐसी कछू मोइ बीसति ऐ दुसहा की फिरि जाइगो न पीठि ।
 नबारीई सौट्याबं तेरो बरना
 धबके सबकु सुनाइ हर घरना (मातई)
 हरबरना धबु कहै बाल परि गई धब नारी
 चौहानन की मारि कहा है जाइ तिहारी ।
 स्वापै मोरसमाधु सहाम
 चौहहसेम की संग आके जलि जमाधि ।
 संगळ जल जमाधि, संग सांगुइ धगि मानी
 नगर कोट की मात बात सुमि सेठ हमारी ।
 स्वाके सबु संग ऐ रमधीर ।
 बात रे हमारो मानि से रे बरे स्वां भूंटी उठेगी पीर ।
 पीर बंबै का धीर सम्हारै
 स्वाके कहा संग में देखि भीर

नागर पान मंगाइ बटै राजन कूं बीरा
 राम रामु में वै गयो हीरा
 कसि बांधै हथियार कुमर प्रागीनी कूं घाए
 करिकें भेट हौटिगी राजा
 दादा मेरे, निरपु कचैरी जाइ
 असवारी प्राकी हृदि गई
 काइदा ते घोड़ा लगवाघी
 चौमेखा घोड़ा बंधवाघी
 भौतु करै मति देर
 धागर धारी घामतु ऐ रे
 ब्याके संग साहिबी कितनी भीर
 सग साहसी भीर
 सांची करिकें मानिसं रे धरोनिघा की करिसं भीर ।
 ब्यां की ब्यां रहि गई, ब्याते कछु प्रौर पसाई
 सजि चौहानी बनी भीर समदर पै घाई ।
 जाहरपीर बनी मैं डोसै
 देषी जाहर खेसै सार
 भीरा गाजी करे जुबाब
 तुम तुन्दिल कूं पाठ ब्याहु म्वां होइ तिहारी
 मेरो सोसा घोड़ा किसमो पूरि
 घोड़ा बेगि मगाइ वै मैं देखूं तुन्दिल मगरी भूरि
 जानें उल्टी घोड़ा राह लगायो
 ठमू ठमू ताजी नचती घायो
 प्राकी उगिसि परी तरवार, हात ते भास्यो सटक्यो
 हम तुंदिन कूं जाइ होइ स्वांती रे खटकौ ।
 जे ब्याहु हृदि नाइ पीर कूं बहुतई कसकौ
 मेरी सुनि मै सीला बात
 छनक पनक में लै उकौ हम पांचौ भ्राता घाय ।
 म्वाते घोड़ा बस्यो फेरि बागर में घायी ।
 बाछनि माता ते करै जुबाब
 धरी तू माकड़ धर जाऊ बेगि कांकनु मै घाठ ।
 चौरी मचाइ रही भीर
 हमतौ ब्याहिबे जात ऐं, सपने कीसी हू गई रीति ।
 बाछस कहै बाठ सुनि सीजी मेरी
 मोइ बारह बसं गईं बीति डरो गूगुर की सोसी
 तुम हू गए सिरवार
 नरसिंह बीर घगारी बालै, भज्जू ऐं बरि सीजी घोड़ा के पिछार

कजरी बन कौ नामु भगारी भायी
 जादिन ते लीयो भवताह, नाउं ना लियो हमारी ।
 पीर परै जब भीर
 माये पै लो सिस्सि दई रे बो संजा की घोघ ।
 स्वाति घोड़ा बल्यौ फेरि तुं दिस में भायी ।
 भाइगौ तुं दिस गामु
 संग की सहेलो देखिबे रे भाईं दुसहाए हास ।
 संग की सहेली बसी देखिबे दूसह भाईं ।
 बो देखि कुमर कौ रूप भौतु मन में बैलाईं ।
 तिरिया रहि गईं बांध परे सरिकनु के टोटे ।
 ऐसे पाए कंत करम तेरे सिरियस लोटे ।
 कछवाएन को कुमर नामु दुसहा को सारा
 नाऊ कौ चतुर सुजान कुमर पै परवा बारुसौ
 हंसत ससी सिरियस ठिम जाई
 कहा दुसहा की करे बड़ाई ।
 ब्याकी पेटु मयनिया, चादि में गंजौ ।
 राठ बसुरि मुस में भारी
 ऐसी जनम्यो कुमर धनि ब्याकी महतारी ।
 "क्या लिसिघाओ मैना मोइ ।
 मेरी पति चंदा कीसी सोइ ।
 बो ठानी बहलें गदयो देह संचे में डारो
 ब्याके नैन भ्राम कीसी फांक नाक ब्याको सूझा सारी ।
 ब्याईते सगि रही डोरि कबरि मत लेइ हमारी
 जस बिनु ठेस, ठेस बिनु धाटी
 बसमा मेरे,
 तबपति मारि रे सिहारी
 जोमतु होइ ली कबरि मेरी लीबियौ ।
 बहमाता ओरी मूंठी दीनी
 मसंमी जहर बिनु जाइ तनक पानी में डूबै ।
 ऐसे पति के संग कुमरि का सिरियस पीबै ।
 "कछवाइनु बोलिकें करौ बारीठी
 बावा मेरे
 फिरि में ब्याते सुंगो सड़ाई ।
 परभात जंग पै में बडू ।"
 इतनी सुनि कें बात जवाबु जाहर नें बीयो
 लीसा घोड़ा उद तैनें कौक कौ कीयो ।
 भंया तुम तौ भगारी बसी, जवामु घोड़ा नें बीयो ।

नरसिंह बीरा लयौ अगार
 भज्जू चमरा चलतु पिछार
 बाला भानज करै जुवाब
 भैया व्वापै रे बीरन की मार
 कोई नरसींगै डारै मारि
 इतनी सुनिकें बात ज्वाबु नरसींग नें दीयी
 अरे वारौठी की कीनी त्यारी ।
 संजा नें देखि मानी न्यारी ।
 इतनी सुनिकें बात ज्वाबु हरीसिंग दीनी ।
 पिछिली तोकूँ नाइ खबरि बाग में सिरियल खाई ।
 सात दिना गए बीति ताल पै ढाँकु बजाई ।
 नाओ भर्यौ बु नाओ खेल्यौ
 सबु बाइगी पचि गए तनक ना मुखते बोल्यौ
 तिरबाचा तुम पै भरवाई
 मरी कुमरि तेरी सिरियल ज्याई
 अबकें ताखे फेरि खंदावौ
 डसि जाइ नाग हात नांइ आवै ।”
 अरे चौं गांडूँ तू सगुन बिगारै ।
 भाई जी जिदिगी बचिजाइ तिहारी
 मानी चाचा तुम बात हमारी
 एकु कह्यौ तुम मेरौ कीजी
 पीर कौ व्याहु सिरियलतें कीजी ।
 मोते लहौरी भनि व्वाइ कछवाइनु दीजी ।
 मुसक बांधि बो तेरी डारै
 सबु दल कूँ भज्जू माड़ारै
 फेरालेगौ डारि बात वो फेरि बिगारै
 राजी ते चौंन फेरा ऊ डारै ।
 चौं चाचा मेरी बात बिगारै ।
 जवरन रे वो भामरि डारै ।
 इतनी सुनिकें बात ज्वाबु राजा नें दीनी
 चौं गांडूँ तू परनु बिगारै
 हम चौहानन कें करै न सगाई
 हमनें पहले लीनी मांग, उनते करे लड़ाई
 उल्टी सिड्डी बेटा चौंरे चढ़ावै
 सो हटि हटि जुज्भु करै तुंदिल में
 चाचा मेरे
 मानि लीजी तू वातरे हमारी

तुं दिन में सकी होइगी ।
 बारौठी कुं कसवे घाए
 म्याते हरीसिंग पल्यी फेरि जाहर डिंग घायी
 भाई आने दीनी ठोकि कें पीठि पीर ऐ देतु बकाई ।
 ची जाहर तैने देर लगाई ।
 जो बारौठी बड़ि जाइ मांग है जाइ बिरानी ।
 मज्जू पमरा करतु जुवाव
 भैया चौहानी ऐ कदा सगिजाइ रागु
 तू सीला बोड़ा तुरत सजाइ
 हम तेरे देखि बलत भगार
 म्बा चौदहसै बेसनू की परी अमाति
 नगरकोट की भाई मात
 सुन सै जाहर मेरी रे बाठ
 भाई बड़ि बोड़ा की पीठि फेरि दरवज्जे ऐ घायी
 बाबा नाथु जाइ ठाड़ी ई पामी
 बाबा ऐ तू संग ना सायी ।
 इसनी सुनिकें बाव ज्वाबु जाहर नें दीनी
 हाथ जोरि जाहर भए ठाड़े
 चौदहसै ज्वान ऊ सबे भगारी
 प्रोवड़ु जाते करि रहुयो बात
 सुनि रे जाहर मेरी बाठ
 भरे बीर ताम हमारे बसै भगार
 नगरकोट की मात भगार
 सोसा बोड़ा ऐ देतु बकाइ
 मज्जू पमरा करतु जुवाव
 मेरी सुनि सै भैया बात
 इसनी सुनि कें बाठ जाफु संजाऐ घायी ।
 भैया जे दीबस ऐ पांच साहिबी कहति सायी ।
 संभा ठाड़ी करे जुवाव
 में फेरा दुंभी तेरे डारि ।
 मोते जाहर सटकै मति हास
 कूर मति हम पै बनि भाई
 द्वै ठीघा हमनें करी सगाई ।
 इसनी सुनिकें बात ज्वाबु जाहर नें दीयी
 तैने तौ संबा बर कीन की कोयी ।
 इसमें परि गई खबरि जोय ज्वासासिद्द दीयी ।

जी क्वारौ लै जाइ बात डिगि जाइ हमारी
 हमने रे संजा कीनी नांही
 तैने बाबा हिरिगिजि मानी नाहीं
 सो हटि हटि जुज्भु करौ तुंदिल में
 दादा मेरे
 होन देउ रे लड़ाई ।
 वारौठी की कछवेनें कीनी त्यारी
 सात लाख की भीर राउ कछवन की भारी
 जी गांडू बनि जाउ बात विगरि जाइ तिहारी
 इतनी सुनि के बात ज्वाबु जाहर ने दीयी
 जी गांडू अगारी परि जाउ तेगना भलै तिहारी
 हंसि हंसि बात करै रे जाहर
 दादा मेरे
 सपने में है गई नारि रे हमार
 तुम टरि जाओ अपने गढ़ आयरि देस कूं ।
 इतनी सुनिके बात ज्वाबु दुलहा ने दीनीं
 जे क्वारौई ना जाँउ बात गहि जाइ हमारी
 भज्जू चमरा तेग सम्हारै
 सबु कछवाइनु हाल बिड़ारै ।
 कछवाए लीने घेरि
 काने तू चीं न तेग सम्हारै
 हमारौ जाहर चलतु अगारी
 तुम वारौठी की कीनी त्यारी
 वीरन की ऐ तुम पै मार
 कहा चलति ऐ हमारी वार
 सो हाथ जोरि तेरे कछुँ निहोरे
 दादा मेरे
 व्याहि दीजी सिरियल नारि रे हमारी
 जाइ गढ़ आमरि कूँ लै जाँय
 इतनी सुनिके बात ज्वाबु जाहर ने दीनीं
 नरसिंग पाँडे चलतु अगार
 वाला भानज करे जुवाव
 सुनिरे मामा मेरी बात
 कछवाइन ते खेलौ घात
 कुर्सी मूँडा लए मँगाइ
 संजा जोरै ठाड़ी हात
 भैया भक्क भक्क वहि चली, जैसे मति वहि चली गंगा ।

जेठु जो सागै भास भानजौ, सुनि सीजो मेरी पीर
 भवाज जु वै देतू, महल में कूचि भ्राभौ पाँची बीर
 दैति भवाज संजा की घीम रे नरसीय मेरे पीर ।
 बागर कू मोह लीजो वसो बागर के जुसमो पीर
 तीजू नरसीग भाइ जो गया महसन के बीच
 ना रभु हम पै साहिबी, घोड़ा ऐ इकसा बीर ।
 नगरकोट की मात ऐ भाइ गई ऐ बागर वारे पीर ।
 मेरे म्याने में बैठि जो वतौ, संजा की प्यारी घीम ।
 बामन भैरौ, छप्पन कसुभा भाइ जो गए महसन के बीच
 डोला जो धरि सयी जानें भरे महसन के बीच
 क्यौं लो रो भैया, मे ना वसूँ, सुनिसै मेरी बीर
 दूभा भी भाती न साइ नई, मेरे बागर वारे पीर
 मातु हमारी तू भाइ जो जा, सामलवे भाइ ।
 हम लो रो क्यति भव जात ऐ फिरि भाइबे के नाइ
 लीं बी जोगी सेइए वो बालंघर माय
 स्वाकी दुघाते में लो है जु गई भरी मेरी भाइ
 गोरखनाथ का पति मेरा जेसा कहिए बागर का पीर ।
 स्वाने कठिन तपस्या करी मात वाछस को जायी
 ठाढ़ी री सासुलि देखै बाट
 छत्त दिना म्वां बीते री हास ।
 भवई रे जूज्ज मए पूरे संगराम ।
 इतनी सुनि के बात ज्वाबु लीसा में दीयी ।
 बागर वारे पीर लीं डर कौन की कीयी ।
 सो चकिसे पीठि पीर तू बामर वारे
 देखि हम लो म्वाते करे रे लड़ाई ।
 एकौ करि कें हम वसे ।
 पाँची बीर जु सए लड़ाइ
 सीसा घोड़ा भगास उड़ि जाइ
 संजा राजा भैर्यो जाइ
 संजा सुनि सै मेरी बास
 प्रच्छा ब्रं डी बार्ते तू हमते करि जौलें तुंदिस नगरी के राज ।
 छियि ली जात श्री, जुरि गई नाठेवारी हास
 जो जमाई जमु में गिनुं सीसा घोड़ा रे
 पाँच बीर तेरे ऐसा ऐ भज्जु रे जमार
 वार्डस हौवा स्वाने खासी करि जो बए उन कछबाइन के ।
 सबु दसु डार्यो काटि

इन्नं तौ चेताइ केँ तू जिनमें दीजी सास तू डारि ।
 तैनेँ दईऐ सबद की मार
 तोप गोला चलन नाँइ पाए, नाँइ चली पिस्तौल कमान
 तैनेँ दईऐ सबद की मार
 सिर इनके कटे हत नाँए, जे पीटि रहे परे परे पाँइ ।
 इतनी सुनि केँ बात ज्वाबु हरीसींग नें दीयी ।
 तेरी कहा बिगर्यौ ऐ लाल, लाल तैनेँ सबके लीये
 तैनेँ सब दीए मरवाइ
 मरे मराए कहाँ बगदि आंगे, तैनेँ दीयी भेकु कटवाइ
 तू तौ भौतु बनामतु ऐ बात
 तेरी बात कहाँ रहि जाइगी, तेरी लई चौहाननु काटि नाक ।
 हात जोरि देखि कहि रह्यौ बात
 मेरी तौ रे कछू नाँइ चलती, तैनेँ मारी सबद की मार
 कहाँ ऐ गोरखनाथु
 व्वानें तौ गूगुर दयी, जालंदर नें दीनी ऐ भभूती हाल ।
 मेरे कौन जनम के पाप, धीअ ने सिरियल जाई ।
 चौहानन की भीर आजु चढ़ि तुंदिल पै आई ।
 तुम बेटी ऐ लै जाउ
 बात हमारी बिगरि गई ऐ, नातेदारी जुरैगी हति नाँइ ।
 इतनी सुनिकेँ बात ज्वाबु जाहर नें दीनी
 चीं संजा तू गरूर विचारै
 तू इतनी बाँधै हिम्मति बात तू अपनी बिगारै
 हम बागर कूँ जात ऐं भाई ।
 तेरी धीअ हम नें सिरियल व्याही
 संजा तू अब केँ तेग सम्हारै
 हरीसींग ऐ बेगि बुलावै ।
 घोड़ा पै ताखी करै जुवाब
 अरे सुनि रे संजा मेरी बात
 खाई तेरी सिरियल नारि
 मरि गई ऐ बु हालई हाल ।
 तिरवाचा हमनेँ भरवाई ।
 तेरी मरी कूमरि हमनेँ सिरियल ज्याई ।
 सो बात कहै सुनि बात हमारी
 संजा चाचा
 तू महलन कूँ चलि भाई
 सोबे में कहा तू देइगौ ।
 इतनी सुनि केँ बात ज्वाबु संजा नें दीनी

दुबकि बूपकि खाइ जामो पती नौइ तिहारी भारी ।
 सामुई ली तुम करी सझाई
 सो साँची कहूँ मानि सै ताखे
 बेटा मेरे,
 मैं ली फिरि ऊ लुंगो सझाई
 राजी ते बेटी ना वळं ।
 कछवाइन की कुमठ फेरि बी ठारु घायी ।
 ब्याकी बबारी र्हि बल्पी मौस कहाँ ऐ बीर हमारी
 सो साँची कहूँ मानि सै ताखे
 बात हमारी
 ब्याकी भामरि वळं डरवाइ
 ब्याहि दूँ छोटी भीम ।
 इतनी सुनि कैं बात जबाबु मरसींग नैं शीयी
 संजा मानो बात हमारी
 सहर वसेले के राउ हम सिरवार ऐ भारी
 सुनि सेउ ब्याभा बात हमारी
 बबारी ना सै जाइ ब्याहि लई भीम तिहारी
 सो बूपका बूपकी संग सँवाइ दे
 सो संजा राजा
 मानि सीजी बात रे हमारी
 सो सोबे की नमूना सुम करी ।
 म्वाते रे संजा बल्पी संग जाहर के घायी ।
 संजा जाहर ते करतु बूवाब
 सुम देखि फसि सीजी बारि
 जिम फेरनु मै मानतु नाहि
 गसमासा सीजी डरवाइ ।
 छारा ऐ बीरें सै बैठारि ।
 सो मैं लो बात नीधि की करि रझी
 जाहर बेटा
 मानि सीजी बात रे हमारी
 तुम ब्याहि दसेले सै बइयी ।
 तेगा से बीरें बैठारें
 हम चौहान ऐ बीर
 बे गाँइ कछवाए पीर
 बुनकी नेंक धरिसे म बीर
 सो साँची कहूँ बात सुनि सीजी

संजा राजा, चाचा मेरे
 सो सिर भुट्टा सौ लुंगों तारा कौ काटि कें ।
 परिकम्मा घोड़ा नें दीनीं
 एक ठोकर संजा में दीनी
 संजा राजा चलतु अगार
 जुलमी घोड़ा करै विचार
 गाँड़ू अब चीं चलतु अगार ।
 मूंज, बकौटा और चमार
 चौंचौ कूटै चौंचौ फार
 तो में दई ठोकर की मार
 अब गाँड़ू चीं चलतु अगार ।
 तारे दै अब तू खुलवाइ
 फाटिक की रस्ता लै जाँइ
 अब कछवाइनु लेइ जगाइ
 बुनते हमारी तेग चलै फरई
 बे सबरे तुमनें डारे मारि
 अमिरितु बूँद हम सबपै डारे
 चाचा मेरे
 अमरु सवनु करि जाँइ
 सो डोला में घीअ अपनी तुम घरी
 माढ़यौ पट्टा गाड़्यौ नाहि
 भामरि कैसें लीनी डारि
 खयौ पकरि व्वानें लीयौ डारि
 महलन में रही रुदन मचाइ
 तैनें जवरन लीनी डारि
 बाबा गोरख करै जुवाब
 तौ जूँ आए जलंधर नाथ
 सो लै लीनी घीअ गोद में
 दादा मेरे
 तौ जूँ है गए नाथ जौ सहाई
 सोवे की त्यारी करि रह्यौ ।
 वेटा तुम सहर दलेले लै जाउ नारि है गई तिहारी
 जूरी हमनें दई मतवारी
 ठाड़ी गोरख जोरै हाथ
 चुनि लेउ बाबा मेरी बात
 एकी देउ तुमऊ करवाइ
 सोवे में लुटिया देंतु गहाइ

दान पानी कछू बहिमतु नाए
 बाबा मेरे
 एक सुटिया दीजी रे विवाह
 जे राम रमरमी म्वां करै ।
 अबरें छे सुमलै ई जाउ
 दोऊ जोगी भए सहाइ
 नगरकोट की माता भाइ
 गोदी में जे लै भाई म्वाल
 बोला में लीनी बैठारि
 बोला जाको पभरंग भाइ जु गया दरबारै के पास
 सखियां सी सारो मेरो गाभो भु मंगल पार ।
 फगुभा भी भेना तुम गाइ जो छेउ जा नंगर की नारि ।
 धरि लई धीम बोला में म्यारी
 संजा राजा खड़ी पिछारो
 भांसुन की बंधि रही बार ।
 धीम हमारी जाति ऐ करि भामें गाइ-बजाइ ।
 करि भामें गाइ बजाइ बाठ रहि गई तिहारी
 क्याठे तुम न जाउ
 बचनन की जे बोधी धीम हमारो फेर लै गई ऐ बाग में जाइ ।
 सो धरि लई नारि बोला में जानें
 सो बागर देस कूं बलि दियो
 जानें थोड़ा ती खूब उड़ायो ।
 सारव माइ सुरति करि सैरु
 ज्ञान दिया भोकूं परमेस
 पति भरता घर वासक जनम्यी
 बिकट भूमि म्वां बागरदेस
 बंकी महरी बनी पोर ठेरो गबकीसी धीर कसई छेउ
 चारुपी खूंट की भाबं मेथिनी, क्वादिम सेंत पीर ठेरी मेंट
 पूरब पश्चिम उत्तर दक्खिन घामसं ऐं छोइ चारुपी देस
 माधन को करबाई मास्ता रासी साज भोक की टेक ।
 १. जेबर राजा सरव सिंधारे
 से जाहर गादी बैठारे ।
 खेति शिकार बाहुरे जीरा
 बिग मौसी के भामें
 जिसे भूमि ह्यकूं लै मौसी पिता की नामु बसामें ।
 कुमा धीर बावरो मीसो सागर तान खुदामें ।
 सहरपना ते बसिकें मौसी प्यारी किली बिनामें ।

न्यारी किली चिनामं मौसी छोटे छोटे बुर्ज वनामें
छोटे छोटे बुर्ज बनाइकेँ उनपै तोप धरामें
जवई जांइ गाम अपनें कूँ गांठि कछू ना बांधें ।
सो हात जोरि तेरे करेँ निहोरे
बाछल मौसी
ऐ ठकुरानी
थोरी सी बिसवा बांठि दै ।

२. लाला खेलन गयो सिकार औलिया ऐ आमतई समझाऊ
ढिग लुंगी बैठारि पोर ते भुम्मि की बात चलाऊं ।
मन सन्तोक धरी रे जौरा, उर्जन सुर्जन
बैहन के बेटा
करि दुंगी तीनिरे तिहाई
सो आवे मेरी औलिया ।

३. माता तेरी जाहर सिरीं दिमानी
बागर देस में है रौ रानी
तेरीं जाहर ऐसी घींगु
मांगे बिसे दिखावँ सींगु
जैसोई जाहर ऐसीई सिरियल
सो हात जोरि तेरे करेँ निहोरे
बाछल मौसी
ऐ ठकुरानी
सो जापै तौ लिखवाई ।
बाछल रानी कहत कहानी
मैं पतिभरता जगनें जानी
द्वात कलम महलनते लाइदैं, जेठनु भुमि की ठानी ।
वाला तन ते मैंनें पारे, अन्तर कछू न जानी ।
बड़े भए जव बिसे भुम्मि की ठानी
सो बाछल भोरी
समझी थोरी
व्वा मैया नें
द्वात कलम मगवाई
सो संजा की बेटा लाइ दै ।

४. सीलमंत संजा की बेटा
तैखाने में आई ।
मनते अकलि उपाइ कुमरि नें द्वाति कलम दुवकाई ।
सासुलि टूटी कलम औधि गई स्याहो

मोह महसन में मा पाई ।

सो हात जोरि तेरे करूँ निहोरे

सामुझि मेरी

मरसीगै पकराई

सो रासि पुरोहित भे गए ।

१. तौमैं सिरियस बड़े गुमान

सैं तोरी मौसी की कानि

सैं सिरोही बन कूँ आई

आहर मारि अन्नु हम खाइ

तौमैं सिरियस माइ, यो माइ,

तोइ करे महसन में राइ

मारें पीर करे द्वे टूंक

तोपै घर घर की मगबाइ दें भीक ।

पाप के बीअ गांठि मति बाँधै

ऐ संजा की

तेरे नैननु ज्वानी छाई

मौसी ते नाहीं मति करे ।

जेठ बड़े मैं सिरियस छोटी

गैस असत मोइ देखे गारो

मैंने आने सूरु पूरे

तुम निकरे पूरे के कूरे

जाठ जेठ उठि जाठ सवारै

जे वावर कहाँ फारे

मेरी जर की सामुझि बरिग हैगई आई में तुम पारे ।

जेठ बड़े मैं सिरियस छोटी

मैंने जाने मरद भये काछम कैं छोरी

मेरो बारी बलम पर लाइ करी महसन में चोरी

सो मुत्त सैं म औरन कूँ मारै

सामुझि मेरी

भीमतु छोड़ै हनु नाई

सो भाबै मेरो प्रीसिया ।

१. सीसमंत संजा की बेटी उहखाने में रोई ।

बागर बारे पीर प्रीसिया आजु पतिगा खोई ।

माठा भुम्मि लिखति ऐ तेरी, अ्यान जसं कछु मेरी

प्रजमति होइ ती घाठ प्रीसिया

बागर बारे

गूँया राना

छिन भुमि हौंति रे पराई
 सो डुकरिया बांटै देंति ऐ ।
 देवी जाहर खेलै सार
 मीरा गाजी करै जुवाव
 जाहर पीर महलन कूं जाउ
 तिहारी बांगर बांटी जाइ
 छोड़्यौ पांसौ पटक्यौ दाउ
 लीला घोड़ा तुत मंगाइ ।
 जाहरपीर बड़े परवीन
 कसि बांधे घोड़न पै जीन
 सुई सुरख सीस पै पगड़ी
 हाथ बनी भाले की लकड़ी
 उलटौ घोड़ा राह लगायो
 ठम ठम ताजी नचतौ आयौ ।
 उगिलिपरी तरवार, हाथ ते भालौ सटक्यौ
 फड़कै दाई आंखि, होइ बांगर में खटकौ
 मारि घोड़ा महलन कूं आयौ
 दादा मेरे सो पौरी पै झुलम्यौ आई
 सो जाकौ लीलौ घोड़ा हींसियौ ।

७. वजी खमखमी टाप, भये महलन हुंकारे
 भाई अजमत धारी पीर, टूटि गए बज्जुर तारे ।
 अब तौरी सिंह पौरि पं गाजै, दरवाजे वाजै तरवारि
 बेटा समुहीं परिके करियीं रैलौ ।
 तुम पहलै बांटौ सहर दलेलौ ।
 जो कहूं बांटै आघे आघु
 मति मानौ जाहर की बात
 तुम फेंट पकरि डारौ गलवाईं
 बांगर बांटौ तीनि तिहाई
 ठाड़ी माता अर्जु करति ऐ
 उर्जुन सर्जुन
 मन में दहसति चीं खाई
 समुहीं बेटा ज्वाव करौ ।
 सुर्जन बात चटपटी कही
 वांह पकरि वाछल लै गई
 जी जौरा जिय में दहलाउ
 तिहारी राह बनी मोरी में जाउ
 जो पाग उतारि कांख में दीनी

उन औरनों
वादा मेरी
मोरी की राह रे सिधारे
बाघस मौसी रामू रामू ।

८. शौनों शौनों औरा निकरि औ गए गादी रूप के औरा ।
आहरपीर महलों में भाइ औ गया बाबा गोरप का बेसा ।
बोड़ा सगायी चुड़सार में सहरी गूँ में ने
सिरियस नारि बिछाई दियौ पमिका ।
बैठि गयी आहर नर बंका
पगड़ी में सोने की म्ब्या
भानि घरे भाखून के डिम्बा
सिरियस नारि सजी भसबेसी
प्रापु सबी प्रौय संग सहृसी
पीए रे भंग भुकाए बत्ती
प्रथ सिरियस नारि सड़ी भसमस्ती
फेंकी कसम पटक बई दासि
जा अपने बीर की मूँड़ सिरोहीठे काटि ।
ठाड़ी घोट धोक बंगला की
बो संबा की बेटी
बीरी बेंछि रे सगाई
बसमा मेरे चाबिले ।
९. नैया देखि देखि कौँ सूरति भग्ना बीक फोरिके रोई ।
बेटा, एकन के ऐँ सास लोग, एकन के ना कोई ।
भग्ना कौनस की तो सास लोग और कौनस का ना कोई ।
चजुन मुजंम कौँ सास लोगुएँ, तेरी जानि प्रकैसी
माता मेरे तौएँ सास लोगु प्रौय गुमई कौना कोई
सो मागे बिसे ठमक घूँ देँ देँ
आहर बेटा
ए बाबरिया
माहक करिगे सड़ाई
पीरो सौँ विसबा बाटि देँ ।
माता में नामु भूमि कौँ सीयी ।
आहरपीर की भनकयो हीयी ।
सबु बस्य दूँटि गए जामा के
रिस में मैना हूँ गए राते ।
औ कोई कहूँतो इतनी पीर

बाकूँ मारि डार तौ ठौर
 सो तेरी कुक्षा जनमु लियौ ऐ
 बाछल मैआ
 ए ठकुरानी
 तोते मेरी कछू न बस्याई
 मर्दन के विसवा न बटें ।

१०. मारें मारें रिसके मारें निकरि जो गया बाबा गोरख का चेला
 कांसौ बी देति लगाइ
 संजा की बेटी भोजन लाई तू जैलें चित्तु लगाइ ।
 अब कें चलैगी दल में तरवारि
 समझि बूझि लै मेरे बलमा तेरी बरनी रही ऐ खिसाइ ।
 बादर फारे जा रांड नें
 बहनौतऊ लीए पारि ।
 भीतु करिगे दिल्ली तक जांगे वास्याइ लामें चढ़ाइ ।
 हम पै गोरखनाथ सहाइ ।
 चौदह सै सोटा ऐसे चलैगी, व्वाकी एक चलै न तरवार ।
 एक न मानी बांगर बारे तौ जानें लीयौ जीनु सजाइ
 फारिका डार्यौ जानें घोड़ा पै, भालौ लीयौ उतारि ।
 जाकी धनऊ खांति पछार
 म्वांते चलतौ है आयी, तौजूं है आयी परभात ।
 उर्जुन सर्जुन दोनों आए ।
 माँसी ते रहे बात लगाइ ।
 बेटा नाझी रिसके मारें पीयौ दूध
 काँसौ लाई लगाइ कें
 सो भोजन फेंक्यौ दूरि ।
 मेरे दिल में उठति हिलौर
 बांधन कौ छौना गयौ, बांगर में नाँइ मेरौ श्रीर ।
११. म्वांते सुर्जन चलयौ पास मोदी के आयी
 सुनि रे मोदी बात मेलु बाबा नें खूब बनायौ
 सुनि रे मोदी बात
 भोजन करि तैयार बीरन कूँ, हमें लड्डू देइ बताइ ।
 बजन बताइ देउ ऐ सहजादे
 जामें कितनीं देइ किनकु हम डारि ।
१२. सवा पाँन सेर के चार्यौ लड्डुआ
 नेंक जामें दीजौ जहरु मिलाइ ।
 हल्ला मति करियौ बांगर में, हम पीर ऐ देइ खवाइ ।
 म्वांते घोड़ा दीए हाँकि

गैस गही ऐ ब्या बनसङ्ग की
 दोऊ जाँत ऐँ घोड़न पे बँठे खान ।
 बैठे जाँत ऐँ खान, तिभा बाहर की भाई ।
 भाई ब्या बाहर ने सीनेँ जामि
 कमरि मर्द के बंधी हुआई ।
 जो बाहर नेँ मारि दिछाई ।
 कुमरि कसेऊ महसन से साए
 दादा मेरे

माता नेँ करी रे सङ्गाई
 सो सुदया तन में समि रखी
 १२. भैया, सहर दसेसे ते छोड़ा हके
 सगुन भए ऐँ बँके
 कुमरी भाइ बाहर पे बँठी
 भपने मुँहके माँगे ।
 भपने मुँहके माँगे—
 पहसो सङ्गू दयो मरद कूँ, भई ऐँ समिरत की बूटी
 गुन जोरान की याँठि सबँ हिरवे की बूटी
 दूजो सङ्गू दियो गहाई
 बाहर भपड़ी गयो चढ़ाई
 जो न मरेमो पीर मौति दोऊन की भाई
 इक सङ्गू भा में ते दूँ जो करे
 से जोरान के हासन घरे ।
 देखत जोर पीरे परे
 जैसेँ मानोँ नाग भुजंगी नेँ बसे
 सो देखत सङ्गू भा पीरे परि गए
 दादा मेरी
 सरय गरम भई मारी
 'सो सङ्गू भा दादा जहर के ।'

१३. बाहर नामु कसि गोरख जपाए
 खेमहु नाग भुजंगी भाए ।
 खँधि जहण सफँन को सीपी ।
 बिस को प्यासो पीर नेँ पीयो ।
 पीयो प्यासो भासो न सहरि
 जाहर पीर फाड़ारयो कहर ।
 सटकि छिरोही मीनेँ भाई
 मारि डारि मीसाइते भाई ।
 कूर मंति हम पे बनि भाई ।

बिसके लड्डू लाए बनाई ।
 ठेंठर खोटी जाति जहर लड़उन में दीयी
 तुम मेरे नंगर में रही रीरु सुरई न की पीयी
 जो जौरन कूँ देइ सहारी
 गधा पै देंउ चढ़ाइ, करूँ जाकी मुहड़ी कारी ।
 हम लैन कहत ऐ भुम्मि, उलटि भयी देस निकारी ।
 बाँधन कूँ मंडील कड़े पहरन कूँ तोरा
 बैठन कूँ सुखपाल और हाथी औ घोड़ा ।
 सो करत ऐ ऐस पराए पीछें
 उर्जुन सर्जुन ऐ मौसाइते
 दादा मेरे
 खाँतए हम पान रे मिठाई
 सो आपुनि जौरा निकरि गये ।

१४. म्वांते सुर्जन कहै बात एक मेरी कीजौ
 तुम दिल्ली कूँ चलौ सहारी ब्बाऊ कौ लीजौं
 तुम अच्छे किसि लेउ जीन
 दिल्ली ज्यांते दूरि ऐ
 संजा जू पहुँचिगे कितनी दूरि

१५. घरि मसक्यौ सुर्जन नें घोड़ा
 घरि मसक्यौ वीरनु घोड़ा
 घोड़ा पैते भरतु उसास
 एक डोकरी ऐ पूछन लाग्यौ न्यां कौन की ऐ राजु
 रा राजा की काऊ ऐ मति पूछै
 बो सहजादौ लाल ।
 बनन में बोह खेलतु ऐ, काऊ पैते नांइ लेंतु भेजऊ दाम ।
 ऊंटन केऊ हलकन वारे ज्वान
 जे सबरी देखि राजुऐ जामें जाहर ऐ सिरदार ।
 ऊंचे कूँ चाहे नजर परि जाइ
 जे मौसाइते दोऊ ऐं ज्वान
 मेरी तौ जे हरि फोरि जांगे, मोरे सुनि लेउ घोड़ा वारे ज्वान ।
 थोरी सौ राजु ऐ उर्जन सर्जुन कौ, बे मौसी पै लँइ लिखवाइ ।
 जा डोकरी नें बादर फारे, जाऊते पहलें हम है आए ठोकि वजाइ ।
 ब्वाकी एक चली हति नांइ
 जहर के लड्डू हम लै गए बनी के बीच में
 ब्वापै है गयी नाथ सहाइ ।
 स्यांपन के जहर ते बुनाओ मर्यौ मात ।
 हम दिल्ली सहर कूँ जननी जांत

हम दिल्ली कू जाइ, बात्या के जोरें पहुँचें
 जी कहुँ घरि से धीर
 चारुयी विधान के राजा समें, बागर की उठाइ दिगे धूरि ।
 बेटा मेरी कही तू मानि
 भव कैं छौ माता ते मिलि प्राप्नो, सेगी बहू ऐ समझाइ ।
 मार्नि कही मेरी उनु सई धीर
 धो कही काक की मानति नाइ, जामा की उठाइ गयी धूरि
 जाहर कहता है—

१६. 'माता सुत काका की हूँती भैया
 करि देती ब्याइ छीनि सिहैया
 सुत फुल्ले की हूँती बोर
 सब फौजन की करुँ समीरु
 जी कहुँ हूँती सेरी बन्धी
 सब बामर की मानिकु बन्धी
 मागे बिसे तनक नाउंगो
 बाछल माता
 ऐ ठकुरानी
 बोनु रही, सिर जाई
 मरदन के बिसबाना बटें ।
१७. जानें घोड़ा लयी सबाइ
 घोड़ा सयी ऐ सबाइ
 दिल्ली सहर कू बात ऐ, वांगर मांक जौरे हाम
 जी कहुँ दिल्ली पकरें बाह
 छो करेँ गऊन के दान
 म्वाते साला जसे फेरि दिल्ली में भाए ।
 जौरा भाए दिल्ली खेत
 जमकि रहे तामा के महल
 जो तसा सिरदार है,
 ब्वाके संग सईयो बु वाकी ई ऐ सिरदार
 सो एक सिपाही ऐ बुझन लागे
 दादा मेरे
 कहाँ हूँति ऐ ऐ बाछुवाई
 सो बाछुवाई मंडा कहाँ मिसै ।
१८. हरी हरी गिसम बिछी ऐ दर्माई
 प्यासो पिऐ भुकि रहे ऐ सिपाई
 सो टूटति सान दाप तबसन वै
 म्वाँ हूँति ऐ बाछुवाई

बाछ्याई भंडा म्वां मिले
 म्वांते सुजंन चलयी फेरि दरवाजे पै आया
 पहुंच्यी ऐ रमनीक
 तखत पै पहरे दाखु पायी
 पहरेदार कहे मेरे बोर
 कसें श्री मन दिल गोर
 हम कहा पूछनु बात
 ब्वास्याइ ते दादा हम मिले
 सो हमें दोजी गैल ब्रताइ
 कौन रजन के पूत कहां गढ़-किले तुम्हारे
 रौतिक रूप भयी एकु राजा
 दिल्ली को ब्वास्याइ लागतु चाचा
 महम किले पै ब्रज्यी नगाड़ी
 ब्वा दिन पाग राजा रूप ते पलटी ।
 सो परि गई लाज पाग पलटेकी
 दादा मेरे

- का हींति ऐ बाछ्याई
 बाछ्याई तबला कहां ठुके
 १८. इतनी मुनिलई बात ज्वाव ज्वावन नें दीयी
 बिरयो राज भयी मन फूल
 चार्यो दिशान में जाकी राजु रस्यो चार्यो खूंट
 सो जानि अजाहीं तेरो जाइगी
 ब्वा चौहानीन में
 दादा मेरे
 मरिगे जहर विस खाई
 सो तेगा हमारै ना फल ।

१९. “लम्बी की यी हाथ
 सलाम बाछ्याइ ते कीनी
 बाछ्या ठाड़ी ऐ करजोरि
 कौन रजन के पूत श्री तुम भौतु मलूक रखत श्री मोइ ।”
 “रौतिक रूप भयी एकु राजा
 दिल्ली को ब्वास्या लागत चाचा
 महम किले पै ब्रज्यी नगाड़ी
 लाख खिची तरवारि पींठि दै ब्वा दिन भाज्यी
 मेरे पिता नें झुकाइ दए हाती
 ब्वा दिन पाग राजा-रूप ते पलटी
 सो परि गई लाज पाग पलटे की

चाचा मेरे
सोजी फिरादि रे हमारी
माते में मतीजे सगत ऐं ।

२१. "कै कोई जाहूँ बिन्दु घरे राठोरी राना
भ्ये दिए हात को खाइ दरे घोड़न की दाना ।
बु खमीवार अपनी भूमि को
भ्या में कितनी जोर ।
हुटिआ गाँडूँ जोल्सा तेने कहा मचापी सोर
सो ठाढ़ी वास्वा कहि रह्यो
जाहूँ भसबेसो, हाँ
घाइ रह्यो झड़ा रेनु
पुड़ीर, कीए भसल किपार, भाकड़े सब माङ्गारे
वे संबर वारे कौन बिचारे
वे जाकर हूँ रहे हमारे
सिकरवार, परवार
किए कछबाहे तड़कर
पुड़ीर कीते भसल किगार
बे परे कैदि में दलें दार
कैदि किए जायों कुसरई
चार्यो विसन में फिरति तुहाई
सो इतनी जोर वमी भी चाचा मेरे
दिल्ली के भावे धरि रह्यो

२२. पीमनु छोड़ें हतुनाएं
बात सुनिसेठ हमारी
तुम बागर की करि देउ त्यारी
हम बात कह रह्यो ठीक
बु मरवानों ऐसो ऐ
सो दिल्ली की उड़ाइ बेगी धूरि
ठोकूँ सेगी मारि करे ठोरी दिल्ली बस में
तारा गढ़ सौ गढ़ नहीं, नहीं खिगूँ सौ बोड़ा
मीरा गाजी सौ मरतु नहीं सो बाने तारागढ़ ठोरा
बाछपाइ में सिखवाई पाती
चारि रूखन चारि भिदूठी जारीं
सै भिदूठी महवी की चस्यी
बीच मुकामु कहूँ ना कर्यो
मेरठ के दरबजे वे गयो ।
मेरठिया पूछें बात

दस बापर तम्बू सन्धी खोजि गढ़यी ब्रधमान
 लसकद चालै संद की
 सो दहसाने गढ़ पापान
 सो कटि कटि धुरि गई घम्बर में
 सूरज नें जोति छिपाई
 जा की भामु गरव में घटि गयो
 बास्याइ के जोरु लड़ी
 सुनि बसमा मेरो बाव
 तुम बागर कूं जात श्री तिहारी नाइ फसै तरवारि
 बाह छुड़ाए जात, ऐ निवस जानि कैं मोहि
 हिरवै मंते बाउगे सबनु बढुंगी तोहि ।
 निमक हरामी है गई, भित सई पस्टनि तेरी मोस
 ऐसी बीखतु ऐ मोह,
 घोसो दिगे तोइ
 —सो हंस विनास होइ बागर में
 —बसमा मेरे

२५. —ठाड़ी बास्याइजायी कहि रही
 स्वाति लसकद बस्यी फेरि हांसी में भायी ।
 जाइ बास्याइ पूछै बाल कौन को रे किल्लयी भायी ?
 बाबा मेरे, सो ब्याकौ ऐ मातेबाव,
 ब्याकौ मानजी सगतु ऐ सुनि मै मेरी बाव
 बेरा वै वै सोम मैं सो हुम है भाय ब्याके पास
 बाछ्माइ करि रह्यो ब्यानु
 तुम हिन्दू बसबीर
 कहूँ तुम भिति मति जइमी
 हमारे कोई नाइ छिपाउ
 भेल घोबन की बँचि गईं
 सो तुम जैयों बाबा अपने प्रापु
 हांसी छोड़ी गए हिसार
 भाई थोकड़ कौ म्बाँ सग्यो बजाव
 बास्याइ नें सिखवाई पाठी
 भाइ भिति मानज मेरी छाठी
 बड़ी मरोसो बासा मोइ
 हड़बल कर्है फौज की तोइ
 गाम परगने बैठ्यो सार्ह
 जोरन ते सेउ तीनि तिहार
 भाबि जाउ जनि सेउ मरार

ज्यां ती कोपि चढी बाछ्याई
 लै चिट्ठी अहदी कू दीनी
 दादा मेरे
 वांचिली जी हुरमरे सवाई
 सो परभानो वास्याके हात को ।

२५. लै चिट्ठी अहदी को चलयी
 चलयी चलयी हांसी में गयी
 नीचे चाहि नजरि फिरि जाई
 जाकी वस्ती बड़ी लग्यी परकोटा
 अब सबु हांसी को एकु लपेटा
 नीचे चाहि नजरि फिरिजाई
 दरवाजे पे तारी पाई
 लै तारी जानें तारी खोल्या
 वाला के वो जोरें गयी
 जाइ वाला पूछतु बात
 कहाँ के तुम सिरदार श्री, कैसे आए हमारे पास ।
 कैसे आए पास
 सुनो मेरी बात
 अहदी देरह्यौ ज्वावु खबरि तोइ अबऊ न सूझी
 जे दल तो पे आए घूमि
 घेरि तेन्नी हांसी लीनी
 चिट्ठी फेंकि तखत पे दीनी
 वो वालानें वांचि हात में लीनी
 मसि भीजत रेख उठान
 लिख्यौ वास्याइ को फार्यौ
 अहदी मीडै हात, कहा गजवानो फार्यौ
 सो चनन के भोरें मिरच चवाइगी
 वाला दादा मेरे
 करुगी हलकु भयी जाई
 परवानो वास्याइ के हात को ।

२६. जानें अहदी लीयो घेरि फेरि गलवाहीं डारीं
 अहदी दयो खम्भ ते वाँधि
 जामें दई कुरन की वानें मार
 मोइ मति मारै दादा मेरे, मोइ मति मारै
 जे गजवानो वाला तू चौं फारै
 मैं ऊ ती नौकर वास्याइ को भैया
 चिट्ठी लायो वास्याइ के हात की

तुम परवाना भपनी देठ
 तुम परवाना लिखि देठ
 सो ग्रहणी ठाढ़ी कहि रह्यो
 भागमल्ल दीवान बँठि पसक्री में आयो
 भागमल्ल भी कँसी कीजे
 हटिबो कँसो होइ, अंग चोरे में लीजे
 हटिबो कँसो होइ, जुज्ज सरवरि कौ कीजे ।
 बेरी भावे द्वार बैठना बाऊ ऐ दोजे
 सो हटि हटि भुज्ज करै हाँसी पै
 सो दादा मेरे
 बोसि रह्यो चिरजाई
 हाँसी पै साको हम करै ।

२७. लै भिदूठी ग्रहणी कौ बस्पी
 बीच मुकाम कहूँ ना कर्यौ
 बस्पी बस्पी तम्भू पै गयो
 चोठी फेंकि तखत पै धीनी
 बाख्खाने बाँधि हाथ में सीनी
 देखत भिदूठी परिगो धूँषा
 भोर करै हाँसी पै धूँषा
 सो जनन के भोरें मिरच खबाइ गयो
 बासा दादा मेरे
 ग्रहणी हुसकु भयो जाई
 तम्भू में ते बास्या कहि रह्यो ।

२८. चारि पहर रजनी के बीते
 तुम करो रखीई भोजन भी के
 बिगुल भज्यौ बास्या बज्जवाँ
 सूजेवार ऊ फौज सजावे
 तुम बाँधि सेठ हुसमान कटारी
 घुंभीवार ऊ बाँधी पेश
 ग्रब बेरि सेठ बासा के महस
 सो कटि कटि खान गिरै घरतो पै
 बासा दादा मेरे
 बोस रहै चिरजाई

२९. तू भाज्जा बागर देख कूँ
 जाने हाँसी लीनी तोरि भूटि दिस्ली पहुँचाई
 बासा बागर भाज्यौ जाइ
 बासमते जे करै जुबाब

सुनिरी नानी मेरी बात
 अब जोरन नें हम डारे री मारि
 जीरा आए हांसी खेत
 म्वां दीखि रहे ताला के महल
 जानें हांसी लीनी तोरि लूटि दिल्ली पहुंचाई
 सो ऐसा जुलमु कर्यी ऐ नानी
 उर्जुन सुर्जन नें
 रूप मंत के
 मन में दया नाई आई
 जानें भानज डार्यी मारिकें ।

३०. म्वांते पल्टनि चली फेरि वागर में आई
 सासुलि गढ़ति पड़ापड़ देखि, मेख
 घौरा पंडलि सेत, तूती भौंहरे ते वाहिर चलि कें देखि ।
 नाहक रारि करी जोरान ते
 फौज लै लै आए साजनि भौहरे ते वाहर चलि कें देखि
 अपने बलम कौ मैं तो घोड़ा पाऊं
 घोड़ा पाऊं, पाँची कपड़ा पाऊं
 कपड़ा पाऊं, पाँची हतियार पाऊं
 लैकें वीकु वास्याइ ते मिलि आऊं
 ऐसे वचि जाइगी सासुलि हेरौ तेरी बेटा
 और अब वचिवे कौ सासुलि नाइ
 जापै जे दल आए घूमि
 गोरख तुही
 'अरी मेरी री जाहर नाहर भया ऐ
 संजा की बेटा,
 जाइकेँ चीं न देइ जगाइ
 अरी बहू आजु देइ चींन जगाइ
 गोरख तुही ।

३१. नासिका में बारी चुन्नी
 मोतिन की तोतादार
 जापै घांघरौ घुमकदार
 टेड़िया हमेल हार
 रानी पायल की भनकार
 गोरी बलमै जगायन गोरी जाई
 सो पिउ की प्यारी बल में जगामन गोरी जाइ ।
 धारऊ सजाइ लियौ
 चौमुख जराइ लियौ

तुम परवानो अपनी देउ
 तुम परवानो सिद्धि देउ
 सो भहवी ठाड़ी कहि रह्यौ
 भागमल्ल दोवान बैठि पसकी में प्रायो
 भागमल्ल भी कैंसी कीजै
 हटिबौ कैंसो होइ, बग चोरे में सीजै
 हटिबौ कैंसो होइ, जुज्ज सरवरि की कीजै ।
 बैरो भाबे द्वार बँटना भाऊ ऐ दीजै
 सो हटि हटि जुज्ज करै हाँसी पै
 सो दादा मेरे

बोलि रह्यौ सिरजाई
 हाँसी पै साकौ हम करै ।

२७. सै बिट्ठी भहवी की पत्नी
 बीच मुकाम कहूँ ना कर्यौ
 पत्नी पत्नी तम्पू पै मयो
 भीठी फोंकि छलत पै दीनी
 बाछ्याने बाधि हाथ में सीनी
 देखत बिट्ठी परिगौ धूँपां
 भोर करूँ हाँसी पै धूँपा
 सो जनन के मोरे मिरच बबाइ गयो
 बाला दादा मेरे

भहयो हुसकु भयो जाई
 तम्पू में ते बास्या कहि रह्यौ ।

२८. आरि पहर रजनी के बीते
 तुम करी रखीई भोजन धी के
 विगुल भग्यौ बास्या बजबाबै
 सूवेदार ऊ फौज सजावै
 तुम बाधि सेउ दुसमान कटारी
 धुँडोदार ऊ बाधौ पेच
 भव घेरि सेउ बासा के महस
 सो कटि कटि ज्जान गिरै परती पै
 बासा दादा मेरे
 बोलि रहै सिरजाई

२९. तू भाग्जा बापर देछ कूँ
 जानै हाँसी सीनी ठोरि सूटि दिस्ती पहुँचार्
 बासा बागर भाग्गी जाइ
 बाछनते जे करै बुबाव

सुनिरी नानी मेरी बात
 अब जोरन नें हम डारे री मारि
 जीरा आए हांसी खेत
 म्वां दीखि रहे ताला के महल
 जानें हांसी लीनी तोरि लूटि दिल्ली पहुंचाई
 सो ऐसा जुलमु कर्यी ऐ नानी
 उर्जुन सुर्जन नें
 रूप मंत के
 मन में दया नांइ आई
 जानें भानज डार्यी मारिकें ।

३०. म्वांते पल्टनि चलो फेरि वागर में आई
 सासुलि गढ़ति पड़ापड़ देखि, मेख
 धौरा पंडलि सेत, तूती भींहरे ते वाहिर चलि कें देखि ।
 नाहक रारि करी जोरान ते
 फौजै लै लै आए साजनि भीहरे ते वाहर चलि कें देखि
 अपने बलम कौ मैं तो घोड़ा पाऊं
 घोड़ा पाऊं, पाँचौ कपड़ा पाऊं
 कपड़ा पाऊं, पाँची हतियार पाऊं
 लैके वीकु वास्याइ ते मिलि आऊं
 ऐसे बचि जाइगी सासुलि हेरी तेरी बेटा
 और अब बचिबे कौ सासुलि नांइ
 जापै जे दल आए घूमि
 गोरख तुही
 'अरी मेरी री जाहर नाहर भया ऐ
 संजा की बेटी,
 जाइके चीं न देइ जगाइ
 अरी बहू आजु देइ चींन जगाइ
 गोरख तुही ।

३१. नासिका में वारी चुन्नी
 मोतिन की तोतादार
 जापै घांघरौ घुमकदार
 टेड़िया हमेल हार
 रानी पायल की भनकार
 गोरी बलमै जगायन गोरी जाई
 सो पिउ की प्यारी बल में जगामन गोरी जाइ ।
 थारऊ सजाइ लियौ
 चौमुख जराइ लियौ

गंगा सब घेरि सीनी
 बम्बून पै परी नीर
 जिनको कौन बधावे धीर
 बलमा सोइ रह्यो जिउ दबकाई ।
 तँनें माहक वैश कर्यो औरान ते
 कोपक चढ़ी बास्याई
 सोइ रह्यो जिउ दबकाई ।
 धन सिरहाने, पनि पाइल प्राबं
 ठाकी ठाकी रानी जे बलमै जगाबै
 कबळ छौ ठाकी तरवारै सहारावै
 मेरे तौ जानै बलमा बागर तेरी घेरी
 जैसें हौसुनिया में मुषी मेरी घेरी
 बसो जग्यो मसगज बली की फूसी देखी
 ऋषते कित्त गई सुन्दर मारि लड़ी मोइ तानो देखी
 भाई टूटे पर्वग के छाल महल को सिधि गई देखी (अम्म)
 पाटो चढि गई किरच-किरच टूट्यो सिरहानी
 सो ठाकी भोट फोक बंगला की
 सो संभा को बेटी
 बोरो वैति रे लगवाई ।
 वास्याइ चढ़ि घायो तेरो सीम में ।”

३२. “मानि से बचन पूठ मेरी
 पाँच गाम औरान कू दैद, भाषो सहर दल्लेसी खेरो
 सो मानि से बचन पूठ मेरी ।”
 धरो कँसो होंतुएँ राँड भूमि वैबै
 में टुकड़े है है सङ्ग भूमि पं
 जे चौहानी खेरी
 छो कैसी हौंतिऐ राँड भूमि वैबी
 धरे जाहर ठाकी करे जुबाव
 सु नरसींग पाड़े ऐ लौंति बुसाइ
 जानै नरसींगु सीयो बुसाइ
 जे पल्लनि चढ़ि घाई बेटा
 बागर घेरीए सवरी तेरी भाइ ।
 तेरी बागर घेरी भाइ
 भज्जू बमरा बोनिकें तेरी पूज पसै तरवारि
 तेरी बासा सोयो घेरि मूटि हाँसी की करवाई
 तुम पं मापु सहाइ

फौज हम पै हति नाई
 वे कछवाए भरि रहे जोर
 मांगै लायी व्याहिकें सो वो खूबु दिखामतु जोर
 सो सोमत सिंधु भयी कछवायो
 लड़िबे कूं ठाड़ी है रह्यौ
 सो सुनि ठाड़ी माता कहि रही
 इतनी सुनि कें बात ज्वाबु लीलीने दीयी
 बागर वारे पीर तैने डरु काकी कीयी
 मैं तो ऐसी भरुं उड़ान
 नौ जोजन मरजादै जाऊंगी फारि
 ऊपरते छोड़ी तरवारि
 नरसिगु पांडे देंतु जुवाव
 अरी माता कहां लीला वो ऐ सिरदारु
 लीला नें तोरि कें रस्सा ऊ लीनी
 वढि कें पामु महल में दीनी
 एक गुरु की पैदाति
 नरसिगु भज्जू औरु चमारु
 हम पै तो जाहर सिरदारु
 भैया देखि चलैगी गुपत की मार
 सोटा वारी आवै वावाजी
 माता रंचादे (घोड़ी)
 बसवनु डारैगी मारि
 तुम कसि बांधौ अब जीन
 बोलि लेउ नरसींगु कूं नीर
 भज्जू चमरा चलै अगार
 जाहर तौ लीले के गात
 खूबु फलै वीरन तरवारि
 हलकारी जानें फौजन में वीत्यौ
 वे गजवानौ कैसौ वीत्यौ
 नौसै नवासी तंगु जौ टूट्यौ
 तुम सुरजनै लेउ बुलाइ
 राजा पै लायौ काऊ देवता पै
 सब की हात में तें छूटि गईं ऐं तरवारि
 आजु सबकी छूटि परी ऐं तरवारि
 भैया मेरे घोड़ा लेतु बड़ाइ, पिछमनौ तू मति करियो
 नरसींगु कूदि पर्यौ कर जोरि
 कछवाए लीये घेरिकें, मारि मारि कें भजाइ दए सबरे औरु

भज्जू जमरा करि रह्यौ जोर
 घेरि जानें नाके सीये ।
 दोऊ मचाइ रहे सोर, घेरि जानें सबरे सीये ।
 कर ओरें सिरवार
 उजुंन सुजंम लीनों मारिकें
 भाई म्हारी नाईं फसी सरवारि
 जब दसु में जानें घोड़ा हुंकार्यौ
 सोमसु ठौ बास्याइ जानें दाब्यौ
 सब दसु सीयौ जाको मारि
 घरे ठाढ़ौ बास्या ओरें जाके हाथ
 बास्याइ पै महरो बनवाळ
 प्रब मोइ मति मारें बीर
 हेमुसहाय धनियां जानें जाते जाते घेर्यौ
 हेमुसहाय धनियां जानें पइयां परसु छोड़्यौ
 बास्याइ पैरे महरो बनाबाळ
 धनियां ने कसस चढ़ाए भारी
 गोरख तुही
 वे कहुं देखे तुमनें उजंम सुजंम
 अजुंन सुजंम दोऊ मौसाइते रे भाई ।
 कहां रीतक के वे सिरवार
 बास्या में संघौ करि दयी हासु
 दौऊ भैया जात ऐं पकरि सेउ महाराज
 ह्य विहारी महरो बनबावें
 कसस चढ़ायें दिनराति
 उजुंन सुजंम जानें जात जात घेरे
 जात जात घेरे दोऊ मौसाइते भाई ।
 दोऊन का सीया सीस काटि
 दोनों रे सीस कुरजो में धरि सोए
 उजुंन सजुंन दो मौसाइते भाई
 भाइके सत्तामु अपनी धम्माजीते कीनी
 “कै दस हार्या बछड़े कै दस जोत्या
 कई दस हार्यौ धम्मा कई दस जोत्यो
 मरखींग पाईं तेरो जातु जात जूम्यौ
 पूजौ भड़ाबौ बास्याई छूद्यौ
 भज्जू जमरा तेरो काम जो धायी ।
 जब दस में घोड़ा हुंकार्यौ
 तीजौ भड़ाबौ बास्याइ की धायी

लीले घोड़ा के पैर धावु-धावु आयी
 दुपटा री फारि व्वाकी पैर मैंने वांध्यी
 दिल्ली कौ वास्याइ मैंने पैयां परती छोड़्यी
 हेमूसाह वनियां मैंने जांत जांत घेर्यी
 व्वापै ती महरी वनवाऊं
 वनिया कलस चढ़ावै भारी”

गोरख तुही

“अरे वे कहूं देखे तैने उर्जुन सुर्जन
 उर्जन सुर्जन दोऊ भैनि के वेटा
 भैनि के वेटा वेटा बंद रे तिहारे
 वेटा उनकी कहौगे खुसराति
 सीने की थारी अम्मा मांजि-मांजि लैयी
 जोरन की री सौगाति दिखाऊं
 थारी लाई मांजि
 जाहर के आगें धरी, थारी में घरे ऐं दोऊ सिरदार”

“मैने ती पारे बछड़े तैने चौं मारे
 जिनकी ती कामिनी वेटा कैसें कैसें जीमें
 लंबे लंबे पट्टे इनकी खुली सी वतीसी
 जिनकी रे कामिनी वेटा कैसें जीमें
 तोइ नेंक तरसु आयी हतु नांइ
 तेरी रे मुखड़ा वेटा कवऊ न देखूं
 तोइ तां रे दूधु मैंने बकड़ी कौ प्यायी
 मैंने दीये आंचर कौ इनकौ दूधु
 अपनी खोर मैंने इनकू प्यायी
 बकड़ी कौ दूधु वेटा तोइ जी पिवायी
 नेंक तरसु तोइ इन पै नांइ आयी ।
 तेरीरे मुखड़ा मैं ती कवऊ न देखूं”
 “अरी मैया मैं ती तोइ दिखाइवे कू नांइ”

घरते चल्यौ ऐ जुलमी
 जाकी देखि व्याही खांति पछार
 ‘तुम ती रे जांतौ, राजा, चेला जोगी के
 मेरी देखि कौन हवाल
 आजु बलमा मेरी कौन हवाल
 गोरखजी ।

“मन में उदासी तू ती मति री लावै
 अरी व्यांहता नारि
 वचन ती पूरी मैं तो, व्वाते करूंगो

मेरी बाछस मंग्या,
मेरी घरमु घटि जाय”

दाटा तुही ।

“भोड़ा बकायी जानें सबव सुनायी
तुम घनि भूंची बँठी राजू ।”

“बोही न रहेंगी बालमा

राज पल्ट है जाय

भाजू बलमा राज पल्ट है जाय”

बौरानी भिठानी रे

बोनु जो दिगी रे बालम प्यारे रे

मोहि घर-भंगना न सुहाइ ।”

गोरखजी

“दिल तो रो टूटं प्रवती

बचनन को ठो बीध्या

भम्मा को प्यारी

जानें साईं ऐ घरकार

भाजू राजा खांतु भिमी में पछार”

तुम तोरो रानी मोकू

खानी बनाइसँ रामी

कांसी सगाइ दे

भोजन जाँगे तेरे हाठ के भाज

मारें मारें रिख के मारें जूलमी डिगरिजु गया

बेसा जोगी का

भाजू जानें रोहियों की देखि गैस

थर में तो कामिनि जानें रोमति छोड़ी

गयी भजुंन से के तो पास

“तू तो रे कहें मेरे जीरें भायी

बीहानी ऐ मागि जाइ तेरी वामु

तेरे घर में बेटा सुन्दर कामिनि

माता तो रोमति छोड़ी भाजू

“मोकू तो तू तोरो ठीरु जू दीजी,

भजुंन से मिया,

भाजू भिमी पै ठीरु मोकू हनु नाइ ।”

इदनी रे सुनिकें जाको थोड़ा हीस्पी

बागर बारे सुनि सँ जुबावु

भाजू मामा सुनि सँ जुबावु

तूठी सुनाइ दे भपनी सबदु बतार बं

लीली के गुरु भाई भैया ज्वान
 तुंदिल नगरी मैंने वातजु राखी
 व्याहि फें लायी सिरियल नारि
 तोकूं फिरि व्याही ऐ सिरियल नारि
 वो ती री कामिनि तैंनें रोमति छोड़ी
 छोड़ें ती जांतु ऐ मोऊ ऐ आजु
 “तोइ ना रे छोड़ूं मेरे लीले वछेड़ा
 तुही ती लगावै नैया पार ।”
 “तोकूं जिमी में वेटा ठीर जु नाइ
 चौहानन कूं नाएं दादा ठीर
 अरे मक्के कूं जाना, वेटा
 कलमा पढ़ि आना
 चेला जोगी के
 मौलवी के जैयी भैया पास ।”
 घोड़ा ती रे खोल्पी जानें करी ऐ सवारी
 घोड़ा उड़ावै जुलमी आजु
 कारी ती बदरी में घोड़ा समानी
 उड़ि उड़ि घोड़ा लगतु अगास
 मक्के में आयी याकूं, मौलवी पायी
 जाइ दै रह्यी घरकार
 “हिन्दू घरमु तीरे चींरे विगारै
 उम्मर के नाती आजु
 कहा ती रे असनी तोपै आनिकें पर्यी ऐ
 चीं आयी हमारे पास
 जाहर चीं तीरे आयी हमारे पास
 “मेरी रे अम्मा नें बोली जो मारी
 गु समाइ गई गोरे गात
 आज वुही समानी गोरे गात
 कलमा सिखाइदै मोकूं
 मक्के पहुँचाइदै
 तेरौ जनमु न भूलूँ अहसानु ।”
 कलमे “पाक कदर बेली पाक ऐ
 पाक सांई तेरौ नाम
 पाक सांई केजे कलमा
 कलमी से उतरीगे पार
 कुंजी कलम कुरान की
 कलमा मुख कूं नूर ।

मेरी बाखल मंया,
मेरी घरमु घटि जाय'

वाता तुही ।

'धोड़ा बड़ापौ जानें सखद सुनायी
तुम घनि भूँजी बँठी राजु ।'

'दोही न रहेगी बासमा

राज पस्ट है जाय

घाजु बलमा राज पस्ट है जाय'

घौरानी जिठानी रे

बोखु जो दिगो रे वालम प्यारे रे

मोहि घर-भंगना न सुहाइ ।'

गोरखजी

'दिस तौ रो दूटं भवती

घपनन कौ तौ बीघ्या

घम्मा कौ प्यारौ

जानें साई ऐ घरकार

घाजु राजा खांतु जिमी में पछार'

तुम तौरी रानी मोकू'

खानौ बनाइस रानी

काँसी लगाइ दे

मोजन जैगो तेरे हात के घाजु

मारें मारें रिस के मारें जुलमी जिगरिनु गया

बेसा जोगो का

घाजु जानें रोहियों की देखि गेल

पर में तो कामिनि जानें रोमति छोड़ी

गयो घर्जुन से के ठी पास

'तू तौ रे कहें मेरे जौरें घायी

बीहानी ऐ सायि जाइ तेरी दागु

तेरे घर में बेटा मुन्दर कामिनि

माता तौ रोमति छोड़ी घाजु

'मोकू तौ तू तौरी ठोइ जू दीजी,

घर्जुन से मंया,

घाजु जिमी पे ठोइ मोकू हतु नाइ ।'

इतनी रे सुनिकें जाकी घोड़ा हँसपी

बागर बारे सुनि सँ जुबाबु

घाजु सासा सुनि सँ जुबाबु

दूती सुनाइ दे घपनौ सबहु बटाइ दे

दिन में री जाऊं संसार लखैगौ
 दरवाजे पै पावै बाछलि माइ
 घोड़ा बी खोल्यौ जानें जीनु निकार्यौ
 चेला जोगी के
 फरिका लीयौ डारि
 कूदतु आवै जाकौ उलल बछेड़ा
 मोरतु आवै दादा वाग
 म्वांते चलयौ ऐ सहर दलेले अपने खेरे में आयी ।
 म्वांते उड़ायो, घोड़ा उड़ायो
 आयी सहर दलेले अपने गाम
 अरी चन्दन किवारी म्हारी खोलि खोलि दीजो
 मूंगा दे बांदी,
 दरवज्जे पै ठाड़े जाहर बीर जी ।
 अजी राजा उम्मर के चौकीदार जगिंगे
 पहेरेदार जगिंगे
 तुम कूं चोरु चोरु कहिकें डारें मारि
 गस्तीमान बी हमारे
 चौकीदार बी हमारे
 क्या भई ऐ दिमानी खोलौ तुम बजुर किवार
 अरे करानी खोलौगी बजर किवार
 तू तौरी बांदी हमनें टूकों से पारी
 अरे क्या हो गई ऐ दिमानी तू तौ आजु ।
 मैं तौ रे राजा तैनें टूकों से पारी
 गैल बटोहीरा सुनिलै वात
 तू तौ जाहरु ऐ चिरने बताइदै भैया आजु
 जौरे हमारी तूतौ सिर कौ सांई
 अरे तुम हौ सिरियल के भरतार
 गंगा रे जमुना तेरे ताख विराजै
 जे ही महलन में चिरने आजु
 अजी मैं खोलूं नाइ बजरु किवार जी
 और सरापु री कहा तोइ दुंगो
 घरकी कमोरी
 भोर परै कोड़ों की तोप मार
 गोरख जी ।
 भोर भयो चिरहीं चौहचानी
 भयो तौ सकारौ अरे हां
 सोमत ते जागी संजा की बेटो

पात पात पे लिखि गए
 याबा नबी रसून ।
 पच्छिम सहस्रं माता ईसुरी
 धुर पूरव साह मबार
 गड़ मँटनी का सँस्रं घौमिया
 धगड़े का कमाल जौ पीर ।
 पोरू बिरहमा बैठियो
 हाती रहूमी बलु लाइ
 सोले वारा छावड़ा सु
 भरतो में जाइ समाइ ।”
 म्वांते चल्पी ऐ रे
 चेला जोगी कौ मँया धामु
 घोड़ा उड़ायो, धनुंन ले पं धायी
 माता ते करखु जुबाब
 जोरें रे धायी जानें मुक्त जी फारधी
 धामु वेटा धाइजा भरती के बीच
 धामु सोइ दे रही ऐ धनुंन से ठौर
 “ज्योँ ती न घाळं मेरी धनुंन ले मँया
 मँ तो मन धावे जहाँ रहँ
 तो मँ समांयो कामिनि साळं
 धर नारी ऐ लँकें जांगो समाइ
 धरो माता कूँ बचन दीयी धामु ।”
 बारह बारह बसं भईं ऐ गृबिस्ता
 धामु बनी के जाकूँ बीच
 सुधि जोरे धाई धर की जाकूँ
 घोड़ा पलाने धायी राति
 “कहा रे धसनौ तोपे परधी ऐ
 घोड़ा पलाने धायी राति
 धर कूँ रो जाळं कामिनि ते मिसि घाळं
 मेरी धनुंन से मँया
 मेरी दू सुधि सं जुबाबु
 धायी रँनि धायें बछड़े धायी राति पाछे
 धायी राति महसन में कहा कामु जी
 राजा जम्मरू के श्रीकीदार बी जगिने
 जोइ जोइ कहिकें डारें मारि जी
 श्रीकीदार बी हमारे गस्तीमान बी हमारे
 धायी क मँया जायो मँ तो धायी राति

दिन में री जाऊं संसार लखैगी
 दरवाजे पै पावै बाछलि माइ
 घोड़ा बी खोल्यौ जानें जीनु निकार्यौ
 चेला जोगी के
 फरिका लीयौ डारि
 कूदतु आवै जाकौ उलल बछेड़ा
 मोरतु आवै दादा बाग
 म्वांते चलयौ ऐ सहर दलेले अपने खेरे में आयौ ।
 म्वांते उड़ायौ, घोड़ा उड़ायौ
 आयौ सहर दलेले अपने गाम
 अरी चन्दन किवारी म्हारी खोलि खोलि दीजो
 मूंगा दे बांदी,
 दरवज्जे पै ठाड़ें जाहर बीर जी ।
 अजी राजा उम्मर के चौकीदार जर्गिगे
 पहरेदार जर्गिगे
 तुम कूं चोरु चोरु कहिकें डारें मारि
 गस्तीमान बी हमारे
 चौकीदार बी हमारे
 क्या भई ऐ दिमानी खोलौ तुम बजुर किवार
 अरे करानी खोलौगी बजर किवार
 तू तौरी बांदी हमनें टूकों से पारी
 अरे क्या हो गई ऐ दिमानी तू तौ आजु ।
 मैं तौ रे राजा तौनें टूकों से पारी
 गैल बटोहीरा सुनिलै बात
 तू तौ जाहरु ऐ चिरने बताइदै भैया आजु
 जौरे हमारी तूतौ सिर कौ सांई
 अरे तुम हौ सिरियल के भरतार
 गंगा रे जमुना तेरे ताख विराजें
 जे ही महलन में चिरने आजु
 अजी मैं खोलूं नाइ बजर किवार जी
 और सरापु री कहा तोइ दुंगो
 घरकी कमेरी
 भोर परै कोड़ों की तोपै मार
 गोरख जी ।
 भोर भयी चिरहीं चौहचानी
 भयी तौ सकारौ अरे हां
 सोमत ते जागी संजा की बेटे

घरे बाँधी ठे करति जुवाव
 घरे क जे तो बाँधी से करति जुवाव
 'राति रो बाँधी मैंने पीतमू देखी
 सिर कौरी बासमू हां ।
 स्वाव में देखे मैंने सपने में देखी
 भगइधौ ऐ सारी मोते राति
 तुम नें तो रानी स्वाव में देखी
 घरे बेंटी संजा की सुनिमैं मेरो बात
 जाहर भगरे सबरी राति 'रो, हां ।
 मोते कही ऐ री सांकर खोसी
 मैंने देखि खोसी हृति नाइ ।
 घरी कहुर क्रिया सैंने
 गजवानो फार्यो
 कूपरी गई तौ मेरी बासमू घायो, सैंने बाँधी बादर डारे फारि ।
 घोड़ा की तौ कोड़ा रे
 जे मगवाबै
 बाँधी में लगवै देखी मार
 भब मति मारं बेंटी
 घर सामस, बेंटी संजा की तू घाबू
 उति तीरो भाए के ती फिरि को ती घामें
 पिमा ती सेरी भरठार
 बनसब में ती वे ती ऐसैं रो घूमें
 जाते भर्जुन से करति जुवाव
 घर घायो बेटा वचनन सुनायो
 जेसा जोगी के
 तेरो भजमठि जगत जहार
 राति की बात मिया कहामू सुनाऊं
 मेरी घसुंन वे,
 बाँधी में खोसी नाइ बजर किवार
 धारह् बारह् बरस ठोकू भई गुजिस्वा
 जेसा जोगी के
 पहरे वे बाँधी ऐ हृस्वार
 घामू तीरे जाना तूती जोड़ू से मिमि घाना
 घाप बादे की पसाघी भपनी नामू ।
 घोड़ा चड़ायो जानें
 घायो रंनि घामें जाके
 घायो रंनि पीछें, दरबज्जें वे घाइगी जाहर घोर

अरे चढ़िके महल पै मैं कूक मचाऊं
 सोता नगर रे जगाऊं
 का गस्तीमान रे जगाऊं
 क्या तू भया था दिमाना
 तो में लगवाऊं कुरों की मार
 म्वांते चली ऐ घन सिरियल आई
 जाहर ते करै री जुवाब
 मेरे देह को, मेरे रे सिर केरे साई, चिरने बताइदै तू आजु
 दाईं ओर तेरे देखि लहसनु कर्हि ऐं
 म्हारे वाप के तू तौ रह्यौ तौ मजूरा
 तैनै में गोद तो खिलाई
 सुनि लै परदेसी जुवाब
 बंदीं खोलै नांइ बजर किवार
 जौ तू हमारे सिर कौ साई
 अरे चेला जोगी के
 खोलो तुम अपने बजर किवार
 घोड़ा उड़ायी रे, घोड़ा कूदि के आयौ
 जाकौ उलल बछेरा
 आयौ महल के बीच जी ।
 जिन बातन्नें मैं तौ कबहू न मानूं मेरे सिर के साईं
 ठोकर ते खोली जी किवार
 दुनियां ऐ क्या दोसु ऐ
 मौपै घर की तिरिया परचौ मांगै
 मेरे लीला बछेड़ा
 गुरु तौ मनाइलौ जानें आपनौ
 ठोकर मारी बांए पाम की, खुलि जांइ बजर किवार लोहे सार की
 घोड़ा लगायौ घुड़सार में
 हंसि हंसि के बातें होइ
 नारीरे पुरिष की
 भोजन लाओ तुम तौ कहा बतराओ
 बेटी संजा की
 अपने पीया ऐ देउ न जिमाइ, हाँ ।
 आधी रैन गई ऐ रे, आधी खसि आई
 राजा नांए भोग विलास जी, हां
 अब तौरी जाइ रहे रानी
 फिरि तौ आमें
 संजा की बेटी

रोबुना धामें तेरे पास थी
 बाघस—'भरो बहू तैनें बन्धो पगु दीयो
 सहर दलेसे को परसो दीयो तैनें धामसई गुस कीयो
 भई ना बेटा की साथी
 जोरान पीछे पिया निकारयो, गांसी थी मारी
 भरो रांड तू कौन को होइगी
 राजपाटु गए छोड़ि पीठ भये बनोवास वासी
 सिरियस—फेंकि वए छसा छाप बेड़ा
 कजरो बन के नाथ मित्ताइ दे सिरियस की थोड़ा
 सासु तू धबतौ हो राजी
 ओ से सासु मेरी हरी हरी बुरियां धब तो हो राजी ।
 सास बहुरिया दोनों डूँडन निकसीं
 डूँडिगी बिकट उजार
 सबरोरी बनखड़ सूखी रो पायो
 तू डूंगर मैना
 कहा गुन हरियस तेरो डार
 थोड़ रो वारा थी धायो वा सिपाई
 सोसा सीसा थोड़ा
 धापे जरव दुसाला
 गल में मोसियों की मासा
 लंबी सी मासो जाके हात ।
 सासे को चादरि वो सी भारिकें बिछावे
 जपतु धससजी की ती नाम्
 धांसू रो टूटि ब्याकी घरसो गिरेगी
 बेटे लंबा की
 मेरी जाई गुन हरियस डार
 के छोरो डूंगर मेरो जोबी कू मित्ताइ दे
 नहीं हुसि दूंगो तोई पै पिरान
 धब तो रो धायो मैना,
 फिर बो बू धावे, मे ब्याई से कसंगी जुबाव
 सासु बहुरिया दोऊ बूझति बोलें
 तू कहाँ बुबक्यो बेटा राति
 धब जूँ गये तोरो मरो धर्जुन से मैया
 धब जाइवे के हत नाई ।
 धरज करंगी बहु सासु ते
 मैं धम पीहर है धाज
 फूसन की बिरिया

न आयी नाऊ बाम्हन को
 न आयी मा जायी बीर
 राजा को बेटी
 विगरि बुलाई बहु जाउगी
 तेरे न होंइ आदर भाउ
 उन महलन में
 जो तेरी भैया कहूँ आमती
 मैं जाँत न बरजूं तोइ
 राजा की बेटी
 घर भूली री घर पालनी
 महलन में सामनु होइ
 संजा की बेटी !
 रानी धमकि महल पै चढ़ि गई
 खाती कौ लालु बुलाइ
 लालु बिसकरमा
 अरे बीर कहूं, कै तोते बाढ़ई
 तोते देवर कहूं कै जेठु
 रे नवल खाती के
 एकु पालनरौ गढ़ि लाउ
 काइ कौ तेरी पालनी
 काए के बान मगावै
 राजा की बेटी ।
 भैया अगार चंदन को पालनी
 वुही लाइ दै रे समबान
 सुगढ़ खाती के
 गुहि लैयी लहरिया बान ।
 अरी आक-ढाक गढ़ि लांगो
 मोपै चंदन पैदा नांइ
 धीअ संजा की ।
 लाला और बाग मति जइयो
 जइयो ससुर के बाग
 व्वा बींजा बन में
 लाला आठ कुढ़ारी नौजनै
 गहि लई ऐ गैल वा बीझा बन की
 भैया रे आमत देख्यो विरछ नै
 वो विरछा दीयो रोइ
 चंदन को पोधा

हम तो आए तेरो पास करि
 अब नौ दीयो ऐ रोह
 अन्दन के बिरवा
 नौ तू आयो भैया पास करि
 मेरो संबा गुदिया काटि
 नबस साठी के ।
 भैया रे डरिया काटें ना बनै
 तेरो चलैगी पीछि ते काम
 अन्दन के पीछा
 साठी पहसो कुड़ारो मारियो
 जामें निकरो दूख को भार
 अन्दन के पीछा
 दूजी ते तीजी दई
 पीपी में दीयो मुड़काइ
 अन्दन की बिरवा
 सासा रे भरि गाढ़ी अन्दन अख्यो जे
 सै गयो सिरियस द्वार
 नबस साठी की ।
 गड़घो हिकीजी घाग में
 जे काछन-साछन जाइ दोऊ घानु भूसि वे
 काछन भूसि बाछसा बहू सिरियस सेइ न बुसाइ
 राजा की बेटी ।
 म्वति बाँदी असि दई
 तू याकि करो ऐ घानु
 संबा की बेटी
 मेरो सासु ते ख्यौं कहौ
 इक दस दिन भामनु नाइ
 पीछ संबा की
 संप की सहेसो बुसानठी
 जे सिरियस भूसन जाइ
 क्या साबा बन में
 भैया रे जाइ ठाढ़ो भई बाग में
 जाते भूस ते बोसति नाइ
 पीछ संबा की
 काछन भूसि बाछसा
 बहू सिरियस छोटा देइ
 राजा की बेटी

भैया नरसींग माख्यौ रोरिका
 पलरैयन मैं उरभ्यौ हारु
 बहू सिरियल की
 टूटि हारु धरती गिर्यौ
 ऐ मन रोबै पछताइ
 रे घर सासु लड़ंगी ।
 भैया रे भूलि भालि म्वाँते चले
 दोऊन अघवर परिगो वादु
 सासु बहून में
 कौन पै पहरी जे चुरी
 तैनें कौन पै कर्यौ सिंगारु
 राजा की बेटी
 अरो अपने बलम पै जे चुरी
 बलमा पै कर्यौ ऐ सिंगारु, सासुलि प्यारी
 मरि जइयौ रीं डुकरिया
 मेरौ री बेटा मरि गयौ धरती में समान्यौ
 रग-जग नें जान्यौ
 तैनें महल कर्यौ ऐ भरतार
 तू मोइ जाइ न बतावै ।
 तेरे जानें मरि गयौ
 मेरे नित आवैं नित जाइ
 सासु तेरी बेटा
 जौ तेरें आमतु जांतु ऐ
 मोइ इक दिन देइ न बताइ
 लाल मेरे कूं ।
 इतमें लजायौ बहू सासुरी
 तैनें दोऊ कुल खोइ दई लाज
 राजा की बेटी
 आजु सकारौ हीन दै
 मरवाइ दुंगी डोल बजाइ
 तैनें कुटमु लजायौ
 राजा की बेटी
 जौ बेटे की सादिली
 तौ इक दिन पहरी देइ बैठि आंगन में
 हाथीदांत की पलिकिया जानें लई मरए तर डारि
 मैया पहरे पै बैठी
 इतको पहरी इत गयौ चहुंगयौ पिछवार

पीर नांह बगदे
 बेटा हों ली आम तो
 चोर बगदिये की नांह
 तू ब्याते माहीं करि धाई
 धाजू सकारी मांगी मिले
 कस्मि बटाइ धळं सामु
 कहा ऐ परि पाछें ।
 सिरियस प्रांगन केबड़ी
 डरिया पे बोल्यो कागुरे
 भकर रघुनारी
 चीने मढ़ाळं तेरी चेंचुरी
 पामन में पदमु सगाळं
 नेंकु जैयी पीर पे
 जैयी रे बलम पे ।
 मुक्त के वचन मामूं नहीं
 कोई लिखि लिखि चीठी बांधि
 बसम धपने की
 कामा, कागद की टोटी पर्यो
 कसम न में परि गई भादि
 बनवासी कामा ।
 चीरफारि कामद कर्यो
 उंगरीन की कसम बनावे
 राजा की बेटी
 म्हा जाहर ले ध्योँ कहाँ तेरी धन नाजू न साइ
 मरं के जीव ।
 बोली रे भुरि-भुरि पित्ररा है गर्द
 ध्वाके नाइ जीबे की घास
 सकड़िया देसा
 मोर पास सिखी मरमी
 जाऊँ बीच में जं जं राम
 बसम धपने कूं
 गोसु मारि कागा उद्यू
 महरी पे बंद्यो जाइ
 म्हा जाहर बंद्यो
 बोली ली कामा कहा कही
 तेरी धन नाजू न साइ
 मरं के जीव ।

भैया भुरि भुरि पिजरा है गई
 ब्वाकी नांइ जीबे की आस
 लकड़िया दैआ
 मरि गई ऐ मरि जान दै
 मैं चलत जिवाऊं राजा की बेटी
 कागु दियौ ऐ बहकाइ कें
 पीरु आप भए असवार
 ब्वा लीले से बछेड़ा
 घोड़ा उड़ायी जाहर बीर ने
 पौरी पै भूलम्यौ आइ
 जाकी सिध पौरि पै ।
 रानी सोमति ऐ कै जागत्यै
 तुम धन खोलो बजर किवार
 जाहर म्वां ठाड़े ।
 जाहरु ऐ तौ खोलिलै
 नहीं चोरु बगदि घर जाउ
 मेरी सासुलि जागै ।
 लीला दुनियां ऐ कहा दोसुऐ
 घर की तिरिया परचौ मांगै
 मेरे लीले से बछेड़ा
 ठोकर मारो बांए पाम को
 खुलि गई बजर किवार म्वां लोहे तौ सार की ।
 घोड़ा लगायी घुड़सार में
 खुटियन पै धरे हथियार
 पीर मरदानौ
 भैया रे भरि लोटा जलु लै चली
 जे धोवै बालम के पांइ
 नैननु भरि रोवै ।
 रानी और दिन हंसती खेलती
 आजु कैसें मैली भेसु कहै चौ न मन की ।
 तेरी मैया मोते जारु लगावै
 भरतार लगायी
 चुरिया उघटी
 मैं सहर करी ऊं बदनाम
 तेरी मैया नें, हां
 आमन ऐ सो आइ चुके
 तेरे अब आइबे के नांइ

तेरे रग भग्न में
 माकं खाड़ी है कलं वं रही ऐ बुकरिया ऐ मेनु
 म्हारे भामन की
 तुम लौ भामन ना कहीं
 मेरी धनु कौन हवाम्
 उषी महाराजा
 छट्यो महीना गरम की
 नें बिनु कहा सँ जाऊँ
 बागर के राता
 गूह मनाइलेंत आपनी
 रूमासु फिरायी, चाबुक वं मार्यी
 तेरे जनम न संपति होइ हाँ राती
 बनिहारी पीर तेरे हाठ वं
 मन भावें जहाँ जाउ
 उषी महाराजा ।
 घोडा पसान्यो जानें महसते
 सासुनि ते करति भुबाव
 संजा की बेटी
 सासुलि लीयो जाइ ती सीजियी
 भाम् बेटा तेरी जाइ इन महसम ते
 बेटा तिहारी सई आपनी
 भाम् भाग्यो जाइ इन महसम ते
 जौम् पहलें कापड़े
 कोई चारि धरी बतराइ मेरे सामा ते
 चारि धरी बिरमाइ साम मेरे कू
 कूभा होइ जाइ पाटिसू
 सो प समदु न पाट्यो जाइ
 मेरी सासुनि प्यारी
 बालकू होइ जाइ राबिसू
 जना मुजाऊँ गुरपानी सँ दू
 पोइ न बरज्यो जाइ
 धुर बागर मारी
 घोडा बड़ाइ वी महसते
 जाके पोछें बाखन माइ
 जे रोमति जाति ऐ
 तेरी कानें मँने जोगी सेइपी
 नें ठाड़ी रही दिन-राति

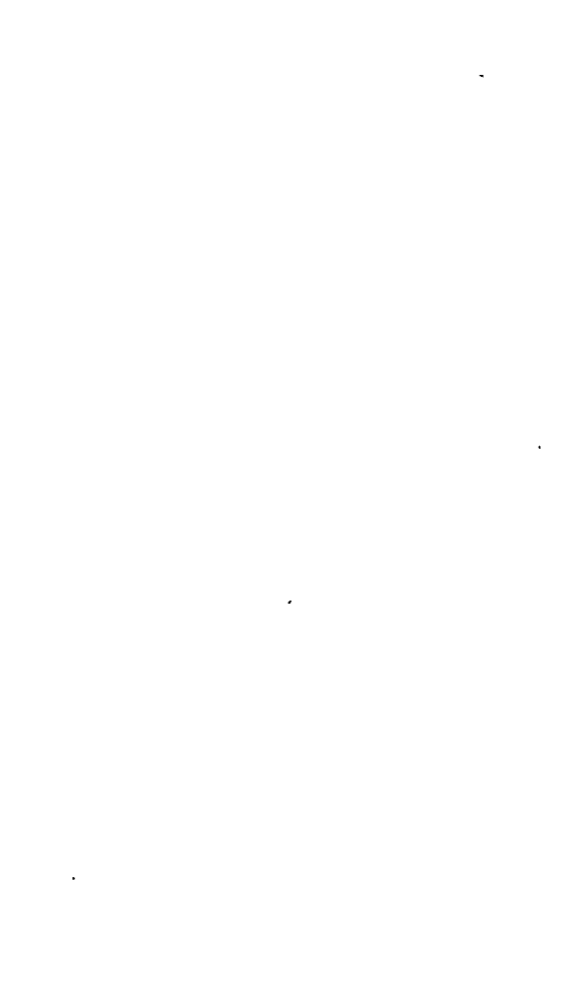
बांभन के छोना
 जोगी सेयी तैनें भली करी
 करि दुंगों मुलिक में नामु मेरी बाछल माता
 मेरे जिय की कहा परी
 तेरे लगी महल में आगि
 मालु जर्यौ जांतु ऐ
 बेटा महलन कौ ती कहा जरै
 सोटि लकड़ियां ककरा पथरा
 मेरी लगी ऐ कोखि में आगि
 पीरु भाज्यौ जांतु ऐ
 अरे मूडन पै पहुँच्यौ गयो ।
 यौ घोड़ा गयो समाइ
 धुर बागर वारी
 रानी तौ रोबै जाकी गोरी रे रोबै
 बाछिल खांत पछार
 बारह बारह बर्स रे धोई तौ लंगोटी
 ठाड़ी तौ रही ऊं दिन-राति
 तोइ निरमोही ऐ मोहु न आयौ जी
 तैनें भैया डारे मारि
 बेटा बीरन डारे दोऊ मारि
 ऐसौ री जुलमी तैनें जुलमु गुजार्यौ
 रोमति छोड़ी तैनें नारि जी ।
 रुदन मचावै रे सासु बहुरियां
 आजु अपनी सासुलि ते करैगी विलाप
 रांड जौ कीनी तैनें जुलमु गुजार्यौ
 बहनौतनु भूलति बैरिनि नाइ ।
 जिनके काजें मैने जोगी सेयी
 मेरी बहुअरि प्यारी
 सेवा तौ करिकें व्वाइ लाई मांगि ।
 नामु जु डूव्यौ रे जांतु सुसर कौ
 मैने जोगी सेए दिन-राति
 मेरी सासु नें ऐवु लगायौ
 सिरियल बहुअरि री
 मेरी पिया तौ घर नां ओरी
 हम तौ निकासे मेरे उम्मर राजा
 तोसी तौ बहुअरि जाइ समाइ री
 मेरी री बलमा री आजु तौ समानौ

इन मूढ़न में
 में तो क्याईं कहंगी गुजराम
 गोरख जो ।
 दाईं दाईं घोर तो सिरियस सीनी
 बाईं घोर बाछलि माय
 बाछसि रानी बाकी माइ री
 सिरियस री तो रे चुरियां चड़ति ऐं
 बाछस री नागर पान
 इन मूढ़न में
 रानी की सिगाह पूरी भयी
 सुनि सेउ रामी

मैना-सत

[साधन]

[सम्पादक—श्री अग्ररचन्द नाहटा]



साधन रचित मैनासत

(ले० अग्रचंद नाहटा)

हिन्दी साहित्य में काव्यों की विविध संज्ञाएँ और उनमें से कइयों की परंपरा भी काफी प्राचीन है। पर राजस्थानी और गुजराती के साहित्य प्रकारों और रचनाओं की विविध संज्ञाओं के संबंध में जितना अच्छा और अधिक प्रकाश डाला गया है, उतना हिन्दी के रचना प्रकारों पर नहीं डाला गया। करीब २५ वर्षों से मेरा इस संबंध में काफी रस रहा है और अनेक रचना प्रकारों के संबंध में प्रकाश डालने का प्रयत्न भी किया है। अभी अभी हिन्दी पत्रों में भी मेरे कई लेख इस संबंध में प्रकाशित हुए हैं, उनमें 'सत' संज्ञक काव्यों की परंपरा भी है, जो करीब दो वर्ष पहले लिखे जाने पर भी अब राष्ट्र भारती में प्रकाशित हुई है। मैं चाहता था कि मेरी यह हिन्दी रचना प्रकारों सम्बन्धी लेखमाला जल्दी ही प्रकाश में आ जाय पर हिन्दी विद्वानों को उसमें अधिक आकर्षण नहीं मालूम होता। गहरे अनुसंधान के बाद एक लेख तैयार किया जाता है और बहुत दिनों तक संपादकों के पास योंही पड़ा रहता है। इससे मालूम होता है कि हिन्दी में अभी शोध के प्रति जैसा उत्साह और आकर्षण होना चाहिये—नहीं हो पाया है।

'सत' संज्ञक काव्यों की परंपरा वाला लेख तब लिखा गया था जबकि 'अवन्तिका' में 'मैनासत' पर डा० माताप्रसाद गुप्त का एक लेख छपा था। आलोचना में प्रकाशनार्थ मेरे उक्त लेख को स्थान नहीं मिला। शायद संपादकों ने उसका कोई महत्त्व ही न समझा हो। उसके बाद एक और अच्छे हिन्दी पत्र को भेजा गया, वहाँ से भी वह लेख वापिस आगया। तीसरी बार राष्ट्र भारती को भेजे हुए भी करीब एक वर्ष हो गया, कई बार पत्र लिखने पर 'मई' के अंक में प्रकाशित हुआ।

जहाँ तक मुझे ज्ञात है 'सत' संज्ञक काव्यों की परंपरा अपभ्रंश से सीधी हिंदी में आई है। पाटन भांडार में २० पद्यों वाली 'सीता सत' नामक एक अपभ्रंश रचना है। यह १३वीं १४वीं शताब्दी की होगी। उसके बाद के जो कई काव्य मिले हैं उनका परिचय मैंने उपरोक्त लेख में दिया है। इस संज्ञावाली बहुत सी रचनाएँ हिंदू व जैन कवियों की हैं। जबकि 'मैनासत' एक मुसलमान कवि की एक प्राचीन रचना है। और उसके बाद कविवर जान की रचनाएँ भी मिलती हैं। 'मैनासत' का सर्व प्रथम विवरण सन् १९०२ को खोज रिपोर्ट में छपा है। पर उसमें उसका रचयिता अज्ञात लिखा है। वह रिपोर्ट मुझे प्राप्त नहीं हुई। मुझे करीब १० वर्ष पूर्व इसकी एक प्रति मिली थी, जो मुनि विनयसागर जी के संग्रह के गुटके में अन्य रचनाओं के साथ लिखी हुई थी। इसका विवरण मैंने अपने राजस्थान में हस्त लिखित ग्रंथों की खोज भाग दो में प्रकाशित किया था। बीकानेर की सुप्रसिद्ध अनूप संस्कृत लाइब्रेरी में भी इसकी दो प्रतियाँ हैं। एक राजस्थानी विभाग के गुटके नं० ७९ में और दूसरी हिंदी विभाग की प्रति नं० ११३ में है। ये तीनों प्रतियाँ १८वीं शती की लिखी हुई हैं। अनूप संस्कृत लाइब्रेरी का गुटका नं० ७९ संवत् १७२४

से २७ में लिखे जाने का कई ग्रन्थ ग्रंथों के अंत में उल्लेख है। इसके बाद फत्तोदी के श्री फूसचन्द जी अलवर के संग्रह से मुझे एक गुटका मिला, जो वीससवेरास की प्राप्त प्रतियों में सबसे पुराना है। इसमें साधन कृष्ण 'मैनासत' बारहमासा सं० १६३३ डि जेठ वरी १२ को प्राग् रे में प० सोहा का लिखित प्राप्त हुआ। अभी तक मुझे प्राप्त सम्बन्धोत्सेख वाली समस्त प्रतियों में 'मैनासत' को सबसे पुरानी प्रति यही है। सन् १९५४ के नूसाई में भ्रमन्तिका में डा० माता प्रसाद गुप्त का साधन का मैनासत लेख छपा है उसमें 'मधुमासती' की दो पाठ्याभों में मैनासत को कृपा एक साक्षी कृपा के रूप में प्राप्त होने का दिया है। साथ ही ए० ए० अस्करी की प्राप्त प्रति का उद्धरण भी दिया है जो मनेरघरीफ खानकाह-पुस्तकासय में है। खानकाह पुस्तकासय वाली प्रति साहजिकी कालीन या उससे पुरानी है। मेरा विचार था कि प्राप्त समस्त प्रतियों के पाठान्तर के साथ इसे प्रकाशित किया जाय, पर भ्रमबाल जी को कई पत्र दिये उनका कोई उत्तर नहीं मिला। इधर डा० सत्येश जी का यही विचार रहा कि मैं इसे जल्दी तैयार कर दूँ। मुझे प्राप्त प्रतियों के मिलाने से मासूम हुआ कि इनमें पाठ भेद बहुत ही अधिक है। सं० १६३३ वाली पुरानी प्रति का पाठ कुछ अस्तव्यस्त देख अनूप संस्कृत साइबेरी गुटका न० ७९ से नकल करवाई गई और महोपाध्याय बिनयसागर जी के संग्रह से गुटका मंगवाकर पाठान्तर दिये गये हैं। पाठ भेद कितने अधिक हैं—यह एक प्रति के पाठान्तरों से ही अनुमान लगा सकते हैं। मनेर घरीफ का खानकाह पुस्तकासय और अनूप संस्कृत साइबेरी की दूसरी प्रति—ये मूससमानी डग की हैं। अतः उनके पाठों का मिलान कर धृष्ट एवं प्राचीन पाठ का निर्णय करना आवश्यक है।

मैनासत के रचयिता मियाँ साधन का समय निश्चित तो नहीं पर प्राप्त प्रतियों के आधार से १६वीं शती माना जा सकता है। उसकी ग्रन्थ रचनाएँ हों तो उनको भी प्रकाश में लाना चाहिए। डा० माता प्रसाद गुप्त ने सं १५६१ या उससे पहले का ही रचना कास मागा है।

हिंदी के बहुत से मूससमान कवियों ने भारतीय कथानकों और सांस्कृतिक परंपराओं को ग्रहण किया है। मैनासत में उसके पति का नाम 'सोरक' दिया गया है। सतीत्व की रसा को ही यहाँ 'सत' संज्ञा दी गई है। राजस्थान में धाज भी यह शब्द इसी अर्थ में प्रचलित है। ऐसी आदर्शनारी-कथाओं का प्रचार स्त्री समाज में अधिभाषिक होना बाधनीय है। नैतिक प्रेरणा देने वाला साहित्य ही मानव के लिये बहुत हितकर है। पर धाज कल विकृत प्रेम कथाओं को ही अधिक बढ़ावा दिया जा रहा है और आंगारिक साहित्य को और अज्ञात है वह भी राष्ट्र के लिये अवांछनीय है। आशा है मैनासत का मूसम्पादित संस्करण किसी योग्य विद्वान के द्वारा सीधे ही प्रकाश में आयेगा। मेरा यह प्रयत्न तो प्रेरणा देने का प्रयास ही समझना चाहिये।

मैना-सत

॥६०॥ श्री सरस्वत्यै नमः—प्रथमर्हि^१ गाउं सिरजन हारू ।
 अलष अगोचर मया भंडारू ।
 आस तोर मुहि बहुत गुसाईं ।
 तोरे डर कंपों कररिक्क नाईं ।
 शत्रु मित्रु सब कहुं सँभारै ।
 भुगति देइ काहू न विसारै^२ ।
 अपनै रंगि आपै^३ राता ।
 कोई वूझि कहै किछु वाता ।
 पिलै इह रही जग में फुलवारी ।
 जो राता सो चल्या संभारी ॥१॥^४

सोरठा—*जिन^५ कलि विलसी राह । अस दल गज दल दलमले ।

साधन भए ते खेह । प्रथमी चीन्हा ना रह्या ॥२॥

चौपाई—जाती देखो यहु संसारू । क्या लोका^६ तुम धरहु पियारू ।

पानी जैसा बुदबुदा^७ होई । जो आवा सो रह्या न कोई ।

पहलें राय जु दई उपाने । आवत देखे जातन जाने ।

इक छत राज निरंजन कीन्हा । प्रथमी रह्या न तिन कर^८ चीन्हा^६ ॥३॥

दोहा—धूवां जैसा^{१०} धौरहर । कोई^{११} रह्या न निदान ।

साधन रोइ उफानीया । ज्याँ ज्याँ मनह तुलान ॥४॥

सोरठा—कौड़ी कौड़ी जोरि । मूये ते^{१२} किरपन वापुरे ।

गये गडंत करोरि । मन पछिताने पापीया ॥५॥

चौपाई—सात न कवर नगर कर धूतू । कपट रूप नारद कर पूतू ।

तिहि रतना मालिनि हकराई । मैनासत तुम्ह^{१३} देहु डुलाई ।

दूत वचन जो मालनि पावै ।^{१४} तुह मालनि सिर हत पहराऊं ।

*सं० १६३३ वाली प्रति में यहीं से प्रारंभ होता है अन्य पाठ भेद भी काफी हैं ।

१. विनऊं, २. इसके आगे उक्त प्रति में यह अंश ७/८वीं पंक्ति में इस प्रकार है—
 फूलिज रही जगत फुलवारी, जो राता सो चला संभारी ॥१॥

३. आपु रंग राता, बूझै कौनु तुम्हारी वाता । ४. इसके बाद यह दोहरा विशेष है—

बंधन आखि हमारीयां, एको चरित न सूझि ।

सोवत सपनो देखियौ, कोऊ करै कछु वूझि ॥

५. जिहि, ६. का लोगा तुम्ह करो पियारू, ७. बुलबुला, ८. तिहिकर रहा न,

९. इसके आगे ये पंक्तियां हैं—

हम पुनि दिनि इकु चलाचल अहै, मुख आखर समुझो ताकै है ॥

१०. कौसी, ११. पृथमी कोऊ न रहै निदान, १२. सु, १३. तै, १४. तो मलिनि सिर ते पहिनाऊं ।

मानिन पान दूति कर^१ सोन्हें । कपट रूप सत्र भागें कीन्हें ।

जोहन मोहन खली^२ संभारी टौता टामम पहिरि सिवाकारी^३ ॥१॥

दोहा—कपट रूप दूती खली । गई मैना के वारि ।

जिहि बिधि रासैं सत्त सी । कौन हुआवन हार ॥७॥

सोरठा—जिहू रासैं करवार । ठाकर^४ वार न बाकीयें ।

हठि^५ सागै संसार । साधन^६ छाह न चाँरीयें ॥८॥

चौपाई—मानिनि जाइ मदिर महि पंठी ।

मैना जहाँ सिहा(स)न बैठी ।

चंपक फूस चोसर हारू ।

दीन्हा भेट भव कीन्ह जूझारू ।

हसि करि पूर्यै मैना रानी ।

कहू भावागमनु^७ कीनि जग मानी ।

कहि माननि सुनि मानिनि^८ मैना ।

धन^९ चीह्यै कस बोझहि बैना ।

तोर पिता घाइ हौं कीमी ।

घारपमै^{१०} ठोहि चूषो दीनी ॥९॥

दोहा—मनु न रहै हियरा उठापी^{११} घागि जरै^{१२} तन मोहि ।

सिबरि सिबरि दुख उपजै^{१३} । देखन भाई तोहि ॥१०॥

सोरठा—सीस न में भूझसाइ । मुसि चंमूत उरि कपटिनी ।

साधन धनप घराइ । जिय पर दुके चहेरीया^{१४} ॥११॥

चौपाई—मैना वात साधु करि जानो^{१५} । कुटनी^{१६} कै बोसैं पठियाको ।

खवहीं नाइनि वेग बुझाई । कुंकुप मरदन कुटनि म्हबाई ।

बेबर बाबर काकि बिभावा^{१७} । नठ^{१८} पटोर घानि पहिरावा ।

रहसी^{१९} कुट्टमि धंग न माई । सब मैना मो पहि कत^{२०} जाई ।

मंस चीर तोरे देखो मैना । सँदेरु मागि न काजइ नैना ॥१२॥

दोहा—बदन जोति चुब^{२१} घुबरी । कस^{२२} भवहेरति घापु ।

मांग कूसि तोरी संयरी । सिरह छनु तोर बापु ॥१३॥

सोरठा—हीयरा कोठा साठि मूषि । रोवै नैन हसैं ।

दूत सधन इहि पाठि । साधन भापु सभारीया^{२३} ॥१४॥

१. के, २. सीन्ह, ३. सभारी, ४. तिहि, ५. जी, ६. साधन ।

७. कहाँ गवन कीन्हो, ८. मानति, ९. सब, १०. तोहि में वारै, ११. जीउ गहमरं,

१२. परी १३. मुमिर मोहू बित ऊपग्यो

१४. सोस नबै भँसागि, मुल रोवै नैननि हयें ।

साधन धम कुचटाइ, ज्यो पर दुके चहेरीया ॥

१५. कंमानी, १६. दूनो, १७. राबावा, १८. मुरंग चू(म)री, १९. हरनी मानिनि,

२०. कहाँ, २१. तोरी घुमरी, २२. कत, २३. यह सोरठा उरन प्रति में मही है,

चौपाई—पिता मोर अनु काहिक राजा ।

पिता राज मोरे कौने काजा ।

पिय दुखु मोहि परउ^१ है आई ।

अस दुखु सबतनि^२ परि जौ घाई ।

महरे कीधी चांदि गुबारी^३ ।

लै गई मांग सिन्दूर उतारी ।

काकरि^४ मालनि^५ करउ सिंगारा ।

मोहि परहरि गयो कंतु पियारा ।

करहि न बैर चांद जो कीन्हा^६ ।

बारी^७ वैसि मोहि दुखु दीन्हा ॥१५॥

दोहा—फिर भाग अदि न भया^८ । मीत कि^९ बैरी होइ ।

बांके दीहा जो करहि^{१०} । ऐसा करै न कोइ ॥१६॥

सोरठा—तिह सों कीजै नेह । जिह सों उर नीवा हीयै^{१०} ।

साधन कौन सनेह । टूटै काचे सूत ज्यौं ॥१७॥

चौपाई— दूती वचन सुनत गहवरी^{११} । कपट रूप रोवै^{१२} अनुसरी ।

तोरे दुख सुनत मरति हौं मैना । हीये आग भर^{१३} फूटसि नैना ।

रितु आसाढ वरिषा पैसारा । सब काहू घर वार संभारा ।

दीपग ऐसे आवन हारा । तोर पियने रित देखि उवारा^{१४} ।

मास आसाढ गए नहि जाई । भुइ बादर लागे बरसाई^{१५} ।

सोरठा— बोल-छाडि देहि मोहि । मनु मैना साची कही ।

आनि मिलावौं तोहि । मालति कौ भौरा जिसै^{१६} ।

सोरठा— जिह सत ऊपरि चाउ । सुपन असतु न रुचई ।

इहु^{१७} सिरु जाइतौ जाउ । साधुन सत्तु न छांडीयै ।२

चौपाई— दूति वचन मालिनि जौ कह्या । मैना घाइ करे मुखु^{१८} चह्या ।

रुखे वैन तीखे तोरे नैना^{१९} । बोले सही^{२०} महा सति मैना ।

लाज कान तोहि कहत^{२१} न आई । अस बूझत जस बोलहि^{२२} घाई ।

१. पराहै, २. सौं तिहि परीयहु, ३. महारा का धीय चंदकुमारी, ले गयो सिंदुर मोर उतारी, ४. का कह, ५. वैरीन करै चंद अस कीन्हा, ६. वाली, ७. ओछे दिनां, ८. सु, ९. करैजु वाके धौंहरा, १०. जिहिसौं दुहं जग थिर रहै ।

११. भरी १२. रोवन, १३. अरु फूटति

१४. दीप गए ते आवन हारा, तोरो पी उन देखौ वारा ।

१५. जिहि घर कंत सुकरहि विलासु, नार न छांडइ पीय कर पासु ॥

१६. दोहा—तोरो दुख सुनि मरतिहौं, बोल बांह दै मोहि ।

जिसि मालति कौ भंवरा, आनि मिला बहु तोहि ॥

३७. जे, १८. रामु मुखु चह्या, १९. तीखै नैना दूखे वैन, २०. सती,

२१. मोरि, २२. बोलसि,

फाटो तासु मारि का होया । एक छाबि जिन दूसर^१ कीया ।
एकोएक करत जीउ देउ । जग दूसर का नामु न सेउ ।

दोहा— मोर भवर बस^२ मासनी । स्य कि पूज कोइ ।
जै ध स्याम गुबर सगी^३ । भवर कि सरबर होइ ।

सोरठा— मारि इकेली सेज । सावन रुति बरस^४ भया ।
का ती^५ होइ क रेज । साधन साहं वाहरी ।

चौपाई— सावनु मैना धाइ उसापा^६ । धरि धरि ससौय हिबोरा तामा ।
हरीयर^७ भुइ कसुमी रतनारी । नाह सरीसी खिससि धमारो ।
उन्ह^८ सुखु सोहि रयन दुहेली । मुरि मुरि मरिहै सेज इकेली ।
सो बुखु सोर देपि हौं मैमा^९ । साधन गंग मीर^{१०} भए नैना ।
कंत सुहागनि झुझहि वारा । गावहि विरह होइ^{११} सनकार ।

दोहा— जोवन जात न आनीये । गये होइ^{१२} पछिताव ।
झानि भवर सोहि मिल्सवौ^{१३} । लैन जगत कछु आव ।

सोरठा— ओ भिम प्रीती न जाइ, जोवन जात न बरो ।
सूक्ति रहै कम्हिसाइ, बहरयां जोवन प्रीति सौ ।

चौपाई— सुन मासिनि सावनु तिहि भावे । जाकर^{१४} दिउ पर देखहि घावे ।
मूहि लेखे संसार उबारो । भोग भुगति बिस^{१५} परो उतारो ।
रितु मानुक ओ सोर कहावे^{१६} । ना तर मैना मूई बरावे^{१७} ।
मोर पिता माइ बर भाई । ओ सुनि पावहि मारिहि पाई ।
सुनि मासिनि प्रागम जो हारों । तिह हौं पासि भगिनि महि पारी^{१८} ।

दोहा— मोर बचन मुषाइ सुनु । जनमु कि जुगि-जुगि होइ ।
कांजी दूध परत ही बिससं । विरसा जाने कोइ^{१९} । २७

सोरठा— भावों गहर गंभीर । नैन गगन^{२०} गोरी भरें^{२१} ।
स्वों करि पावहि तीर । साधन तिरिया नाह विनु ।

चौपाई— सादी मैना मेघ झकोर । उबो प्यास^{२२} मरो मीर हसोर^{२३} ।
दादुर पपिहा कूहकहि मोर । मूनी सेज हिया फाटासि तीर ।
धोर बोस जई तारा पाजं । इहि बे लोहि बरहै दिराऊं ।

१. जिहि दूसरा, २. मुनि, ३. जोरे स्वामु गुबरीरा, ४. पानी,
५. घाइ तुसाना, ६. हरिहरी भूमि, ७. उनको, ८. तोरो दुत
सुनत मरति हँ मैना, ९. मेरे, १०. गीत उठे, ११. बार, १२. नेसठं ।

१३. नहकरति, १४. सब, १५. रितु, मानो जो सोरक घावे, १६. मुपे गवावे,
१७. तू पापिनी मोहि पाप मुनाबसि, इनी बातन सूं सोमर पावसि, १८. कांजी
बूदक दूध जिन, बिकसं परतक गोइ, १९. गंग, २०. तर, २१. अंब लान, २२.
धन गरजे बरसं धतिवांगी, गरिम करे या सोहु भयो पानी ।

सखी सहेली अस मनि आवा^१ । को अपना को रचै^२ परावा ।
अंध कुप्प निसि रयन दुहेली । झुरि-झुरि मरि है सेज इकेली^३ ।

दोहा— जोवन काहि न विलसहू । अलप वै प छांह^४ ।
केतक भवरा बैठही । कमल फूल दल मांहि^५ ।

सोरठा— चौगन जोवनु जाउ । गय पिया पिरति न चाहीयै ।
सूकि रही कुमिराउ । बहुते जोवन पिरति विनु^६ ।

चौपाई— सुगि भादों घन उठ्यो रि जाई^७ । अब तुहि ओ खर बोलिहौ धाई ।
काहू को अस रौती खाई । जाकरि^८ बात सुनावसि आई^९ ।
जौर^{१०} मरौ सो साथि न आवै । तिलगि^{११} आपहि को डहकावै^{१२} ।
डहकत जाइ न बांधै थीती । तिह जोवन सौं कौन परीती ।
सु तिलु एक करतु बहु पापु । तिह लग कौनु विटारै आपु^{१३} ।

दोहा— काजर कीयौ ऊवरी^{१४} । धाइ पापु तस^{१५} आह ।
दरसनु होई लोर सन^{१६} । ऊतर देउ त छाह^{१७} ।

सोरठा— सारद ससिहर जान^{१८} । साधन विरह चवगना ।
जनु^{१९} अरजन के बाण । मार तार^{२०} चूकै नहीं ।

चौपाई— मुनि मैनां यह चढ्या कुवारू ।
नए ताग सह^{२१} गूथहि हारू ।
घर घर बार^{२२} कनागत होई ।
पियु भोगत^{२३} विनु रह्या^{२४} न कोई ।
ज्यो नऊ हारहि होइ उजियारी ।
तिरिया खेलहि सहज धमारी^{२५} ।
तूं काहे आपहि अब हेरसि^{२६} ।
मोर बोल^{२७} तूं काहे फेरसि ।

१. भावा, २. रचै, ३. तिल एक सुख्य जनम कौ पापु, तैलगि कोड़ रुकावै
आप, ४. वैस सुकुमारि, ५. विरह आगि सिगवारि, ६. सोरठा—
तासौं कीजै नेह, जासौं और निवाहिये ।

तासन कौनु सनेहु, साधन डहकि जु छाडियै ।।

७. रिसाई, ८. अमरोती, ९. जिहि की, १०. धाई । ११. जोवन मूए,
१२. लीनै, १३. नसावै, १४. अंधकार जे रैनहु दुहेली, झुरि झुरि मरिहै सहज
अकेली, १५. जस ओवरी, १६. असरणजो लोरसौं, १७. सम १८. उतर का देताहि,
१९. दरस ससि निरवाण, २०. जसु, २१. मदना सह ।

२२. सब, २३. उपजै साख, २४. भुगति, २५. रहै,

२६. जोन्हु दहुं दिस उवैभरारी, तरुणी खेलहि प्रेम धमारी

२७. तूं आपुहं कहि औरहि खेलसि, २८. मेरी वात

घन जोवन जिन होत न सावा ।
गए वार पाछे पछड़ावा ।
घानि भवर छोहि मेसवी ।
सैन पग त कि घी जाव ।

दोहा— घानि संवति सो ऊपरा । छोरी करमि न कानि ।
तिह सग जोवमु खोववी । काहे हो हि प्रयानि ।

सोरठा— जिह राता मोरा पीठ । हौं चेंरी छ सौतिकी ।
बार न बाघौं जीठ । साधन सीस कि राखीर्म ।

घोपाई— सुनि मालनि कौं बारि कि घावा ।
वाठ सुनत मोहि माज न भावा ।
होहि कनागत परस दिवारी ।
मुहिं मेसै ससार उबारी ।
भोम भुगति सो ठासिग मानिय ।
जो मासिनि अपुना करि जाणिय ।
कर कारिक कस घापहि सोजं ।
कारी मास वसन बारी जै ।
करवस सीसि देह जी मोरा ।
तबहु धगु न बोझै मोरा ।

दोहा— इहु जोवन खोरक धिनु । बारि करी सन छार ।
विरति जाइ इन्ह वास तें । सरग होइ मुहु कार ।

सोरठा— सोजं हाथ उषाइ । पाई पीजें बिससीये ।
गए न मूडि बराइ । साधन किरपन वापुरे ।

घोपाई— जमि जोवन भोगबै ससारु ।
तो पहि मैना बहुतु बिषारु ।
बामनि वैसनि पबिनि नारी ।
घरी यन पव घन सरगमु नारी ।

१. सोसिन की तुहि ऊपरी, छोरी कानम कानि ।

२. होसि ।

३. मो जरिही पिय लागि, जैसे छुवा न देखिये
जरा क्या कि प्राणि, साधन सती मुसेलिये ।

४. किनि, ५. खोरिक विन मोहि जगधुन भावै, ६. सरस उबारी, ७. मो
८. ठासी मानो,

९. कुस कारिस कस घाप भगावसि, कारीय मसि कससै मुख लावसि ।

१०. उमरै, ११. जिन वाठ नहि ।

१२. उठाइ, १३. जेयै, १४. बडाइ सपिमुए,

तुं पर बी दिन कातिगु आवा ।
 सहू को षेलै परब बघावा^२ ।
 षेले^३ पवन छत्तीसौ जाती ।
 तुम्हरी^४ वैस भोग की ताती ।
 तुहि देषत और हि लगावा ।
 छोडि सि तोहि निरापनु^५ भावा ।
 ऊडि गयी तासौं कस नेहू ।
 तह करे काजि उदेहं ।

दोहा— जोबनु भोग^६ नु राषीयै । का षोवसि तिहि^७ लागि ।
 सारस^८ सबद फटसि होया । जिउं जिउं देषसि जागि ।

सोरठा— जो राता जिहि^९ पास । सो जिउ ताहू^{१०} मनि बसै ।
 तिहि^{११} तन की का आस । साधु नु जनु माटी परी ।

चौपाई— का कर^{१२} कातिग परब दिवारी ।
 झूठी बात का^{१३} कहसि गवारी ।
 रितु परबी दिनु मानौं सोई ।
 जिहि सरीर मालिनि जिउ होई ।
 जियरा मोर चांद लै घरा ।
 जिय बिनु सब घर^{१४} माटी^{१५} परा ।
 माटी लग जौ आपु विटारौं ।
 घरम परंतर दूहु जगि हारौं^{१६} ।
 रितु^{१७} जानौ लोरक सगि^{१८} मानौ ।
 पिय बिनु जगतु धुंधु^{१९} करि जानौं ।

दोहा— राइ भोग^{२०} इह पृथवी । तिल इकु होइ^{२१} न साउ ।
 जुग जग चलै इन्ह बात तै । तिहि लगि मुहि संताउ^{२२} ।

सोरठा— काया^{२३} विटारै कोइ, जगु राता माटी वसै ।
 चरितु षिलावै^{२४} सोइ । भूठै भूठा पेलीयै^{२५} ।

चौपाई — माटी माटी कहा बषानसि ।
 माटी भेद न मैना जानिसि ।

१. उत्तम कातिग परबु दिवारी, सब कोई खेलै परम घमारी ।

२. वरइ निपट इनी सुरग सुलारी ।

३. मानै परबु, ४. तपै भई असि भाग की ताती, ५. विराना, ६. रतनु भोग करि,

७. खेवसि वह, ८. सरद ससि बहुरे निहि, अ फटै देखै जागि,

९. तिहि, १०. जनु ताकै, ११. ता घर की कस आस, १२. काका, १३. कस,

१४. घर, १५. माटी में, १६. दुहु जुगु धर्म सुनिहवै हारै, १७. और परबु,

१८. सो, १९. भूट के ।

२०. भोगवै पृथिमी, २१. पिसाउ, २२. जुग जुग भूट पतीरवतिहि, लगी मोहि
 न सताउ, २३. काय २४. खेलवै २५. झूठी भूठ ज बोलुना ।

माटी ऊपरि दिव बंधु' मेला ।
 माटी माऊ पिरम रसु पेसा' ।
 'सोन बरन है माटी फूसी ।
 माटी देखि सु माटी मूसी ।
 मादिहि भोग है माटी पाई ।
 माटी उपजे रंग समारई' ।
 माटी किरला बूझै कोई ।
 भरितु पेसु समु' माटी होई ।

रोहा— काज सूत जस टूटि है ।' तैसें ठस की इसि मोर ।
 भगहन छेमु विपाज' तुहि । किससु कहा सुनु मोर ।

सोरठा— साधन जो सिख जाइ । सतु म साहु' भापुना ।
 'मीनें दीजे भाइ । सत भके सत कि भागरे ।

जीपाई— जो मालनि सोरहि अस भावा ।
 मामुहि रोमु न परि ह्वु भावा ।
 'जिह पिय सों भपुना सिख हारा ।
 कौम मापु सो जियरा मारा' ।
 राजू देइ सो कवम बड़ाई ।
 मीप मगाबल का षटि जाई ।
 बचन तुम्हारं घरमुं रवाळं ।
 फुनि सोरहि कामु'' तहौ बरिसाळं ।

रोहा— अरति भागि हौं' मामिनी । है वत'' मरौ बुझाइ ।
 भगहन छेमु'' बीया तुमहि । तुम ही बिलसज जाइ ।

सोरठा— सबरि'' सुपेवी सेज । अन अन भाति सबारिये ।
 जाइ'' फाट करेज । कामिमि'' रसीया बाहिरी ।

जीपाई— मैना पोस भास विषु'' भावा ।
 भुरका पबनु'' तु सीत नाबा ।
 'तफनी नीब पबनु भपारा ।
 दाखण पबन भाहारा ।

१. दृष्टि बिधि २. परम हंस माटी में खेला, ३. समारई, ४. सोनें फूस सु,
 ५. पुनि, ६. तस ठसकाइस, ७. किससहु, कहा सुनें जो मोर, ८. पापहि
 देल बहाइ, सत की कानी भागरी, ९. जमें भापन जिह जुहारा, बारि फेर
 वा परबि जु बारा, १०. इह बुरजो सतु साधि पराई, ते कह बीस न करे बभारई,
 ११. का मुहु बरसावै, १२. मै, १३ जियरा, १४. विस्मसौं, मोरों सतु तो जोइ ।
 १५. सौरि, १६. फटै, १७. साधन साइ बाहिरे, १८. भव १९. रे पीनु तुसार
 जनाबा, २०. दाखल पवन वही जु भपारा,

'कांपहि हार डोर घन हारा ।
 कांपहि दसन^१ नीर झर नैना ।
 गरब तुहार न पावहि मैना ।
 सीत^२ सुपेती जाडु न जाई ।
 अधिक मदनु तरासै^३ आई ।
 मानु बोल तुहि देउ मिली ।
 पोसै^४ केले कउ निसि जाई ।

दोहा— बोल^५ नेह चित विलसहू । कामिनि इह संसार ।
 अजहूँ^६ रसिया मेलवौं । राषहु बोल हमार ।

सोरठा— झूठा^७ नेह न कीज जगु । लपट बैरी घना ।
 जैसा परे सहीज । साधन जीयरा राषीयै ।

चौपाई— सुनि कुट्टिनि^८ मैना उठि जाई ।
 ताकहु भुरहु जनु रई जाई ।
 पोस मास का करहि मोरा ।
 था तनि^९ जिउ हरि लै गउ लोरा ।
 लोरकु विरहु तवै मोरी^{१०} मांगा ।
 सिवरौं नेह पहिरिबी आंगा ।
 विरह आगि पुनि^{११} पवनु बहाई ।
 कह वा कस सुनावसि आई ।
 भोग भुगति कै नियर^{१२} न जराऊं ।
 सीइ^{१३} घाम कै करि न डराऊं ।

१. कांपे हियरा फटे मनहारा २. गात ३. सौरि, ४. हियै तरसाई, ५. पासे अकेले जाड न जाई, ६. नवल नेह नित कामिनी, विलसै यह संसार । ७. अबहि, ८. झूठा यह संसार, झूठै नेहु न कीजिए ।

साधन पिय के बार, साचु होइ जिउ दीजिए ॥

९. रतना मालिनी हकराई, तिहि कह भुरउ जु भरइ जाई ।

१०. झभरि कै

११. मारै मंगा, सुरति सनेह सु पहिरै अंगा ।

१२. तन तिलु न बुझाई, रहा विरहु में नासै जाई ।

१३. नियरै न जाऊं, १४. घाम सीत कै डर न डराऊं ।

॥ श्री मैना का सत ॥

धोपाई— प्रथम हीं बिन धुं चिरञ्जन हारू । असप धमोचर मया भंडारू ॥
 घास तोरो मोहि बहुत गुसाई । ठोरं डर कांपी करर कि नाई ॥
 सनु मित्र सब काहू संभारै । भूगत देखे काहू न बिसारै ॥
 फूलि ज रही जगत फुसवारी । जो राता सौ बसा संभारी ॥
 धपने रंग धापु रग राता । भूमै कौनु तुम्हारी बाता ॥

दोहरा— बघ न भाखी (पि) हमारीयां
 एको धरित न सूक्ति ।
 सोवत सपनी वेपिमी
 कोऊ करै कछु बूक्ति ॥

सोरठा— बिहि कलि बिससी एह । अस दस गज बलमसे ।
 साधन भए ति पेह । पूषमी बिन्हा नां रहा ॥

धोपाई— जाटा देख्यो यह संसारू । का सोगा तुम्ह करो पियारू ।
 पानी जेसि बुभबुला होई । जो धावा सो रह्या न कोई ॥
 पहिले राइ जू दई उपाने । भावत देखे जात न धामे ॥
 इक ससु राब निरजन कीन्हा । प्रियमी तिहि कर रहा न धीन्हा ॥
 हम पुनि दिन इकु बसाबस धैहै । मूप धापर समुझोता कै है ॥

दोहा— भूदां को सौ धोरहर । पूषमी कोऊ न रहे निधान ।
 साधन रोइ डफामिये । जो जो मन ह तुलान ॥

सोरठा— कोडी कोडी जोरि । मूप सो किरपन वापुरे ।
 गए गडंत करोरि । मणि पछताने पापीया ॥

धोपाई— सातनु कुँवर नगर कर घूत । कपट रूप नारद कर पूत ।
 तिहि रतना मासिनी कराई । मैना सत तं देहु डुसाई ॥
 वूत बचन जो मैनिहि पाऊ । तो मासिनि सिर ते पहिनाऊ ॥
 मासति पान दूत के सीन्है । कपट रूप सब धागं कीन्है ॥
 जो हन मोहन सोन्हु सभारी । टोना टामनि पहरि सम्भारी ॥

सोरठा— कपट रूप बसी दूती गई मैना के वार ।

बिहि बिधि रापे सत धौं कौन डुलावन हार ॥

सोरठा— जिहि रापे करतार । तिहि कर वार न धकीये ।
 जो लागे संवार । साधु न छाहि न धंपोये ॥

धोपाई— मासिन जाइ संविर मै पंठी । मैना जिहां सिधासन बंठी ।
 धरी कै फूस चौसरा हारू । भेट दीन्ह धर कीन्ह जूहारू ॥
 हसि करि पूछे मैनां रामी । कहां यवन कीन्ही जग मांमी ।
 कहे मासिनि सुनि मासति मैना । धर धीन्है कस बोसति बंनो ।
 तोरे पिवा घाइ हीं कीन्ही । धो मै धारै पूषी दीन्ही ॥

- दोहरा— मनु न रहै जोउ गृह सरै । आगि परी तन मोहि ।
सुमिर मोह चित ऊपज्यो । देषन आई तोहि ॥
- सोरठा— सोस नवै भै लागि । मुष रोवै नैननि हसै ।
साधन धनकु चटाइ । ज्यो थल दूकै अहेरीया ॥
- चौपाई— मैनां वात सांच कँ मांणी । दूती कँ वोलिनि पतियांणी ।
तव नाइनि कौं बेगि बुलाई । कूँ कूँ मरदन उवटि न्हावाई ॥
धेवर बाबर काढि षवावा । सुरंग चूरी आनि [पहरावा ।
हरसी मालिनि अंग न भाई । अब मो पै मैनां कहां जाई ॥
मैल चीरु तेरो देषौं मैना । सेंदुरु मांग न काजर नैनां ।
- दोहरा— वदन जोति तोरी धूमरी । कत अब हेरसि आपु ।
माग कोषि तेरी सीयरी । सिरह छत्र तोरा वापु ॥
- चौपाई— पिता मोर अरु काहे न राजा । पिता राज मेरै कोनै काजा ।
पियु दुषु मोहि परा है आई । अस दुपु सौंतिहि परीयउ घाई ॥
महरा का धीय चंद कुमरी । लै गयी सिंदुर मोर उतारी ।
का कह मालिनि करौं सिंगारा । मो परि हरि गयी कंतु पियारा ॥
वैरी न करै चंद अस कोन्हा । वाली वैसि मोहि दुष दीन्हा ।
- दोहरा— फिरै भाग ओछै दिनां । मीत सु वैरी होइ ।
करै जु वांके द्यौहरा । असा करै न कोइ ॥
- सोरठा— तिहि सौं कीजै नेह । जिह सों उर निवाहीयै ।
साधन कौंन सनेह । टूटै काचे सूत ज्यौं ॥
- दोहा— तिह जगि आगु सु दे उहीं । जहां न सुरजन मोर ।
भूठ नेह मोहि^१ भोर वसि । कहा करौं कस तोर^२ ।
- सोरठा— समुद्र कि उपै रा जाइ । पवन कि बांधा बाधियै ।
साधन कि वर षटाइ । माह इकेली पीय विनु^३ ।
- चौपाई— माघ तुसार कहौं सुनु वारा ।
नैन करां विनु षिचहि धारा^४ ।
पवन सु सबदनुसार के बाजे^५ ।
डरे नर नाग देव मुनि भाजे^६ ।
पांच इंद्र कौ एकै बैना ।
कंठे भवर लुकी नै मैना^७ ।

१. भूठी वात ता, २. कहा सुनै कछू तोर

३. समुद्र कि पारै जाइ, पीन कि बंधै बंधीयै ।

साधनु कोनु खटाइ, माघ अकेली गोर री ॥

४. सहै को पारा, ५. हीएँ अंगीठी वरै असरारा, ६. उठि सरगै वाजा, ७. सुर
नर सबै देखि कौ भाजा ।

८. भाजै पांच इंद्रो के जना, कंठ अलोप भमर भए मना ।



सात सपेती पवनु फुराई ।
फूटहि हाठ गोठ मरि जाई ।
बिरह छद्मल जिह ऊपरि होई ।
सिंह की सीब न चाँप कोई ।

बोहा— बिरह तुसार^१ सेजु दुयु । मैना बहुतु^२ संतापु ।
पांच भूत की हतिया । इहु काहे कस पापु^३ ।

सोरठा— इहु काहे का पापु पिय कारनि सिर^४ दीजई ।
साधन बहुतु^५ संतापु बरी नितु मार्या भसा^६ ।

चौपाई— घरमहि मासिनि करता^७ जाऊ ।
पाप पंच घरी नहु पार^८ ।
का कहि पापु घरम किह^९ केरा ।
सोर पंच मुक्ता इहु भेरा^{१०} ।
के वहि जाठ कि लागी सीरा ।
सोर सनेह न तजौ सरीरा ।
तनु महि भागि भागि तनु दहै ।
जह जा भागि तुसार का करै ।
मास मास मोहि सुमठ न भावै ।
जाइ भाग जोसौं रहु भावै^{११} ।

बोहा— तिस इकु भागि सु सोय नुहि । पुनि बिरहा संतावा ।
भरी एक कहु मासिनी । को भापुहि बहकावा^{१२} ।

सोरठा— जोवन धाया^{१३} बार । साधन धार न करि सकी^{१४} ।
उतरि गया सो पार^{१५} । सिर दीजै फिर सै^{१६} नहीं ।

१. इन चार घरपाइयों के बदले में दो चौपाइयाँ हैं—

मास मास होठ कि जाऊ, सोरि क विनु मोहि धीर न भाऊ ।

मास मास होठ कि हैबतु, भेरे जोय यहै है कंतु ॥

२. संताप, ३. गुरु, ४. यह छाँड़ि दै संतापु, ५. जीठ वीजिये, ६. फोन,
७. जीबे सँ मरना भसा, ८. करि हीं, ९. निशरिहीं, १०. है मोरा, ११.
सोरक संग जीब है मोरा, १२. भागे की ६ चौपाई इस प्रकार हैं—

जिहि तन भागि बिरह की जरै । भाम तुसार ता देखै बरे ॥
के वहै जाठ कि लागी सीर । सोरक नेह में तज्यो ससरी ॥
मास मास सुनठ न भावै । जाइ भागि जो सोरि क भावै ॥
भागि दैठ सोहि परम पियारा । कहा सुमसि जो बोसु हमारा ॥

११. तिस इकु प्रियिनी भोग करि, बहोरि होइ पछिताव ।

घरी एक के कारन को, मासिनि भापु बहकाव ॥

१४. भाए, १५. साधन सतु कस कीबीये, १६. उतरि गये, ठे पाप १७. बहुरी,

चौपाई— फागुन मदनु न' मानै कह्या^३ ।
 उधर्या^३ पवनु^५ विरह तनु दह्या^५ ।
 व्यापै विरहु पय गहि हरना^५ ।
 वनसपती भई^{१०} इंगुर वरना ।
 विरहु अगनि फुनि पवन बहाई ।
 हरि मैना सिरह न बुभाई^{१५} ।
 कुं कुं चंद^१ बहु षीरीहि वारी ।
 चहु जग^{१०} दे भइ रतनारी ।
 जिहि घरि कंतु ति नारि अमोली ।
 ते फुनि नारि कहि सव होली^{११/१२}

दोहा— रितु विलसहु^{१३} चित मानहुं । पिरमु^{१४} न अगमुहाइ ।
 तिन्हहि^{१५} देखि नहि चिर । रसीया देउ दिषाइ^{१६} ।

सोरठा— फुनि भूठा संसारु । भूठा नेहु न कीजिये^{१०} ।
 साधन पिय कै वारि । साचो हुइ सिर^{१६} दीजिये ।

चौपाई— का भूठा भूठा^{११} जगु षेलसि ।
 भूठ नेह लागि^{१०} चित्त न मेलसि ।
 पिय म^{१३} भूठ मम^{१३} कपट ज षेला ।
 भूठ नेह लागि चित्त न मेला ।
 विनु सुहागु कुंकुम कस अंगा ।
 सींदूर भूठ नाह^{१३} विनु भंगा ।
 गीत नाद चाचर धम^{१४} तारा ।
 तिन्ह रुचै जिन्ह पासि पियारा ।

१. जो, २. कोई, ३. उखरि, ४. पीन, ५. होई, ६. सीतल, ७. भए अंगरे पांनी, ८. प्रति नं० २ में नहीं है । इसके बाद 'जिहि घर' वाला पद्य है और फिर 'कुंकुं' वाला । ९. हसै, दुर पुरैवाही ।

१०. चिहुं दिसि जगत भरे फुलवाही ।

११. ते फागुन नित खेलै हीरी ।

१२. गावति फिरै तरुण अरुवारी, काम घरे सुरग सो नारी,

नं० १६ के बाद नं० २ में यह अधिक है,

१३. मानौं पिउ विलसौ,

१४. प्रेम अंग न समाइ,

१५. तेहु देखि न समभासी,

१६. मिलाइ,

१७. भूठा यह संसार, झूठा खेल न खेलिये,

१८. जिउ, १९. भूठी भूठी, २०. भूठी बात कस आनि, परम २१. जिय,

कटुजु खेलै, २२. नरक कुंड सो आपहि मेलै, २३. नहीं, २४. घरै,

मो' जीय पीयं यिनु जगत्सु' गतु उजारी ।

हौं' कहा पेसौं पिरम' धमारी ।

करउ' फागु सोरक धरि धावै ।

नातरु मंता मुए वराबै ।

बोहा— कत नेह बिनु बाधि' । श्रीउर न' मन महि भाव ।

ता' दिन करहु फाग मै । अब सोरक धरि धाव ।

घोरठा— साधन चह्या वसतु । विरहनि विरह चवग्युता ।

परतीय सुवधा कत । मरने' य धियना भसा ।

बीपाई— चेत राउ रितु धाइ तुलाना ।

रितु' वसतु कवं मन माना ।

धन वन भवरा कुसुम' नु माना ।

फूलहि' भवर भवर बिनु माना ।

भगर कपूर ल' सेवा सहि ।

कामिनि फूल सेज भरि बासहि ।

रावहि' रेनि सेभि अडि बारी ।

मानहि' भासति परम पियारी ।

कबल' फूल बनसपती फूली ।

वासमती कामिनि रसि भूसी ।

धंधसु विरह न मानै कहा ।

सुनि घसि विरहु बसक होइ रहा ।

मद सौ भवर नाद जनकारा ।

प्रधिको उठे विरह तन मारा ।

बिउ बिउ पेसहि नारि पियारी ।

छै' सु जाति है मैना तोरी ।

कही बात' बी सुनि है मोरा ।

मिझै' बी तोहि परम' पियारा ।

चैत' वसंत काम सर मारा ।

१ मोहि, २. रे जगत धंधारी, ३. मै-४. फाग, ५. नं० २ में यह पद्य नहीं है ।

६. बाधिमी, ७. नेह नहीं धाव, ८. सिह, ९. जियनै तँ मरना भसा, १०. नं० २ में यह नहीं, ११. कसु म गधाना, १२. नं० २ में नहीं, १३. फुलेस निबासहि,

१४. रबहि कनि, १५. मानै संग पति परम धवारी, १६. यहाँ से ७ पंक्तियाँ

नं० २ में नहीं है, १७. वस बात हिय हरें तोरी, १८. बुधि सुनि जँ मोरी,

१९. घानि देउ, २०. धँसु, २१. 'कहा सुनिसु योल हमारा', नं० २ में अधिक है,

और 'चैत' शब्द से धागे को तीनों पंक्तियाँ नहीं हैं । इसके बाद में यह

बोहा है—चेत वसंत परम रतु, मैना मानहु भोग ।

प्रियमी जगत्सु देखि भी, पहा करतु है भोग ॥

चैत मास रवि लिट्टु कल माहा ।
जोवनु असु जैसे है छांह ।

सोरठा— मालति^१ भवरा जोगु, भवरा कवल हि वेधिया ।
साधन पूरी सोग, जोगु^२ वरी सरवरि करै ।

चोपाई— रितु^३ वसंतु मालिनि किन आवै ।
वात कहत मोहि नामु न भावै ।
दूती दूत चलनु^४ सह तोरा ।
भवरु चलावै वधाइ^५ हि मोरा ।
अपति^६ पठानी अठहि न दारी ।
नितु^७ उठि आइ देत हसि गारी ।
हां^८ मालिनि फूल न सिरि राजा ।
सेज मोर जु वरहि सिरि छाजा ।
जनहि^९ चितु अपना न डुलाउ ।
लोर पंथ सिरजा उत जाउ ।
मैना^{१०} तव मालिनि भुक्कारी ।
अव लीं मै पति रापि तुम्हारी ।
लोक कुट्टु^{११} को^{१२} अहे ज कानी ।
सिर तोहि आज अनावी पानी ।

दोहा— रितु अनरितु रस^{१३} अनरसह । मोहित^{१४} मनहि न भाव ।
रितु वसंत तव मानि, जव^{१५} लोरकु धरि आव ।

सोरठा— आया^{१६} लीजै धाइ । साधन जे^{१७} तनु पाहुना ।
मान विहूणा जाइ । पछितावा पाछै रहै ।

चोपाई— मा^{१८} जरि मासु चढा वं सापू ।
मदन भुयंग रघ्या^{१९} चढि तानू ।

१. मालित भयो वियोगु, भवरुं कमल में वंधियो,

२. गुवरोरा,

३. प्रथम की दो पंक्तियां नं० २ में नहीं । पाँछे की आगे पाँछे है, ४. नगन मद, ५. वधाया, ६. आपनि उतार अजा नितदारी, ७. नू आनि ८. ये पंक्तियां नं० २ में नहीं हैं ।

९. अनमत् चित्त न चुनाऊं काऊ, भवर पंथ जित रहो कि जाउ ।

१०. मैना मालिनी धरि भुक्कारी, बहुत मानि पनि गगुं तोरी ।

११. होत मियानी, निरते जाजू उतारनिउ पानी ।

१२. रस पनरु, १३. घोर न मित भाउ, १४. ली, १५. पाव, १६. दोपु,

१७. मैना पर पाया येनागु, १८. जानि जित रागु,

जिउ जिउ देप पवन भरकाई ।
 बिनु गादरी को डंनु न जाई ।
 तिरिया' कहि जाठ को हीनी ।
 दिन दिन जाइ विरह तन सीनी ।
 विरम नेह न घागि भाई ।
 विरह मागु होइ डमि दमि जाई ।
 जिउ' जिउ प्रंग महुरि मरि घावै ।
 विम' माहदः बिन डबनु जावै ।
 प्रहर' जनम गवा तिह वारा ।
 एक माम मु'नु कह न पारा' ।

बोहा— तन' झोनी पन ऊमरा । घनन बैनु' मुकुवार ।
 बिरहि' पगनि मंन मुनहु । जरि जरि हुइ है पार ।

सोरठा— तिते' जरिया विमा तागि । परगट पूवा न देपोई ।
 जरो क पाकी घागि । गायन मती ग मरिबै ।

बीनाई— जो' मानिनि विप को रति जरोवै ।
 इहु जगि भबन गुग रा लरो ।
 मरन बीपन बहु' गह कोइ पावा ।
 पोरं' को को बहुनु गमावा ।
 राई मुप' बहु इहे मरीर ।
 बाबो बूद बिलगि है पोर ।
 घागम' बूद न जाइ पहाई ।
 पाटी' को कर बटी न जाई ।

१. इनके घामे ४ पवित्रता म० २ में मही है, २. लख लख, ३. तिय मारि
 बिनु को उठारै, ४. ६ पर दो पवित्रता म० २ में मही है ।

५. इनके घामे म० २ में पवित्रता है—

रा के रहे मागि दुइ घाई, गु घागुई के उर बिरलाई ।
 बेगापसाग बहे गोदरी, घागि जाई रो दुदरी ॥

१. लख हीनी घर दुखली, २. बैनि मुकुमारि,

३. बूद दुइ नैगुन मरी, बेगा बाते हार गिमाति ।

४. गो उरै उठारी, बिरह पाठ का रैनरी ।

बेला बरन मरीर, लख लख इहै बहिरी ॥

१०. बिनिय जिउ काय बिउ भाइ, दुहु दुम पर उम कोय लख ॥

११. को लख उर पाई, १२. को री बिन को बहुन इहै बहिरी, १३. गुग को लख

१४. घदवि दुइ बरन मुइ जाई १५. लख लख इहै बहिरी ॥

मूँदि^१ आंषि र ती छीटी जाई ।

भोर भए रवि किरन दिषाई ।

दोहा— जै^२ इह जोवनु जारि करि, कै अधिकौ पेल उडाव ।

इहु सिर दिया लोरकहु, अवर न देष न पाव ।

सोरठा— कीया^३ न जोवन भोग वर । सग बाई हे सपी ।

घर घरि नितु सोग साधन । अहि रौ जनम ठायी ।

चौपाई— जेठ मास रवि किरन पसारी^४ ।

टूटि^५ धरती परत अंगारी ।

दधि^६ धरती सुत पै पट सारा ।

घासु^७ तंतु जरि हुइ है छारा ।

अंगन सीतल है मानौ^८ देहा ।

अधिकौ^९ उठै विरह तनु षेहा ।

सुसर^{१०} कंठ कोइल कुह काई ।

चला वसंतु टालहार^{११} जनाई ।

केही^{१२} पिरति गयी जम वारा ।

बहुत न आई परति है वारा ।

दोहा— हेम^{१३} सरद अरु बरिष रा । ग्रीषम सरसु वसंतु ।

गए छवौ रित अहिर रा । तो निरास छिनु कंतु ।

सोरठा— सो^{१४} जानै जिह पीर । विरहा घाउ न देषियै ।

कोइल वरण सरीर । साधु न डाह जडाहीयै ।

चौपाई— कि नर^{१५} चितवै जेठ सिरि आई । जरि^{१६} धरती किन जाइ उडाई ।

जौ^{१७} जरि विरहुं छार होइ जाई । तबहि न छोरो लोर को नाउ ।

१. नं० २ में ये दो पंक्तियां नहीं हैं ।

२. जो मोहि मदना जारइ, जारि करै तनु खेह ।
तो उडिकै लै जाइ, लोरिक ही के गहे ॥

३. आगि जरै ज सरीर, विरला कोइ सम्हारि है ।
साधन विरह की पीर, जेठमास सीतला रुचै ॥

४. पसारा, ५. टूटि टूटि धरती परै आरा, ६. धरनि आनि पाटी पर सारा,

७. घास-पात, ८ मानै तैही, ९ विरह होइ है तैही, १० सरस, ११ मल्हार,

१२. कहो बात एक करहु विचारु, एक मास सुनु बोल विचार ।

१३. वरिषा शशिर हेमंत रितु.....

१४. कवहु न डिगहि पाइ, साधन सत के पंथ में ।

जेठ जारिकिन जाइ. जो ठडि लौरपगन परै ॥

१५. कसन दूती, १६ करि धरति छगर उडि जाइ ।

१७. काहै न विरह खाई खोई जाइ, ऊ तव हूं नत जो लोरकानाउं ।

सोह प्रहेगी किहू जई पाई । तिहि के बिधि कस प्रकर पटाई ।
 प्रबे ही बारह माग पटाने । दोन एक स प्र सोर कराने ।

दोहा— सोर कहा जो ठेसठ । सगु राया करतार ।

रहि म मोग सोरक सिवा । जगु प्रकटया मंसार ।

सोरठा— पाप पुन दोह बीज । जो बीजे सो ऊपर ।

मापनु जंसा बीज । तैसा घाने पम् गिले ।

मासिनि तब मासिनि ह्वरारै ।

घारि मीठे कृदिनी ततरारै ।

मूढ मुंदाह सिर । बान यंघाए ।

बार । पिमा मिर टीका साए ।

गदहि बंसाह तवहि मुबरारै ।

हाट हाट गहु नगर फिरारै ।

बो जग करे मु तैगा पारै ।

इन मासनि करि माप म घारै ।

मागर । येन कगगुरी पान ।

को दो येन क मू मोपत्र हि पान ।

दोहा— गगु मंगा वा मापनी । विद राया करतार ।

भट्टे । विरनि सोर क गगु । कृदिनी के मूय पार ।

(इति श्री मंत्रामणु ममाज)

१. गंदाउ, २. मेकरमनकग म्मार पटाए

३. घब ए बारह माग मुनाने, दिन इक घाए कूक हैगने

४. गारण गुरी पागएन घाने, घरघि के विरग ह्वै तब माये ॥ मं० २ के घपिक है ।

५. मेरा, ६. येन से, ७. प्राति रशी मारक गी, मोरन करे मंगार ॥

इगरे घाने घट पीतारै घपिक है ।

मो घटि घाए मोरदु गाने, घटि भाग गिनु घाए हुमाने ।

घब ही हांठ मोरक पर रावी, मोरिनत पाग घरात्र फनी ।

८. बोरे माई मूने, ९ हापारै ।

१०. येन मासिनी निरर हुवारै, घटि भीटा दुमिनी निहुगारै ।

११. बोरे दुग राने, १२. बारे मोरे मूय टीका बीठे, १३. मूढ ममाजिने घाए
 घाए १४. तैगा, १५. वा घरगुन घारै,

१६. घाए बोरे वा आर हवार, बो वा घटि मूनी मे घाग ।

१७. मपपर,

१८. कृदिनी देन निररार, बोरी दवा के पाए ॥

नलदमन

[कवि सूरदास कृत]

संपादक--श्री वासुदेवशरण अग्रवाल

कवि सूरदास कृत 'नलदमन' काव्य

[श्री वासुदेव शरण अग्रवाल, काशी विश्वविद्यालय]

ये कवि सूरदास सुप्रसिद्ध हिन्दी कवि सूरदास से भिन्न हैं। इन्होंने हिजरी सन् १०६८ अर्थात् संवत् १७१४ (ई० सन् १६५७) में 'नलदमन' काव्य लिखना आरम्भ किया। इनके पिता का नाम गोरधनदास था। इनके पुरखों का निवास स्थान गुरदास पुर जिले का कलानौर स्थान था। वहाँ से आकर उनके पिता लखनऊ में बस गए थे। लखनऊ में ही सूरदास का जन्म हुआ।

इस कवि का पहले पहल परिचय श्री मोतीचन्द्र जी ने हिन्दी संसार को दिया था।^१ उनके लेख का आधार बम्बई संग्रहालय में सुरक्षित फारसी लिपि में लिखी हुई एक सचित्र प्रति थी। उस प्रति से उन्होंने पूरे ग्रन्थ की एक देवनागरी प्रतिलिपि कराई थी जिसकी एक टंकित प्रति नागरी प्रचारिणी सभा के पुस्तकालय में है। कितने ही स्थानों में फारसी से देवनागरी लिपि में लाया हुआ पाठ संदिग्ध है।

अभी दो वर्ष पूर्व श्री मुनि कान्तिसागर को डींग-भरतपुर की और हिन्दी ग्रन्थों की खोज करते हुए 'नलदमन' की एक देव नागरी प्रति प्राप्त हुई थी। उन्होंने जब वह प्रति मुझे जयपुर में दिखाई तो मैंने वह प्रति कुछ समय के लिये उधार ले ली जिससे पहली प्रति के साथ पाठ मिलाकर देख सकूँ। पीछे मुनिजी ने अपनी सहज उदारता से मेरी प्रार्थना पर वह प्रति हिन्दी विद्यापीठ आगरा विश्वविद्यालय, आगरा को भेंट कर दी और पाठ संशोधन के बाद वह वहीं विद्यापीठ पुस्तकालय में सुरक्षित हो जायगी। इस प्रति में लेखन संवत् १८१५, चैत्र मास शुक्ल पक्ष तिथि १२ है। प्रति यद्यपि देवनागरी लिपि में है पर जगह-जगह पाठ मिलाने से अनुमान होता है कि फारसी लिपि में लिखी हुई किसी मूल प्रति से यह उतारी गई।

इस नई सामग्री की सहायता से नलदमन काव्य का एक पाठ तैयार किया गया है। इसमें बम्बई की फारसी प्रति की प्रतिलिपि से जो सभा में सुरक्षित है सहायता ली गई है। दोनों प्रतियों के पाठों को तुलनात्मक दृष्टि से मिलाया गया है। खेद है कि ऐसा करते समय बम्बई संग्रहालय की मूल फारसी लिपि वाली सुलिखित प्रति प्राप्त नहीं हो सकी, केवल उसकी प्रतिलिपि से ही संतोष करना पड़ा है।

ग्रन्थ में १७वीं शती के मध्य की अवधी भाषा का स्वरूप सुरक्षित है। इसलिए वह मूल्यवान् है। अतएव बम्बई के पाठ के लिये अधिक प्रतीक्षा न करके इसका एक संस्करण यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। जैसा मोतीचन्द्र जी ने लिखा था 'नलदमन' की रचना हिन्दी

१. श्री डा० मोतीचन्द्र, कवि सूरदास कृत 'नलदमन' काव्य, नागरी प्रचारिणी :त्रि-
भाग १६-अंक २ (संवत् १९६५), पृ० १२१-१३८।

में सूफी विचारों से रचित प्रेमाख्यानक काव्यों की भाँति ही की गई थी। भाषा में पंजाबी का पुट भी है—

तिस कारण यह प्रेम कहानी। पुरबदी भाषा बिष भानी ॥

समा की प्रतिसिपि [संकेत स०] और मुनि कान्तिसागरजी की प्रति [संकेत काँ०] से पाठ मिलाने का आरम्भिक कार्य श्री दीसतराम जुयास ने किया है। अर्थ को दृष्टि से संशोधित पाठ को मैंने देख लिया है।

स्वस्ति श्रीसर्वज्ञाय नमः ॥

अथ नलदमन सूरदासकृतमारभ्यते ॥

ईश वंदना

सुमिरौ^१ आदि अनादि जो कोई । आदि अंत^२ पुन एकै सोई ॥
जाहि न वरन न रूप न रेखा । अविगत गति अभेख बहु^३ भेखा ॥
सिथिल न चंचल^४ बड़ा न छोटा । तरुन न बूढ़ा लटा^५ न मोटा ॥
बहुत न थोरा सजा^६ न फूटा । मिला न बिछुरा जुरा न टूटा ॥
ज्यों कुछ त्यों का गाँऊं^७ नाऊं^८ । नाउं जो^९ घरै घरै तिहि^{१०} नाऊं ॥
नाउं इहै^{११} जो कहै^{१२} सो नाऊं । इही कहव^{१३} बर^{१४} राषत^{१५} नाऊं ॥
नाउं धरत खिन सरगुन होई । जो निरगुन तिहि^{१६} नाउं न कोई ॥
वह जो रूप वा कोउन^{१७} कहा । बचन न चलै तहाँ थकि रहा^{१८} ॥
जहाँ बचन कर गवन न होई । तहाँ कौन बिधि वरनै कोई ॥

दोहा—

आपुन बना न^{१९} बनै विना आपुन बना^{२०} बनाव ।

ज्यों सो^{२१} बना त्यों नहि^{२२} बना कहत^{२३} न बनै बनाव ॥१॥

दोहा० १—१. सुमरूं (कां०), २. अनंत (स०), ३. तिन्ह (स०), ४. चपल (कां०),
५. लघा (कां०) । ६. सचा (कां०) । ७. नांव (कां०) । ८. वताऊं
(कां०) । ९. जुं (कां०) । १०. तिन्ह (स०) । ११. एही (कां०) । १२.
कहै (स०) । १३. कहिन (कां०) । १४. पर (कां०) । १५. राखव (स०) ।
१६. तिन्ह (स०) । १७. को अन कहा (कां०) । १८. रह्या (कां०),
१९. बनान न बनै बना (स०) । २०. बनां (कां०) । २१. सू (कां०),
२२. त्योंही बना (कां०) । २३. कहित (कां०) ।

जद्यपि ज्यों ज्यों कहाँ न जाई । पे पट घोपट रहा समाई ॥
 जहाँ न वह सों ठोर न कोई । सकल ठोर मँह एकौ सोई ॥
 घो पुनि छेद भेद कुछ नाहीं । सिमिटि समाय रहा सब माहीं ॥
 घोहि जो ठाठ वा कोठ न ठठा । सदा एक रस बड़ा न पटा ॥
 ज्यों प्रायास समान समाना । वही जान एही उनमाना ॥
 पे वह धेवन यह जड़ मूना । यह सजोति यह जोति बिहूना ॥
 जो कुछ दिस्टि परे सो नाहीं । पे इहि वा मँह को इहि माहीं ॥
 पमं दिस्टि सों जाइ न देया । ती दीसं जो होई बृछ रेगा ॥
 वातहि बात जाइ वह जाना । दिस्टि न घाबं प्रगट हेराना ॥

दोहा— देख देखत देगि अब, दिस्टि वहे कछु नाहि ।

दिस्टि भगोपर घनसम बहु, ता नाहीं के माहि ॥२॥

सब मे घो सबही सों ग्यारा । सब बृछ करे पकरता प्यारा ॥
 तिहं धेवन दिन कछु न होई । पे बरखूत न भागं कोई ॥
 मंदिर गाँहें दिया ज्यों बारा । र्यों पट पट तामों उत्रिमारा ॥
 पट महे कर्म सकल सब तामों । पे यह धतग दिया ज्यों बागों ॥
 जेंगे बपल गुरज मिति गिले । पे याको गुन ताह न मिले ॥
 कंधन गिर्म कछु गुरज न गिता । घो ताके मूस मिर्म न मिता ॥
 र्यों येतन जड़ माह गमाना । घनमिल जाइ मिता सा जाना ॥
 ज्यों पानी पूरे पट माहीं । दिस्टि परे ममि बं परिघाहीं ॥
 जन गुन जान परे अब हनई । बंद गो घतग न हनई न पतई ॥

दोहा— कहीं न जाहि बनाय कछु ता ताह्य के रंग ।

रंग घंग सब ता मिस बने, घासु न रंग न घग ॥३॥

दोहा २—१. बसो (बा०) । २. रप्पा (बा) । ३. घोहि (बा०) । ४. ठोर ठोर
 मे (बा०) । ५. एकै (बा०) । ६. ऊ (ग०) । ७. दिन (ग०) । ८.
 छेद (ग०) । ९. हँद (ग०) । १०. गमग (ग०) । ११. रप्पा (बा०) ।
 १२. गिरदी (ग०) । १३. घनमाना (ग०) । १४. मोना (ग०) । १५. बह
 (ग०) । १६. बर (ग०) । १७. बा (ग०) । १८. पगम (ग०) । १९. गो (ग०) ।
 २०. प्रपट (ग०) । २१. वही (ग०) । २२. मागी (बा०) ।

दोहा ३—१. घो (ग०) । २. गिर (ग०) । ३. बारी (ग०) । ४. कृपी (ग०) । ५. मे
 (बा०) । ६. बागं (बा०) । ७. तबिय (बा०) । ८. बागो (बा०) । ९. दिन
 (ग०) । १०. पानी (बा०) । ११. को (बा) । १२. जाति । १३. बन् । १४. बं
 (बा०) । १५. गूँद रूँद रूँद ताहि मिला (बा०) । १६. घात (बा०) । १७.
 निरङ्ग (बा०) । १८. गरङ्ग ।

जद्यपि' आप अलिप्त अकरता । पै करता भरता श्री हरता ॥
 सरजनहार जगत कर सोई । अलख निरंजन श्रीर न कोई ॥
 जो देखी सब वहे बनावा । न कुछ मांहि कुछ कै दिखरावा ॥
 कीन्हैसि प्रथम जोत परकासू । कीन्हैसि पानी पवन^३ अकासू ॥
 अग्नि पान^४ जल रज इमि साज^५ । जिन्ह^६ सों ए कौतुक उपराज^६ ॥
 कीन्हैसि धरती सुरग पतारा । मेरु समुन्द सूर^७ ससि तारा ॥
 दिन अरु^८ रैन धूप अरु छाहां । मेघ वर्ण^९ पानी^{१०} जिहि^{११} मांहां ॥
 देव मनुज दईत^{१२} श्री प्रेता^{१३} । पसु पंछी जल थल जीव^{१४} केता ॥
 तरुवर मूल^{१५} बेल अरु^{१६} बूटी । अग्नि^{१७} सिरजना^{१८} गिनत^{१९} न टूटी ॥

दोहा—जे देखा ए खेत^{२०} जग, अनवन^{२१} वरन^{२२} अपार ।

छिनक एक^{२३} मंह सब किए^{२४}, करत न लागी^{२५} वार ॥४॥

जह^१ लग जीव जंतु उपराजा^२ । भूख^३ सर्वाहि कर सार्थाहि साजा ॥१॥
 आपु सवन^४ मुधि कै पहुँचावै । कीट पतंगन विसर न पावै ॥२॥
 हस्ति^५ आदि दै चांटा ताई । छिन न विसारत ऐसउ सांई ॥३॥
 अस अटूट कीन्हैसि भंडारा । घटै न अघट अपूर अपारा ॥४॥
 जो जिहि^६ जोग देइ^७ तिहि^८ सोई । ताकर दीन लेइ^९ सब कोई ॥५॥
 जो कोउ गरव करै मन मांहीं । हम^{१०} उपराज^{११} दरव तव खाहीं ॥६॥
 गरव^{१२} मांभ का दरव कमावा^{१३} । तहां कीन उद्यम करि^{१४} खावा ॥७॥
 पसु पंछी जो वसै वन मांहां^{१५} । केतक अरथ दरव तिन्ह पाहां^{१६} ॥८॥
 वहे एक जग कै मुधि लेवा । अलख अपार निरंजन देवा ॥९॥

दोहा—करन हरन पोपन^{१७} भरन, जग कर्ता^{१८} के हाथ ।

पल^{१९} छिन कै^{२०} मुधि लेइ^{२१} लगि रहै सवन के साथ ॥५॥

दोहा ४—१. जदप (स०) । २. प्राँन (स०) । ३. खेह सब रचि (कां०) । ४. साजो (कां०) । ५. तिहि (कां०) । ६. उपराजो (कां०) । ७. सुर (स०) । ८. श्री (कां०) । ९. प्राँन (स०) । १०. पाइ (स०) । ११. जिन्ह (स०) । १२. दैत्य (कां०) । १३. परेता (स०) । १४. ज्यों (स०) । १५. मूर (स०) । १६. श्री (कां०) । १७. अग्नि (कां०) । १८. सिरजटा (कां०) । १९. कटत (कां०) । २०. लखे (कां०) । २१. आनों (स०) । २२. वर्ण (कां०) । २३. मै (कां०) । २४. कहै (स०) । २५. लाई (स०) ।

दोहा ५—१. जिन्ह सो (कां०) । २. अपराजा (स०) । ३. भेख (स०) । ४. कहै ४. सर्वाहि । ५. हस्त (स०) । ६. जिन्ह (स०) । ७. दिये (स०) । ८. तिन्ह (स०) । ९. लिए (स०) । १०. हमही (कां०) । ११. उपाय (उपराज को काट कर उपाय बनाया गया है । उपाना = उत्पन्न करना भी अवधी की धातुहै (जोहि सृष्टि उपाई, राम चरित्र मानस) । (कां०) । १२. गर्भ (कां०) । १३. गमावा (स०) । १४. कर (स०) । १५. माहीं (कां०) । १६. पाहीं (कां०) । १७. पूषन (स०) । १८. जग को ताके (स०) । १९. छिन (कां०) । २०. की (कां०) । २१. लेन (कां०) ।

करता कीगह वहै सो करे । भरे डार^१ छुँ सं^२ भरे ॥
 परबत तिन ज्यों तोरि उड़ाई । तिनबहि^३ परबत कर^४ दिसराई ॥
 सागर सोपि^५ उछारै छाय । मूसी मंह जस भरे अपारा ॥
 कंचन मंदिर घसत उजारै^६ । मो^७ उजार में कंचन डारै^८ ॥
 राता विरिछ करे बिनु पाता । टुंड^९ निपाठ^{१०} करे तिनह^{११} राता ॥
 पडित गुनो निरगुन^{१२} कं डारै । मूरस पंडित करि^{१३} बंडारै ॥
 छत्रपती सौं नीस मंगारै । लं भिसामंगा राज बंडारै ॥
 इंद्रहि पांटा करि^{१४} घबतारै । चांढहि^{१५} इंद्रामन बंडारै^{१६} ॥
 बंद^{१७} मतां किर किर घबतारै^{१८} । घघम घघरम^{१९} करत उपारै ॥

दोहा—घंवरत^{२०} बिर मूरै^{२१} करे, घी बिरब घंवरत^{२२} मूर ।

मदा हजुरो दूर करि, दूर करे हजुर ॥६॥

ऐमो बल ऐसी प्रभुताई । टमा^१ बूम बछु बरनि न जाई ॥
 जीने घंग भजे जो पाकों^२ । तेही घंग मिले यह ताको ॥
 जो ताकीं गाहब कं^३ माने । ताहि बही मेवरु कं^४ जाने ॥
 जो कोठ^५ बहै कि मगा हमारा । ताहि मगा हांड मिले पियारा^६ ॥
 जो कोठ^७ ताकै^८ जात बहारै । जाउ^९ मान तिगु^{१०} पांग^{११} मिसावै^{१२} ॥
 जो कोठ^{१३} बहै घंम हो ताको । एक रूव मेरो घर पाको ॥
 तिहि^{१४} घपनी^{१५} घंम^{१६} कं जानी^{१७} । निरमन घमत घाप मो मानी^{१८} ॥
 जो कोठ^{१९} कीठ बहै ही मोई । मो घद बामे भेद न कोई ॥
 ता पर रोम बहून गुग मानै^{२०} । घंवर मेदि घाप मो मानै^{२१} ॥

दो०—ऐमो गाहब घोर नहि, इतनी प्रभुता जाहि ।

मेवरु जा गरवर^{२२} करे, करे घाप गरिताहि ॥७॥

दोहा ६—१. डारै (ग०) । २. ते (ग०) । ३. बछु (ग०) । ४. करि (का०) । ५. मूर (ग०) । ६. उजारै (का०) । ७. मो (का०) । ८. डारै (ग०) । ९. टुंड (का०) । १०. निपाठ (ग०) । ११. बह (का०) । १२. मिसाव (का०) । १३. कं (ग०) । १४. कं (ग०) । १५. पांटा (का०) । १६. बंडारै (का०) । १७. बंदमतां (का०) । १८. घपतारै (का०) । १९. घघरम (का०) । २०. घंवर (का०) । २१. मूर (ग०) । २२. घंम (का०) । २३. दूरी (का०) ।

दोहा ७—१. तिसा (का०) । २. तिगु (ग०) । ३. करि (का०) । ४. करि (का०) । ५. कोई (का०) । ६. कोई (का०) । ७. गाबी (का०) । ८. जाति (का०) । ९. तिगु (का०) । १०. गति (का०) । ११. मदार (का०) । १२. कोई (का०) । १३. तिगु (ग०) । १४. कोठ (का०) । १५. घंम (का०) । १६. जानी (का०) । १७. मानहि (का०) । १८. कोई (का०) । १९. कीठ (का०) । २०. मानी (का०) । २१. मारि (का०) । २२. पर (ग०) ।

* जयपुर की प्रति में पर कांक्षी जोरारै है ।

निज समुभो^१ तो एकी सोई । साहव सेवक भेद ने^२ कोई ॥
 जड़ चेतन अंतर पुनि^३ नाहीं । सब समाइ रहै ता माहीं ॥
 ज्यों जल माहि वृदवृदा^४ भएऊ । हे जल नांव श्रीर होइ गएऊ^५ ॥
 गांठि छूट जव जलहि समाना । जलको जल कुछ भयो^६ न आना ॥
 कनक सिला ज्यों चित्र बनाए^७ । पसु पंछी लिख नांव धराए^८ ॥
 एक^९ कनक होइ^{१०} रहा^{११} अनेका । कारण^{१२} टूट एक को एका ॥
 त्यों यह सब सोइ होइ रहा । भेद कीये^{१३} तिन मरम न लहा ॥
 वही^{१४} नचाया^{१५} वही^{१६} वजैया । वही^{१७} खेल श्री वही खेलैया ॥
 जव चाहे तव धरै उठाई । अपना ज्यों को त्यों रहि^{१८} जाई ॥

दो०— वह जो रूप वाको अचल, तासों भयो न भंग ।
 जग समुद्र जल मांहि ज्यों, उपजी एक तरंग ॥८॥

जो संदेह धरै जिउ^१ कोई । वह^२ चेतन कैसे जड़ होई ॥
 जद्यपि वह^३ चेतन जड़ नाही । पै जड़ प्रगट^४ भए^५ ता माहीं ॥
 जड़ कछु^६ दूजे वस्त^७ न जाना । मकरी कर^८ जारा कै^९ माना^{१०} ॥
 काढ़ि प्राप सों कीतुक कोन्हा । श्री^{११} छिन मांहि^{१२} लील पुनि लीन्हा ॥
 अंत महा परलै जव होई । दिष्टि पदारथ रहै न कोई ॥
 होइ अलोप^{१३} तत्तु^{१४} गुन^{१५} मेला । कछु न रहै वह रहै अकेला ॥
 सब कुछ^{१६} ताहीं^{१७} मांझ समाई । चेतन अविनासी कहि^{१८} जाई ॥
 आदि अंत जो एकै सोई । मध्य^{१९} उपाधि^{२०} न मानी कोई ॥
 ऐसे समुझि एक निजु जानहु । दुविधा भूलि^{२१} न मन में आनुहु ॥

दोहा—श्रीर न भखउ^{२२} जो^{२३} कुछ सो वही^{२४} अलख निरंजन एक ।

भांति^{२५} भांति कै भेख धरि^{२६}, एकै भयो अनेक ॥९॥

दोहा ८—३. समझै (कां०) । ३. एकै (कां०) । ३. श्रीर (का०) । २. कछु (कां०) । ३. भयो (कां०) । ४. गयो (कां०) । ५. भेव (स०) । ६. बनाई (स०) । ७. धराई (स०) । ८. कनक अंग (कां०) । ९. हुइ (कां०) । १०. रह्या (कां०) । ११. कारै (स०) । १२. गिनै (स०) । १३. वही (कां०) । १४. नचावहि (कां०) । १५. वही (कां०) । १६. वही (कां०) । १७. रहि (कां०) ।

दोहा ९—१. जन (कां०) । २. विन (स०) । ३. विन (स०) । ४. प्रघट (स०) । ५. भई (कां०) । ६. दूजी (कां०) । ७. जानहि (कां०) । ८. को (कां०) । ९. करि (कां०) । १०. मानहि (कां०) । ११. ऊ (स०) । १२. मांझ । १३. अनूप (कां०) । १४. तत (स०) । १५. खन (स०) । १६. कछु (कां०) । १७. ताहि (कां०) । १८. ही रहि (कां०) । १९. भरहु (स०) । २०. उपाइ (कां०) । २१. मूल (कां०) । २२. कछु कछु (कां०) । २३. सो (कां०) । २४. वोह (कां०) । २५. कई (स०) । २६. धर (स०) ।

ता गति' ता बिम्बु हाथ न आवै । बुद्धि' तहां परबेस न पावै ॥
 मति' तिमि निसि यह दिन उजियाय । साकर कहां तहां पैसारा ॥
 केहि' बिधि मिलै घूप कहूँ छाही । जीन सुरज पितबै तिनहूँ माहीं ॥
 ओजहि' ओज हार पै माना । सवि' न सकूँ सोहि पै हेराना ॥
 है तो तिनके घोट पहाय । पै तिन तिन' भ्राखन तिन डाय ॥
 स्वप्न भ्रमं जासौं जग फीका । एकहि हुए देखै दुग नीका ॥*
 भो' तिनहूँ कढ़न कडा होइ काड़े । कड़' न जाइ ताके बिन काड़े ॥
 जब सोइ ता समहि' निकारै । शान नेत्र सूधै कं' डारै ॥
 बांक' इत दरसन मिट जाई । तव निज एको देख' दिखाई' ॥

दोहा—अगिन परगट जब काठ छै, काठे देइ जराइ ।

तबहि काठ तासौं मिलै, नातर मिसी न जाइ ॥१०॥

जेती वा' प्रभु के' प्रभुवाई । तेती गति' नहि' जाइ सुनाई ॥
 अति' अपार गति पार न कोई । मिज बरनन कैसै कर होई ॥
 ताको बरनन धीर न कोई । यहै बचन जो फलु सत' सोई ॥
 के विस्तार पार को पावै । कबनी' धीरै' धीर करावै' ॥
 जो रसना सत' होहि' कर्षया' । जिह' सी कर सब होहि' लिखिया ॥
 मुद्' अकास कागज' सब होई । सरवर धौ सागर मसि' सोई ॥
 सेखनि' सब' तफवर तन' डारा । तोउ' सो' लिखि न जाइ बिस्तारा ॥
 जो कहिये तासौं उपराही' । अस्तुत कौ निदान कछु नाहीं ॥
 यहै' निदान जो' नाहि' निदानू । सो प्रभु अनगिन कीन्ह' विधानू' ॥

दोहा— निरगुन धौ सगुण' गुनी', धरन धौ बहु भेस ।

एक अनेक जो होइ रहा, ताहि' करौं आदेश ॥११॥

दोहा १०—१. साकर (स०) । २. बिषी (स०) । ३. मठ (स०) ।* यह शीपाई
 केवल मुनि कीति सागर जी की प्रति में है । ४. बिहि (का०) । ५. बहि
 (का०) । ६. तिहि (का०) । ७. लोज (का०) । ८. सित (स०) । ९. हय
 (का०) । १०. तन (स०) । ११. ऊ (स०) । १२. बोहु गजिन गहावेहु गाई
 (का०) । १३. कड़ि (का०) । १४. तामहु तिमहि (स०) । १५. यहि (का०) ।
 १६. बात (स०) । १७. देई (का०) । १८. देखाई (स०) । १९. सो (का०) ।

दोहा ११—१. सा (का०) । २. को (का०) । ३. कत (स०) । ४. कह (स०) । ५.
 अत (स०) । ६. येही (का०) । ७. सय (स०) । ८. कीन्ह (का०) । ९. धीर
 (का०) । १०. करि आवै (का०) । ११. सब (स०) । १२. हातिहि (का०) ।
 १३. कया (का०) । १४. जिहि जो गूढ सत होतिहि सया (का०) । १५.
 मुम्म (का०) । १६. कागर (स०) । १७. मिस सागर (का०) । १८. सेषम
 (का०) । १९. दात (का०) । २०. तिन (का०) । २१. ती (का०) । २२. तु
 (का०) । २३. सोपछाहीं (स०) । २४. ऐहि (स०) । २५. जु (का०) ।
 २६. नाय (स०) । २७. मिनई (का०) । २८. निदानू (का०) । २९. सब मुन
 (स०) । ३०. गुनी (का०) । ३१. ताको (का०) ।

अब गुन कथन मत कै करीं । जिन्ह कै प्रेम प्रताप मिस्तरौं ॥*
जबते प्रघट मोहि निसितारे । उन एते केतै निस्तारे ॥*
प्रथम निरमल वह जोति उपाई । तिन्ह कै प्रीत सब सिष्टि बनाई ॥*
रसन एक अस्तुति वह भेखा । लिखै सो को नाहि कछु लेखा ॥*
जाके प्रेम हिय यह मदमांते । ताकै प्रीत प्रथमै रंगराते ॥*
हीं बलहार नांव कै जाअीं । जिन्ह प्रताप प्रभु दरसन पाअीं ॥*
अीं उन्ह प्रेम विन मुचित न होई । जिन भूली भटकी मत कोई ॥*
अतम सब कल मांह सो जानहु । यहै वचन सत्य कै मानहु ॥*
निस वासर रावर जस कहौं । कंवल चरन मन करतै कहौं ॥*

दोहा— तीन लोक नी खंड महं, ऐसो और न कोइ ।

आतम आदि तैं अंत लग, भयो न कोऊ होइ ॥१२॥

वादशाह वर्णन

साह जहां सुलतान चकत्ता । भानु समान राज एकछत्ता ॥
दिहली उवा^१ सुरज^२ उजियारा । चहूँ और जस किरन पसारा ॥
राजन्ह के मुख रहा न पानी । मनो^३ वेलि रवि तेज झुरानी^४ ॥
हुते^५ जु^६ गढ^७ मेर ज्यों ठाढे^८ । गारि^९ नवाइ^{१०} नीर कै^{११} काढे ॥
कियै नमान^{१२} सबै अभिमानी । मान छोड़^{१३} अब^{१४} करहि^{१५} किसानी ॥
सीस नवाइ रहा जो वांचा । जो उकसा सो काल मुख खांचा ॥
रहा न कतहूँ जुद्ध^{१६} कर^{१७} मानू । अस दिढ़ होइ बैठा सुलतानू ॥
छत्री छत्रधार जो कहाए । ते जुहार को^{१८} वार^{१९} न पाए ॥
खंड खंड कै राजा राऊ । ठाढे रहत जोरै कर पाऊ ॥

दोहा— जे राजा तरवार वर^{२०} कटक देत है^{२१} टार^{२२} ।

तोरितोरि तरवार तिन्ह^{२३} फार^{२४} गढाए^{२५} कार ॥१३॥

दोहा १३—१ हुवा (कां०) । २. सूर्य (कां०) । ३. मान (स०) । ४. झरानी (स०) । ५. होते (स०) । ६. जो (स०) । ७. घर (स०) । ८. बाढे (स०) । ९. गार (कां०) । पर शुद्ध पाठ 'गारि' है । गारना = दबाकर निचोड़ने का अर्थ है । १०. नवाइ (कां०) । ११. नीर (कां०) । १२. नमान (कां०) । १३. छोड़ (कां०) । १४. अब (कां०) । १५. करहि (कां०) । १६. जुद्ध (कां०) । १७. कर (कां०) । १८. को (कां०) । १९. वार (स०) । २०. वलि (कां०) । २१. ही (कां०) । २२. तार (स०) । २३. वह (कां०) । २४. झार (कां०) । २५. गढाई (कां०) ।

साज काज जब करे चढ़ाई । महि मंडल हय मय होइ जाई ॥
 चमहि गयंद ठाठ चहु भोरा । मेघन घनी कीन्ह मनु जोरा ॥
 धनगिन सैन न वार न पारु । महिपह सहि न आइ सो भारु ॥
 कापे घरनि मेद घस जाई । कमठहि भान बने कठिमाई ॥
 वासुकि ठुलै होइ कममलो । परे पताल लोक खसमलो ॥
 परवत शूर शूर होइ जाहीं । असल मसल होइ शूर उडाहीं ॥
 इद्र लोक पदुषै सो घूरो । अघकार उपजे तिहि पूरी ॥
 सूरज प्रकाश न देह देखाई । यासर अछत रैन होइ जाई ॥
 बन पंड टूटि खेह मिलि जाहीं । सरबर सागर सभिस सुखाहीं ॥

दोहा— अगसै ऊग्यल जस पिवै, पिछसै खबर छानि ।

सा पिछलि बोवा सनै, सब पावहि ते पानि ॥१४॥

न्याउ मोस जो पुरानन गाई । सो प्रिभमोपति कै देखराई ॥
 गऊ सिभ एक घाट पियाए । राव रक सर कै देखराए ॥
 रक्षा न जग अमीठ करे कीन्हा । वष सौँ बर अजा सुघ सीन्हा ॥
 नीर खीर सौँ होइ मिरारा । कठे नियाइ भारे कै खारा ॥
 पुत्र अवीठ करे जो काऊ । सील न राखे करे नियाऊ ॥
 देस देस कै पतियाँ भावै । सो भीके नित बाँधि सुनावै ॥
 सुना अनीठि कीन्ह जो काहूँ । बाँधि मंगारै बाँहूँ पिछाहूँ ।
 बूझ वार कहूँ यह ठहराई । बँठै साह भाप होइ म्याई ।
 जिन्ह जाको जँसो दुखहोई । यिमवै जाइ न बरवै कोई ॥

बोहा— ज्यों सन कै सुभि जिउ घरे, त्यों जग कै सुभि ताहि ।

बाँटी दुखी जो पावै तर, सोउ सुनै सो साहि ॥१५॥

बोहा १४— १. मंदिस (स०) । २. है मई (का०) । ३. चजहूँ (स०) । ४. उनेँ (स०) ।
 ५. जनु (का०) । ६. पहि (का०) । ७. सह (स०) । ८. दबै (स०) ।
 ९. मिसाहीं (स०) । १०. तिमू (स०) । ११. बसदु (स०) । १२. ससल (स०) ।
 १३. पिबन्ह (स०) । १४. खबर (स०) । १५. रिमजम (स०) । १६. पिछसै
 जब बोवा पुनै (का०) । १७. पावै (का०) ।

बोहा १५— १. गाए (स०) । २. देखराए (स०) । ३. पियाई (का०) । ४. कर (का०) ।
 ५. दिपरारै (का०) । ६. अनीठ (बा०) । ७. बरि (बा०) । ८. चज्या (बा०) ।
 ९. सपाइ (का०) । १०. वारि (बा०) । ११. पाव (का०) । १२. पुउर
 (स०) । १३. सील रापय (का०) । १४. भावई (स०) । १५. मंगी (बा०) ।
 १६. सुनावइ (स०) । १७. सुनस (का०) । १८. बाँधि (का०) । १९. पछाहूँ
 (का०) । २०. बँठि (का०) । २१. सब (का०) । २२. नियाई (बा०) ।
 २३. जिहि (का०) । २४. जू (बा०) । २५. पाइ (स०) । २६. सोउ
 (स०) । २७. सिर (का०) ।

घरमराज परजा सुख पावा । देस देस सब सुबस बसावा ॥
 सुख सों करै किसान किसानी । बोइ सो बांट देइ रजधानी ॥
 राज अंस सो बाढ़^१ न लीजै । परजहि^२ आध बचै सो^३ कीजै ॥
 परजा घर आनंद बधाई । भूखा एक^४ न सब अघाई ॥
 अपने भाग दुखी जो कोई । ताकै सुधि संभार पुनि होई ॥
 वरध^५ बीज भख^६ सब तिन्ह^७ दीजै । जब ताकै उपजै तब लीजै ॥
 निरभै बनिज करै व्यौपारी । लाखन साज रहै मग डारी ॥
 चोर जगत महं दिष्टि न आए । जिन चोरीं सब चोर चोराए ॥
 राज नीति सब कहं सुख दाई । जग सुख सो उद्यम^८ करि^९ खाई ॥
 दोहा—देखि जगत सबही^{१०} सुखी, सुखहू पायो सुख ।

दुख अति^{११} सुख सों^{१२} दुखी होइ, समुंद पार^{१३} गयो दुक्ख ॥१६॥

दाता कहियात एकै सोई । ता सरवर^१ कहि और न कोई ॥
 एक वार तिहि^२ सों जिन मांगा । पुनि^३ भर^४ जनम न काहू खांगा ॥
 जे मंगत टूकन^५ कै मांगा । तिन धन भरहि^६ रतन कै मांगा ॥*
 जे^७ मंगत धन घर^८ घर डोलै । सो दर पग न^९ घरै बिन डोलै ॥
 जे मंगत चीरन्ह कै जोरा^{१०} । तिन्ह^{११} कै कनक चीर कै जोरा ॥
 जे^{१२} मंगत^{१३} चैने^{१४}* कर चूनू । खाहि सो मुकत^{१५} चिनी^{१६} कर चूनू ॥
 लीन्ह^{१७} जो सदावरत कै दाना । दीन्ह^{१८} अब^{१९} सदावरत कर दाना ॥
 असेष^{२०} मान दान जग दीन्हा । मंगत जन दाता सब कीन्हा ॥
 जिन दानन^{२१} हातिम जग जाना । दीन्ह साह मंगन^{२२} ते दाना ॥

दोहा - साहजहां दातार उर, घरै पतार दुराइ ।

दधि मुकता तऊ^{२३} ना बचै देइ^{२४} कढाइ लुटाइ ॥१७॥

दोहा १६—१. हन (स०) । २. परजन (स०) । ३. त्यों (कां०) । ४. एकौ (स०) । ५. वरद (स०) । ६. भूख (कां०) । ७. तिहि (कां०) । ८. उद्यम (स०) । ९. कर (स०) । १०. सब सुख (कां०) । ११. तातै (कां०) । १२. दुख दुखी (कां०) । १३. दिखन सका तिहि दुख (कां०) ।

दोहा १७—१. सर बड़ (स०) । २. सर (स०) । ३. तिन (कां०) । ४. फिर (कां०) । ५. लोकन (कां०) । ६. फिरहि रतनग (स०) । ७. फिरि भ्रांतनि लगि (कां०) जा (स०) । ८. दर दर (कां०) । ९. हरै (कां०) । १०. चोरा (कां०) । ११. तिहि (कां०) । १२. जिन्हन (स०) । १३. मिलत (स०) । १४. चूनी (कां०) । १५. मुक्ति (कां०) । १६. चूनी (कां०) । १७. लेहि (कां०) । १८. देहि (कां०) । १९. जु (कां०) । २०. अब तक (स०) । २१. दातन (कां०) । २२. मंगत (कां०) । २३. नै संचै तौ (कां०) । २४. दिए (कां०) ।

* जो मंगते टुकड़ा मांगते थे उनकी स्त्रियाँ रत्नों से मांग भरने लगीं ।

प्रब गुरु देव केर गून पाळं । रंग बिहारी^१ भिन कर नाळं ॥
 श्री भरनीं सो कथा उग्यारी । जग^२ जानइ ज्यों रंग बिहारी ॥
 प्रादि नगर लहोर जिन्ह^३ नाळ । जनम भूमि उन्हकै^४ तिन्हि^५ ठाळं ॥
 छत्री^६ ककर जात कहाई । भय्या भारकु^७ मसं देखाई ॥
 पहरो कहियत नांव बहोरा^८ । कसन बहोरे^९ नांव बहोरा^{१०} ॥
 पोरी धंस बहुत मसि धरें । सिद्ध साधु कै सेवा करें ॥
 दयावत^{११} दुखी पर दुखो । बेसि न सकै भतीपिहि^{१२} भूषी ॥
 भरमी धरम पंथ पग धारें । कथा बारवा सुनै^{१३} बिभारें ॥
 रहै पवित्र भजन सों कामूं । सुमिरत करे सदा हरिनामूं ।
 साधु सिद्ध^{१४} सगत करै, साधुन सों ब्यीहार ।
 सुन^{१५} न सकहि समुझ बहै, भातम रूप बिचार ॥१८॥

नित प्रति प्राप्त उठै जस^१ भामू । जाइसमित^२ (सरित) जस करहि^३ सनानू ॥
 बालक वहां सरौ पुनि खेसै । सिपटै^४ भिडै^५ दंड मिमि पेसै ॥
 तिन्ह^६ कौतुक छिन मन बहरावहि^७ । नित प्रति तहें देवस जो^८ भावहि^९ ॥
 देवस पाइ बालक सुस पाबै । भबिकी कौतुक कर विचरावै ॥
 एक दिन देखत हुतै तमासा । सिद्ध एक भावा उम^{१०} पासा ॥
 बड्डूत भेस धरै भबिगली^{११} । सुधी^{१२} श्री न सेवका जती ॥
 सन्यासी पुनि कहा न जाई । ब्रह्मचर्य^{१३} गति जाइ न पाई ॥
 जंगम कहा न जाइ न जोगी । लट दरसन सों^{१४} भेस वियोमी ॥
 मायें^{१५} तिसक हाथ जपमासा । सींगी गरे^{१६} कांभ^{१७} मुवछासा ॥
 मन कै मुरति पीठ सों सागी । भ्रम मिटि गयो संका सब भागी ॥
 दोहा— पसक न लागै भाखिन^{१८}, मासी निकट न जाइ ।
 श्री^{१९} न धंग परिछाहींऊ, भभर भूमि^{२०} सों पाइ ॥१९॥

दोहा १८—१. रंगभारी (स०) । २. जानै (का०) । ३. जिदि (का०) । ४. तिनकी (का०) । ५. तिन्ह (का०) । ६. छत्री (स०) । ७. बारि पुनि (का०) । ८. बिहोरा (का०) । ९. बिहोरे (का०) । १०. बिहोरा (का०) । ११. समा की प्रति में यह धंसा भ्रुटित है । १२. भारमा (का०) । १३. सोई (स०) । १४. साधु (स०) । १५. सुनहि विषय विद्याधर है (का०) ।

दोहा १९—१. जस (स०) । २. समित (का०) । ३. करैहि (का०) । ४. सिपटहं (स०) । ५. फिर्ह (स०) । ६. तिहि (का०) । ७. भरमावह (स०) । ८. कति सागर जो को प्रति में यह शब्द नहीं है । ९. भू भावहि (स०) । १०. सन्यासा (स०) । ११. ब्रह्मचरी (का०) । १२. सोपहि धौर न सेव राजत (स०) । १३. ब्रह्मचर्य (स०) । १४. मुन (स०) । १५. मायम (स०) । १६. गरे (स०) । १७. कांभ (स०) । १८. भांख न (स०) । १९. भायें (स०) । २०. श्री न धंग पत छाहो (का०) । २१. भूई (स०) ।
 * श्रीना = एक प्रकार का निकृष्ट पाय्य ।

इन वह पुरुख दिष्टि महं आना । देखत सिद्ध पुरुख पहचाना ॥
 सिद्ध पुरुख इन्ह तन पुनि पेखा । भई परस्पर देखी देखा ॥
 तव इन देवल गोद सों काढी । हिय मैं पीत दरसन तै वाढी ॥
 हंस कै पुरुख हाथ गह लोन्ही । तै रंचक अपन मुख दीनी ॥
 कर जो रहे इनके मुख डारै । डारत बुद्धि किवार उघारे ॥
 कै चेला चल भय गुरु आगे । ए गुरु के पोछे उठ लागे ॥
 एक वचन पूछा तिहि ठाऊं । कही गुरु तुम आपन नाऊं ॥
 कहा अचित नाम नुन मोरा । रंग विहारी राखी तोरा ॥
 कहि सुवचन पुनि दिष्टि न आवा । पुरुख जहां कर तहां समावा ॥
 दोहा— उनहीं घरी कृपा भई, दया कीन्ह गुरु देव ।

आतम रूप लखा प्रगट रहा न अंतर भेव ॥२०॥

दोहा— २०. १ मैं (कां०) । २. उन (कां०) । ३. घोल (स०) । ४. तै (कां०) ।
 ५. काढे (कां०) । ६. ते ताके सनमुख भये ठाढे (कां०) । ७. फल (कां०) ।
 ८. लोन्हे (कां०) । ९. दीन्हे (कां०) । १०. रहि (स०) । ११. डारी (स०) ।
 १२. विरह कुवार आखारी (स०) । १३. भागु (कां०) । १४. पाछे (कां०) ।
 १५. उठि (कां०) । १६. वूसीं वचन जो अज्ञा पावां (स०) । १७. कही कही
 (स०) । १८. कहसि (स०) । १९. वचन (स०) । २०. वही (कां०) ।
 २१. घडी (कां०) । २२. करी (कां०) । २३. उत्तम (स०) । २४. प्रघट
 (स०) ।

.

सिद्धान्त-माधुरी

[श्री रूपरसिक जी कृत]



सिद्धान्त माधुरी

जै जै श्री हरि प्रिया देवि दंपति की दासी ।
इच्छा शक्ति स्वरूप महल की टहल उपासी ॥
रहे प्रसन्न मुख किये लिये रुख हिये उलासी ।
दुरि देखत सखि जहां तहां की करत खवासी ॥

यहां कोउ प्रश्न करें कि सखी दुरि देखें अरु श्री हरि प्रियाजू तहां की खवासी करत हैं तो राहू तो एक सखी हैं इनकां निरंतर सुख की प्राप्ति कैसें संभवैं तो तहां कहिये कि हरि प्रियाजू हैं सु जुगलजू की इच्छा शक्ति निज दासी स्वरूप धारण कीनों है इनि विना विहार वनत नाहीं । काहे तैं जो इच्छा होइ तो विहार होय या तैं इनि को स्वरूप मुख्य जानिये । औरू सखी जु है सु श्री रंगदेव्यादिक प्राधान्य जू थे स्वरी हैं । पै एहू सब श्री निज दासी जू की स्वरूप हैं । आपु हो अष्टधाविग्रह धर्यो है । यातैं उनमें इनिमें भेद नाहीं । जैसे श्री प्रियाजू प्रीतम प्रीतम श्री प्रियाजू या प्रकारि जानिये । अन्यथा नाहीं । औरू कोऊ कहै कि अष्ट सखिन में मुख्य श्री ललिता जू सुनियतु हैं । अरू तुम श्री रंगदेवी मुख्य कही तो तहां कहिय कि अपने इष्ट माहिगुत्व शक्तोपदेश कारिनी कृपा इनिहीं कीं हैं । याते मुख्य कही अन्यो अन्य स्नेह पूर्वक अति प्रसन्न जुगल जू कां सेवति हैं तत्व एक ही हैं । सेवा निमित्त अनेक रूप आभासतु हैं । भेदन करनां । ए प्यारी प्यारेजू की प्यारी सखीं हैं । जब दोऊ प्रीतम परम प्रकास मय मोंहन मंदिर में अलवले अति स्नेह सां सुरत जुद्ध करत हैं तव वा समें न्यारारस है अति सुख अमृत पान करिवे के लिये निरीक्षण करत हैं । अरू श्री हरि प्रियाजू भीतरि यातैं रहति हैं कि वहां सुरत जुद्ध है । जो दोऊनमें कोऊ एक विवस होय तो संभराइवेकां चाहिये । अरू वे श्री रंग देव्यादिक सखी जु हैं सु उनि पर मरमनीय परम अद्भुत लाल पीत स्याम सेत मनिनि करि जटित मुक्तानिकी जालिनि के रंघनिमग लागि वा पूर्ण प्रेम रंग भरी माधुरी कां अवलोकनि करि परस्पर निज भाग सराहति हैं अरू कहत हैं कि घन्य घन्य भाग है सजनी रसिक रसीलेजू की रहसि निहारें दिन रजनी । तातैं यह सुख जु है सु इनिके आश्रय विना अति दुर्लभ हैं । सुल्लभ जाही कां हैं कि जापर श्री निजदासा जू निज करि कृपा करै । यातैं यथम इनको आश्रय लेय जब इनकी कृपा होय तव सखी रूप कां प्रापति है करि श्री मन्निज वृंदावन में नित्य विहार को सेवन करै । अरू निरंतर रूप माधुरी को पान करै । कैसें है श्री मन्निज वृंदावन जाकी दिव्य कंचन मय भूमि है । अनेक भांतिनि की मनिनि करि जटित हैं अति विचित्रता सां । वृक्षन की सोभा पैठ नीलमनि मय है । तो साखा हरित मनि मय है पत्र पीतमनि मय हैं तो फल अरूनमनि मय है । फूल अति सुकंग सुपण्ट सौरभ मधुर वक्त द्रुम ऐसे हैं । जिनके पत्र फल पूलसखा मूल सर्वत्र नानारंग आभासतु हैं । परम मनोहर रम्य कोटि कोटि सूर्यनि को प्रकासु हैं । लता हैं अति रसीली ते ललित तरुनि सां लपटाइ रही हैं व भक्तकलता ऊरधगामिनी है । व क्षतक लता भूमि कां प्रसरित हैं श्री जमनाजू कंकना कर अति सिंगार रस मय पर करि पूर वहत हैं । नाना रंग तरंगनिकरि छवि छलकति है । अरून नील स्वेत

कमल कुल जहाँ तहाँ प्रफुलित है। तिन पर मधुर मधुमुख्य मुबार करत है। प्रनेक स्वरानि सौ सार सद्गुण चक्रवाक कारंज कोकिला कोकलीर चकोर चात्रिक मोर इत्यादिक माना पक्षी जंगलभू के नाम रटतु है स्वतंत्र। प्ररु समय तट है सु रत्न बद्ध है। तिन पर वृषभ की शारे झुकि झुकि फल फूलनि के मार जल को परसि रही है। प्रधि सोमायमान है। तहाँ की सोमा देवि दंपति बू भ्राप सोमायमान हैं रहे हैं। प्ररु एक धिनु म्यारे नहि हूँ सकति है। ऐसी जो निज धाम ठाकै मध्य नव नित्य स्थल कनेक दल कमलाकार तिनमें निज पंकवि अष्टदल है। तिन पर अष्ट प्रिय सखीनिकी कुज है जिनके नाम रंय रसव नव नवस मुख सुन्दर मज्जु मंजुस। इन विखेँ समस्त सेवा की सामगिरी रहत है। जिहि जिहि समै सो सो सहज ही अवति है। प्रधि कमनोम कणिका तेजोमय ठाके ऊपर वारि सरोवर है मान सरोवर मधुर सरोवर, स्वरूप सरोवर, रूप सरोवर। च्यारूपीही श्रीरनि जिनकी रचना अपार है। प्रनेक नगनि करि घाट निमित्त है। सु दर सिद्धीनकी प्रभा को प्रकासु है तिन सरोवरनि के मध्य भाग एक अष्ट द्वार को महस है। द्वार द्वार प्रधि तोरन ध्वजा पताकादि भनइस है। विश्वास मुक्तानिकी वचनमाला कुंवन कपाटनि कुषानिके निकरन करि अटित जगमगाति है। जोति जाकी एक छविसेसर कोटि कोटि दुष्ट परधि के प्रकास कौन है। स्फटिक मनिमय भीठ प्रधि स्वच्छ है। जामे श्री मन्जिब वृ वाहन को प्रतिबंध गैर गैर प्रनेक हूँ आभासत है। प्रवृत्त प्रनेक रंग चित्रनिकरि चित्रिति है। चारू चारू चूनी चहुँ धोर भमकति है। खिरकनि की गोखनि शरोखनि की आरिनि की अटनि अटारिनि की दुष्टि दमकति है। छाजनि की छाजनि विराजनि विविध विधि साजनि सिद्धर सोमा भूमि म्मकति है। पमकति खरी खिसिभूमक ताप ननि कीर मकतिराजी रवि छविनि छमकति है। ता महस के भीतर चौक चौक रत्न मंडस पर कस्य वृक्ष नोचें मोहन मविर है। सरस मनि मृदुल मनि कंचन मनि सूर्य कांति चंद्र कांति हेम कांति मनि कांति पद्मराग पुष्कराग इत्यादि दिव्य अद्भुत मनिन करि विचित्रता सौ रचित है। ठाकै मध्य मुदुल सेज पर स्पाम की सुरत बिहार है। यहाँ धीर काहू को प्रवेश नाही। बिना एक श्री हरि प्रियानू की कं ए इच्छा धमिष्ठ निज वासी स्वरूप है या तँ प्ररु इनको जो मेदानेद की अभिप्राय है सो सो पहिले निख्यो ही है। तँ तँ सन्निभों। मोहन मविर के अग्रभाग प्रांगम में मोहन मंडस ठाकै ऊपर अनोपम अष्टकौन कों एक सुख सिंहासन है। तहाँ जूगसभू विराजत है। कौन कौन प्रत्येक एक प्रिय सखी निज निज गननि जूत प्रनेक भावनि सों सेवा करत है। प्रिय सखीन के नाम। श्री रंगदेवी, सुदेवी, सनिता, विशाखा, पंचलता, चित्रा, तु गविद्या, इंदुसेखा, इमिकी प्रिय सखी जानिये। काहू काहू मठांतर बिर्षे इनके धीरू नाम सुनियतु है। परि यामें बछू संदेह न गिनिये। जैसे श्री प्रिया प्रीतमभू के प्रनेक नाम है। निज महस के जैसे तैसे हूँ सखिन कं ऐपरि यह जू स्वमतानुसार मिले है। निश्चित मही मंडसाधार्य प्रवर चक्र चारू चूड़ा मनीजू की हृद है सो सो यह बिना इपा अमम्य है। परि वाकी सहज ही उपाव है। श्री गुरु चरण धय श्री गुरु है सो सादात भागव रूप है। तहाँ प्रमान सभू स्तवे।

श्लोक—भाषायो विष्णुरूपोहि पुराणेप्यथ विदधय,
निग्रहान् प्रहाम्मोर्व श्री इस्मेन समानता।

जिनको निग्रह अनुग्रह श्रीकृष्ण के समान हैं परन्तु इतनी अधिक हैं सो भगवान् रूठें तो श्री गुरु सहाय करें पर श्री गुरु रूठें भगवान् पर सहाइन होय सकै । तातें सर्व भांति करि श्री गुरु को प्रसन्न राखें । तथा ही ।

श्लोक—हरी रूपे गुरु स्वाता गुरी रूपेन कश्चिन ।

तस्मात्सर्व प्रयत्ने न प्रसाद्यः सर्व देहिनां ।

अरु श्री गुरु विखें मानुषी बुद्धिन करें । तथा ही

श्लोक—आचार्ये मानुषी बुद्धिर्नकर्तव्याक दाचन ।

अस्मामि श्रेयश्छद्भिर्भयतः स्थानहि श्रेयसां ।

दीक्ष्या मंगलेः ।

समझे गुरुहि न मानवी है । गुरु श्री हरिदेव ॥

मनसा वाचा कर्मना करें कपट तजि सेव ।

हरि रूठें राखे जु गुरु गुरु रूठें नहि कोय ॥

तातें सोई विधि करें ज्यों गुरु राजी होय ।

अरु श्री गुरु हैं सो ज्ञान मंजन की सलाका करि नेत्रन के प्रकासकारी हैं । अज्ञान तिमिर करि अंध भये हैं । तिनकों पुराणातरे ।

श्लोक—अज्ञान तिमिराघस्य ज्ञानानां जन सिलाकया

चक्षु रून्मीलितं येनतस्मै श्री गुरुवे नमः

जैसे जु श्री गुरु हैं तिनकों नमस्कार है । जिनके चरणाश्रय तैं सर्व सु मिलें । अरु जो कोऊ भगवान् की प्राप्ति चाहै सो श्री गुरु की आश्रय लैय । वेद हूकहत है कि विना गुरु भगवान् की प्राप्ति नाही । पंच संस्कार के दाता हैं । श्री गुरु तिन समान प्रत्युपकार करने कौं द्वितीयोनास्तिलुस्तवे ।

श्लोक—पंच संस्कार दायीच महो धर्ताभवाणवात् ।

तेषां प्रत्युपकाराही न कोपि जगती तले । दिङ्मंगले ।

छाप तिलक अरु नाम पुनि माला मंत्र जु पांच ।

संस्कार जब गुरु करै तवही हरि जन सांच ॥

तातें प्रथम जब गुरु को आश्रय मिलै कृपा करि जब श्री गुरु नवधा भक्ति दिठावें । करत करत परिपक्व भयो जानें । तव प्रसन्न हूँ हृदय गत वस्तु उपदेसैं । अरु निज रूप की प्राप्ति करै । नित्य लीला दरसावैं । सो नित्य लीला ब्रह्मादिकनि कौं अलभ्य हैं । तो तुम कैसे जानी तो यहां यह उत्तर कि ब्रह्मादिक हैं सो वैकुण्ठनाथ के आधिकारी हैं सो अपने अधिकार में मग्न हैं । जिनके जानिवे को यह रस नाही । रसमारग भिन्न है । यह तो मुक्तिनि हूँ कौं आलभ्य है तो कर्म ज्ञानिन कौं कहा याकौं तो कृपा चाहिये कृपा होय । जब प्रेम होय तब यह रस पावै । तहां महावाक्य प्रमान हैं कर्म ज्ञान को नेकहूँ नाही जहां संसर्ग प्रेम विना पहुँचे नहीं । पांचौं ही अपवर्ग । तातें प्रेम ही मुख्य है । सर्वथा जो कोऊ

बाह्य कि बिना प्रेम ही प्राप्ति है तो कदाचित्त नहीं क्यों के प्रम्य दुर्लभा प्रेम सुस्तमाय है विरद विवत है सो कृपा साम्य है भरू कोऊ कह कि कृपा कौन की श्री हरि प्रयाजू की कि प्रिया हरिजू की ती यहां यह उत्तर जो कृपा भ्यारी नहीं कृपा एक ही है । इनकी जो उनकि जो इनकी इच्छा कहा भिन्न है । यह तो भावना के भेद है । भरू वस्तु एक है । परन्तु इनमें गुरूत्व है । तारें कृपा इमहीं की । आकरि प्रेम रूपो सुख भिसै । सो सुख कंसो है । अनंदमय दिव्यारूप असिबेसो है । असकसडेसो है रसीसो रंग रंगीसो है छबीसो है ।

यह सिद्धांत जू मामूरी कही बुद्धि अनुसार ।

रूप रसिक जन जो कहें सहै सोई सुख सार ॥

विरह-शतं

[सोलहवीं शताब्दि का एक अप्रकाशित हिन्दी ग्रन्थ]

सम्पादक--अगरचन्द नाहटा

सोलहवीं शताब्दि का एक अप्रकाशित हिन्दी ग्रन्थ— विरह-शतं

[अग्ररचन्द नाहटा]

सोलहवीं शताब्दि के पहले का हिन्दी साहित्य बहुत ही कम जानकारी में आया है। बड़े बड़े ग्रन्थ कम मिलते हैं और छोटी छोटी रचनाओं की ओर अभी ध्यान ही नहीं गया है। गुजराती राजस्थानी साहित्य के १३वीं शताब्दि से १६वीं तक की अनेक फुटकर रचनाओं के संग्रह निकल चुके हैं, जिनसे उन भाषाओं के क्रमिक विकास, रचनाओं के प्रकार व परंपरा आदि पर बहुत ही सुंदर प्रकाश पड़ता है। पर हिन्दी की प्राचीन रचनाओं के संग्रह का अभी तक कोई प्रयत्न नहीं किया गया। इसीलिये इनी-गिनी रचनाओं के अतिरिक्त हमें १३वीं शती से १५वीं शती तक की रचनाओं के संबंध में बहुत ही सीमित जानकारी है। अब इस कमी को पूरा करना अति शीघ्र आवश्यक है।

जब तक प्राचीन हिन्दी रचनाओं के संग्रह ग्रंथ प्रकाशित न हों, हमारी शोध-पत्रिकाओं में छोटी छोटी प्राचीन रचनाओं के प्रकाशित होने का प्रबंध होना चाहिये। इसलिये हिन्दी अनुशीलन में जिस प्रकार ग्रन्थानुसंधान चालू किया गया है उसी प्रकार अन्य त्रैमासिक शोधपत्रिकाओं में कुछ पृष्ठ इसके लिये अवश्य रहने चाहिये। यह सुझाव देने पर डा० सत्येन्द्र जी ने भारतीय साहित्य एवं आगरा विश्वविद्यालय के वार्षिक अंक में प्राचीन ग्रंथ प्रकाशन के लिये एक स्तम्भ नियमित रूप से प्रारम्भ करना स्वीकार किया है। और उसके लिये नियमित सामग्री देते रहने का मैं वचन दे चुका हूँ।

प्रारंभिक रचना के तौर पर साधन कवि रचित मैना-सत को देने का विचार था। पर उसकी दो प्रतियाँ मेरे पास हैं। दो अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, एक 'जोवपुर पुस्तक प्रकाश' में प्राप्त हैं। इस अंक में सोलहवीं शती के लगभग का विरह शतं प्रकाशित किया जा रहा है। हमारे संग्रह में १७वीं शताब्दि की लिखी हुई तीन पत्रों की एक प्रति है जिसमें इस विरह शतं के साथ दूसरा एक शतं भी लिखा हुआ है। उसका नाम नहीं लिखा होने से उसके विषय को देखते हुए प्रेम शतं नाम देकर मैंने इन दोनों रचनाओं का आद्यान्त विवरण राजस्थान विश्वविद्यापीठ उदयपुर से प्रकाशित राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज के चौथे भाग में दिया था। अभी जयपुर के दिगम्बर तेरह पंथी भंडार में इन दोनों रचनाओं की एक और प्रति मिल गई है। उन दोनों का मूल आधार एक ही प्रति है। इसमें दूसरे शतक का नाम बोर्डर में शृंगार सतक भाषा लिखा है, जिसे मैंने प्रेमशतं संज्ञा दी थी। यह दूसरी प्रति चार पत्रों की है। इसके अंत में हर्ष कीर्ति का उल्लेख है। जिनका समय १७वीं शती का पूर्वार्द्ध है। पीछे की पंक्ति में भिन्नाक्षरों में सं० १७२२ चैत्रवदी १ लिखा हुआ है और इसके पहले और पीछे की एक एक पंक्ति पर काली स्याही फेर दी गई है। दोनों प्रतियाँ १७वीं शताब्दि की हैं। मूलाधार उससे पहले १६वीं शताब्दि का होना संभव है। शृंगार शतक फिर कभी दिया जायगा।

विरह-शतं

जो उच्चरिय तु नाम तुअ । अस वुजिये जु अरत्य ।
 सोइ करता अक्षर सरिस । भंजन गढन समत्य ॥ १॥
 सम कहुं कह न हीं कहां हहि । रे पवित्र कहि मोहि ।
 माया मुद्रित नगन मम । वयुं करि देखुं तोहि ॥ २॥
 इन नयनन देखुं नहीं । इह विधि हूँढयी जग ।
 सोइ उपदेशो जान महि । जिहि पावी तुं अमंग ॥ ३॥
 विरह उपावन विरह म । विरह हरन सावंत ।
 विरह तेज तन नहि सकत । व्याकुल महि जावंत ॥ ४॥
 विरह पुव्व प्रभु कुं भयी । सब रवि रापिउ मूल ।
 नैन वुझति नहि आप महि । तां लगि रच्यो रसूल ॥ ५॥
 प्रयम कही विधि आप मुखि । हिंदू तुरक मभारि ।
 ही जि कहति इह रसन लग । पावन करति विचारि ॥ ६॥
 तू अनाम न गुन न विश्र प्रभु । जनम एक परि लेइ ।
 घोर अगनि परसै नहीं । अंति परम पद देइ ॥ ७॥
 देहि प्रदशन रयन दिनि । नखत न पास भजाहि ।
 सोई आलम राज न कु तव । महि भेटे प्रभु साहि ॥ ८॥
 कही जु दारुण दुख दहै । तुहि पेम् कि किह तीर ।
 विरह व्यथा प्रान न हरइ । सो परम पीर हर पीर ॥ ९॥
 वन तिन वडवानल मुपहि । जिम मल परसत नीर ।
 हरे पाप दुख राम जहि । सुपि जिय राजन पीर ॥ १०॥
 प्रीति रची अति सुख लगि । दुख चरिउ मम हत्थि ।
 मन मति सच लोयन श्रवन । पंच चले तूअ सत्थि ॥ ११॥
 पग आगै मन पछिमइ । होयइ मझि विपरीत ।
 मीत पयानी घजा सम । नयना जल मुख पीत ॥ १२॥
 हियइ रंध(ति) विरसना थकित । लोचन जल भरि लीन ।
 ऐसौ त दुज्जन पुनि करहु । जो इन तिहूं न कीन ॥ १३॥
 जे दिदु वैनहु तेज पिय । ते चल्ले संग तुज्झि ।
 निठुर विपछिज मोहि तन । रह्यौ लजावन मुज्झि ॥ १४॥
 कौ बोलइ आंकम भरहि । कोइ गहै तुअ पाइ ।
 गम तजु अज भव उप्पजिउ । हुं गही सु^३ साधिग भाइ ॥ १५॥
 वासर विरह निमत्त कुं । विन संगम मम छाँह ।
 स्याम रयन नहि सहि सकत । सु हुं विमुक्कति ताह ॥ १६॥

विरह व्यथा प्रति कठिन तन । सुर नर सकृहि भासि ।
 मविर पञ्चइ रूप बन । मुन बोधति मम सासि ॥१७॥
 रयना^३ परि रवि पेम की । होसी करम सयोग ।
 कौन पदारथ करि करइ । मिसने की है वियोग ॥१८॥
 विधि कठ दीन्हो प्रेम बन । विरह संग दियो काई ।
 किनि हि जियावत पिन रहति । पल पल रक्ख न पाइ ॥१९॥
 हीयै हुतासन भर वरै । छटापि मुक्कति सास ।
 विरह^४ धा रवि से भस्म करि । विहुर न प्रक घसाक ॥२०॥
 लिखत मूठ भविकसत^५ । पल मळ्ळहि प्रभु साहि ।
 दुख भक ज मोटि न सकत । को^६ सेसक तू भाहि ॥२१॥
 पेम सरोवर भाहि परि । बिम्ह तविकउ तरि तीर ।
 निकसि मीन सिर घुनिउ । तब पायी सध नीर ॥२२॥
 रे जिय परिहुइ पेम वहि । विससि अनेक तरंग ।
 घाउ समप्पति मुळ कौवन^७ । नयन मीन के सग ॥२३॥
 विरह सेज कहु जगत नहि । मुहि सन चुक्को भाहि ।
 विहुरन ताता सग विन । यी दुख दीन्हो पाहि ॥२४॥
 साहि कठिन प्रति विरह भर । परसी बिन्ह सरीर ।
 तिहु चिय मुक्क सहिन सरिस । सहि त सकी पिय पीर ॥२५॥
 मयन तपत तम मं नमी । मह महि जाम्यो तम्ब ।
 वा निरमोही मिसन दिन । सो हं पुछु कम्ब ॥२६॥
 नेह मैन विरहा भविल । ते मिस उठी जू जोठि ।
 मन पतंग मन्निह परत । जानति नहि कहाँ होत ॥२७॥
 रे मन पेम पतंग तू । रूप ज्योति रूप सेत ।
 रसन बीप मुल जय मगति । उह घमनि जिउ देत ॥२८॥
 मन पतंग^८ उक्तिम करत । विरह ज्योति भानेनु ।
 अरइ ती पावइ परम पद । बर्ब^९ त साभै हेतु ॥२९॥
 पेम बँद घोपय गुनिक । पूछ्यो यह कह पाइ ।
 विरह मत्र धसि सँठ तह । पीर विपम जिह जाइ ॥३०॥
 हूँ जइ सो पिय पेम भाहि । ते जू दए बँद तम्ब ।
 जहाँ कहाँ की गाहर मिसइ । ती विप हरइ सरम्ब ॥३१॥
 पन्थ विरह बस्यो जू मम । सग ध गाहर मोहि ।
 पिय रवि उदइ कठिन सहरि । नहि जगहि विन सोहि ॥३२॥

विरह उसासन जरति रवि । तिय मुक्कति विननाह ।
 मनहु सिराख^१ तन तपत । सांझ परत दधि माहि ॥३३॥
 मदन संचरति सांभ^{१०} हिय । जह लौ ती सब जाति ।
 मोहियै वसति जु विरह अति । डसति सपूरन राति ॥३४॥
 दीपक भुवन न अलि कमल । तरु विहगम तिह संत ।
 मोतन विरहानल वसै । तपत सकल तन मभि ॥३५॥
 पुहमी वदंति^{११} दीपधर । सभि सुख मनसि अनंग ।
 विरह दीप मो उर वसै । मन फिरि परै पतंग ॥३६॥
 रयनि जु रमनी विरह की । काम दियइ विच छाइ ।
 सो रंग रंक तन ननि चुवै । संचित रंग हुइ जाइ ॥३७॥
 नयन कलस भुर त्रिकुटि कुच । कुच शिव मस्तक आहि ।
 कोट बूंद दिन पति परति । तुअ दरसन कौ साहि ॥३८॥
 जांम चतुर तुअ विरह जरि । रजनी भई लि हार ।
 पुनि जारिवी जारि दियइ । सुरगि भयौ जिवार ॥३९॥
 मो हिया विरहजु वइरि । खिरि खिरि जुरि आवंति ।
 जहम जुठारत पवन मिसि । तह असुवन वरिसंत ॥४०॥
 इंद पटल पर पूर जल । इंद वदन वर पंत ।
 इंदी वर पिय तुअ विरह । इंद वधू निरखंत ॥४१॥
 अंबर पूरत घन पटल । पिय विदेसिं निसि स्याम ।
 असि दामिनि दव्विन करह । वाम गहइ कच काम ॥४२॥
 आथि सरोवर सकल महि । नीर जी नीर पूर ।
 मन मरालि मन मानसर । रमै न जद्विप दूर ॥४३॥
 पेम सलिल पिय सुक्ख जौ । दौ दीन्हो तन लाइ ।
 वरि विरह भरि परि जरी । वह सुन जिरत^{१२} जाइ ॥४४॥
 मिलि पिय पिय चातिग रसन । प्रेम तिया दाहंति ।
 लोचन घन वरसंत नित । श्वाति अधिक चाहंति ॥४५॥
 पावस निसि या पूर तम । छट विजुल छल कौन ।
 हुं विरहनिवह जलद संग । विहसि महा दुख दीन ॥४६॥
 कांती कंता देष मम । तुअ विजोग जिउ जाम ।
 टटि वेनी श्रम अर्घं जल । मुख कंचन तूअ नाम ॥४७॥
 जोगी गिरि आरंन चवन^{१३} । मिलइ न आश्रम कौन ।
 हंस पुरी जिह पिय मिलइ । विह^{१४} मश्री लिय गौन ॥४८॥

काननि मुद्रा करि पसी । सीस परत करि प्रब्र ।
 भसम दयै जी पिय मिलह । भसम कसँ तन सब्र ॥४६॥
 कहां राम द्रुपंत नस । ते जानत तीय वियोग ।
 हुंअ विन्ह विधि सुख तन । इह पीर परम मोहि योग ॥४७॥
 कह बंधव कह मित्त जन । जो पीर बटावन मोहि ।
 विरही कहाति पंच जन । भा पहि पूछुं तोहि ॥४८॥
 रे कहियो को बिभ्र कवन । को बाहिन दिन कोन ।
 कोइ जनम ससार कौ । कोन सुयट कुस कौन ॥४९॥
 लें भायै सुत पवन जिम । अपा मु जीवन मूर ।
 सकति रही नहि साह महि । सर लगै तन पूर ॥५०॥
 रे मन हसहु^{१२} दी जियहु । प्रंत परी मम संग ।
 सेव सलिस दरपन दहन । रज पद प्रबंध पंग ॥५१॥
 मुअ भासियहि हियो भरि । मुख देखिहि बस रंक ।
 यु विधि धंके जनम पट । इह लिमाट ठिठ धंक ॥५२॥
 जह सुं फंद सुर नर रषेइ । धोर म जतन बटाहि ।
 बिन फंद फंदे जु प्रेम फंद । ते निरबनि न साहि ॥५३॥
 प्रदभूत पीर परेम की । ब्यापि रही जगपूर ।
 बहु ते स्थाने पबि रहे । कहु करि बडी न मूर ॥५४॥
 द्रुम सनेहि तन भति बहै । जरी विरह प्रतिवार ।
 साह सिरावन नयन अस । उठति धधिक तन भर ॥५५॥
 रावन परतिय हेत भगि । दह सिरि दिवे कुभाउ ।
 उह मारग चंपावती । एकठ देत संकाउ ॥५६॥
 जह पस सोपन चारि भै । तब जु दये जिय साठ ।
 तन गर पर दी छार भइ । सी उम छुट्टी गांठि ॥५७॥
 धवन घरहि संतोप सुनि । रसन गहै अपि सुबस ।
 ए प्रसार हिव रत भैन । देखन चाह हि मुस ॥५८॥
 मिसि बमित पान चाहि तन । मन पाठुनो करित ।
 को प्राणिग हि को सुमी । कौ देपहि चरित ॥५९॥
 जो मुहि भावत सोइ करत । पस जानिति मिसि चिति ।
 यहै न जानत भाप मन । भावति परति मुनिति ॥६०॥
 विरहगिन उर तिम जरइ । रसन बहन महि जाइ ।
 जिम दस मस्तक चीय उर । तिति रिबनि जरे बुभाइ ॥६१॥

एकोतन का एक जिय । खेह करै किन काम ।
 मह जनम जनम कहुं एह सजो । जुठ जुन तेरो नाम ॥६५॥
 पग देखत लगि साहि जिउ । नयन रहे पचि हारि ।
 जिउ प्रस्थानौ दिन करै । हुं राखित करि मनुहारि ॥६६॥
 ताहि न साहि विसरियहु । दया^{१८} आघारि जीवति ।
 हुं कुमदनि तुम्ह सरद ससि । कृपा करन पीवति ॥६७॥
 कह दिनियर कहा कमलिनी । कह कुमदनी मयंक ।
 प्रीति तिहुं पुर वल्लहा । कह राना कह रंक ॥६८॥
 विन साहिब सब स्याम निसि । किउं व मोर तिय लेइ ।
 विरह व्यथा दुख कहति हुं । हुंकारौ न विदेइ ॥६९॥
 सिसकति जारि भसम्म करि । मां जन लकि मृग अंक ।
 तिय वधू सुठ सब तै कठिन । सुदूनू चरइ कलंक ॥७०॥
 जौ ससि जुगवै रैन किय । पलल गो नहि नयन ।
 तापर कंटक किरन किय । पूरि रहति मम सैन ॥७१॥
 जीव जतन करि मिलन कुं । मन पठ्यौ तूअ पासि ।
 मन कुच संकट फंधियौ । हिय धकधुको यौ सांस ॥७२॥
 तै जु दए दुख नखत सम । पिय गन तैन सिराहि ।
 ए भ्रम राम विराम मुहि । इह विसाल निसि जाहि ॥७३॥
 जाइ टक दृकि रैन दिनि । गनत तराइन गैन ।
 डंडो भ्रकुटी नयन पल । तुलति समग्राल रैन ॥७४॥
 को जानै किहि करवर हि । पंकहि परे जु नयन ।
 करिवर छर कठेन लए । आवन दए वतैन ॥७५॥
 तुह देखन लगि मोह विधि । नइंन करति इक सत्थि ।
 पछताए कर सभ मरति । नख सिख तन पद हत्थि ॥७६॥
 दव्व गव्व सोभाग हित । अरधंगो पुनि दोन ।
 दुख न जानति हे सखी । विछुरति तिन्ह जौ कीन्ह ॥७७॥
 विछरन सरिखी दुख नहीं । मिलन समान न सुख ।
 विधि ललाट तेउ अंक लिखि । संतति देखी मुख ॥७८॥
 प्रिय मगहि जउ कीजियै । जनम अमगि न जाइ ।
 जिहि मगिहि पिय पाइयै । सो मग देखहु आइ ॥७९॥
 लोचन पत्री महि लिखूं । कं काढ़ि पथिक कर देउ ।
 इहै जुगति जिहि तूं मिलूं । देखि जनम फल लेउ ॥८०॥

मान महत कुल गव्य गुन । जप तप को रौसत्व ।
 पेम पत्य पर त्यपर । जीतन समं समत्य ॥८१॥
 विरह प्रकूरित हृदय धर । उत पारन मैखिन्ह ।
 सोचन धवन सन परस मम । तिहि सिञ्चित तव कीन्ह ॥८२॥
 कै नैमन वै मन गवन । कै कुच फठिन सन हीय ।
 यह रचना विपरीत कर । कइ दरस देहि विधि पोय ॥८३॥
 ठौर बैसि सोचन न मह । निद्रा भावति मोहि ।
 किहु करि आत्मति रैनि पिठ । धान म देख तोहि ॥८४॥
 पत्री सिञ्चिति धनेक दुख । मरि जू सिञ्चित इहि क्यास ।
 समं सिञ्चिति जूत पति गय । तिहि जानति होहि दयाल ॥८५॥
 पत्नी को हित देखि सखि । विग्न पग पिय पहि जाइ ।
 मोहि न खेइ इहु पुरय रति । भिभूवन सेइ चढाइ ॥८६॥
 बिसुरन समं जू जिय रहित । मिटे न स्याम के प्रक ।
 स्वयं सोचन असद करि । भोवति पवन कलंक ॥८७॥
 छोइ बिरहगि निवारक । उमारी जगत धनग ।
 तिह कारिखि मं स्याम धरि । कोकिल मीन कुरंग ॥८८॥
 रूप पयासे दिन रहत । सोचन आतिग दोन्ह ।
 मन बाहर धर जाइ मुखि । पानिप पीवति कीन्ह ॥८९॥
 रे मन लागी पाइ तूभ । भट पुनि संगहि सेहि ।
 शीखंड चंपक धरन तन । भालिगन मुह देहि ॥९०॥
 विरह गयव शरीर वन । तव तोरति करि गव्य ।
 करि न संभारति माहु धरु । भावति करित सु सव्य ॥९१॥
 संकुम धनि कजु फद हुते । बिरहन गज मद पाइ ।
 सो चीन्हो छोरि वसत पति । तिय बिसहिइ बाइ ॥९२॥
 कामत पाक्री रूप हुइ । हुं जहरी जिन सीय ।
 हहा करत भ्रम उपज्यी । रावन देख्यौ नीय ॥९३॥
 धरी धरी उर रूप भरि । नैन रहित घटि पति ।
 तूभ सनेह सरवर धमिठ । पिय सीपी इह भति ॥९४॥
 तु भगिन^१ बलिस म धनस सम । स्मरि स्मरि जरि जाइ ।
 एक भवगुन नहि सुरति । बिहि ठमि तपत बुझाइ ॥९५॥
 सास र्हे पर हार सखि । ज्योति रही भरतत्य ।
 प्रबहु न सोनित वास विन । पद्यतायो पय इत्य ॥९६॥

सक तहि करि शंपो नैन । मति आवइ निसि सोइ ।
 सुपनइ देखौ पिय वदन । इहु दरसन पुनि होइ ॥६७॥
 दुख असुर हएति संचिरउ । मो तन सव्व सरीर ।
 पंच भवानी प्रगट हुअ । संहु संहरि हरि पीय ॥६८॥
 तुअ सनेह चंपावती । जन मन छोड़ो काउ ।
 सवत इ दुल्लभ प्राण घट । तुअ मग रही कि जाउ ॥६९॥
 चंपा चंपा जिय जपति । श्रीर हि मुक्कवि काम ।
 नई सिष्ट ज वो । लेत उठूं तूअ नाम ॥१००॥
 ज्ञान ध्यान संजमन व्रत । मंत्र यंत्र सभ सून ।
 इहु भेखन प्रसन तूअ । कौ रक्षी मम मीन ॥१०१॥
 पंच जहां तहं पंच मग । पंच रहति नहि हत्थ ।
 मल इक्की वलि इक्क कै । इक चलति पिय सत्थ ॥१०२॥
 नवमिय विरही त जुप्पजै^{१६} । किहि निमित्त किहि काज ।
 मो तन देतन प्रेम वलि । चंप भवानी आज ॥१०३॥
 मनसा वाचा करमना । कही तदिव्व कर लेउ ।
 चंपक माला दरस पर । कोटि जीउ वलि देउ ॥१०४॥
 रोही अवरोही जतन । विश्वास जिय जाम ।
 इक्क कहै चंइक्कपा । प्रति लगाति तूअ नाम ॥१०५॥
 किह जप तप किहु ज्ञान धन । किह विद्या किह राज ।
 मै सीव्यौ तु अ नाम निज । तु अ पेमाहिं स्युं काज ॥१०६॥
 वरिस दिउंस दिन वरस गय । गैवर खाचि जु लाल ।
 ए प्रभु अजहु दयाल हुई । कृपा न करहु दवाल ॥१०७॥
 जीवन दिन अवृथा सबै । आहि वांय सजि लीन्ह ।
 पिय भेटन की येक मल । भुजा अलिगन दीन्ह ॥१०८॥
 प्रीतम भेटयो इह समै । सुन्यो अमिय मुख वण ।
 संप्रदाउ पुनि तिह घरी । विहु देखौ इह नैण ॥१०९॥
 अंतरि पुट धाननि घरी । तामहि देखौ पीय ।
 वयन रचौ दुख कुं दहै । ए विरमावी जीय ॥११०॥
 विद्या रूप न अतिहि वल । उ बुधि गहि सरीर ।
 जिस घट विरह न संचरइ । क्या जानै पर पीर ॥१११॥
 सम चातुरी न वंध न हि । नव रस कियौ न नेह ।
 विरस पीर जु न पीरियो । क्या बुझइ सच एह ॥११२॥

लोचन इंद्र हरस पुनि । ग्रामूर बस सत्ताह ।
 प्रेम चरित कहि नहि सकत । होहि सर्व इककाह ॥११३॥
 कवि विचार घरि जुगति भग । धुंसुव वोपनि खोरि ।
 कति विद्योप कवित्त गुन । भाखा जौ काइ होइ ॥११४॥
 कवि जन इकक न भारती । कस्तोभति सविषित ।
 मोकर देपौ आपनो । दोष शुरावइ मित्त ॥११५॥
 श्वाति ससिल पिय पेम सुभ । भाजन भाव धरति ।
 अहि विपमहि मुसिय भगति । कदमि कपूर भरति ॥११६॥
 अहि मुख सुभा कि पाइयइ । सीतल तनु मन सेहि ।
 दुजन पाहि भसप्पनउ । सुधि स्वानेह का केह ॥११७॥

सिंसार-वनक श्यामा

सुभाषकर

दिल्ली का एक उद्योगिक प्रयोग

दिल्ली का एक उद्योगिक प्रयोग

सिंगार सतक भाषा

ओ३म् नमो त्रैलोक्य मै । प्राणा कर करतार ।
 प्रेम रूप उद्धरन जग । दया सिंधु भवतार ॥१॥
 इक्कल रे पति लोक विय । सचेव वहि निसि जग्गि ।
 आडंबर रुचि पेम कौ । रच्यो महम्मद लग्गि ॥२॥
 सिंगार प्रभु सज्जि करि । वेगहि होइ सिंगार ।
 मोह न हुई रंजहि सकल । रही न बुद्धि विचार ॥३॥
 पति सिर ताज सिंगार रस । अष्ट महानद आहि ।
 भाव तरंग समान सब । नव रस रंजन साहि ॥४॥
 रस आगम निवास रस । रस लंघित तिय काल ।
 तिनही मह सुख उपज्य । रत विरत जंजाल ॥५॥
 पेम उदधि तिय निद्वलगि । किय मत्थन मनमत्थ ।
 पेम जार संसार पर । विस्तरीयौ नर नत्थ ॥६॥
 मथ्यौ ज चौदह रतन लगि । ते तिय तन सब आहि ।
 मूरख देवज पित्त जन । उदधि विगारयौ साहि ॥७॥
 पुहंवी रतन ज उप्पजिउ । भयौ न सुरनर गोत ।
 पटतर देखन तौ वनै । रति अनंग सुत होत ॥८॥
 अलिमाला वल्लिन गई । अहि कुल दुरे पतार ।
 मृग मद कौ करना छुअ । वरन वास तुअ वार ॥९॥
 स्याम कुटिल चित्तह डसन । परतपि विषधर आहि ।
 मंत्र कहूँ जौ हसि पटत । करह गहत कच साहि ॥१०॥
 सुरति श्रम जल उप्पजै । बूंद रही लट अंत ।
 शिव लिलाट पै तृपति भै । अहि मुषि अमी चुवंति ॥११॥
 घट पटी लट उन्ह है । छट विज्जुल मुसकंति ।
 बूंदज श्रम जल वदन थै । विपरीत हि बरषंति ॥१२॥
 श्रम जल बूंद ज चून भौ । अलक वनी फंद वारि ।
 चित पर वीच रचत फंधिउ । सकइव कौ निरवारि ॥१३॥
 पेम अषेटक करन लगि । राग पर त्रिय दिन्ह ।
 अलका वरि वावरि रची । मो मन मृगधर लिन्ह ॥१४॥
 कच झारत तम वित्थरिउ । गयौ सुरवि दधि माहि ।
 अति भजु वंछति दरस मुख । भई संघ्या कत जाहि ॥१५॥
 कच बुटे तुअ सीस पर । पुहप रहे सोभंत ।
 देखि अनंग खिसि गयौ । मानहु तिमिर हसंत ॥१६॥

भातके उर उर नयर । नैन सजे तिम्ह बंड ।
 को जानै किहि पर तन्यी । परै जु मीह को बंड ॥१७॥
 राम पर्य कर करम ठव । सोइ को बंड भुब वास ।
 त्योरी तदन जितानियी । सरफुटति हिम कास ॥१८॥
 प्रीतम कीटी आप भुब । नैन धरे बज साहि ।
 धरै दृष्टि उर मै तनत । मरम गात अप साहि ॥१९॥
 नैन भालि कोबंड भुब । धगधरे कुष सुर ।
 प्रबीन जु भावत वदन तन । विब फिट्टव मुग कूर ॥२०॥
 परिमस बडिठ बिस धरि^१ । खेयी मदन प्रधान ।
 जगतरे मा मुक्तिमय । दृष्टि चुकी नहि बान ॥२१॥
 शुद्रावसि बंटिक मनो । नैन दीप उघोव ।
 हस तिय धुंघट तम करत । कोटि जीठ बम होव ॥२२॥
 मीह भनूप धरि दृष्ट सरि । वया मई ता न ति ।
 कटाछ भास उर मै गबी । बतन न कष्ट मानव ॥२३॥
 मृगनैमी मृगराज कटि । मृग वाहन मुप जाहि ।
 मृग धंगो मृग मय तिसक । मृग रीभति सुर ताहि ॥२४॥
 मृग कवंब काननि गहै । कमस मीन पक्ष माहि ।
 बंजन धंजन वैत डुरि । जाहि बिसबि नै नाहि ॥२५॥
 प्ररुण ससज्ज उतंग पक्ष । करना इत श्रीरेह ।
 निर्मल से तज कजमे । सोइन परमित एह ॥२६॥
 नैन दीप जगमगन मुख । जोति रही तन दीरि ।
 कजम^२ सोइ सीस पहरिउ । पल भुब कुंतस गौरि ॥२७॥
 लोचन बानत पान दिय । तनत मर ततिहकाल^३ ।
 बंधति कज्जल बिपह धर । मुककति के कह हास ॥२८॥
 अहु विसि दिक्कत नहि मिसत । बिठ सेगो^४ बसै न ।
 अवननि सुवमती करत । कहा करै धुं नयन ॥२९॥
 तुभ मुखा पानिप प्रमिय निधि । देखत पाइ प्रगात ।
 नयन बिबिध प्रगसि बिसि । पीबती महं प्रवात ॥३०॥
 छवि दुति बरनत नहि वनै । पानिप उचभि समान ।
 नैन किस किसा हुई भूपहि । रूप गहै परिमान ॥३१॥
 रूप आदिनी तन गहिउ । हस्यो बिरह तम जोर ।
 प्रमिय किरन छवि बदन की । पीबत नयन बकोर ॥३२॥
 प्रतुन ससज्ज उतंग फस । करना इत प्रबरेह ।
 बिमस सेत सोइ कज्जमे । सोइन परमित एह ॥३३॥
 मुख संपुट कुंवर वरन । बिहि दिक्क कहत मुनि बगिग ।
 भरपी जूम न काम न रतन । पिय पम रंकन सगिग ॥३४॥

श्रम जल बूंद मुख चंद परि । हसि जु लेत पिय नाम ।
 लोचन मध्य जु भसम करि । सींचि जु आवत काम ॥३५॥
 हारावलि पैन्हौ जतन । सोभित मुतियन फंद ।
 वदन वीच इम देखियत । ज्युं पावस बैठी चंद ॥३६॥
 तिन तो रहु राहु न गहै । तिय घूँघट करि टंक ।
 वदन सुधाकर सरद कौ । मृग मद आउ कलंक ॥३७॥
 चंपा वरन तुअ देखिकै । चंपा सतु तर डार ।
 कंचन समसर होन लगि । दिनहु सहन तन भार ॥३८॥
 वदन चंपिका चंद सम । भूल्यौ भय मति चित्त ।
 उह वंदीयै जगि दुइज दिनि । इह पति वंदइ नित्त ॥३९॥
 मन पतंग फिरि फिरि परै । चंपा रूप तुअ जोति ।
 रतन दीप मुख जग मगै । फूकि मरहि सुठि सौति ॥४०॥
 हित परीति सहि जु चंपा । मूरति चंपा अनंग ।
 तर सुहाग तर ना सकल । कंचन चंपा सुरंग ॥४१॥
 कवि पटतर है मयंक सम । आनन चंपा सु काई ।
 निःकलंक जलि लाट पर । सोठ लगत तिय पाई ॥४२॥
 खंडित अघर जु दरपनहि । निरखि लई तिय सीक ।
 मुख कुंदन जन जरिय पिय । चूनि रही जिन पीक ॥४३॥
 वचन पान कछु कर गहे । बोलति सिथल जु वैन ।
 मकरंद जु लयौ कमल जिम । देखहु सखि ए नैन ॥४४॥
 ग्रहै जुनवरस साखि धरि । अर्द्ध प्रीति रंग जाहि ।
 चंप वदन दुज राज कर । संकल्पौ जिउ साहि ॥४५॥
 साहिव संचौ मैन रचि । शशि के तेजत याज ।
 हेम पेम कुंदन करति । मूरति भरीअ चंपाजु ॥४६॥
 नयन अवाटि साची कियो । पचि तर चिति विधि आह ।
 हिमकर हिम हिम कटित भरि । मूरति चंपा जुसाह ॥४७॥
 कीर चंच रतिय कुटिल ।
 सास पिमुक्कति नासिका । वर्णत वनत न मूल ॥४८॥
 पल सकुचित पल उस्ससति । मधुप पुहप पर होइ ।
 मुत्तिय मुकट जु इक्क पुर । त्रिपुर विराजत सोइ ॥४९॥
 कहु फूली सुख तिन्ह रवा । कवहु विराजत नत्य ।
 विनह अलंकृत सोहिवी । छवि वर्ण अकयत्य ॥५०॥
 कहां वधू विद्रुम कवल । कहां मानिक कहां लाल ।
 सुरत अंत कहत न वनहि । सोहत अघर गुलाल ॥५१॥
 अघर सुरंग कुरंग भै । नैन कुरंग सुरंग ।
 करै जु रंगति रंग तन । रहै न अंग सुचंग ॥५२॥

मयम जु भाए रखन हुइ । सुमिर न बड दुप विन्ह ।
 धरर पिड पर मीपधी । वर न व्यया हरिसिन्ह ॥१३॥
 क्यूं कटास सोमित तरनि । फिर चितबनि मुसकाठ ।
 मुद्रित धनि कुद्रति मनौ । मौर कवस बिकसति ॥१४॥
 वस्लम दुइ धमभौ रह्यौ । गए लब्धिनहि चिन्ह ।
 पेम पियासे धरर मधु । कथा पुब्वक सिन्ह ॥१५॥
 दिव्य कवस मुख वास मयि । सए दसन धनि ताहि ।
 मुत्तिय धन बंधन भरे । सोमित चौका साहि ॥१६॥
 धनि बंधनि हीरा धरनि । गगन बीजु दधिमोति ।
 वारिम मुख मुद्रित रहित । देखि दसन की जोति ॥१७॥
 कूप बिबुक मो मन परित । त्रिपा धरर जल भास ।
 कुंतस कंटक कुटिस परि । कर करि कट्टति तास ॥१८॥
 मनु तुम पेम हि गह रम्यौ । मयन धरर भाकास ।
 कूप बिबुक पर वावरे । पुनि निकसन को भास ॥१९॥
 यवन सरोवर मदन जस । जुबन सहरी सैठ ।
 नैन पियासे दरस के । धूयट पाट न वैठ ॥२०॥
 कह पायो कंठ मोर पिक । कह कपोठ कि कान ।
 बसिति जु नारि फभिव गति । बगंठ बने न वान ॥२१॥
 मद जुबन कुच कुंम दुइ । गर्बति तीघ मतंग ।
 धर्ये भयंक मिलाट पर । प्रकुश पझो धनंग ॥२२॥
 पन्नग पंकज मुखि गहै । बिपे अनतिहां दिठ ।
 उर सिंहासन साधि करि । साहिब साहिब इठ ॥२३॥
 चक्रवाक कुच हूदी सर । मुबतिन्ह जटित सुभाट ।
 तहाँ फुस्मित नई कुमुदिनी । देखत बंद ससाट ॥२४॥
 उर सर परि कुच कमस दोठ । मुद्रित धंचस काम ।
 गडे जु सोरम मयन धनि । मति कसपे मोर स्पाम ॥२५॥
 संधि बहिः क्रम धानि करि । साहि कुचह क्या किन्ह ।
 देखत धावत युबन हि । उठिके भादर दिन्ह ॥२६॥
 साब सरित्त बाहक मदन । सकुच महत्कटि बंधि ।
 कुच तू या हिय रबिज करि । धसो बहि क्रम संधि ॥२७॥
 प्रीतम धंवर माहि रडु । कुच धंतर तन सत्य ।
 मिधि बासर उद्योततम । हरण करण मोहृत्प ॥२८॥
 धर बराहि जुबन समै । मए जु सिहन उतंग ।
 हूदी ठसायौ पीय कह । छाए हरबरे धनंग ॥२९॥
 विह पुरद बस केनि करि । राधि करी मन मत्य ।
 ता निमित्त कुच संमूहे । पुहवि पसारत हृत्प ॥३०॥

मंडलीक कुच अरवल वल । उद्यत कठिन सगर्व ।
स्याम छत्र सिरि चक्रवति । कर दाइक जन सर्व ॥७१॥
न्याय पयोहर चक्रवति । कुंदन श्री फल आहि ।
दिग मंडल कर जे ग्रहत । ते करदे तव साहि ॥७२॥
भरे जु कुंदन कलस कुच । कुंद करन नखि कुंद ॥
जुव्वन मद गुन गव्वं करि । मुखज मैन मसि वुंद ॥७३॥
चित्त हरन कंचन वरन । सिहुन रचे जगदीस ।
दृष्टि निवारण कर परस । मसि कज्जल दिय सीस ॥७४॥
जुव्वन समै जु कंचुकी । कुच है दोउ उतंग ।
सिव जित्तन कहू गूडरा । मान हुईइ अनंग ॥७५॥
उब्मलता कर जोरि कंइ । कुच उन्नत कटि सुद्ध ।
मदन महाजल उम्मटिउ । घाघ निहारति मुद्ध ॥७६॥
तोरत अंग अनंग कुच । तापर परीजु दृष्टि ।
अति उतकंठा पुत्तरी । ऊछटि सीस वइट्ट ॥७७॥
भृंगी कुल जनिंतंबयर । केहरि लंक जुसाहि ।
सौतिनि गव्व गयंद जिमि । भुंजत सौरभ साहि ॥७८॥
धूप सिखा रोमावली । शिव कुच अक्षत फूल ।
इह तपक्रम पायौ जु फल । साहिव पति अनुकूल ॥७९॥
पिय भेटत घर वलय वद । चंदन रहत न अंग ।
हित त कुंतल अधर कुच । पीर सहत मोर संग ॥८०॥
मज्जन राम सुगंध तन । अभरन वनै अनूप ।
पान वदन छवि देखि मुनि । चेतुप मुक्कहि रूप ॥८१॥
मुकलित भूषन कुच कसन । मउ लित वलय मिराम ।
दंपति मदन विरञ्चिये । थकवे सुरति संग्राम ॥८२॥
विभ्रम हलि मिलि थकित तन । दोउ निद्रा वि करीर ।
प्रीत गमन भुज फंद । फंदे अरुझे वारह वार ॥८३॥
निसि विभ्रम पुहपित नखत । परमल भिन्नित अंग ।
लोचन निद्रा सिधिल हित । गहत परस पर संग ॥८४॥
निद्रा नयन विलास गय । घूपित दीपग नार ।
सौरक मोतिन्ह पुलक तन । फीकौ वदन उगार ॥८५॥
दोऊ भावत अति पेम रत । सकुच पमुक्किल मिलेजु ।
सुरत अंत नयन नु मिलहि । दुरि मुसकांत भलेजु ॥८६॥
श्रम थके अंकम सिधिल । हेतत होत विभीन ।
हुं जानत पिय आनि है । रूसन वदि उव कौन ॥८७॥
भावत सुरत वियाम करि । मिलति उपजति सास ।
दुहु तन आउस साधि जन । जीय तै इक्कहि आस ॥८८॥

कंकण पिदिळहि देसियत । कंठ बिना गुनहार ।
 नौ भरविदष इक्क कर । कर तब कौन विचार ॥८९॥
 रे वसि तू जिन विस गहहि । मोधिहि मही घोर ।
 जिम कमस छवि पुतसी । तिम हिय घोर न ठौर ॥९०॥
 कमस निरखति कमल गहि । कमल मिसहि न भभाइ ।
 श्रादस कमसहि इक्क हुइ । कमस-कमल नहि जाइ ॥ ९१॥
 कमस नयन जिति यदिन करि । पुंजु अग्निनेप परहि ।
 वरनि मूर्ति गुज कुंभवन । परत नीर हुइ बाहि ॥ ९२॥
 नयन सीपि छवि स्वाति जल । पीपत पसक पसारि ।
 पिय मुत्ताहस चाहियत । हसति शुकवाति मारि ॥ ९३॥
 पिय पगि सागि मनाउ तू । मिमूपहि पक्षिम नाम ।
 नहि अक्षर विपरीत कर । मामनि मुक्कहि मान ॥ ९४॥
 कत प्रानन सुं स्सकरि । जित द्विज्जै किहि काज ।
 स्सति रमधि मनाइयै । उषम सात कि साज ॥ ९५॥
 अंधन तिरक्क निश्चित बिबि । मनसोयन ज कहंत ।
 तू अमूर्ति देखन हलगि । ठौरहि ठौर जगत ॥ ९६॥
 सगनस पामि पदब्ज बहु । कर अंगुस ज परंति ।
 रे मुक्ताहस निसज तिय । हंसि हंसि गुंज करंति ॥ ९७॥
 कंकन पीठहि देसियत । कंठ बिना गुन हार ।
 नौ भरविदु नू इक्कठा । करतब कौन विचार ॥ ९८॥
 अक्षर मुत्ताहस रम्पो । गुन गुंजि रक्खो पति ।
 प्रसर मामी दोहरी । हिय संपुट इहि भाति ॥ ९९॥
 मूर्तिय गुन हबी सकति । सुकृत पीठ कमठ ।
 मध्य साज कौ मास गुन । कंठ मास मम कंठ ॥१००॥
 नयन जपुर मूर्ति अंपा । पस पस बुतिज भरंति ।
 जनु बुतिया के अंध जिम । विनि दिनि कसा अडंति ॥१०१॥
 मुरि बैठति पम्पगह जिम । कसत अमंत न जीय ।
 मानुज बिद नय सिप अरिठ । मंत्र न मानति तीय ॥१०२॥
 इन्ह नैनन पहर सन गहि । रसन मेन न हुभाहि ।
 बिस्त हरत चेटक वदन । रूप कहाँ काई साहि ॥१०३॥
 उर समुइ मधि ज्ञानवर । काडे सात रतम्न ।
 पेन हेम कुंदन करत । जुरे जूतिम रतन्म ॥१०४॥
 इति सतम् ।

पीछे के भिन्नाकारों में इह पोषी हरप कीरति पासि सीन्ही छै । इह पोषी का पत्र
 ४ अंकी बारि पत्र छै । पठबा की छै । संवत १७२२ अठतवि १ ॥

॥ सिंगार सतक भाषा ॥

सवाई पचीसी तथा सवाई बत्तीसी

[मुनि कान्तिसागर जी से प्राप्त]

लेखक—किसोर पोष्करणीं



॥ अथ सवाई पचीसी कृति दिली मै किसोर पोष्करणो ॥

॥ दूहा ॥

सरसति समरूं स्यंघ गुण, अवतारां ज्यौ वोप ॥
पेस पचीसी भूप की, प्रगट बिसन पछोप ॥१॥

॥ छंद जाति मनहर ॥

आगै आप अवतार, नृस्यंघ सरूप धार, हैनांकुस मारि, पहैलाद कूं उबारे जू
वारन पुकार कीरकार सुणि ततकार, जल माहिं तारबे कूं पाव आपधारे जू ॥
हेटि हेटि जैतवार असुर पछार मार, अपने उधारन कूं ढील न करारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥२॥

आप अवतार राम भेता माहि धारि नाम, बड़े बड़े कीन्हे काम दस्थ उधारे जू
जानकी काँ व्याहि अर सेअौ बनवास जाय, दुष्ट के उडायबे कूं जोग तप घोरं जू ॥
सीता को हरन हार तै बिडारयौ रावन ज, बार बार जीत कै अयोध्या हू पधारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥३॥

बड़े महाभारथ में स्वारथ न कीन्हौ कदै, सदा परमारथ सुक्यारथ के भारे जू
जीत कुरषेत, लंक भभीषण देत, तिके आय लेत आसिरो ते सरणि उबारे जू ॥
बड़े बड़े राषस तै षाष में मिलाय दिए, आषत किसी जस कुल उजियारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥४॥

बड़े घाट दल छल बल सूं अमल कीयी, बड़े बड़े जेर कीए आगैर अंवारे जू
आगै राजा मानस्यंघ लीए डाण समंद्रपै, चिगतौ न चित कीयी कैई काम सारे जू ॥
साहिव सूं सरषरु सदा मदि कूरम ए, तिके महै मंडल के मडलीक लोर जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥५॥

मान कै तो माहास्यंघ सदा खंगार हूवो, ताकी तरवारि आगै घरक संसारे जू
ताकै हुवौ जयस्यंघ सेवाहू से कीन्हे जेर, घेरि घेरि गनीमूं कूं फेरि हेरि मारे जू ॥
ताकै राम औरंग पै सेवा कूं उवास्यौ सही, पात्यौ बोल बाप कौर आप वहां तारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥६॥

केहरि कू मार कै नी तरवार ही काँ जीर, ठीर ठोर रोर मारे चोर र चिकारे जू
साथ तीन बीसी सेती मारे है हजार तीन, बड़े मृगलान पान पठान कूं मारे जू ॥
विष्ण भयो किष्ण कै ज, विष्ण के जगतपति, तौ कूं नमै मंडलीक नृप बंस सारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगौर जू ॥७॥

जाइन से कान्हर सी बुजभाय हुवौ तपै, बाके कोटि छपन जाते रे सप मोर जू
कान्हूँ बुधि कंससुर राज दीयी उग्र कूँ ज, बाध्या सुर प्रभासुर पटक पछारे जू
सविपास पराधिप को तो कोयो मान हीन, हरि लेके ककमधि द्वारिका सिपारे जू
मूप जयस्यंघ की उमंग धागै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥८॥

कान्हर में सेहस ज सोसा माहि निज रूप, वीयमां प्रभूप मो पै बरनीन धारे जू
सुवामा के मंजे रोद, श्रौपता को बाध्या नीर, दीऐ राज पंडबा कूँ करव स्यधारे जू ॥
पैसे ही प्रताप तपै म्हाराजा प्रदावती, बड़े बड़े भूवपति सरणि तिहारे जू
मूप जयस्यंघ की उमंग धागै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥९॥

कमिक प्रगट मै सुमट मूप जयसहि, मारे मारे बड़े मीर तीर सरबारे जू
नीरंग कौ रग ए कीयी बाय दविन मै, लीयी गढ़ पैसना ज पड़ी घाक सारे जू ॥
बहावर साहि की बिलाम गई बहावरो, हूवौ सी कुहाबा कहुँ कुँपरवौ न पारे जू ॥
मूप जयस्यंघ की उमंग धागै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१०॥

भारी जूष भारथ कीयी है पूव सांभरि मै, मारे संदजादे मीर मुयस पछारे जू
होडोधि को शर्षा तो उठाय दयो पस माहि, पड़ी घाक साहि घर संके न संभार जू ॥
फरक कूँ सयत को बयो कीयी पल माहि, करै सोही प्राप स्वास मूप थी उचारे जू
मूप जयस्यंघ की उमंग धागै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥११॥

फरकस्या फरि कहै जैस्यंघ कूँ दीन्हौ सीप, कोगही हठ जयसाहि फिरयो सिरकारे जू
हौणहार भाफिक जू हूवौ सही सब कहै, कुरम को बोलबासा मुति हीण हारे जू ॥
तेरा तप तेब धागै धजबैब मारे संद, सेग बाधि कौन सकै तुँ ही पाछी तारे जू
मूप जयस्यंघ की उमंग धागै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१२॥

फरक के मरक मै उमरक मूप किते, जिते यौहो गरक जबरक सगारे जू
संद करी हरक जक रक बरक भए, सरकन रह्यौ पीछे तरकन मारे जू ॥
जो भीब गजराज मारे गए मरक ज्यौ, वा दिन किरादि कहुँ बूझो न बकारे जू
मूप जयस्यंघ की उमंग धागै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१३॥

मूण ज हलाम दोप महैमब जैस्यंघ की, मूगस कूँ बीजै नाहि कुरम कउरे जू
जोम धारि धमी महै मस्ति उजे ज्यौ, जयुँही मरि गयी मयी यूक यूक सारे जू ॥
वीज रपतीज नेपवाई स्प्यनाथ प्रंब, सपत के धंभ सवा स्वाम काम सारे जू ॥
मूप जयस्यंघ की उमंग धागै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१४॥

धमी मूवे महैमवस्या पाठिसा नबित हुवौ, नेपबाहा जयसाहि कूँ जस्यंघ सारे जू
बिया हुवौ जटन पै बड़े से सामान मार, टिक्यौ नही महौ कमी एक हुसकारे जू ॥
हुते भुजराज सो कितान ज कहावे तरे, मिसे प्राय किते मगे वाजप तिहारे जू
मूप जयस्यंघ की उमंग धागै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१५॥

धकबराबाद को तो सूको पायो धपपती, बडी बडे छत्रपती फिरठ है मारे जू
तेरो जोम दस बेयि कम दीपण सि कीन्ही, गरोव पै जेजीवीब सगायी भरे सारे जू ॥

तषत के धणी वीज पाय के बलायी नृप, माफ कीयो जेजीयार हुकम तिहारे जू
नृप जयस्यंध की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१६॥

जेजीयो छूड़ायो चहूं चक जस छायाँ, कोई मूढै नाँहि आयी इह बिरद उवारे जू
बड़ो जस पायी ईह कांम सुनि दोरि ध्यायो, मुथरा से दिलो आयी लष दल लोरे जू ॥
सवाई कीयो सवायो बोल बाला, सुर छायो असुर गुमायो हृद बाँधी सिरदारो जू
नृप जयस्यंध की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१७॥

बालक बुरान्हपुर बीजापुर विदरज, वागड बदकसान अवाई बषारे जू
बारधि बुदेल बीणां बाणारस बुधेलज, बेहड बिकट बाट तहां घाट धारे जू ॥
बलाबंध बडा जूर बडज धाक, वीकपुरि बधनौरो हुकम करारे जू
नृप जयस्यंध उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१८॥

काबिल कमाय कोर करणाट कासमीर, कांगरू किलंगी कोट वोटते उवारे जू
तिलंगी तंबोल तारा आगरै अंटरे इल्हावास आय मिले तेऊ सरणि तिहारे जू ॥
गोलकुंडा भानगढ़ भदोर के मिले रहे धारै तिके जोम ताकी षोम षोम मारे जू
नृप जयस्यंध की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१९॥

गंगा को कराय घाट गया को छूड़ायो नेग, पांच पांच सै ज कौस लग आण सारे जू
हींदू ध्रम कीनो हृद, भई ह हुकम धारै, ताईयां तषत सूं तो स्वांम ध्रम पारे जू ॥
पोकर पिराग लाग मेटि असुरान की ज, दया ध्रम तप तेज दुनों जै जैकारे जू
नृप जयस्यंध की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥२०॥

काठा ज केमेर किते हेरि हेरि काढे घेरि, नर नारी तेरे राज सब सुष धारे जू
बिकट मैवास सौ बिणा से भास दषै मेरे, मीणां आय मिले बली रही बिसतारे जू ॥
ठसक जवालू की तो ठसक हुई ज ठस, कसि बसि का ए तैज बंकीया विडारे जू
नृप जयस्यंध की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥२१॥

पूर पाछी उत दाछी च्वाहूं दिसि मंडल मै मानत जिहान आन रान पेसकारे जू
षोट षोट देषियो जठै तिनकं निषोट कीए, चोरन के सिर चौट तैसमै सकारे जू ॥
बहालूं वडाई करूं आप तणी कलाकी ज, पावै कौन पार कवि किसोर उचारे जू
नृप जयस्यंध की उमंग आगे टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥२२॥

आपज प्रताप की तौ मानै छाप पाति साहा, द्रुबल बिलाप मेटबे कू है दातारे जू
स्यंध गाय एक घाटि पीवत है तेरे राज गरीबि नवाज आप दुष्ट कूं पछारे जू ॥
निबल निवाजि कै ज सवल कूं दीजै सजा, एही जस जीवनि असीस देत सारे जू
नृप जयस्यंध की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥२३॥

आपकी बड़ाई की न करवा की मुति मोमै, आप हो प्रतछि रूप इंसुर संसारे जू
राजि के चरण गहे निसतारो होत सही, महीपति म्हारजा ताजा तेग तारे जू ॥
मारवाड़ मेवाड़ ओ मालव भरैट मेव, सब जन सेव करै देव बल धारे जू
नृप जयस्यंध की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥२४॥

॥ कबिल छयें ॥

बचै जैति के बच, धर्म पतिसाहा घाट बिर
सुमट स्पंभ सिखार, नमै नुपबंस सबै नर ॥

कित्ता करे भरदासि, कित्ता पेस जे प्राये
कित्ता कहे करतार, सय घाट टबाबै ॥

रुधबंस धंस कुछाही तिसुक नमै मीर पतिसाहि के
बाबत सदा फते ठवधु, म्हाराजा जमसाहि के ॥२३॥

पपीसी संपूर्ण सिपते सं० १७८३ का जेठ सु० ११॥ निर्बसा अति पीककरणा
किसोर मालपुरा का ॥

अथ सवाई जैस्यंघ जी म्हाराजाधिराज की बतीसी ऋति ।
किसोर पोष्करणं मालपुरा का गोत्रे सज्याति देवेरा ॥

॥ हूंहा ॥

सरसति प्रसन हंसासणी, दीयो नाथ उपदेश ।
बतीसी मो बुधि सरू, श्री ज्यैसंघ की पेस ॥१॥

॥ छंद इल्लः ॥

विसन छवाज चढ़े दल साजि
लीए सूर जोघ ज साथि अमानां ॥
भोमे भूपाल सबूं संक षईज
पेस कसी जसि ताबी भराना ॥
रूघवंस महै अवतार भयो
सीताराम सहाय ज दास वषानां ॥
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ
फबै ज फते पचरंग निसानां ॥२॥
श्री दुघ आप चट लंक पै ज
कलंक कूं मारि कीए कमठानां ॥
थूंहानि मारि गरद करी
अरि डीघ आय लीयो ज सिचाना ॥
आडा बलाबंध के केसर षान
षंगार देवा मंन मांहि किसाना ॥
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ
फबै ज फते पचरंग निसानां ॥३॥

गरब गल्यौ गुबरेडा तणों ज, षंडारि तणां ज षजाना
चक्रवात चिगथा महैमदसाहि, सिताबी भेज्यौ षड़ी मांहि फुमाना ॥
ता राजगट का सुषा दीया ज तो, आय मिल्यौ ज कि ताज अमाना
तपै म्हाराजि सवाई ज्यैसंघ, फबै ज फते पचरंग निसानां ॥४॥
बड़े मीर अमीर धूजै पीर बिरज, भाजि गए ज कितेक फराना
षेलुणां गढ़ का प्यालु कीया ज तो, पकड़ि से वाकू डील वचाना ॥
हसन अलीषां कीया अति जोर, सो गैब ही सं दगादार उड़ाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबैज फते पचरंग निसानां ॥५॥

पुहनि घूसि बिघूसि गनीमर, दुनी में घाय बैठायो ज घामा
 कासीर गढ़ का पूव सठया ज तो, भावा ज वाला ज देव्या प्रमाना ॥
 देवस्यंघ पंगार का भाजि गया ज तो सार सीया ज बकट गुमाना
 तपे म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फरै ज पते पचरंग निसाना ॥६॥
 कांगुरे गढ़ कोट लंगूर चढ़े जा, भोवा दुगोसा ज उड़े घसमाना
 भावा दुनी भायकै घेरि सीया, इक टकर मै सब मकर माना ॥
 हाडा बलाबैध कहै नूप सु, भय लाजीए पंस मए फिसै माना
 तपे म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फरै ज फते पचरंग निसाना ॥७॥
 सब बूज के षट सुपट कीए ज, सुमट की घाक बिकट निसाना
 कुषट चने कुंजषट बलावत, कुरम षट प्रगट प्रमाना ॥
 भरट घरे ते हुबै द्रहूपट, निपट निकट घषट प्रमाना
 तपे म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फरै ज फते पचरंग निसाना ॥८॥
 चमकि म दीड़ के नूप गोपान, वई पेसकसि बेटी निजराना
 घमक सुगे भर कि घर पूजठ, पूजन को ईत स्यंघ सू स्वाना ॥
 जाद्रम भाय मिलै सगरे, तापे वेई सई केते धाम भराना ॥
 तपे म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फरै ज फते पचरंग निसाना ॥९॥
 कुचिभ सो जति सो भारमभ, भणां भगवंत तिसो कुस भाना
 मान की भान सो मानि रबीहान बडे घमसान जीस्यौ बसवाना ॥
 जगैतो माही स्यंघ जैस्यंघ जिसा ज, मए राम किष्म ज विष्णु बपाना
 तपे म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फरै ज पते पचरंग निसाना ॥१०॥
 भापो पंडदाजि प्रपंड की घाण, घडहन पै डंड सेठ प्रमाना
 पुनि प्रचठ के मूंड कु पेपि, धरिडं बिहूड बसंड यडाना ॥
 इसो बसिबंड मूमंड भीतार, घमड सू जीतै केई घमसाना
 तपे म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फरै ज फते पचरंग निसाना ॥११॥
 गोड र तुवर पीची पिडपारज, जाद्रम हाडा जलार सगाना
 सोसंपी पवार भाटीर सोसोघ, कमचबबी गहूसोत निबाना ॥
 भयोड़ बुदेस रबू हिववाना, सबै बघकैपाक सू पुरसाना
 तपे म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फरै ज फते पचरंग निसाना ॥१२॥
 मान समंद्र पै डाण सीए, मुसलाभ र राणपठापा निसाना
 पूरब दपि पखी उतराष, नभोपड भान ज मान की माना ॥
 विगयो पतिसाह कौयो कुछवाह, दिसी घम है धब कोज भराना
 तपे म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फरै ज फते पचरंग निसाना ॥१३॥
 भाप षडयो जयस्यंघ दियन छै, भाप घेरयो ज मरैट को घामा
 पत माहि पकडि भेस्यौ सिवा कुंज, दिसी सुरतान भरान फुमाना ॥
 रामकवार उबार सोसोवीयो, भापकी बाहर वाप को बामा
 तपे म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फरै ज फते पचरंग निसाना ॥१४॥

बरस नारायन उमर मै, बड़ी गुमर सूं नबरंग मिलाना
कसाब कराब पराब कीए ज, सराब पुराब की आब उडाना ॥
पुकाब हूई पतिसाब नषाब धुकाब अराब चहूं आब दुपाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज फते पचरंग निसानां ॥१५॥

अराबा चहूं दुपवाय जैस्यंघ पै, आरंग जी चढनां फुरमानां
तदी महाराज कवार तैऊ केसरया गहैरा सर्व साथ कराना ॥
चढे हजरति अरजि हुईज, फबै ज फते पचरंग निसाना ॥१६॥

आप दिलीपति सा अवरंग, बुलाय हजूरि करा पकराना
कह्यौ मुष सूं अब जोर कहाज, दुवै पकरे निसतार किलाना ॥
दीयो ज किताब सवाई सरस, सदा जैंगजीत सू जस सुहाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज पते पचरंग निसानां ॥१७॥

पाय किताब तै आब सवाय, लीयो गढ षेलनां एक चुटाना
नोंग को रंग एक कीयो ज, सुरां अवतार भजै असुराना ॥
बहादर की ज बहादरी अैसे, विलाय गई तैसै आतुस छानां ॥
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज पते पचरंग निसानां ॥१८॥

सामरि जीतरि लीन्ही हींढोनि, उडायो अनीत तणो कफराना
नीत घरी फ्रकस्या हजारति, सूनीत न चीत तपै सुरताना ॥
नीत घटे ते मिट्यौ तप तेज, भयो जफ जीत मृतग जिहाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज फते पचरंग निसाना ॥१९॥

लूण हराम भए सैद जांम सो, मारे गए तैसे बाज चिडानां
लूण हलाल ज कूरम को वज, मानै हजरति दिली तषतानां ॥
तेरै भरोसै महैमंद दिलीपति, वैठो किला मै अलार कुराना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज फते पचरंग निसानां ॥२०॥

बडो जाणि मरद कूं सोंपी सरम, सरद के रोज गनीम के थाथा
माफ कीयो तुमकुं जे जीयार, ओसाफ तुम्हारो कल्पा जरहाना ॥
आय नवाय कै बृज कौ मोकम, कीन्ही पराब सो भागी फिरानां
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज फते पचरंग निसानां ॥२१॥

पायो प्रकाश ज भूप उजास, भेजे सिवदास मैवास उडाना
तिके अरिबास अैवास उचास, सोरालै निसा सर दास कहाना ॥
हुकम योही सिवदास कूं कीन्हीज, पाडो गढासर भास दिषाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ फबै ज फते पचरंग निसानां ॥२२॥

केते भोमिए तो रजू आय हुवे, तूं चाला कीया लुरवा की बजाना
मिले आयरहूं तिन देकै तिके, तिन कूं तो निवाजि कीया बालवाना ॥
रानै कुरम राज सिरी जय साहि को, ताकी अवाई अरी डडिजाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज फते पचरंग निसानां ॥२३॥

बृहनि डोष र प्रागरा को सूबो, ठहाँ भ्रमस अडिग बेठामा
जीर्यो सही गुमरेडा को जग ज, पावटे प्राय सेगे भमसाना ॥
उमराव बडे बिस टामो करै ज, फते पचरम निसाना ॥२४॥

भडाक हठी स्यय कीन्ही मडाक, सी एक ही हाक गडाक चलाना
डाक बजाक सुणाक जैस्यभ की, काथो सडाक पडा कपठाना ॥
डाक बजाक सुणाक जैस्यभ

किसाक जोराक बिलाक गए ज, सवाई की थाक सुं धूमि समाना
तपे म्हाराबि सवाई जैस्यभ, फरै ज फते पचरग निसाना ॥२५॥

भई ठो पंकारि उझाय के प्राबोज, हाडा कित्ता पे संबंध रहाना
धाडा बला पे चड्यो भब हीरजू, भो गरभा कहुरी जमसाना ॥
प्रधीणि कू कूटिर लुटयाजमेर, एरि भाबि गया सब छाडि ठिकामा
तपे म्हाराबि सवाई जैस्यभ, फरै ज फते पचरंग निसाना ॥२६॥

स्याहन सो जिको नाहि हुवै बसि, ता परि कुरम राज रिसाना
कहि इनके घर को अचिरज, सो मारी संका उचका धरराना ॥
हेटि हेटि जीती ह्य रूप तणोबंस, तास प्रकास सुरास प्रमाना
तपे म्हाराबि सवाई जैस्यभ, फरै ज फते पचरम निसाना ॥२७॥

दुष्ट घरा दिसि दिष्टि करै मू, धनिष्ट भवाई सुनत डराना
राम को इष्ट अरिष्ट को कास, सरिष्ट महा जग रिष्ट है ज्ञाना
प्रादिष्टि छाडे कू जमिष्ट कीया ज, तेरो रिपूराज अमिनिवा माना
तपे म्हाराबि सवाई जैस्यभ फरै ज फते पचरंग निसाना ॥२८॥

थई बानन डालन सू नूपास, पाठान पुतासन सू ज बधाना
बडे बेहड घट बिकट हुसे, घट कुरम सू भबघट भवाना ॥
कसकै कवनम ससैस भमकंत, मूरि उई जगती सरबाना
तपे म्हाराबि सवाई जैस्यभ, फरै ज फते पचरंग निसाना ॥२९॥

गरजै गजरा ह्य महीसठ हैज, कियो भुप दस सार सजाना
गहै रो सनितान वसै जनि मयाण, सुमाष डेरे भबसाष भमाना ॥
भसकै ज परै भटकै भभकै, मनि सैस मिसे पे सत्तास सीयाना
तपे म्हाराबि सवाई जैस्यभ, फरै ज फते पचरंग निसाना ॥३०॥

घरकै ज बरा घरकी बिसनी, कितनी धरि नारि नरी उरुलागा
भुजन के दस पल हुवै ज, प्रबस घटा मद गस सुहामा ॥
मिकसै ज सवाई घडे तै किसौर, पुतासन सु जपतास को पाना
तपे म्हाराबि सवाई जैस्यभ, फरै ज फते पचरंग निसाना ॥३१॥

इती बुधि कहा कभू गुमराजि को, मो बुधि सारूब कीन्ही भपना
भंब के नाय सनाथ भएज ज्यी किष्ण सुवामा को रोड उड़ाना ।,

तैसे ही दालिद कूं हरीए, करीए बड़ी मोज क्रिमाज निघाना
 तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज फते पचरंग निसानां ॥३२॥
 कीने है व्दादस बींस कबित पहोक्करण व्यास किसोर प्रमानां
 सभा सै पिचासे बदी तीज भादुर, बार अदीत उदार कहानां ॥
 असीस हमारी कछू जगदीस, तुम्हारी सुदिष्टि सूं होत कल्याना
 तपौ म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज फते पचरंग निसानां ॥
 बतीसी संपूर्ण लिखतै ॥

ब्रजभाषा व्याकरण

मूल लेखक

लल्लू जी लाल

ब्रजभाषा व्याकरण

डा० सुनीतिकुमार चाटुज्या ने मीरजा खां इब्न फखरुद्दीन मुहम्मद रजित तुहफ तुलहिद नाम की पुस्तक में मिलने वाली भाखा व्याकरण को ब्रजभाषा का ही नहीं आधुनिक भारतीय देशी भाषाओं का सबसे पुराना व्याकरण बताया है। उन्होंने लिखा है—

“The Braj-Bhakha grammar in the Tuhfat would appear to be the oldest grammar of a Modern Indo-Aryan Vernacular that has so far to light”.

इसी के साथ उन्होंने बताया है कि जेकब जोशुआकेटेलिएर की हिन्दुस्तानी ग्रामर तथा पादरी मनोएल द अस्समपदम की बंगाली ग्रामर से मीरजा खां का व्याकरण भली प्रकार समानता कर सकता है। ये दोनों यूरोपियनों के व्याकरण १७४३ ई० में प्रकाशित हुए हैं।

मीरजा खां का व्याकरण १६७६ ई० का है।

इसी संबंध में मीरजा खां की व्याकरण के अंग्रेजी अनुवादक श्री जियाउद्दीन महोदय ने भी लिखा है—

“हिन्दी अथवा हिन्दोस्तानी की व्याकरण लिखने के लिए मीरजाखां से पहले भी कोई प्रयत्न हुआ उसका मुझे ज्ञान नहीं। जेकब जोशुआ केटेलिएर ने हिन्दुस्तानी की व्याकरण १७५१ ई० के लगभग लिखी जो डेविट मिल्लियस ने १७४३ ई० में प्रकाशित की। सर जी० ए० ग्रीयरसन † ने मसादिर-ए-भाखा नाम की व्याकरण के लेखक के तौर पर आगरा के लल्लूलाल (१८०३ ई०) का उल्लेख किया है।” मीरजाखां, केटेलिएर और लल्लूजीलाल के बीच में शुल्ज की हिन्दुस्तानी व्याकरण* का उल्लेख और होना चाहिए जो १७४५ में प्रकाशित हुई। किन्तु जहाँ तक ब्रजभाषा का संबंध है मीरजाखां के बाद लल्लू जी लाल का ही नाम आता है। अतः यह लल्लू जी लाल का व्याकरण प्राचीन व्याकरणों में दूसरे स्थान पर आता है। यह १८११ ई० में प्रकाशित हुआ।

लल्लूजीलाल का यह व्याकरण अप्राप्य है। हम जो व्याकरण यहां दे रहे हैं वह नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता की प्रति की प्रतिलिपि है।

*देखिये प्रोसीडिंग्स सोसाइटी बंगाल मई १८६५ में ग्रियर्सन का निबंध।

† ग्रियर्सन महोदय ने १७७८ ई० में Grammatica Indostana published (lisbon) का भी उल्लेख किया है।

ब्रजभाषा व्याकरण

डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने मीरजा खां इब्न फारुखान मुहम्मद रजित तुहफ तुलहिद नाम की पुस्तक में मिलने वाली भाषा व्याकरण को ब्रजभाषा का ही नहीं आधुनिक भारतीय देशी भाषाओं का सबसे पुराना व्याकरण बताया है। उन्होंने लिखा है—

“The Braj-Bhakha grammar in the Tuhfat would appear to be the oldest grammar of a Modern Indo-Aryan Vernacular that has so far to light”.

इसी के साथ उन्होंने बताया है कि जेकब जोशुआ केटेलिएर की हिन्दुस्तानी ग्रामर तथा पादरी मनोएल द अस्समपदम की बंगाली ग्रामर से मीरजा खां का व्याकरण भन्नी प्रकार समानता कर सकता है। ये दोनों यूरोपियनों के व्याकरण १७४३ ई० में प्रकाशित हुए हैं।

मीरजा खां का व्याकरण १६७६ ई० का है।

इसी संबंध में मीरजा खां की व्याकरण के अंग्रेजी अनुवादक श्री जियाउद्दीन महोदय ने भी लिखा है—

“हिन्दी अथवा हिन्दोस्तानी की व्याकरण लिखने के लिए मीरजाखां से पहले भी कोई प्रयत्न हुआ उसका मुझे ज्ञान नहीं। जेकब जोशुआ केटेलिएर ने हिन्दुस्तानी का व्याकरण १७५१ ई० के लगभग लिखा जो डेविट मिल्लियस ने १७४३ ई० में प्रकाशित की। सर जी० ए० ग्रीयरसन † ने मसादिर-ए-भाखा नाम की व्याकरण के लेखक के तौर पर आगरा के लल्लूलाल (१८०३ ई०) का उल्लेख किया है।” मीरजाखां, केटेलिएर और लल्लूजीलाल के बीच में शुल्ज की हिन्दुस्तानी व्याकरण* का उल्लेख और होना चाहिए जो १७४५ में प्रकाशित हुई। किन्तु जहाँ तक ब्रजभाषा का संबंध है मीरजाखां के बाद लल्लू जी लाल का ही नाम आता है। अतः यह लल्लू जी लाल का व्याकरण प्राचीन व्याकरणों में दूसरे स्थान पर आता है। यह १८११ ई० में प्रकाशित हुआ।

लल्लूजीलाल का यह व्याकरण अप्राप्य है। हम जो व्याकरण यहां दे रहे हैं वह नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता की प्रति की प्रतिलिपि है।

*देखिये प्रोसीडिंग्स सोसाइटी बंगाल मई १८९५ में प्रियसन का निबंध।

† प्रियसन महोदय ने १७७८ ई० में Grammatica Indostana published (lisbon) का भी उल्लेख किया है।

GENERAL PRINCIPLES
OF
INFLECTION AND CONJUGATION
IN THE
BRUJ BHAKHA
OR

The Language spoken by the Hindoos in the Country of B
in the District of Goaliyur, in the Dominions of the
Raja of Bharatpore, as also in the extensive
countries of Bueswara, Bulundawur,
Untur and Boonkelkhund.

Composed for the use of the Hindoostance students
BY

SHREE LALLOO LAL KUVI

Bhakha Moonshee in the College of Fort William.

Calcutta.

Printed at the India Gazette Press.

1811.

INTRODUCTION.

In offering to the Public the following work upon the grammar of the Bruj Bhakha, the Author conceives, that a few preliminary observations upon its origin and construction, as well as the affinity it bears to the other dialects in use amongst the inhabitants of Hindoostan, may not be deemed superfluous. To render this more obvious he proposes, to illustrate them by examples drawn from the most brated writers.

The Hindoos suppose, that the Universe is divided into three Regions (Lokus) for each of which there is a distinct language : 1st, the Region in the Heavens, or Sooru Loku, supposed to be the residence of Angels : 2nd, the Region under the Earth, or Patalu Loku, (Patal signifying, under the earth) which is entirely inhabited by Snakes; and 3rd the Earth, Nuru Loku, or the world of Man; also Murtyu Loku, or the World of human beings.

For each of these three Worlds, there is also a distinct language, or Bhakha; and a mutual intercourse is supposed to have existed between their respective inhabitants till the commencement of the Kuli Joog, when, from the increasing wickedness of man, the power which he then possessed, of transporting himself to the other two regions, was taken from him; 1st, the Sooru Banee, or speech of the Sooru Loku, called also Sooru Bhakha and Devu Banee (Soor and Devu having the same meaning) which is supposed to be the Sanskrit a language too celebrated to need explanation here. An example of a Shloku (the name of the stanza in which the Sanskrit is written) is here given.

*शेते घरा भराकान्तेशेषेनारायणः स्वयम्
लक्षमोवन्तो न जानन्ति दुः सहांपरवेदनाम्

Shete d,hura b,hura kante sheshe.Narayunuh swuyum;

Lukshmee vunto nu jananti, dooh-suham puru vedunam.

INTRODUCTION.

In offering to the Public the following work upon the grammar of the Bruj Bhakha, the Author conceives, that a few preliminary observations upon its origin and construction, as well as the affinity it bears to the other dialects in use amongst the inhabitants of Hindoostan, may not be deemed superfluous. To render this more obvious he proposes, to illustrate them by examples drawn from the most brated writers.

The Hindoos suppose, that the Universe is divided into three Regions (Lokus) for each of which there is a distinct language : 1st, the Region in the Heavens, or Sooru Loku, supposed to be the residence of Angels : 2nd, the Region under the Earth, or Patalu Loku, (Patal signifying, under the earth) which is entirely inhabited by Snakes; and 3rd the Earth, Nuru Loku, or the world of Man; also Murtyu Loku, or the World of human beings.

For each of these three Worlds, there is also a distinct language, or Bhakha; and a mutual intercourse is supposed to have existed between their respective inhabitants till the commencement of the Kuli Joog, when, from the increasing wickedness of man, the power which he then possessed, of transporting himself to the other two regions, was taken from him; 1st, the Sooru Bance, or speech of the Sooru Loku, called also Sooru Bhakha and Devu Bance (Soor and Devu having the same meaning) which is supposed to be the Sanskrit a language too celebrated to need explanation here. An example of a Shloku (the name of the stanza in which the Sanskrit is written) is here given.

*शेते धरा भराकान्तेशेषेनारायणः स्वयम्

लक्ष्मोवन्तो न जानन्ति दुः सहांपरवेदनाम्

Shete d,hura b,hura kante sheshe Narayunuh swuyum;

Lukshmee vunto nu jananti, dooh-suham puru vedunam.

2nd, the Nag Bance, or speech of snakes. (Nag, signifying a snake, and Bance, B,hak,ha signify language,k,h and ah being interchangeable, as will be hereafter shewn) called also by them Prakrit, a language differing from the B,hak,ha (properly so called,) by having the Nooni Ghoonnu, or nasal noon, much more frequent, and in having many of its letters mooshuddud, an arrangement necessary to adapt it to the formation of the tongues of these animals. This language is no longer a living one, but may be considered as having been that of an age, intermediate with that in which Sanskrit was spoken, and the present B,hak,ha. An example is given

येणविषाण विविज्जई मणुण्ज्जई सोक वाबराहोवि

पन्नोविणमडडाहैमणकत्मजबसंसहो मग्गी

Yenu vina nu vijju,ee unoo nijju,ee sokuvaburahobi, putte hinururu, hunu kuffu nu vulluho uggee.

3rd, Nur Bance, or B,hak,ha, or that language of which we are treating. B,hak,ha, is a Sanskrit word, originally signifying speech in general, but now applied to the Nur Bance or living language of the Hindoos, particularly that spoken in the country of Bruj, & in the district of Go, aliyur, Bruj is a district lying between Dillee and Agra, and revered by the Hindoos with peculiar honours, as the scene of the last incarnation of the Deity in the form of Krishn, its capital is Mat, hoora, and it has also in it the cities of Brindabun and Gokool, both celebrated as the scenes of the sports and miracles of their favorite Deity; it also includes the dominions of the Raja of B,hurtpoor and the Hill of Govurd,hun. Go, aliyur is the country dependant upon the celebrated fort of that name, and is usually called Gohud; in these two districts the Bruj B,hak,ha is spoken in it utmost purity, and is considered by the Hindoos as the most comprehensive and eloquent language in existence. In proof of what we have observed of the three languages, the following couplet from the teeka of the Sutsuhec, a work of Krishan Kubi, a celebrated Poet, is given.

पौरुष कविता त्रिविधिहै कवि सब कहत बखान ।

प्रथम देववानी बहुरि प्राकृत भाषा जान

Puorooshu kuvita tribid,h huc, kuvi sub kuhut buk,han;

Prut,hum devuvance buhoori Prakritu b,hasha jan.

And he particularly explains, that by the word B,hak,ha there used, he means the language spoken of above as peculiar to the countries of Bruj and Go,aliyur; for example :

देस देसतें होत सोभाषा बहुत प्रकार

बरनत हैं तिन सबनमें ग्वालियरी रससार

Des Des ten hot so b,hasha buhoot Prukar,

Burnut huen tin subun men gwaliyuree rusu sar.

The word B,hak,ha has thus become exclusively confined to this language, although as we have shewn, originally signifying any language whatsoever, and afterwards applied to the general colloquial language of Hindoostan.

It is difficult to ascertain from what time the Bruj B,hak,ha became a written language; but there is reason to suppose, that it was not till long after it had become the only living tongue in those districts, and with a very inconsiderable variation, the countries surrounding them; or whether it is derived originally from the Sanskrit, a point most positively denied by the Hindoos, but which appers almost certain, from the numerous words which have been transferred into it from that language. However this may be, it has attained such a degree of credit and excellence, that the Hindoo composers, of whatever part of Asia they may be, compose their poetic works in it as the Khiyal, Took, Dhoorpud, Bishun Pud, stoot, various kind of Songs, and the Kubit, Ch,hund, Doha, Chuopa,ee, Sor,tha, Koon, duliya, C,hhuppue, names of different kinds of Poems; and their learned men have in consequence declared it to equal the Sanskrit, as in the following couplet from Kesho Das in the Kubi Priya;

भाखा बोलन जानई जिनके कुलकीदास

भाषा कविमौ मंद मति तिहि कुल केसो दास

B,hasha bol nu janu,ee jin ke kool kuodas
 B,hasha kuvi b,huo mund muti tinhin kool kesodas.

And Koolputi Mistr, who was a Brahmun and poet of great celebrity has praised the B,hak,ha in his Rusu Ruhusyu :

जिती देवमानी प्रगट है कविता की घाट
 ते भाषा में होयती सब समझें रस बात ।

Jitee devu bancee prugut hue kuvita kee g,hat,
 Te b,hasha men hoyu tuo sub sumjhen rus bat.

And again :

ब्रजभाषा भाषण सकल सुरमानी समसूत्र
 साहि बखानत सकल कवि ज्ञान महा रस मूल
 Bruj b,hasha bhak,hut sukul soorbancee sum tool;
 Tahī buk,hanat sukul kuvi jan muharusmool.
 ब्रजभाषा बरनी कविन बहु विधि वृद्धि विलास
 सब को मूदन सब सीमा करी विहारोवास

Bruj b,hasha burnee kuvin buhoo bid,h boodd,hi bilas,
 Sub kuo b,hooshun Sutsueya kuree Bihareedas.

The earliest books of which I have been able to obtain any information as having been written prior to the reign of Ukbur, are the Prut,hee Raj.

Rasa, or the wars of Prut,hee Raj and the Humeer Rasa; the former supposed to have been written about the time of the invasion of the Moosulmans under Muhmood of Ghuznu, by Chand Kub, who was ambassador to that Prince from Prit,hee Raj or Pit,huora, and the latter said to be much later, but of the exact date the author has been able to gain no information. With the exception of these, most of the books now to be found in the Bruj B,hak,ha were either written during the reign of that enlightened Prince, or since that period; and so scarce are those former works, that we may be considered as indebted to him for all which we possess in this comprehensive and most useful language.

As the author trusts, that he has by the foregoing remarks and examples, shewn the estimation in which this language is held by the learned Hindoos, he will conclude

by observing, that, although the countries which he has mentioned as being as it were the birth-place of this language, are sufficiently extensive to render it an object of interest; yet he has no doubt, it will become still more so when he asserts that, not only in these but in the extensive countries of Bueswara, B,hudawur, Boonkelk, hund and Untur Bed, with a variation too trifling to be perceived, but by an intimate acquaintance with them, this is the original and only vernacular tongue that throughout India, with a greater or smaller proportion of difference, naturally arising from accidental causes, is the ground-work of every dialect of the Aborigines of the Country.

The ancient language spoken in the Cities of Dillee and Agra, and still in general use among the Hindoos of those Cities, is distinguished by the inhabitants of Bruj, by the name of K,hurce bolece, and by the Moosulmans indiscriminately by looch Hindee, nich,huch,h Hindee or in theth Hindee, and when mixed with the Arabic and persian from what is called the Rekhtu or Oordoo.

It may be necessary to observe, that there are in Hindee two letters which have not the pronounciation which would appear applicable to their form, viz. डढ which ough actually the harshd, and it's aspirate, are pronounced as harshr & its aspirate Ex : घोडा g,hoda, or g,hora, पढना pud,hna, or pur,hna. The letter ष is in discriminatedly pronounced Shu or K,hu, and the following letters are interchangeable लर, डर, वव, यज्ञ, शस, क्षच्छ, भव, मव, भव, गघ, थन, तथ, पक, यइ, येऐ, अय, पख, होई, कज
In this work जालो, जारो, थाली, थारी, घोड़ा, घोरा, घड़ा, घरा, वन, वन, वसुदेव, वसुदेव, यमुना, जमुना, यस, जस, शंख, संख, शिशु, सिसु, अक्षर, अछर, लक्ष्मी, लछ्मी, गाम, गांव, नाम, नांव. इमली, इंवली, कम, कवू, कभी, कवी, पगड़ी, पघड़ी, पगा, पघा, रथ, रत, भरत, भरथ, योतिशी, योतिकी, योतिप, योतिक, यह, इह, आये, आऐ, लाये, लाऐ, किया, किआ, दिया, दिआ, पट, खट, पट्टी, खण्टी, येही, येई, तूही, तूई, तुहे, तुअे, तुक, तुज,

and in the new Edition of the Prem Sagur, lately printed, it will be observed that, there are five letters अखचकर substitut

for अपमह्न of the former Edition, these are not new but in fact the old Devunagree restored in lieu of the Kuet,hee nagree.

Conjugation of the verb hona, shewing the difference in the Termination of the Hindee (or K, huree bolee) and Bruj B, hak, ha.

Hindee			B, hak, ha,
Sing	होना	To be	होनी, हो
Sing	{ मैं हूँ	I am	हूँ, मैं, हौं
	{ तू है	Thou art	तू, तै, है
	{ वह है	He is	वह सो है
plu	{ हम हैं	we are	हम हैं
	{ तुम हो	you are	तुम हो
	{ वे हैं	They are	वे ते हैं
1. sing.	होता था	I was, thou was, he was becoming.	होतु हो
2. plu.	होते थे	We, you, They, were becoming.	होत है
1. sing.	होती थी	Fem. I was, thou wast, she was becoming.	होति ही
2. plu.	होती थीं	fem. We, you, they were becoming.	होति हीं
sing. mas.	{ मैं था	I was	मैं, हे, हो
	{ तू था	Thou wast	तू, तै, हो
	{ वह था	He was	वह सो हो
sing. fem.	{ मैं थी	I was	मैं, हौं ही
	{ तू थी	Thou wast	तू, तै ही
	{ वह थी	She was	वह सो ही
plu. mas.	{ हम थे	We were	हम हे
	{ तुम थे	You were	तुम हे
	{ वे थे	The ywere	ते वे हे
sing.	{ मैं हुआ	I became	वे ते हीं
	{ तू हुआ	Thou becomest	तै तू भयो
	{ वह हुआ	He became	वह सो भयो
plu. fem.	{ तुम थीं	You were	तुम हीं
	{ वे थीं	They were	वे ते हीं
	{ हम थीं	We were	हम हीं

sing. mas.	{ मैं हुई तैं तू हुई वह हुई	I became Thou becamest She became	हीं मैं भई तैं तू भई वह सो भई
plu. mas.	{ हम हुएे तुम हुएे वे हुएे	We became You became They became	हम भये तुम भये वे ते भये
plu. fem.	{ हम हुई तुम हुई वे हुई	We became You became They became	हम भईं तुम भईं वे ते भईं
sing. mas.	{ मैं हुआ था तैं तू हुआ था वह हुआ था	I had been Thou hadst been He had been	हीं मैं भयी हो तैं तू भयी हो वह सो भयी हो
sing. fem.	{ मैं हुई थी तैं तू हुई थी वह हुई थी	I had been Thou hadst been She had been	हीं मैं भई ही तैं तू भई ही वह सी भई ही
plu. mas.	{ हम हुएे थे तुम हुएे थे वे हुएे थे	We had been You had been They had been	हम भये हैं तुम भये हैं वे ते भये हैं
plu. fem.	{ हम हुई थीं तुम हुई थीं वे हुई थीं	We had been You had been They had been	हम भईं हीं तुम भईं हीं वे ते भईं हीं
sing. mas.	{ मैं होउं गा तू तैं होवेगा वह होवेगा	I shall, or will be Thou shalt, or wilt be He shall, or will be	हीं मैं होउंगी है है । तू तैं होयगी है है वह सो होयगी है है
sing. fem.	{ मैं होउं गी तैं तू होवेगी वह होवेगी	I shall, or will be Thou shalt, or wilt be She shall, or will be	में ही होउंगी है है तू तैं होयगी है है वह सो होयगी है है
plu. mas.	{ हम होंगे तुम होंगे वे होंगे	We Shall or will be You shall, or will be They shall, or will be	हम होंयगे है है तुम होंउगे है है वे ते होंयगे है है
plu. fem.	{ हम होंगी तुम होंगी वे होंगीं	We shall, or will be You shall, or will be They shall, or will be	हम होंयगीं है है तुम होउगी है है वे ते होंयगीं है है
sing.	{ मैं होउं तैं तू होवे वह होवे	I be, or I may be Thou beest. He be	हीं मैं होंउं तैं तू होय वह सो होय
plu.	हम होवें तुम हो	We be You be	हम होंय तुम हो

	वे होंगे	They be	वे होंग
sing.	होवा	I were, Thou wert, He were	हो वी खु
plu.	होसे	We, you, they, were.	हो व से
sing. fem.	होती	I were, thou wert, she were.	होती
plu. fem.	होतीं	We, you, they, were.	होतीं
sing. mas.	{ होनेवासा होनेहारा	Becoming	होनवारी होनहारी
Fem. sing	{ होनेवानी होनेहारी	Becoming.	हानवारी होनहारी
plu. mas.	{ होनेवासो होनेहारे	Becoming.	होमवारे होनहारे
fem. plu.	{ होनेवासीं होनेहारीं	Becoming.	होनवारीं होनहारीं
	हुमा	Become	भयी
	होनेपर	About to be	होन पर पं
	होने पं		हूवे पर पं
	हुमा चाहता है	About to be	भयी चाहतु है
	मेरा	My	मेरो
	तेरा	Thy	तेरी
	उसका	His, her, its	वा, ता को
	मुझको	To me	मोको
	तुमको	To thee	सोको
	उसको	To him, her, or it	वा ताको
	मुझे	To me	मोहि
	तुझे	To thee	तोहि
	उसे	To him, her, or it	वा, ताहि
	इसका	Of this	याको
	उसका	That	भाको
	तिसका	Of that or it	ताको
	मुझसे	From me	मो, मोसे
	तुमसे	From thee	तो से से
	उससे	From him, her or it	वा तासे से
	तिससे	From that	ता, से से
	इससे	From this	या, से से
	अपना	Own	आपनी
	कीन	Who ?	कीन को
	किसका	Whose ?	काको

	कैसा	How ? of what kind ?	कैसी
	किसको	To whom ?	काकीं
	किसे		काहि
	किससे	From whom ?	का सों तें
	क्या	What ?	कहा
	कोई	Any body	कोऊ
	किसीका	Of any body	काहूकी
	किसूको	To any body	काहूकीं
	किसे	Whom	काहि
	कुछ	Some	कुछ
	किधर	Whither ?	किस
	क्यों	Why	क्यों कत
	कभी	Ever.	कबहू
	जो	Who	जो जौन
plu.	जो	Who	जे
	जिसका	of which	जाकी
	जिसको	To whom	जाकीं
	जिसे		जाहि
	जिससे	From whom	जा सों तें
	तक	To, upto;	लों
	जिनने	Who	जिन
	जिन्होंने	Who	जिननि
	जितना	As much as	जेती
	जैसा	As, such, so	जैसी
	जितना	As much as, so much.	जितनी
			जितेक
	जिधर	Where ever	जित
	भला	Well, good	भली
	भले	Good	भले

खड़ी बोली

निकलन चौखट से धरकी बाहर जो पट की ओं कल ठिठक रहा है ।
 सिमल के घट से तेरे दरस को नयन में आजी अटक रहा है ॥
 अगन ने तेरे विरह की जब से भुलस दिया है मेरा कलेजा ।
 हियेकी धड़कन मैं क्या बताऊं यह कोयला सा चटक -
 क्या कुठव पड़गया है उलकेडा, हरि भजन बिन नहीं है ।



नाम बल्सी से पारहूँ पलमें वृहत् बिन मांक भार है बेड़ा
 सगके चरनों से वृहत् के यह कहुँ कुंजगलियों में हो जो मुटभेड़ा
 वो मुके ठोन यह भ्रमल हरिजी जैसे धू को दिया घटल खेड़ा
 तेरे मिलने की घाट है सीधी यों ही मारें है कितने भटभेड़ा
 वृहत् को रख गुपाल नित उठ भोग मिसरी मक्खन मसाइ और पेड़ा
 यही सब में रहै हरि भाप हर हर से नियारा है
 यही है देखसो परतछ जगत उस का पंसारा है
 उसीने बात के कहते ही यह रचना रची सारी
 उन्हींने क्या भ्रमल ब्रह्मांड यह मन्दिर संवारा है
 उसी का नाम से के तर गए साक्षों कड़ोड़ों यहाँ नसीना नाम जिसने
 हरि का उसका बोझ भारा है
 किया था गर्व सागर ने कि सरबर कौन है मेरे कि तीन भ्रजसी से से भ्रमन
 किया मीठे को सारा है
 कुट्टम को देख मूसा है नही साथी कोई उस बिन न भाई बंधु है
 तेरा यहाँ भ्रम सुत न वारा है
 जो चातुर है सो मन में रह निराला जगत से भ्रम यहाँ
 कि जैसे भ्रात्र के सगने से भागे तड़फ पारा है ।

भाषा

उनबिन सब श्रुतु फिरगई देख दिनन के फेर,
 जेठ भिजोईं प्रासुषनि सावन जारी घेर
 गोन समें फेंटा गहरी सुंधरि हित जिय जानि,
 छटत ही बोट छुटे उत फौटा हत प्राण
 मन राखों हों बरज कैं बिय राखों समुझाय
 मैना बरजे नारहूँ मिलें भगाऊ जाय ।
 जब बरजे सब नारहूँ गये प्रेमरस लेम
 भाप बस तें पर बस भये ये विसवासो नैन
 प्रीत जु एंसी कोजिये ओं निस खंदा हेत ।
 ससि बिन मिस है साक्षरी निस बिन खंदा सेत ।
 भागद भीजत मैन जस कर कांपस मसि सेत
 पापी बिरहा मन बसत बिया सिखन नहीं देत
 बिरही सोयन में रहत तिय बिन मोर मंमीर
 मीन रहत सब नीर में इन मीननि में मीर
 तेरे बिच्छु समूद में हों जहाज भई कंत
 तन मन जोवन बूढ़ि यो प्रेम ध्वजा फहरत
 रोम रोम बूढ़े पूर्व भोग प्रत्यद कहंत ।

संजनी सजन बियोग तें सब तन रुदन करंत
 चतुर चितेरो जाँ लिखै रचि पचि मूरति नारि
 वह चितवन अरू मुरहंसनि किहि विधि लिखै संवार

BURSES IN K, KUREE BOLEE.

NIKULnu chuok, hut se g,hur kee bahur, jo put kee oj, hult,
 hit, huk ruja hue,

Simut ke g, hut se tire durus ko nuyun men a jee uuk ruha hu
 Ugun ne tere biruh kee jub se h,hoolus diya hue mere kule ja,
 Hiye kee d,hurkun muen kya buta, oon yih ko, ela sa chutuk
 ruha hue.

Kya kood, hub pur गया hue ooj, hera,
 Huri b,hujun bin nuheen hue sulj, hera.

Nam bullee se par hoon pul men,
 Krishn bin man j,h d,har hue bera
 Lug ke churnon se krishn ke yih kuhoon,
 Koonj gulyon men ho jo mootb, hera.

Do moo j,he t,hour wooh uchul huri jee,
 Jue se D,hroo ko diya utul k,hera.

Tere milan kee bat hue seed,hee,
 Yonhee mare hue kitne b'hutb,hera.

Krishn Ko ruk,h goopal nit oot,h b,hog,
 Misree muk, hun mula,ee uor pera.

Wuhee sub men ruhe huri ap hur hur se niyara hue
 wuhee hue dek,h lo purtuch,h, jugut ooska pusara hue.

Oosee ne bat ke kuhte hee yih rachna ruchee saree,
 Oonheen ne kya ulug bruhmand yih mundir sunwara hue.

Oosee ka nam leke tur guye lak,hon kuroron yuhan,
 Nu leena nam jisne huri ka ooska boj,h b,hara hue.

Kiya t,ha gurb sagur ne ki surbur kuon hue mere,
 Ki teen unjlee se le uchmun kiya meet,he ko k,hara hue.

Kootoom ko dek,h b,hoola hue nuheen sat,hee ko,ee oos bin,
 Nu b,ha,ee bund,hoo hue tera yuhan ub soot nu dara hue.

Jo chatoor hue to mun men ruh nirala jugt se ub yuhan,
 Ki juese anch ke lugne se b,hage turp,h para hue.

B,HASHA DOHA

Oon bin sub ritoo p,hir gu,een dek,h dinun ke p,her,
 Jet,h b,hijo,ee ans owun sawun jaree g,her.
 Guon sumen p,huenta guhyo soondur hit jivi jan,
 Ch,hootut hee do,oo ch,hootte oot p,huenta it pran.
 Mun rak,hon hon buruj kue jiyu rak,hon sumooj,hae,
 Nuena burje na ruhen milen uga,oo ja,e—.
 Jub burje tub na ruhe guye prem rus luen,
 Up bus ten pur bus b,huye ye biswasee nuen.
 Preet jo uesee keejiye jyon nis chunda het,
 Susi bin nis hue sanwree nis bin chunda set.
 Kagud b,heejut nuen jul, kur kamput mnsi let,
 Papee birha mun busut bit,ha lik,hun nuheen det.
 Birhee loyun men ruhut tiyu bin neer gumb,heer,
 Meen ruhut sub neer men in meenun men neer.
 Tere biruh sumoodr men hon juhaj b,huee kunt,
 Tun mun johun booriyuo prem d,hwuja p,huhrunt.
 Rom Rom boonden choowen log pruswed kuhunt
 Sujunee sujun biyog ten sub tun roodun kurunt.
 Chutoor chiteruo juo lik,hue ruch puch moorut nar,
 Wuh chitwun uroo moor hunsun kihin bid,h lik,hue sunwar.

अस्मा

हालति

सें. ए. ए. वा. हि. व.		सें. ए. ए. ब. म. म.
फा. इ. स.	पुरुष	पुरुष
इ. वा. फ. त.	पुरुष की के की	पुरुषपति की के की
म. फ. उ. स.	पुरुष की	पुरुषपति की
नि. दा.	हे पुरुष	हे पुरुषों

हालति

फा. इ. स.	पुत्र	पुत्र
इ. वा. फ. त.	पुत्र की के की	पुत्रपति की के की
म. फ. उ. स.	पुत्र की	पुत्रपति की
नि. दा.	हे पुत्र	हे पुत्री

हालति

फा. इ. स.	पुत्री	पुत्री
इ. वा. फ. त.	पुत्री की के की	पुत्रीपति पुत्रियत की के की
म. फ. उ. स.	पुत्री की	पुत्रीपति पुत्रियत की
नि. दा.	हे पुत्री	हे पुत्रियों

OF NOUNS.

Singular.	Plural.
N. A. man, or the man.	Men.
G. A. man's, the man's or of a or the man. }	Men's, or the men.
A. A. or the man.	Men, or the men.
V. O. man ?	O men ?

N. A. or the son	Sons
G. of a, or the son.	Of sons.
A. A., or the son.	Sons.
V. O. son ?	O sons ?

N. A, or the daughter.	Daughters.
G. Of a, or the daughter.	Of daughters.
A. A, or the daughter.	Daughters.
V. O daughter ?	O daughters ?

आस्मा

वाहि द

जमम्

ह्।सति

फाइल

पोषी

पोषी

इबाफ़त

पोषी कौ के की

पोषीन पोषियन कौ के की

मफ़ज़ल

पोषी कौ

पोषीन पोषियन कौ

निदा

वे पोषी

हे पोषियौ

अमाइर

मुसकल्लिम

ह्।सति

फाइल

हीं में

हम

इबाफ़त

मे री रे री

हमारी रे री

मफ़ज़ल

भोकीं भोहि

हमकौं हमनकौं हमें

ह्।ज़र

ह्।सति

फाइल

तू तें

तुम

इबाफ़त

ते री रे री

विहा तुम्हा री रे री

मफ़ज़ल

ठोकौं तेहि

तुमकौं तुमनिकौं तुम्हें

निदा

बदे तू तें

बहो तुम

OF NOUNS.

Singular.	Plural.
N. A, or the book.	Bookr
G. of a, or the book.	Of books.
A. A, or the book.	Books.
V. O book ?	O books ?

OF PRONOUNS.

Ist Person.

N. I	We
G. My, mine, or of me.	Our, or of us.
A. Me	Us.

2nd Person.

N. Thou.	You.
G. Thy, thine, or of thee.	Your, or of you
A. Thee	You.
V. O thou ?	O you ?

जमाहर

ह्रासति

शाइब

वाहिव

बमष्

फाइस

यह सो

बे ते

इबाफत

वा ता की के की

उन बिन तिन की के की

मफऊल

वा ता की हि

उन बिन तिन की उ ति बि न्ह

आस्माऐशारः

बईब

ह्रासति

फाइस

यह सो

बे ते

इबाफत

वा ता की के की

उन बिन तिन की के की

मफऊल

वा ता की वा ता हि

उन बिन तिनकी उ ति बि न्हें

करीब

ह्रासति

फाइस

यह

बे

इबाफत

या की के की

इन की के की

मफऊल

या की याहि

इन की इन्हें

OF PRONOUNS.

3rd Person.

Singular.

Plural.

N. He, she it.

They.

G. His, her's, it's.

Their, of them.

A. Him, her, it.

Them.

DEMONSTRATIVE PRONOUN.**REMOTE.**

N. That

They, those.

G. Of that.

Of them, their.

A. That.

That.

PROXIMATE.

N. This

These.

G. Of this.

Their, of these.

A. This.

These.

जुमाहर

मुस्तरक

बाहि द

जमघ

ह्वालति

फाइल

घाय

इबाफ़त

घाय मी मे नी

मफ़ऊल

घाय घायन कौ

इस्तिफ़हाम

हासति

फाइल

कौन को

कौन को

इबाफ़त

का कौ के की

किन कौ के की

मफ़ऊल

काकौ काहि

किनकौ किन्है

ह्वासति

फाइल

बहा

इबाफ़त

काहे की के की

मफ़ऊल

काहे की

PRONOUNS.

English.

Plural.

1. I, thou, & c. He, she, &c.

2. We, you, my, thy, his, our, your & c.

3. Me, us, & c.

Interrogative Pronouns.

1. Who, whom, & c.

2. What, which, whose, & c.

3. How, how many, how much, & c.

4. Where, wherefore, & c.

११

मौसूल

याहिय

जमघ

हासति

फ़ाइस

ओ ओन

जे

इबाफ़त

आ की के की

जिन जिननि की के की

मफ़ऊस

आकों आहि

जिन जिननि कीं जिन्हें

नकर.

हासति

फ़ाइस

कोऊ

कोऊ

इबाफ़त

काहू की के की

किन्हू किन्हीं की के की

मफ़ऊस

काहू कीं

किन्हू किन्हीं कीं

हासति

फ़ाइस

कघू

कघू

इबाफ़त

काहू की के की

किन्हू किन्हीं की के की

मफ़ऊस

काहू कीं

किन्हीं कीं

PRONOUNS.**Relative**

Singular.	Plural.
N. Who which what.	
G. Whose, of which, & c.	
A. Whom, which, & c.	

Pronomical Adjectives.

N. A, any, person, body, or thing	Some persons, bodies or things.
G. Of one persons, body of thing.	Of some persons, &c.
A. A, an, any, person, & c.	Some persons, &c.

N. Any.	Some.
G. Of any.	Of some.
A. Any.	Some.

सिफ़तओमौसफ़

वा.हिय

जमम्

हालति

फ़ाइस

मलौमनुप

मले मनुप

इजाफ़त

मलेमनुप कौ के की

मलेमनुपनि कौ के की

मफ़क़ल

मलेमनुप कौ

मलेमनुपनि कौ कौ

मिवा

हे मले मनुप

हे मले मनुपी

हालति

फ़ाइस

मसीछोहरा

मसेछोहरा

इजाफ़त

मसेछोहरा कौ के की

मसेछोहरानि कौ के की

मफ़क़ल

मसेछोहरा कौ

मसेछोहरानि कौ

मिवा

हे मसे छोहरा

हे मसे छहरापी

हालति

फ़ाइस

मसीपोपी

मसीपोपी

इजाफ़त

मसीपोपी कौ के की

मसीपोपीन मसीपोपियन कौ के की

मफ़क़ल

मसीपोपी कौ

मसीपोपियन मसीपोपीन कौ

मिवा

हे मसीपोपी

हे मसी पोपिपी

OF ADJECTIVES, WITH THEIR SUBSTANTIVES.

Singular.

Plural.

N. A, or the good man.

Good men

G. Of a, or the good man.

Of good men.

A. A, or the good man.

Good men.

V. O good man ?

O good men ?

N. A good boy.

good boys.

G. Of a good boy.

Of good boys.

A. good boy.

Good boys.

V. O good boy ?

O good boys ?

N. A, or the good book.

Good books.

G. Of a, or the good book.

Of good books.

A. A, or the good book.

Good books.

V. O good book ?

O good books ?

सिंफ़तओमोसूफ़

वाहिय

जमम

हालति

फाइल
इन्वाफतभलीपुत्री
भलीपुत्री कौ के कीभलीपुत्री
भलीपुत्रीन भलीपुत्रियन
कौ के कीमफऊल
निदाभलीपुत्री कौ
हे भली पुत्रीभलीपुत्रीन भलीपुत्रियन कौ
हे भली पुत्रियी

राबितिरुगएेमभ्ररुफ

हाल हूँवो

वाहिय

हाल

जमम

से गएे

मुतकस्मम
मुषातब
शाइवहौं में हौं
तू तँ है
बह सो हैहम हँ
तुम हँ
वे ते हँ

इस्तिमरारी

से गएे

मुतकस्मम
मुषातब
शाइवहौं में होतुहो
तू तँ होतुहो
बह सो होतुहोहम होतहे
तुम होता है
वे ते होत है

OF ADJECTIVES, WITH THEIR SUBSTANTIVES.

Singular.

Plural.

N. A, good daughter.

Good daughters.

G. Of a good daughter.

Of good daughters.

A. A good daughter.

Good daughters.

V. O good daughter ?

O good daughters ?

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

to be

Present Tense.

Singular.

Plural.

1. I am.

We are.

2. Thou art.

You are.

3. He is.

They are.

Preterimperfect.

1. I did, or was.

We did or were.

2. Thou didst, or wast.

You did or were.

3. He did, or was.

They did or were.

माजीमुतलक

बाहिय

अमम

सेगए

मुतकस्तिम

हौं मै हो कै भयी

हम हे कै भये

मुखातब

तू तें हो कै भयी

तुम हे कै भये

ग़ाइब

बह सो हो कै भयी

बे ते कै भये

माजीकरीब

सेगए

मुतकस्तिम

हौं मै भयी हौं

हम हुऐ कै भये हें

मुखातब

तू तें भयी है

तुम हुऐ कै भये ही

ग़ाइब

बह सो भयी है

बे ते हुऐ कै भये हें

मीजबईाद

सेगए

मुतकस्तिम

हौं मै भयी हो

हम हुऐ कै भये हे

मुखातब

तू तें भयी हो

तुम हुऐ कै भये हे

ग़ाइब

बह सो भयी हो

बे ते हुऐ कै भये हे

मुस्तक़विल

सेगए

मुतकस्तिम

हौं मै होयंगे के है हौं

हम होयंगे के है हें

ग़ाइब

बह सो होयगी के है है

बे ते होयंगे के है हें

मुखातब

तू तें होयंगे के है है

तुम हो उगे के है है ही

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE

Perfect.

Singular.

Plural.

1. I was.

We were.

2. Thou wast.

You were.

3. He was.

They were.

Preterperfect

1. I have been.

We have been.

2. Thou hast been.

You have been.

3. He has been.

They have been.

Preterpluperfect.

1. I had been.

We had been.

2. Thou hadst been.

You had been.

3. He had been.

They had been.

Future.

1. I shall, or will be.

We shall, or will be.

2. Thou shalt, or wilt be.

You shall, or will be.

3. He shall, or will be.

They shall, or will be.

अमर

संज्ञाए

वा.हिद

पमभ

मुत्कस्लिम

हीं में हीं चं

हम हींय

मुखातब

तू तें हो

तुम होउ

ग्राहब

बह सो होय

वे ते हींय

मुज़ारअ

संज्ञाए

मुत्कस्लिम

हीं में हींचं

हम हींय

मुखातब

तू तें होय

तुम होउ

ग्राहब

बह सो होय

वे ते हींय

मुज़ार अमाजी

संज्ञाए

मुत्कस्लिम

हीं में भयीहींचं

हम भये हींय

मुखातब

तू तें भयीहोय

तुम भयेहोउ

ग्राहब

बह सो भयीहोय

वे ते भयेहींय

माजीमुंतमन्नी

संज्ञाए

मुत्कस्लिम

हीं में होतो

हम होउे

मुखातब

तू तें होउी

तुम होउे

ग्राहब

बह सो होउी

वे ते हींउे

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE. Imperative.

Singular.	Plural.
1. Let me be.	Let us be.
2. Be thou.	Be you.
3. Let him be.	Let them be.

Active, or Present Tense Subjunctive.

1. I be, or may be.	We be, or may be.
2. Thou hast, or mayst be.	You be, or may be.
3. He be, or may be.	They be, or may be.

Preterite, or Past Subjunctive

1. I might have been.	We might have been.
2. Thou mightst have been.	You might have been.
3. He might have been.	They might have been.

Imperfect Tense Subjunctive

1. I were, or might be.	We were, or might be.
2. Thou wert, or mightst be.	You were, or might be.
3. He were, or might be.	They were, or might be.

अमर

संग्रहे

बा.हिद

अमर

मृतकस्मिन्

हीं में हीं उं

हम हींय

मुखातब

तू तें हो

तुम होउ

शाहब

वह सो होय

वे ते हींय

मुज़ारअ

संग्रहे

मृतकस्मिन्

हीं में हींउं

हम हींय

मुखातब

तू तें होय

तुम होउ

शाहब

वह सो होय

वे ते हींय

मुज़ार अमाजी

संग्रहे

मृतकस्मिन्

हीं में भयीहींउं

हम भये हींय

मुखातब

तू तें भयीहोय

तुम भयेहोउ

शाहब

वह सो भयीहोय

वे ते भयेहींय

माजीमु'तमन्नी

संग्रहे

मृतकस्मिन्

हीं में होतो

हम होते

मुखातब

तू तें होती

तुम होते

शाहब

वह सो होती

वे ते होते

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Imperative.

Singular.

Plural.

1. Let me be.

Let us be.

2. Be thou.

Be you.

3. Let him be.

Let them be.

Aorist, or Present Tense Subjunctive.

1. I be, or may be.

We be, or may be.

2. Thou hast, or may t be.

You be, or may be.

3. He be, or may be.

They be, or may be.

Preterperfect Subjunctive.

1. I may have been.

We may have been.

2. Thou mayst have been.

You may have been.

3. He may have been.

They may have been.

4. I should have been.

5. Thou shouldst have been.

6. He should have been.

7. They should have been.

हालिमुतशक्की

बाहिद

बमभ

सेगए

मुतकस्लिम
मुखातब
गाइब

हीं में होतु हींजगी हैवहीं हमहोत हींयमे हैवहै
तू तें भोतु होयगी हैवहै तुमहोत होजमे हैवही
वह सो होतु होयगी हैवहै वे ते होतहींयगे हैवहै

माजीशरतीयः बहंडू

सेगए

मुतकस्लिम
मुखातब
गाइब

हीं में भयोहोतो हम भये होते
तू तें भयोहोती तुम भये होते
वह सो भयो होता वे ते भये होते

माजीमुतशक्की

सेगए

मुतकस्लिम
मुखातब
गाइब

हीं में भयी हींजगी हैवहीं हम भये हींयगे हैवहै
तू ते भयी होयगी हैवहै तुम भये होजगे हैवही
वह सो भयी होयगी हैवहै वे ते भये हींयगे हैवहै

इसिहालियः

होतु होत

होत होते

माजीमभतूकभतेहि

हो होकर होकी

होकी न होकरकर

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Present Doubtful.

Singular.

Plural.

- | | |
|--------------------|--------------|
| 1. I may be. | We may be. |
| 2. Thou mayest be. | You may be. |
| 3. He may be. | They may be. |
-

Perfect Conditional.

- | | |
|---------------------------------------|-------------------------------|
| 1. I had, or might have been. | We had, or might have been. |
| 2. Thou hadst, or mightest have been. | You had, or might have been. |
| 3. He had, or might have been. | They had, or might have been. |
-

Perfect doubtful.

- | | |
|---------------------------|---------------------|
| 1. I may have been. | We may have been. |
| 2. Thou mayest have been. | You may have been. |
| 3. He may have been. | They may have been. |
-

Participle Present

Being

Being

Participle Present

Having been

इस्मिफ़ाड्ल

बाहिय
होन पारो हारो

जमम्
होन पारे हारे

इस्मिमफ़ऊल

भयो

होन पर पे हे हेव्वे

पर पे हे भयो चाहतु हे

राकित्ति सेगेऐ मजहूल

आनों खंबो

हाल

संगऐ

मुतकस्तिम
मुखातब
घाइब

होँ में जातुहोँ
तू तें जातु हे
वह सो जातु हे

हमजाठ हे
तुमजाठ ही
वे ते जातु हे

इस्तिमरारी

सेगऐ

मुतकस्तिम
मुखातब
गाइब

होँ में जातु हो
तू तें जातु हो
वह सो जातु हो

हमजाठ हे
तुमजाठ हे
वे ते जातु हे

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.**Participle Active**

Singular.

Plural.

Being

Being.

Participle Passive.

Been.

Future Proximate.

About to be.

Helping verbs in the passive Voice.

To Go**Present Tense.**

1. I go.

We go.

2. Thou goest.

You go.

3. He goes.

They go.

Imperfect.

1. I was going.

We were going.

2. Thou wast going.

You were going.

3. He was going.

They were going.

माञ्जीमुत्तलक

वाहिद

जमम्

मुत्तकस्त्रिम

हीं में गयी

हमगये

मुत्तातब

तू छें गयी

तुमगये

शाइब

वह सो गये

वे ते गये

माञ्जीकरीब

से गये

मुत्तकस्त्रिम

हीं में गयी हीं

हम गये हैं

मुत्तातब

तू तें गयी है

तुम गये है

शाइब

वह सो गयी है

वे ते गये हैं

माञ्जीवईद

सेगए

मुत्तकस्त्रिम

हीं में गयी हो

हम गये हे

मुत्तातब

तू छें गयी हो

तुम गये हे

शाइब

वह सो गयी हो

वे ते गये हे

से गये

मुत्तकस्त्रिम

हीं में जायगी जहीं

हम जायगे जैंहै

मुत्तातब

तू छें जायगी जैंहै

तुम जायगे जैंही

शाइब

वह जो जायगी जैंहै

वे ते जायगे जैंहै

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.**Perfect Tense.**

Singular.

Plural.

1. I went.

We went.

2. Thou wentest.

You went.

3. He went.

They went.

Preterperfect.

1. I have gone.

We have gone.

2. Thou hast gone.

You have gone.

3. He has gone.

They have gone.

Pluperfect.

1. I had gone.

We had gone.

2. Thou hadst gone.

You had gone.

3. He had gone.

They had gone.

Future.

1. I shall, or will go.

We shall, or will go.

2. Thou shalt, or wilt go.

You shall or will go.

3. He shall, or will go.

They shall

अमर

वाहिव

अमर

से गये

मुतकस्लिम

हीं में जाउं

हम जाय

मुखातब

तू तें जाय

तुम जाउ

गाइब

वह सो जाय

वे ते जाय

मुज्जारअ

से गये

मुतकस्लिम

हीं में जाऊं

हम जाय

मुखातब

तू तें जाय

तुम जाउ

गाइब

वह सो जाय

वे ते जाय

मुज्जारअमाजी

से गये

मुतकस्लिम

हीं में गयीहोउ

हम गये होंय

मुखातब

तू तें गयी होय

तुम गये होंउ

गाइब

वह सो गयीहोय

वे ते गये होंय

माज्जीमुतन्नी

से गये

मुतकस्लिम

हीं में जाती

हम जाते

मुखातब

तू तें जाती

तुम जाते

गाइब

वह सो जाती

वे ते जाते

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE

Imperative.

Singular.

Plural.

1. Let me go.

Let us go.

2. Go thou.

Go you.

3. Let him go.

Let them go

Aorist, or present Tense Subjunctive.

1. I may go.

We may go.

2. Thou mayest go.

You may go.

3. He may go.

They may go.

Preterperfect subjunctive.

1. I may have gone.

We may have gone.

2. Thou mayest have gone.

You may have gone.

3. He may have gone.

They may have gone.

Imperfect subjunctive.

1. I would, or might have gone.

We would, &c, gone.

2. Thou wouldst, &c. gone.

We would, &c. gone.

3. He would, &c. gone.

They would, & c. gone.

अमर

वाहिव

जमम्

से गये

मृतकस्मिन्

हैं मैं जाऊँ

हम जाय

मुखात्प

तू तैं जाय

तुम जाउ

शाब्द

वह सो जाय

वे ते जाय

मुञ्जारभ

से गये

मृतकस्मिन्

हैं मैं जाऊँ

हम जाय

मुखात्प

तू तैं जाय

तुम जाउ

शाब्द

वह सो जाय

वे ते जाय

मुञ्जारभमाज्ञी

से गये

मृतकस्मिन्

हैं मैं गयीहोउ

हम गयें होंय

मुखात्प

तू तैं गयी होय

तुम मये होंउ

शाब्द

वह सो गयीहोम

वे ते गये होंय

माज्ञीमुतन्नी

से गये

मृतकस्मिन्

हैं मैं जाती

हम जाते

मुखात्प

तू तैं जाती

तुम जाते

शाब्द

वह सो जाती

वे ते जाते

हालिमुतशक्की

वाहिव

जमम

से गऐ

मुतकस्लिम
मुखातब
गाइब

हौं मं जातु हौंजगी हैव् हौं हमजात हौंयगेहैव् है
तू तें जातु हौयगी हैव् है तुमजात हौजगे हैव् हौ
वह सो जात हौयगी हैव् है वे ते जात हौंयगे हैव् है

माज्जीशरतीयः वर्ई द

से गऐ

मुतकस्लिम
मुखातब
गाइब

हौं मं गयीहोती ह्यम गये होते
तू तें गयीहोती तुम गये होते
वह सो गयीहोती वे ते गये होते

माज्जीमुतशक्की

से गऐ

मुतकस्लिम
मुखातब
गाइब

हौं मं गयी हौंजगी हैव् हौं ह्यम गये हौंयगे हैव् है
तू तें गयी हौयगी हैव् है तुम गये हौजगे हैव् हौ
वह सो गयी हौयगी हैव् है वे ते गये हौंयगे हैव् है

इसिहालिया

जातु

जातें

माज्जीमअतूपम्लैहि

जा जाकर जाकं जाकरके जाकरकर

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE

Present Doubtful.

Singular.	Plural.
1. I may be going.	He may be going.
2. Thou mayest be going.	You may be going.
3. He may be going.	They may be going.

Perfect Conditional.

1. I might have gone.	We might have gone.
2. Thou mightest have gone.	You might have gone.
3. He might have gone.	They might have gone.

Perfect Doubtful.

1. I may have gone.	We may have gone.
2. Thou mayest have gone.	You may have gone.
3. He may have gone.	They may have gone.

Present Participle.

Going	Going.
Participle preterperfect,	
Having gone.	

इस्मिफाइल

जान बारी हारी

जान बारे हारे

इस्मिफऊल

मयीगयीमयी

गये गयेभये

मुश्तकविलिकरीब

जान पर पै जके पर पै फे गयी चातु है

राबिति सेगए मजहूल

साब्जिमी

मरली मरली

सेगए

बाहिबं
मुश्तकस्तिम
मुच्चातब
शाइबहाम
हीं में मरतु हों
तू तें मरतु है
वह सो मरतु हैजमम
हम मरतु हैं
तुम मरतु हो
वे ते मरतु है

इस्तिमरारी

सेगए

मुश्तकस्तिम
मुच्चातब
शाइबहीं में मरतु हो
तू तें मरतु हो
वह सो मरतु होहम मरतु है
तुम मरतु है
वे ते मरतु है

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE. PARTICIPLE ACTIVE

Going.

Going.

Participle passive.

Gone.

Gone.

Future Proximate.

About to go.

OF THE VERB NEUTER.

To Die.

Present Tense.

Singular.

1. I die, or am dying.
2. Thou diest, or art dying.
3. He dies or is dying.

Plural.

- We die, or are dying.
You die, or are dying.
They die, or are dying.

Imperfect.

1. I was dying.
2. Thou wast dying.
3. He was dying.

- We were dying.
You were dying.
They were

माञ्जीमुतलक

वाहिद

जमघ

संगए

मुतकस्लिम
मुखातब
शाहब

हौं में मर्यौ
तू तें मर्यौ
वह सो मर्यौ

हम मरे
तुम मरे
वे ते मरे

माञ्जीकरीब

संगए

मुतकस्लिम
मुखातब
शाहब

हौं में मर्यौ हौं
तू तें मर्यौ है
वह सो मर्यौ है

हममरे हें
तुम मरे हौं
वे ते मरे हें

माञ्जीबईद

संगए

मुतकस्लिम
मुखातब
शाहब

हौं में मर्यौ हो
तू तें मर्यौ हो
वह सो मर्यौ हो

हम मरे हे
तुम मरे हे
वे ते मरे हे

मुस्तकविल

संगए

मुतकस्लिम
मुखातब
शाहब

हौं में मरौंगी मरिहौं
तू तें मरौंगी मरिहौं
वह सो मरौंगी मरिहौं

हम मरौंगे मरिहें
तुम मरौंगे मरिहौं
वे ते मरौंगे मरिहें

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.**Perfect Tense**

Singular.

Plural.

1. I died.

We died.

2. Thou diedst.

You died.

3. He died.

They died.

Preterperfect.

1. I had died.

We have died.

2. Thou hast died.

You have died.

3. He has died.

They have died.

Pluperfect.

1. I have died.

We had died.

2. Thou hadst died.

You had died.

3. He had died.

They had died.

Future.

1. I shall, or will die.

We shall, or will die.

2. Thou shalt, or wilt die.

You shall or will die.

3. He shall, or will die.

They shall, or will die.

अमर

वा. ह. व.

जमघ

संग्रहे

मृतकस्मिन्
मुखात्तव
गाइव

हौं मैं मरौ
तू तैं मरू
वह सो मरै

हम मरै
तुम मरौ
वे ते मरै

मुञ्जारभ्

संग्रहे

मृतकस्मिन्
मुखात्तव
गाइव

हौं मैं मरौं
तू तैं मरै
वह सो मरै

हम मरै
तुम मरौ
वे ते मरै

मुञ्जारभ्माञ्जी

संग्रहे

मृतकस्मिन्
मुखात्तव
गाइव

हौं मैं मर्यौहोउं
तू तैं मर्यौ होय
वह सो मर्योहोय

हम मरै हौंय
तुम मरै होउ
वे ते मरै हौंय

संग्रहे

मृतकस्मिन्
मुखात्तव
गाइव

हौं मैं मरखी
तू तैं मरखी
वह सो मरखी

हम मरखे
तुम मरखे
वे ते मरखे

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.

Imperative.

Singular.	Plural.
1. Let me die.	Let us die.
2. Die thou.	Die you.
3. Let him die.	Let them die.

Aorist, or present Tense Subjunctive.

1. I die, or may die.	We die, or may die.
2. Thou diest, or mayst die.	You die, or may die.
3. He dies, or may die	They die, or may die.

Preterperfect Subjunctive.

1. I may have died.	We may have died.
2. Thou mayest have died.	You may have died.
3. He may have died.	They may have died.

Imperfect Subjunctive

1. I could, would, or might have died.	We could, <i>we</i> .
2. Thou couldst, <i>we</i> , diest.	You could <i>we</i> .
3. He could, <i>we</i> , died.	They could, <i>we</i> .

हालिमुतशक्की

वाहिद

जमम

संगए

मुतकस्लिम
मुखातय
गाइब

हो मे मरतु होतंगी हैव हीं
तू तें मरतु होयगो हैव है
वह सो मरतु होयगो हैव है

हम मरत होयगे हैव है
तुम मरत होउगे हैव हीं
वे ते मरत होयगे हैव है

माज्जीशरतीयः वईद

संगए

मुतकस्लिम
मुखातय
गाइब

हो मे मरयो होतंगी
तू तें मरयो होतंगी
वह सो मरयो होतंगी

हम मरे होते
तुम मरे होते
वे ते मरे होते

माज्जीमुतशक्की

संगए

मुतकस्लिम
मुखातय
गाइब

हो मे मरयो होतंगी हैव हीं
तू तें मरयो होयगो हैव है
वह सो मरयो होयगो हैव है

हम मरे होयगे हैव है
तुम मरे होउगे हैव हीं
वे ते मरे होयगे हैव है

इस्मिहालियः

मरतु मरतो

मरत मरते

मर मरकर मरके

माज्जीमभ्रतूफम्रलैहि

मरकरके मरकरकर

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE**Present Doubtful.**

Singular.

Plural.

1. I may be dying.

We may be dying.

2. Thou mayest be dying.

You may be dying.

3. He may be dying.

They may be dying.

Perfect Conditional.

1. I had, or might have died.

We had, or might have died.

2. Thou hadst, or mightest have died.

You had, or might have died.

3. He had, or might have died.

They had, or might have died.

Perfect Doubtful

1. I may have died.

We may have died.

2. Thou mayest have died

You may have died.

3. He may have died.

They may have died.

Participle Present.

Dying

Dying

Participle Preterperfect,
Having died.

इस्मिफ़ाइल

वाहिद

मरन वारी हारी

बमम्

मरन वारे हारे

इस्मिमफ़ज़ल

मर्यो मर्यो भयो

मरे मरे भये

मुस्तक़बिलिफ़रीब

मरम पर पे मरवे पर पे मर्यो चाहत है

सैक्षऐ मअरफ़

मारलो मारबी

हाम

सैगऐ

मुस्तक़त्तिसम

मुस्रठब

गाइब

हीं में मारखु हीं

तू तें मारखु है

वह सो मारखु है

हम मारख है

तुम मारख हीं

वे ते मार हैं

इस्तिकरारी

सैगऐ

मुस्तक़त्तिसम

मुस्रठब

गाइब

हीं में मारखु हो

तू तें मारखु हो

वह सो मारखु हो

हम मारख है

तुम मारख है

वे ते मारख है

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE

Participle Active.

Singular.	Plural.
Dying.	Dying.

Participle Passive.

Dead.	Dead.
-------	-------

Future Proximate.

About to die.

VERB ACTIVE.

To Beat.

Present Tense.

1. I beat, or am beating.	I beat, or are beating.
2. Thou beatest, or are beating.	You beat, or are beating.
3. He beats, or is beating.	They beat, or are beating.

Imperfect.

1. I was beating.	We were beating.
2. Thou wast beating.	You were beating.
3. He was beating	They were beating.

माञ्जीमृतलक

वाहिव

जमम

संगए

मृतकस्त्रिम
मुखातव
गाइव

मैं मँने मार्यो मारे
तू तें ने मार्यो मारे
वाने छाने विन तिन उन मार्यो मारे

हमने नि मार्यो मारे
तुम ने नि मार्यो मारे
बिननि उननि
तिननि मार्यो मारे

माञ्जीकरीव

संगए

मृतकस्त्रिम
मुखातव
गाइव

मैं मँने मार्यो है मारे हैं
तूने तें तेंने मार्यो है मारे हैं
वाने छाने विन तिन उन
मार्यो है मारे हैं

हम नि ने मार्यो है मारे हैं
तुम नि ने मार्यो है मारे हैं
बिननि तिननि उननि
मार्यो है मारे हैं

माञ्जीवईद

संगए

मृतकस्त्रिम
मुखातव
गाइव

मैं मँने मार्यो हो मारे है
तूने तें मार्यो हो मारे है
वाने छाने विन तिन उन
मार्यो हो मारे है

हम नि ने मार्यो हो मारे है
तुम नि ने मार्यो हो मारे है
बिननि तिनति उननि
मार्यो हो मारे है

संगए

मृतकस्त्रिम
मुखातव
गाइव

हो मैं मारोगी मारिहूँ
तू तें मारोगे मारिहूँ
वह तो मारोगी मारिहूँ

हम मारंगे मारिहूँ
तुम मारोगे मारिहूँ
वे ते मारंगे मारिहूँ

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.**Perfect Tense.**

Singular.

Plural.

1. I beat.

We beat.

2. Thou beatest.

You beat.

3. He beateth, or beats.

They beat.

Preterperfect.

1. I have beaten.

We have beaten.

2. Thou hast beaten.

You have beaten.

3. He hath, or has beaten.

They have beaten.

Pluperfect.

1. I had beaten.

We had beaten.

2. Thou hast beaten.

You had beaten.

3. He had beaten.

They had beaten.

Future.

1. I shall, or will beat.

We shall, or will beat.

2. Thou shalt, or wilt beat.

You shall, or will beat.

3. He shall, or will beat.

They shall, or will beat.

माज्जीमत्तलक

वाहिव

जमम

संगए

मूतकस्त्रिम

मैं मैंने मार्यो मारे

हमने नि मार्यो मारे

मुखातव

तू तें ने मार्यो मारे

तुम ने नि मार्यो मारे

गाइव

याने ताने विन तिन उन मार्यो मारे

किननि उननि

तिननि मार्यो मारे

माज्जीकरीव

संगए

मूतकस्त्रिम

मैं मैंने मार्यो है मारे हैं

हम नि ने मार्यो है मारे हैं

मुखातव

तूने तें तेंने मार्यो है मारे हैं

तुम नि ने मार्यो है मारे हैं

गाइव

याने ताने विन तिन उन

किननि तिननि उननि

मार्यो है मारे हैं

मार्यो है मारे हैं

माज्जीवईद

संगए

मूतकस्त्रिम

मैं मैंने मार्यो हो मारे है

हम नि ने मार्यो हो मारे है

मुखातव

तूने तें मार्यो हो मारे है

तुम नि ने मार्यो हो मारे है

गाइव

याने ताने विन तिन उन

किननि तिननि उननि

मार्यो हो मारे है

मार्यो हो मारे है

संगए

मूतकस्त्रिम

हैं मैं मारोगी मारिहैं

हम मारेंगे मारिहैं

मुखातव

तू तें मारेंगी मारिहैं

तुम मारोगे मारिहैं

गाइव

यह सो मारेंगी मारिहैं

ये ते मारेंगे मारिहैं

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.**Perfect Tense.**

Singular.

Plural.

1. I beat.

We beat.

2. Thou beatest.

You beat.

3. He beateth, or beats.

They beat.

Preterperfect.

1. I have beaten.

We have beaten.

2. Thou hast beaten.

You have beaten.

3. He hath, or has beaten.

They have beaten.

Pluperfect.

1. I had beaten.

We had beaten.

2. Thou hast beaten.

You had beaten.

3. He had beaten.

They had beaten.

Future.

1. I shall, or will beat.

We shall, or will beat.

2. Thou shalt, or wilt beat.

You shall, or will beat.

3. He shall, or will beat.

They shall, or will beat.

अमर

बाह्य		जम्
संगे		
मुतकल्लिम	हीं में मारी	हम मारे
मुखातब	तू तें मार	तुम मारी
गाइब	वह सो मारै	वे ते मारै

मुञ्जारअ

संगे		
मुतकल्लिम	हीं में मारी	हम मारै
मुखातब	तू तें मारै	तुम मारी
गाइब	वह सो मारै	वे ते मारै

संगे		
मुतकल्लिम	मने मार्योहोय मारे हींय	हम ने नि मार्यो होय मारेहींय
मुखातब	तू तें ने मार्यो होय मारे हींय	तुम ने नि मार्यो होय मारे हींय
गाइब	वाने वाने विन छिन उन	
	मार्यो होय मारे हींय	विननि छिननि उननि
		मार्यो होय मारे हींय

माजीमुतमन्नी

संगे		
मुतकल्लिम	हीं में मार्यी	हम मारते
मुखातब	तू तें मारती	तुम मारते
गाइब	वह सो मारती	वे ते मारते

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.**Imperative.**

Singular.	Plural.
1. Let me beat.	Let us beat.
2. Beat thou.	Beat you.
3. Let him beat.	Let them beat.

Aorist, or present Tense Subjunctive.

1. I may beat.	We may beat.
2. Thou mayest beat.	You may beat.
3. He may beat.	They may beat.

Preterperfect Subjunctive.

1. I may have beaten.	We may have beaten.
2. Thou mayest have beaten.	You may have beaten.
3. He may have beaten.	They may have beaten.

Imperfect Subjunctive.

1. I would, or might have, or if I have beaten.	We would, &c beaten.
2. Thou wouldst, &c. beaten	You would, &c. beaten.
3. He could, &c beaten.	They would, &c. beaten.

हालिमुतशक्की

वाहिद

सँगए

जमम

मूठकस्लिम

मूखातब

गाइब

हों में मारतु होउंमों हैव्हें हम मारतु होंयने हैव्हें
 तू तें मारतु होयगी हैव्हें के छे मारतु होंयने हैव्हें
 वह सो मारतु होयगी हैव्हें वे ते मारतु होंयने हैव्हें

माज्जीशरतीयश्च वईद

सँगए

मूठकस्लिम

मूखातब

गाइब

मने मार्यो होतो मारे होते हमने नि मार्यो होतो
 मारे होते मूम ने नि मार्यो होतो
 मारे होते बिननि तिननि उननि
 मार्यो होतो मारी होते

माज्जीमुतशक्की

सँगए

मूठकस्लिम

मूखातब

गाइब

में ने मार्यो होयगी हैव्हें हम ने नि मारे होंयने
 हैव्हें मूम ने नि मारे होंयने
 हैव्हें बिननि तिननि उननि
 मारे होंयने हैव्हें

इस्मह् अलियः

मारतु मारतो

मारतु मारते

माज्जीमअतूफ़मलैहि

मार मारकर मारके

मारकरके मारकरकर

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE
Present Doubtful

Singular.

Plural.

1. I may be beaten.

We may be beaten.

2. Thou mayest be beaten.

You may be beaten.

3. He may be beaten.

They may be beaten.

Perfect

1. I have been beaten.

We have been beaten.

2. Thou hast been beaten.

You have been beaten.

3. He has been beaten.

They have been beaten.

Perfect Doubtful

1. I may have been beaten.

We may have been beaten.

2. Thou mayest have been beaten.

You may have been beaten.

3. He may have been beaten.

They may have been beaten.

Participle Present,

Beating

Beating

Participle pterperfect,

Having beaten.

इस्मिफांइल

मारन वारी हारी

मारन वारे हारे

इस्मिमफ़उल

मार्यो मार्यो भयो

मारे मारे भये

मुस्तक़ विलिकरीव

मार न ने पर पे है कं मार्यो चाहतु है

सेगए मजहूल

मार्यो जानी मार्योनेबी

सेगए

वाहिद

हूल

जमय

मुस्तक़स्तिम

हो मं मार्यो जानु हो

हम मारे जात है

ग़ाइब

बह सो मार्यो जानु है

वे ते जारे जात है

मुश्वातय

तू तें मार्यो जानु है

तुम मारे जात ही

इस्तिमरारी

सेनए

मुस्तक़स्तिम

हो मं मार्यो जानु हो

हम मारे जात है

मुश्वातय

तू तें मार्यो जानु हो

तुम मारे जात है

ग़ाइब

पह सो मार्यो जानु हो

वे ते मारे जात है

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.**Participle Active.**

Beating.

Beating.

Participle Passive.

Beaten.

Beaten.

Future Prosimete.

About to beat.

IN THE PASSIVE VOICE.

To be beaten

Present Tense.

Singular.

Plural.

1. I am beaten.

We are beaten.

2. Thou art beaten.

You are beaten.

3. He is beaten.

They are beaten.

Imperfect.

1. I was then beaten.

We were then beaten.

2. Thou wast then beaten.

You were then beaten.

3. He was then beaten.

They were then beaten.

माज्जीमत्तक

वाह्य

अमर

संगे

मुत्कस्त्रिम
मुत्तावक
माइव

हीं में मार्यो गयी
तू तें मार्यो गयी
वह सो मार्यो गयी

हम मारे गये
तुम मारे गये
वे ते मारे गये

माज्जीकरीव

संगे

मुत्कस्त्रिम
मुत्तावक
गाइव

हीं में मार्यो गयोही
तू तें मार्यो गयी है
वह सो मार्यो गयी है

हम मारे गये हैं
तुम मारे गये ही
वे ते मारे गये हैं

माज्जीवईव

संगे

मुत्कस्त्रिम
मुत्तावक
गाइव

हीं में मार्यो गयो हो
तू तें मार्यो गयो हो
वह सो मार्यो गयो हो

हम मारे गये हे
तुम मारे गये हे
वे ते मारे गये है

मुस्तकविल

संगे

मुत्कस्त्रिम
मुत्तावक
गाइव

हीं में मार्यो जावगो जेहे
तू तें मार्यो जावगो जेहे
वह सो मार्यो जावगो जेहे

हम मारे जावगे जेहे
तुम मारे जावगे जेही
वे ते मारे जावगे जेहे

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.**Perfect Tense.**

Singular.

Plural.

- | | |
|----------------------|-------------------|
| 1. I was beaten. | We were beaten. |
| 2. Thou wast beaten. | You were beaten. |
| 3. He was beaten. | They were beaten. |

Preterperfect.

- | | |
|---------------------------|------------------------|
| 1. I have been beaten. | We have been beaten. |
| 2. Thou hast been beaten. | You have been beaten. |
| 3. He has been beaten. | They have been beaten. |

Pluperfect.

- | | |
|----------------------------|------------------------|
| 1. I had been beaten. | We had been beaten. |
| 2. Thou hadst been beaten. | You had been beaten. |
| 3. He had been beaten. | They have been beaten. |

Future.

- | | |
|-----------------------------------|--------------------------------|
| 1. I shall, or will be beaten. | We shall, or will be beaten. |
| 2. Thou shalt, or wilt be beaten. | You shall, or will be beaten. |
| 3. He shall or will be beaten. | They shall, or will be beaten. |

अमर

बाह्य

जम्

संगे

मृतकस्त्रिम

हौं में मार्योजातं जाऊं हम मारे जाय

मृषात्तव

तू तें मार्योजाय तुम मारे जात

ग्राह्य

वह सो मार्यो जाय वे ते मारे जाय

मुज़ारम

संगे

मृतकस्त्रिम

हौं में मार्योजातं जाऊं हम मारे जाय

मृषात्तव

तू तें मार्योजाय तुम मारे जात

ग्राह्य

वह सो मार्योजाय वे ते मारेजाय

मुज़ारममाजी

संगे

मृतकस्त्रिम

हौं हूं मार्योगयोहोउं हम मारे गये होंय

मृषात्तव

तू तें मार्योगयोहोंय तुम मारे गये होउ

ग्राह्य

वह सो मार्योगयोहोय वे ते मारे गये होंय

माजीमुतमन्ती

संगे

मृतकस्त्रिम

हौं में मार्योजातो हम मारे जाते

मृषात्तव

तू तें मार्योजातो तुम मारे जाते

ग्राह्य

वह सो मार्योजातो वे ते मारे जाते

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE. Imperative.

Singular.

1. Let me be beaten.
2. Be thou beaten.
3. Let him be beaten.

Plural.

- Let us be beaten.
 - Be you beaten.
 - Let them be beaten.
-

Aorist, or present Tense Subjunctive.

1. I may be beaten.

We may be beaten.

2. Thou mayest be beaten.

You may be beaten.

3. He may be beaten.

They may be beaten.

Preterperfect Subjunctive.

1. I may have been beaten.

We may have been
beaten.

2. Thou mayest have been
beaten.

You may have been
beaten.

3. He may have been beaten.

They may have been
beaten.

Imperfect Subjunctive.

1. I would, or might have, or
if I had been beaten.

We would, &c. been
beaten.

2. Thou wouldst, &c. been
beaten.

You would, &c. been
beaten.

3. He could, &c. been
beaten.

They would, &c. been
beaten.

हालिमुतशक्की

वाहिव		जमम
संगरे		
मुतकल्लिम	हीं में मार्योजातु होउं गो हैवही	हम मारे जात होयगे हैवहें
मुखातब	तू तें मार्योजातु हामयो हैवहो	तुम मारे जात होउगे हैवही
गाइब	वह सो मार्यो जातु होयगो हैवहें	वे ते मारेजात हीयगे हैवहें

माजीशरतीयः वर्द्धट्

संगरे		
मुतकल्लिम	हीं में मार्यो गयो होतु होती	हम मारेगये हत होते
मुखातब	तू तें मार्योगयोहोतु होती	तुम मारे गये होत होते
गाइब	वह सो मार्योगयो होत होती	वे ते मारे गये होत होते

माञ्चीमुतशक्की

संगरे		
मुतकल्लिम	हीं में मार्योमयो होउंगो हैवहें	हम मारे मये होयगे हैवहें
मुखातब	तू तें मार्योगयो होयगो हैवहें	तुम मारे गये होउगे हैवही
गाइब	वह सो मार्योगयो होयगो हैवहें	वे ते मारे गये होयगे हैवहें

इस्मिहा लियः

मार्योजातु मार्योजातो मार्योजातुमयो मारेजात भये मारे जाते भये

माजीमअतूफ़मलंहि

मार्योजा मार्योजाकर मार्योजाकं मार्योजाकरकं मार्योजाकरकर

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.**Present Doubtful.**

Singular.

Plural.

- | | |
|-----------------------------|--------------------------|
| 1. Perhaps I am beaten. | Perhaps we are beaten. |
| 2. Perhaps thou art beaten. | Perhaps you are beaten. |
| 3. Perhaps he is beaten. | Perhaps they are beaten. |

Perfect Conditional.

- | | |
|--|---------------------------------------|
| 1. I had, or might have been
beaten. | We had, or might have
been beaten. |
| 2. Thou hadst, or mightest
have been & c. | You had, &c. been
beaten. |
| 3. He had, or might have
beaten. | They had, &c. been
beaten. |

Perfect Doubtful.

- | | |
|---------------------------------|-------------------------------|
| 1. I may have been beaten. | We may have been
beaten. |
| 2. Thou mayest have been
&c. | You may have been
beaten. |
| 3. He may have been beaten. | They may have been
beaten. |

Participle Present.

Being beaten.

Being beaten.

Participle Preterperfect,

Having been beaten.

इस्मिफाइल

मार्यो जान बारो हारो

मारैजान बारे हारे

इस्मिफऊल

मार्योगयो भयो

मारैगये भये

मुस्तकवलिकरीव

मारैजान पर वे मार्योगयो चाहतु है

से.गुंए मभ्ररूपः

पहुंभतो पहुंभतो

संगुंए

बाहिव

हाल

जमघ

भूतकस्मिम

हो मे पहुंभतु हीं

हम पहुंभतु हीं

मुखातब

तू तें पहुंभतु है

तुम पहुंभतु हीं

गाइब

वह सो पहुंभतु है

वे ते पहुंभतु है

इस्तिमरारी

संगुंए

भूतकस्मिम

हो मे पहुंभतुहो

हम पहुंभतु है

मुखातब

तू तें पहुंभतु है

तुम पहुंभतु हीं

गाइब

वह सो पहुंभतु हो

वे ते पहुंभतु है

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.

Participle Active.

Being beaten.

Being beaten.

Participle Passive.

Been beaten.

Been beaten.

Future Proximate.

About to have been beaten.

ACTIVE VOICE.

To arrive.

Present Tense.

Singular.

Plural.

1. I am arriving.

We are arriving.

2. Thou art arriving.

You are arriving.

3. He is arriving.

They are arriving.

Imperfect.

1. I was then arriving.

We were then arriving.

2. Thou wast then arriving.

You were then
arriving.

3. He was then arriving.

They were then
arriving.

माञ्जीमुतलक

वाहिव
सँगए

जमम्

मुतकस्लिम
मुखात्ब
गाइब

हीं में पढ़्ण्यो
तू तें पढ़्ण्यो
वह सो पढ़्ण्यो

हम पढ़्णे
तुम पढ़्णे
वे ते पढ़्णे

माञ्जीकरीब

सँगए

मुतकस्लिम
मुखात्ब
गाइब

हीं में पढ़्ण्यो हों
तू तें पढ़्ण्यो है
वह सो पढ़्ण्यो है

हम पढ़्णे हें
तुम पढ़्णे ही
वे ते पढ़्णे हें

माञ्जीवईद

सँगए

मुतकस्लिम
मुखात्ब
गाइब

हीं में पढ़्ण्यो हो
तू तें पढ़्ण्यो हो
वह सो पढ़्ण्यो हो

हम पढ़्णे हें
तुम पढ़्णे हें
वे ते पढ़्णे हें

मुस्तकविल

सँगए

मुतकस्लिम
मुखात्ब
गाइब

हीं में पढ़्ण्यो पढ़्ण्यो
तू तें पढ़्ण्यो पढ़्ण्यो
वह सो पढ़्ण्यो पढ़्ण्यो

हम पढ़्ण्यो पढ़्ण्यो
तुम पढ़्ण्यो पढ़्ण्यो
वे ते पढ़्ण्यो पढ़्ण्यो

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE. Perfect Tense.

Singular.

Plural.

1. I arrived.

We arrived.

2. Thou arrivedst.

You arrived.

3. He arrived.

They arrived.

Preterperfect.

1. I have arrived.

We have arrived.

2. Thou hast arrived.

You have arrived.

3. He has arrived.

They have arrived.

Pluperfect.

1. I had arrived.

We had arrived.

2. Thou hadst arrived.

You had arrived.

3. He had arrived.

They had arrived.

Future.

1. I shall, or will arrive.

We shall, or will arrive.

2. Thou shalt, or wilt arrive.

You shall, or will
arrive.

3. He shall, or will arrive.

They shall, or will
arrive.

अमर

बाहि द

जमम

संगे

मुतकस्लिम
मुसातब
गाइब

हौं में पहुची
तू तें पहुचे
वह सो पहुचे

हम पहुचे
तुम पहुची
वे ते पहुचे

मुज़ारम

संगे

मुतकस्लिम
मुसातब
गाइब

हौं में पहुचीं
तू ते पहुचे
वह सो पहुचे

हम पहुचे
तुम पहुचीं
वे ते पहुचे

मेजारममाजी

संगे

मुतकस्लिम
मुसातब
गाइब

हौं में पहुच्चीहोउ
तू तें पहुच्ची होय
वह सो पहुच्चीहोय

हम पहुचे हौंय
तुम पहुचे होउ
वे ते पहुचे हौंय

माजीमुतमन्नी

संगे

मुकतस्लिम
मुसातब
गाइब

हौं में पहुचती
तू तें पहुचती
वह सो पहुचती

हम पहुचते
तुम पहुचते
वे ते पहुचते

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.**Imperative.**

Singular.

Plural.

1. Let me arrive.
2. Arrive thou.
3. Let him arrive.

- Let us arrive.
- Arrive you.
- Let them arrive.

Aorist, or Present Tense Subjunctive.

- | | |
|-------------------------------------|-----------------------------|
| 1. I arrive, or may arrive. | We arrive, or may arrive. |
| 2. Thou arrivest, or mayest Arrive. | You arrive, or may arrive. |
| 3. He arrives, or may arrive. | They arrive, or may arrive. |

Preterperfect Subjunctive

- | | |
|------------------------------|------------------------|
| 1. I may have arrived. | We may have arrived. |
| 2. Thou mayest have arrived. | You may have arrived. |
| 3. He may have arrived. | They may have arrived. |

Imperfect Subjunctive.

- | | |
|-------------------------------------|--------------------------|
| 1. I would, or might have, arrived. | We would, &c. arrived. |
| 2. Thou Wouldst, &c. arrived. | You would, &c. arrived. |
| 3. He could, &c. arrived. | They would, &c. arrived. |

ह. लिमुतशक्की

बाहिय
संगए

अमम

मुतकस्लिम	हौं में पहुंचतु होंउगी हैव्हौं	हम पहुंचत होंयगे हैव्है
मुस्रातब	तू तें पहुंचतु होयगी हैव्है	तुम पहुंचत होउगे हैव्हौ
गाइब	वह सो पहुंचतु होयगी हैव्है	वे ते पहुंचत होंयगे हैव्है

माज्जीशरतीयः वईद

संगए

मुतकस्लिम	हौं में पहुंच्योहोती	हम पहुंचे होते
मुस्रातब	तू तें पहुंच्योहोती	तुम पहुंचे होते
गाइब	वह सो पहुंच्योहोती	वे ते पहुंचे होते

माज्जीमुतशक्की

संगए

मुतकस्लिम	हौं में पहुंच्यो होउंगी हैव्हौं	हम पहुंचे होंयगे हैव्है
मुस्रातब	तू तें पहुंच्यो होयगी हैव्है	तुम पहुंचे होउगे हैव्हौ
गाइब	वह सो पहुंच्यो होयगी हैव्है	वे ते पहुंचे होंयगे हैव्है

इस्मिह. लियः

पहुंचतु पहुंचती

पहुंच पहुंचे

माज्जीमम्लतूफ़म्लैहि

पहुंच पहुंचकर पहुंचके पहुंचकरके पहुंचकरकर

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Present Doubtful

Singular.

Plural.

1. I may be arriving.

We may be arriving.

2. Thou mayest be arriving.

You may be arriving.

3. He may be arriving.

They may be arriving.

Perfect Conditional.

1. I had, or might have arrived.

We had, or might have arrived.

2. Thou hadst, or mightest have arrived.

You had, or might have arrived.

3. He had, or might have arrived.

They had, or might have arrived.

Perfect Doubtful

1. I may have arrived.

We may have arrived

2. Thou mayest have arrived.

You may have arrived

3. He may have arrived.

They may have arrived

Participle Present

Arriving

Arriving

Participle Present Perfect

Having arrived



इस्मिफाइल

पहुचनि वारी हारी

पहुचनि वारे हारे

इस्मिमफऊल

पहुंभ्यो भयो

पहुंभे भये

मुस्तकविलिकरीब

पहुचवे पर पे हे पहुंभ्यो चाहतु हे

संगे मभरूफ़

पहुंचावनीं पहुंचेवो

बाह्रद संगे	हाम	जमम
मूतकस्मिम	हीं में पहुंचावतु हीं	हम पहुंचावत हे
मुखातब	तू तें पहुंचावतु हे	तुम पहुंचावत ही
गाइब	वह सो पहुंचावतु हे	वे ते पहुंचावत हे

संगे

मूतकस्मिम	हीं में पहुंचावतुही	हम पहुंचावत हे
मुखातब	तू तें पहुंचावतु हो	तुम पहुंचावत हे
गाइब	वह सो पहुंचवतु हो	वे ते पहुंचावत हे

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.**Participle Active.**

Arriving.

Arriving.

Arrived.

Participle Passive.

Arrived.

Future Proximate.

About to arrive.

**CONJUGATION OF THE VERB ACTIVE, IN THE
ACTIVE VOICE.**

To reach, or to cause to arrive.

Present Tense.

Singular.

Plural.

1. I am reaching.

We are reaching.

2. Thou art reaching.

You are reaching.

3. He is reaching

They are reaching.

Imperfect.

1. I was reaching.

We were reaching.

2. Thou wast reaching.

You were reaching.

3. He was reaching.

They were reaching.

माञ्जीमुतलक

सँगए

बाहिव

जमघ

मुतकस्तिम
मुखात्ब
गाइब

में ने पहुंभायी
तू तें ने पहुंभायी
वाने वाने विन तिन
उन पहुंभायी

हम ने नि पहुंभाए
तुम ने नि पहुंभाए
विननि तिननि उननि पहुंभाए

माञ्जीकरीव

सँगए

मुतकस्तिम
मुखात्ब

में ने पहुंभायी है
तू तें ने पहुंभायी है

हम ने नि पहुंभाए हैं
तिनति विननि उननि पहुंभाए हैं

माञ्जीवईद

सँगए

मुतकस्तिम
मुखात्ब
गाइब

में ने पहुंभायी हो
तू तें ने पहुंभायी हो
वाने वाने विन तिन
उन पहुंभायी हो

हम ने नि पहुंभाए हे
तुम ने नि पहुंभाए हे
विननि तिननि उननि पहुंभाए हे

मुस्तकविल

सँगए

मुतकस्तिम

हों में पहुंभाऊंगो पहुंभो
हों

हम पहुं भावंगे चंहें

मुखात्ब

तू तें पहुंभावंगो पहुंभे
हैं

तुम पहुं भाओगे चंहो

गाइब

बह घो पहुंभावंगो
पहुंभे हैं

वे ते पहुं भावंगे चंहें

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Perfect Tense.

Singular.

1. I reached.
2. Thou reached.
3. He reached.

Plural.

- We reached.
 You reached.
 They reached.

Preterperfect.

1. I have reached.
2. Thou hast reached.
3. He has reached.

- We have reached.
 You have reached.
 They have reached.

Pluperfect.

1. I had reached.
2. Thou hadst reached.
3. He had reached.

- We had reached.
 You had reached.
 They had reached.

Future.

1. I shall, or will reach.

We shall, or will reach.

2. Thou shalt, or wilt reach.

You shall, or will reach.

3. He shall, or will reach.

They shall, or will reach.

माजीमुतलक

संगए

बाहिय

मुतकस्लिम
मुखातब
गाइब

जमअ

मैं ने पहुचायी	हम ने नि पहुचाए
तू तें ने पहुचायी	तुम ने नि पहुचाए
वाने ताने विन तिन	विननि तिननि उननि पहुचाए
उन पहुचायी	

माजीकरीव

संगए

मुतकस्लिम
मुखातब

मैं ने पहुचायी है	हम ने नि पहुचाए है
तू तें ने पहुचायी है	तिनति विननि उननि पहुचाए है

माजीदईद

संगए

मुतकस्लिम
मुखातब
गाइब

मैं ने पहुचायी हो	हम ने नि पहुचाए हे
तू तें ने पहुचायी हो	तुम ने नि पहुचाए हे
वाने ताने विन तिन	विननि तिननि उननि पहुचाए हे
उन पहुचायी हो	

मुस्तकविल

संगए

मुतकस्लिम
मुखातब
गाइब

हो मैं पहुचाऊंगी पढ़ूँगी	हम पढ़ूँ पाबंगे चंहे
हो	
तू तें पहुचाबंगी पढ़ूँगे	तुम पढ़ूँ पाबंगे चंहे
है	
वह छो पहुचाबंगी	वे ते पढ़ूँ पाबंगे चंहे
पढ़ूँगे है	

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE. Perfect Tense.

Singular.

Plural.

1. I reached.

We reached.

2. Thou reached.

You reached.

3. He reached.

They reached.

Preterperfect.

1. I have reached.

We have reached.

2. Thou hast reached.

You have reached.

3. He has reached.

They have reached.

Pluperfect.

1. I had reached.

We had reached.

2. Thou hadst reached.

You had reached.

3. He had reached.

They had reached.

Future.

1. I shall, or will reach.

We shall, or will reach.

2. Thou shalt, or wilt reach.

You shall, or will reach.

3. He shall, or will reach.

They shall, or will reach.

अमर

वाह्, व

अमर

संगे

मुत्कस्त्रिम

हौं मैं पहुँचा ऊँ षीं

हम पहुँचायें

मुखात्तव

तू तैं पहुँचावैं

तुम पहुँचावो की षीं

शाश्च

बहूँ सोँ पहुँचावैं

वे ते पहुँचावैं

मुज्जारम

संगे

मुत्कस्त्रिम

हौं मैं पहुँचा ऊँ षीं

हम पहुँचावैं

मुखात्तव

तू तैं पहुँचावैं

तुम पहुँचावो की षीं

शाश्च

बहूँ सोँ पहुँचावैं

वे ते पहुँचावैं

मुज्जारममाञ्जी

संगे

मुत्कस्त्रिम

मैं ने पहुँचायो होय

हम ने नि पहुँचाये होय

मुखात्तव

तू तैं ने पहुँचायो होय

तुम ने नि पहुँचाये होय

शाश्च

बाने ताने बिन तिम उन
पहुँचायो होयबिननि तिननि उननि
पहुँचाये होय

माञ्जीमुत्तमन्नी

संगे

मुत्कस्त्रिम

हौं मैं पहुँचावती

हम पहुँचावते

मुखात्तव

तू तैं पहुँचावती

तुम पहुँचावते

शाश्च

बहूँ सोँ पहुँचावती

वे ते पहुँचावते

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Imperative

Singular

1. Let me teach.
2. Reach thou.
3. Let him teach.

Plural.

- Let us teach.
- Reach you.
- Let them teach.

Aorist, or present tense subjunctive.

1. I may teach.
2. Thou mayest teach
3. He may teach.

- We may teach.
- You may teach.
- They may teach.

1. I may have reached.
2. Thou mayest have reached.
3. He may have reached.

- We may have reached.
- You may have reached.
- They may have reached.

Imperfect Subjunctive.

1. I would, or might have or (if) I had reached.
2. Thou &c. reached.
3. He would, &c. reached.

- We would, &c. reached.
- You would &c reached.
- They would, &c. reached.

हालिमुतशक्की

वाहिद

भमघ

संगए

मुतकस्लिम
मुस्लातब
गाइब

हौं मे पढ़ुंभावतु हौंउगी हैवहै हम पढ़ुंभावत हौंमगे हैवहै
तू तें पढ़ुंभावतु होयगी हैवहै तुम पढ़ुंभावत होउगे हैवहौ
बह सो पढ़ुंभावतु होयगी है है बे ते पढ़ुंभावत हौंमगे है है

माज्जीशरतीयः वईद

संगए

मुतकस्लिम
मुस्लातब
गाइब

मैं ने पढ़ुंभायी होती हम ने नि पढ़ुंभाये होते
तू तें ने पढ़ुंभायी होती तुम ने नि पढ़ुंभाये होते
बाने ताने बिन तिन उन बिननि तिननि उननि
पढ़ुंभायी होती पढ़ुंभाये होते

माज्जीमुतशक्की

संगए

मुतकस्लिम
मुस्लातब
गाइब

मैं ने पढ़ुंभायी होयगी हैवहै हम ने नि पढ़ुंभाये
हौंमगे हैवहै
तू तें पढ़ुंभायी होयगी हैवहै तुम ने नि पढ़ुंभाये
हौंमगे हैवहै
बाने ताने बिन तिन उन बिननि तिननि उननि
पढ़ुंभायी होयगी हैवहै पढ़ुंभाये होयगे हैवहै

इस्मिह्हालियः

पढ़ुंभावतु सी
पढ़ुंभाव

पढ़ुंभावतु भयो पढ़ुंभावतु कं पढ़ुंभावते भये
माज्जीमअतूफअलैहि
पढ़ुंभावकर पढ़ुंभावकरकं पढ़ुंभावकरकर

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE. Present Doubtful.

Singular.

Plural.

- | | |
|-----------------------------|-----------------------|
| 1. I may be reaching. | We may be reaching. |
| 2. Thou mayest be reaching. | You may be reaching. |
| 3. He may be reaching. | They may be reaching. |
-

Perfect Conditional.

- | | |
|---|-------------------------------------|
| 1. I had, or might have
reached. | We had, or might have
reached. |
| 2. Thou hadst, or mightest
have reached. | You had, or might have
reached. |
| 3. he had, or might have
reached. | They had, or might
have reached. |
-

Perfect Doubtful.

- | | |
|---------------------------------|------------------------|
| 1. I may have reached. | We may have reached. |
| 2. Thou mayest have
reached. | You may have reached. |
| 3. He may have reached. | They may have reached. |
-

Participle Present.

Reaching.

Reaching.

Participle Preterperfect.

Having reached.

इस्मिफाइल

पहुंभावन धारी हारी

पहुंभावन बारे हारे

इस्मिमफ़ऊल

पहुंभ्यो पहुंभ्यो भयी

पहुंभाये भये

मुस्तक़विलिकरीव

पहुंभावन पर वे हे

पहुंभायो चाहतु है

सैंगऐ मझरुफ़

मारसकनो मारसकधो

सैंगऐ

वाहिद

हाल

जमघ

मुसकन्सिम
मुखातब
ग़ाइवहो में मार सकतु हो
तू तें मार सकतु है
वह सो मार सकतु हैहम मार सकत हैं
तुम मार सकत हो
वे ते मार सकत हैं

इस्तिमरारी

सैंगऐ

मुसकन्सिम
मुखातब
ग़ाइवहो में मार सकतु हो
तू तें मार सकतु हो
वह सो मार सकतु होहम मार सकत हे
तुम मार सकत हे
वे ते मार सकत हे

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.**Participle Active.**

Reaching.

Reaching.

Participle Passive.

Reached.

Reached.

Future Proximate.

About to reach.

ACTIVE VOICE.

To be able to beat.

Present Tense.

Singular.

Plural.

1. I am able to beat.

We are able to beat.

2. Thou art able to beat.

You are able to beat.

3. He is able to beat.

They are able to beat.

Imperfect.

1. I could beat or was able to beat.

We could &c. beat.

2. Thou couldst &c, beat.

You could &c. beat.

3. He could &c. beat.

They could &c. beat.

माजीमुतलक

संगे

याहि द

जमम

मुतकस्लिम
मुखातब
याइव

हीं में मार सकयी
तू तें मार सकयी
बह सो मार सकयी

हम मार सके
तुम मार सके
वे ते मार सके

माजीकरीव

संगे

मुतकस्लिम

हीं में मार सकयी हों

हम मार सके हैं

मुखातब

तू तें मार सकयी है

तुम मार सके ही

याइव

बह सो मार सकयी है

वे ते मार सके हैं

माजीयई द

संगे

मुतकस्लिम

हीं में मार सकयी हो

हम मार सके हे

मुखातब

तू तें मार सकयी हो

तुम मार सके हे

याइव

बह सो मार सकयी हो

वे ते मार सके हे

मुस्तकविल

संगे

मुतकस्लिम

हीं में मार सकयी सकिहीं

हम मार सकये सकिहे

मुखातब

तू तें मार सकयी सकिहे

तुम मार सकीगे सकिही

याइव

बह सो मार सकयी सकिहे

वे ते मार सकीगे सकिहे

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE. Perfect Tense.

Singular.

Plural.

- | | |
|---------------------|------------------|
| 1. I could beat. | We could beat. |
| 2. Thou could beat. | You could beat. |
| 3. He could beat. | They could beat. |
-

Preterperfect.

- | | |
|---------------------------------|------------------------------|
| 1. I have been able to beat. | We have been able to beat |
| 2. Thou hast been able to beat. | You have been able to beat. |
| 3. He has been able to beat. | They have been able to beat. |
-

Pluperfect.

- | | |
|----------------------------------|-----------------------------|
| 1. I had been able to beat. | We had been able to beat. |
| 2. Thou hadst been able to beat. | You had been able to beat. |
| 3. He had been able to beat. | They had been able to beat. |
-

Future.

- | | |
|---|-------------------------------------|
| 1. I shall, or will be able to beat. | We shall, or will be able to beat. |
| 2. Thou shalt, or wilt be able to beat. | You shall, &c be able to beat. |
| 3. He shall, or will be able to beat. | They shall, &c. to be able to beat. |

अमर

याहिद

जमम्

मुञ्जारञ्ज

सँगए

मुतकस्लिम	हों में मार सकौं	हम मार सके
मुखातब	तू तें मार सकी	तुम मार सकी
शाइय	वह सो मार सके	वे ते मार सके

माञ्जीमुतमन्नी

सँगए

मुतकस्लिम	हों में मार सकती	हम मार सकते
मुखातब	तू तें मार सकती	तुम मार सकते
शाइय	वर सो मार सकती	वे ते मार सकते

हालिमुतशक्की

सँगए

मुतकस्लिम	हों में मारसकतु होंगो हैव्हे	हम मारसकत होंगो हैव्हे
मुखातब	तू तें मार सकतु होयगी हैव्हे	तुम मारसकत होंगो हैव्हे
शाइय	वह सो मार सकतु होयगी	वे ते मार सकत होंगो हैव्हे

६३६

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.**Imperative.**

Singular.

Plural.

Aorist &c.

- | | |
|---------------------------------|---------------------------|
| 1. I may be able to beat. | We may be able to beat. |
| 2. Thou mayest be able to beat. | You may be able to beat. |
| 3. He may be able to beat. | They may be able to beat. |
-

Imperfect Subjunctive.

- | | |
|--|----------------------------------|
| 1. I may have been able to beat. | We may have been able to beat. |
| 2. Thou mayest have been able to beat. | You may have been able to beat. |
| 3. He may have been able to beat. | They may have been able to beat. |
-

Preterperfect Subjunctive.

गृधत नामः

गलत	सही.ह.	सफा	सतन
का	को	४	८
का	कों	४	१०
के	के	५	१३
पहुँठ पहुँते	पहुँचते पहुँचते	३०	१८

ERRATA.

Page 9. 2d person Sing. of Aorist, read thou beest, for thou hast.

10 pl. of Participle present. read Being, for being.

22 Line 1st, read Active for Passive.

23 Line 1st, read Active for Passive.

25 3d Person Sing. of Emperfect Subjunctive, read He would, for He could.

KITAB COLLEGE FORT WILLIAM
SEAL

प्रकाश नाममाला

[मियॉँ नूर कृत]

•
•

श्री गणेशायनम्

प्रकाश नाममाला लिष्यते ॥ मियाँ नूर कृत भाषा ॥

दोहा ॥

प्रथम नमो परब्रह्म कौ ॥ जो परमात्म ईस ॥
नामन की माला करौ ॥ सुमिरी जस जगदीश ॥१॥
आल रसूल कबूल कुल ॥ जग में जागति जोत ॥
दान वली भुज वल अली ॥ कीनी वंस उदोत ॥२॥
पान जहां नव पंड मै ॥ प्रगट बहादुर पान ॥
जाके दान क़पाँन कौ ॥ साहि करत सनमान ॥३॥
पाँन जहा बहादुर वली । जफर जंग जिह नाम ।
सिपहदार पांनंद तिह । जीते अरि संग्राम ॥४॥
साहि सराहत सर्वदा । जानत सब संसार ।
सिपहदार पां कौ सुजस । पारावार सुपार ॥५॥
सिपहदार को बहादुर । ताको नादिर नूर ।
कादर करयो उदार वर । कवि कुल जीवनिमूर ॥६॥
पोथी ग्रंथ कथानि कौ । जानत सकल विधान ।
मूरै रची क़रतार को । दाता सुघर सुजान ॥७॥
ग्यान दान विनु ग्यान कौ । अधिकारी नहि कोइ ।
नूर नाम ही दाम की । ज्यौ परमारथ होइ ॥८॥
परमारथ उपगार विनु । परमारथ न लहाहि ।
नूर जनम ताकौ सफल । जिह अस बोल रहाहि ॥९॥
यातै यह संछेप सौ । माला रची बनाइ ॥
नूर नाम जग में अमर । पढ़त चित्त बिरमाइ ॥१०॥

ईश्वर नाम :

परब्रह्म पूरन पुरुष । परमेश्वर परधान ॥
परं जीति अविगत अलष । अविनासी भगवान ॥११॥
निर्विकार निर्गम विभु । निरंजन जगदीश ॥
सर्व दरसी सरवज्ञ अज । नाथ चिदानन्द ईस ॥१२॥
जाकी आदि न अंत है । नहि आकार न रूप ॥
ताकौ नाम कहा कही । बिरद अनूप अनूप ॥१३॥
मैं अजान जानौ नहीं । एक नाम कौ ग्यान ।
अपने मन की सुद्धि की । दोहा बुद्धि प्रवान ॥१४॥
बालक हू सम कै कछू । पढ़ै जु या कौ नाम ।
अमर कोस तै काढ़ि कै । कीनी प्रगट सुदाम ॥१५॥

सप्रह सं चवन बरस । विजै वस्मि इपु मास ।
 नूर नाम माला करी । भापा नाम प्रकास ॥१६॥
 पहलै पीछै नाम कौ मोहि न कछु बिचार
 जैसे समझपी बित्त में । तैसे करी उचार ॥१७॥

कृष्ण नाम :

विष्णु नारायण क्रिष्ण हरि वंकुठ गोबिन्द ।
 माधव रामोदर स्वभू । हंघ्रा वर्ज उर्वेद ॥१८॥
 चक्रपाणि श्री चतुर्भुज । पद्म नाम वैश्यादि ।
 कूटम जूत विश्वम्भर । जनार्दन कंसारि ॥१९॥
 विष्वक्सेन त्रिविक्रम । ह्यपी केस विष्व रूप ।
 मुरु मर्दन ह मुकुन्द सी । नरतक सुमनूष ॥२०॥
 श्री पति पुरुषोत्तम बिभुः । गरुडभुज जसघायि ॥
 विष्टरधवा अधोक्षजः ॥ बामुदेव जल सायि ॥२१॥
 मधुरिपु अश्वतु सागर । खीरि पुंडरीकाक्षि ॥
 पीठाबर बनमाल सी श्री वस्य साधन साक्षि ॥२२॥
 केसव वसि ष्णंसी बहुरि । यग्य पुरुष सू पुरान ॥
 पुत्र प्रगट चतुर्वेद की । मानक दुंदभिजान ॥२३॥

तीर्थंकर नाम :

दिनायक सर्वज्ञ जित । बीतराय भरदंत ।
 अक्षय बादी मारजित । धर्मराज मुनि संत ॥२४॥
 पद्मिन्नः दसवत सुगत । बुद्ध लोक जित जान ।
 छास्ता श्रीधन तबागत । समत भद्र भगवान ॥२५॥

गौतम नाम :

मायावेबीसृत् प्रमट । सीधोदनि रबिबीर ॥
 साक्य सिध सर्वाथ सिध । साभ्य मुनि मति धीर ॥२६॥

कृष्ण के आयुध नाम :

हरि कौस्तुभ मणि पांच अन्य संप सुवर्धन शक्र ।
 नंदक प्रति कौमोदकी गदा बसिष्ट अयक ॥२७॥

गरुण नाम :

मरुमानु ताक्षः मरुड ॥ वैनतेय खगर्भ ।
 गांतक श्री नागभुक् सुपर्भरथ, जमदोष ॥२८॥

वलिभद्र नाम :

हृत्तघर अक्ष अश्वत्थायज । रेवतीरमभ राम ॥
 प्रलंबध्म बलदेव सो । मुसली पानक काम ॥२९॥

कालिन्द्री भेदन बलः । संकर्षण सीर पाणि ॥
रौहिणोय तालांक सो ॥ नीलांबर तिहजाणि ॥३०॥

कमला नामः

श्रीपद्मा पद्मालया रमाभागंवीमा सु ॥
लोक जनिनी छीरा विधजा विश्नुप्रिया इंदिरा सू ॥३१॥

कामदेव नामः

काम मदन मनमथ समर । मकरध्वज सुअनंग ॥
दप्पक मन भव आत्मभू । पुहप वापु बहुरंग ॥३२॥
मनसिज रतिपति प्रद्युम्न । मीनकेतु अरु मार ॥
मैनअन्य-नज ब्रह्म सू विरही जननि विदारि ॥३३॥
संवरारि कंदर्प पुनि नाम पंच सरताहि ॥
वितुन वहरि भूप केतु । अनुसुद्ध उपापति आहि ॥३४॥

काम के पंचवानः

मोह उचाटन वसिकरन उनमद ताप अपार ॥
पंच वान हैं काम के तीनि लोक व्योहार ॥३५॥

पितामह नामः

ब्रह्मा चतुरानन दुहिणः आत्मभू सुर जेष्ट ॥
स्रष्टा वेधा विधाता । प्रजापति परमेष्ट ॥३६॥
विवि विरंचि कमलासन । अब्ज जोनि लोकेश ॥
हिरण गर्भ श्री स्वयं भूः विश्वसृज पितामहेश ॥३७॥
धिपण भिपण अज कमल भूः वाहनहंस वपान ॥
सुता सारदा पुत्र तिहि नारद प्रगट प्रवान ॥३८॥

मानसीक पुत्र ब्रह्मा काः

सनक सनंदन सनातन सनत कुमार विचार ।
ब्रह्मा सुत वैवात्रि कहि मानसीक एच्यार ॥३९॥

महादेव नामः

शंभु ईश शिव विश्वपति । यूलोभव ईशान ॥
शंकर ईश्वर शर्व मृड । स्थाणु रुद्र सोई जान ॥४०॥
चंद्र शिपर मु गिरीश पुनि ॥ भूतेश्वर सर्वज्ञः ॥
कपाल नतू प्रथमात्रिपति । हर वृषभध्वजभर्ग ॥४१॥
व्योम केस अंबकरिपुः । कृतुचर्मि मिन कंब ॥
नील महेश्वर ममर हर गंगावर श्री कंब ॥४२॥
पंड परमृ मृत्यंजयः । कृति वामा निषिचिष्ट ॥
विश्वोचन त्रिपुरानकः त्रिवृक नंदु प्रनिष्ट ॥४३॥

कृशानुरेता घूर्बंटी विरुपाक्षिप्रौ वामा ।
 पंच यक्ष्य ग्रहिवृष्ण पुनि उग्र उमापति नाम ॥४४॥
 नन्दकेदवर प्रमेयेष्ट पुनि नोल लोहित त्रिपुरारि ॥
 जटो पिनाका कपर्दी विदवनाथ उर धारि ॥४५॥
 जटा जूट हर कपर्दः । अजगव धनुष पिनाक ।
 प्रथमा जानतु पारपद । अष्टसिद्धि सिद्धि बाक ॥४६॥

अष्ट सिद्धि के नाम.

अग्निमा महिमा सविमा । गरिमा प्राप्ति प्रकाम. ।
 यसी करन मर ईसता अष्ट सिद्धि के नाम ॥४७॥
 मूति विभूति सु ऐश्वर्यं । अष्ट भांति सिद्धि सर्व ॥
 हा हा हू हू धादि ई । देवन के गर्धर्व ॥४८॥

नवनिधि के नाम:

महा पद्म श्री पद्म पुनि कल्प मकर मुकंद ॥
 धस्र वर्च धर मोस इक धर इक कहियत कुंभ ॥४९॥

पार्वती नाम:

गौरी गिरिजा ईश्वरी स्वरी चण्डिका मातु ।
 उमा मपर्णा भैरवी चामुंडा विष्णुत ॥५०॥
 सर्वमगसा अंबिका सर्वपायी दुर्गा
 सुमेनकात्मजा भारजा कर्म मूसी कहि छासु ॥५१॥

सत्तमाता नाम:

वंदनवी प्राह्णी धाराहीमाहेश्वरिब्रह्मिनि :
 चामुंडा कौमारिका मातरि सप्त बपानि ॥५२॥

गणेश नाम:

विन्नायक सु गणाधिप । वृषमातुर एक दत्त ॥
 लंबोधर हेरव पुनि गनपति गिरिजातंत ॥५३॥
 भूपक धाहन शिवतनय कहै गजानन ताहि ।
 फरस पानि सु गनेश है विष्णु बिनाशन आहि ॥५४॥

स्यामि कार्तिक नाम

महसेन सरअन्मगूह । वारकजित सु कुमार ।
 दायि धाहन श्री क्षक्ति धर बाहु लेय सुविचार ॥५५॥
 पार्वती नन्दन अग्नि भूः । सेनानी सुविधाय ।
 स्कंध पद्मानन मानिपट । फीच दाहण हमाप ॥५६॥

स्वर्ग नाम:

दिव द्ये प्रथम नाक स्वः । त्रिदसालय सुरलोक ।
 स्वर्ग त्रिविष्टप धो बहुरि । त्रिदिवः सोई सुर प्रोक ॥५७॥

इंद्र नामः

जिशु पुरंदर, तनी पति, सुरपति, सूनामान,
 जमभेदी, स्वचो वृषा । बाल राति मस्त्वानि ॥१५॥
 वास्तोपति, वृद्धिश्वा, सुनासीर, गतमन्य ॥
 सहश्रादि बुद्धिचयन पुनि जिह्वाहृणपर्वन्व ॥१६॥
 कोशिक वासव वृषहा प्राण्डल तिद्धिमान
 गक पाकनागन बहुरि मधय विडोका मान ॥१७॥
 लेखपृंभ संकुंदनो । हरिह्य कुलभित होर ॥
 तुरापाट नमुचिदिषा दिनासपनी ह सोर ॥१८॥
 हे गुराट पुरदूत पुनि शतकुतु जग्यनिधान ॥
 पुन पाक शाननि प्रथम द्वितीय अर्धत ध्यान ॥१९॥

इंद्रणी नामः

इंद्राणी नू पुनोमजा । गनी नाम पुनि नाम ॥
 वैजयंत प्रासाद हे । मरावती विलास ॥२०॥

ऐरापति नामः

ऐरावत ऐरावणो प्रथ वल्लभो जानि ।
 इंद्र अन्न भातंग हे व्योम जान सुविमानि ॥२१॥
 ह्य उच्चैश्च इंद्र को । भातलि जानहु नूत ॥
 पुष्कर रथ नंदन सु धन । सुधर्माधिपति रूप ॥२२॥

वज्रनामः

वज्र ह्लादिनी कुलिश पवि । भिदुर अर्शानि निघति ।
 दंभोलिः स्वह संवद । शतकोटि उपपात ॥२३॥

देवता नामः

देव अमर निर्जर विबुध । सुमनस श्री गोवाणि ।
 त्रिदिवेश त्रिदस दिवाकसः दिविपद स्वर स्वपवाणि ॥२४॥
 अदित नन्द लेपा अवर आदित्य आदित्य ॥
 रिभु अस्त्रप्त अमृतांशसः वृंदारक दैवत्य ॥२५॥
 आग्निजिह्व ह विमानगत । कृतुभुंजन अति श्रोप ॥
 दानवारि वहिर्मुपा । रहत दिष्टि आलोप ॥२६॥

गण देवता नामः

आदित्य १२ विश्व १३ वसु ६ तुपित ६६ पुनि ॥
 भास्वर अनिला ४६ जानि । महाराजिक २२ साध्या—
 १२ रुद्रा ११ गण देवता वपानि

वस देव जोनि नामः

विद्याधर ३१ मंघवं २ जस ३ अक्षर ४ राक्षस ५ सिद्ध ६ ॥
क्रिन् ७ गूहाक ८ भूष ९ पुनि । अक्षविद्या १० दशविद्ध ॥७१॥

देवसभावासुमेर नाम :

देव सभा सोई सुधर्मा नारद सुर रिष नेम ।
मेर सुमेर सुरायल रत्न सानु गिर हेम ॥७२॥

दैत्य नाम :

इन्द्रारि : वानव असुर । दनुज : पूबंदेव ॥
दितिसुत सुरद्वेष दैत्य । पुनि सुद्रु सिष्य दैत्येय ॥७३॥

अमृत वा कल्प वृक्ष नाम :

अमो अमृत पीयूष मवृ । सुधा मयूष बवान ॥
हरि अम्बन मंवार पुनि पार जात सतान ॥७४॥

अप्सरा नाम :

सुर बेख्या उर्बंसि मुषा । कई अप्सरा नाम ॥
बहुरि पृतापो मेनिका । रंभा उर्बंसि भाम ॥७५॥
पंच पोषा इतिनोत्तमा । बहू सुकेसो तीम ॥
सप्त भाति ए जानिए । बसति सुरन कै होय ॥७६॥
अश्विनो दस्रो बहुरि नासत्यो सुर वंशः ॥
घ्राण देव आश्विनेय पुनि । शोऊ पीर अभेद ॥७७॥

अग्नि नाम :

अग्नि अग्नि वेदवानरः ज्वलन हुताशन जीव ॥
जातवेद जल जोनि हरि । यामुसपा बहनोद ॥७८॥
सोषिष्केस उपरुंधः । प्रागयास पूहुरभानु ।
पावक पनस पनजयः निरंर धुरु कृगानु ॥७९॥
त्रिभ भानु दमुना बहिबीत होन । विषानान ।
हिरण्यरेता हुतभुज. यष्टाविपरवान ॥८०॥
असु मूषः सुषमा बहुरि । बिभावगु, रोहितादन ॥
कूपीट जोनि तनून पानु । कृत्न बरंमा जामु ॥८१॥
समी गर्भं स्वाहारमण गृषि रुहिरे तिह नाम ।
वृषा कृषि हृष्य बाहनः गप्य विरु अभितम ॥८२॥
बहना पिता माता अरुषि स्वाहा स्वो हिंड मग्नः ।
दक्षिणाग्नि गार्हपत्य पाह बनीन त्रय अग्नि ॥८३॥

अग्नि विद्या नाम :

अप्यं हेतु उगता अर्धुं कंता विद्या अगानि ॥
बदवानल बहया प्रीरं दद वागानन जानि ॥८४॥

धूवावा अंगार नाम :

धूम भंग श्री सिपध्वज धूवा नाम वपान ।
कहै फुलिग रु अग्नि कण अंगार न परवान ॥८५॥

यमराज नाम :

धम्मराज्य श्री पितृ पति : समवर्षी की नाश
अंतक काल फिनाक यम सहपध्वज हे तास ॥८६॥
वैवस्वत नर दंडधर आधदेव जु कतांत ।
समनी यमुना आता यो प्रेतराज सुवृतात ॥८७॥

राक्षस नाम :

राक्षस असुर रात्रि चर क्रव्यातः क्रव्याद ।
कर्पा सुत निरुपात्मजः । जातुधान दुर्नाद ॥८८॥
जातु रक्षसी पुन्यजग कर्धुर प्रासुर होइ ।
नैस्ति कोणप असुरूप रात्रि चर हे सोइ ॥८९॥

वरुण नाम :

वरुण याद सांपति सोई । पासी जलचर ईश ।
बहुरि प्रनेता आप पति नूर कहा कविईश ॥९०॥

पीन नाम :

वायु स्वसन गारुत मरुत पवन अनिल पवमान ।
गंधवाह पुनि गंध वह नभसुत अरु जगप्रान ॥९१॥
वात प्रभंजन आसुग पृथदश्व बहुरि समीर ।
मातरिश्वा श्रीस्पर्शन कहै सदागति धीर ॥९२॥

पांच प्राण नाम :

हिरदै प्राण १ अपान २ गुद मंडल नाभि समान ३ ।
कवदेसउ हानहै ४ सर्व शरीरग व्यान ५ ॥९३॥

शीघ्र नाम :

शीघ्र चपल द्रुत तूर्ण लघु अविलंबित उत्ताल ।
जव सत्वर क्षर क्षिप्र अरु आसुफटति अति चाल ॥९४॥

किन्नर नाम :

रहस्पद तुरसी तुरीय तुरत चलन के नाम । *
किन्नर किंपुरुष मयु । तुरग वदन अभिराम ॥९५॥

*हस्तलिखित प्रति में भी दोहे का केवल एक ही चरण है । दूसरा चरण नहीं है । किन्तु यथार्थ में ऐसा नहीं है क्योंकि एक चरण 'शीघ्र नाम' के साथ ही रहना चाहिए और 'किन्नर नाम' द्वितीय चरण में आरम्भ होते हैं । यह एक शैली दीखती है ।

प्रति नाम:

प्रतिपद्य भर प्रति वेति नृप । प्रतिमात्र उद्गाढ ॥
निर्भर सीध नितास दृढ़ पकान्त सोई गाढ ॥१६६॥

निरंतर नाम:

प्रभोक्षण सत्तत सश्वत् विरत प्रमिससो निरय ।
प्रजस्य प्रस्थात प्रनारत । प्रनवरत प्रभु वित्त ॥१७॥

कुबेर नाम.

राज्य प्रबकसपा नर बाहुन किनरेस ।
धनद मनुष्य धर्मा बहुरि थोद पुष्यजनसे ॥१६॥
यदा राट पीतस्य पुनि धैधवण हजुरुहंत ।
एक पिग यदा एलमित । धनवति नाम सतुंष ॥१६॥
धनद उद्यानमु चैत्रस्य नस नूयर सुत जान ।
कैसास पान प्रतिकापुरी । पुष्पक ताहि बिवान* ॥१७॥
इति स्वर्गं वर्ग समाप्त :

प्रथम ग्लोम वर्गः । आकास नाम:

प्रभ्र ग्लोम पुष्कर गमन प्रतराक्ष प्राहास ॥
प्रधर नभ मुर धर्मपं । नाक प्रनत धनबाध ॥१७॥
धियत, विदनुपद महाबल । मेघहार जमधाम ।
प्रम्यय तारा पंथ दिय । धी बिहाय धो नाम ॥१८॥
इति ग्लोम वर्गः । प्रथमवर्गः ।

दिशानाम.

दिशा फकुन काष्टां हरित । गो कन्या प्रासा मु ।
दिना मध्य जो प्राप दिशा । बिदक कहे कवि तातु ॥१९॥

चारि दिशा नाम:

पूरय प्राचा धबाधी दधान जानहु साइ ।
प्रसोचो परिपम उहे उत्तर उभाचो हाइ ॥२०॥

दश दिशा नाम.

पूरय धानेउ दधन । नीरित परिपम मान ॥
बायव उत्तर दिशान दिश प्राज्ञा नागा दध जानि ॥२१॥

धार्वा दिशापति नाम :

इंद्रबलि मम नहुत । वधम गु मादा प्राइ ।
धनद ईय दिशि प्रायक पूरं तं पति पाहि ॥२२॥

*मूल में पाठ 'पुष्पक ताहि बिवान है ।'

दिशापति ग्रह नाम :

रवि भृगु मंगल राह सनि ससि बुध सुरगुरु होइ ॥
यथा आठ दिस आव ग्रह । वरनत है सब कोइ ॥७॥

आठदिगपति नाम :

ऐरावत पुंडरीक पुनि वाधन कुमद स भाग ॥
प्रंजन पुष्कदंत सार्वभू । सुप्रतीक दिगनाग ॥८॥

मेघनामः

मेघ अन्न तनयिन्नु घन घारा-धरंत डित्वान ॥
मिहिर मुदिर जीमूत पुनि श्रीर बलाकहजान ॥९॥
वारि वाह वारिद सोई । धूम जोति पर्यन्त्य ॥
कंभृत जरमुक घनाघन । जह वरपत सो घन्य ॥१०॥
मेघमाल कार्दिविनी स्तनित मेघ निर्घोष ॥
गर्जितरसत सु आदि दे । जानि घोर निर्घोष ॥११॥

दामिनी नामः

सीदामिनी अकाल की । क्षत्रा चंचला देपि ।
ऐरावत्य क्षण प्रभा संपा कादिनी लेपि ॥१२॥
विद्वत चपला शतहदा घनश्चि तडित कहंत ।
रिजु रोहित है इंद्रधनु शक्र पांनि जु गहंत ॥१३॥

वर्षा का अवर्षा नामः

वृष्टि वर्ष सो वर्षण । तद्विघात जो होइ ।
अव ग्राह सु अवग्रह कहै अवर्षण सोइ ॥१४॥
आसार घारा पतन सीकर जल कण जानि ।
वर्षोपल कारिका सोई ओला कहै वखानि ॥१५॥
मेघ छंन दुदिन उहे । रिरंमद घन जोति ॥
वच्च शब्दसो स्फूर्जधुः जामै अन्न उद्योति ॥१६॥

ढकणा का नामः

आच्छादन अर्तछि पुनि अपवारण अपिधान ।
अंतर्द्धा व्यवधा बहुरि तिरोधान सुपिधान ॥१७॥

चन्द्रमा नामः

चन्द्र चन्द्रमा इंदु विधु । ग्लौ मृगांग दिवजराज्य ।
कुमद वांधव कलानिवि क्षपाकर सुविराज्य ॥१८॥
सोम ससांक सुधांस कहि औषधीश सुभ्रांश ।
नक्षेत्रश जैवात्रक अज्व मयंक हिमांसु ॥१९॥
है हिमदुति शशधर प्रगट निशापति निशचार ।
जगदर्पण औ कलंककी राकापति विचार ॥२०॥

भाषा का नाम:

भित्त चक्रम सोपंड पुनि
त्रिय चद्र मंडल कना ।

चांदिना व कलंक नाम:

जोन्ह चन्द्रिका क्रोमुबो
मू छाया साधन लक्ष्य

सोभा नाम:

भाभा कान्ति जूठि, छवि
बिभ्रम राडा बिभूपा

पाला का नाम:

प्रालेयं तुहिमं हिमः
जड़ मुपीमि मिहका विव
है प्रसाद परसन्नता हि

ध्रुवा अगस्ति नाम:

ध्रुव प्रोत्रानिपादि सो
मंत्रा वरपि नारि सिह सं

नक्षत्र वा बृहस्पति नाम:

ठारा भं ठारफ उडु
जोय बृहस्पति गुरु बिपप
चित्र सिपं डित्र प्रागिरमु
प्रीपति जनक हतरे । गः

शनिस्वर नाम:

उरना नालय झप्प
सौरि मजित जनि

मंगल वा बुध नाम:

कुत्र मंगारक सो
महो पुन धर

राह वा केतु नाम:

राह पि
केतु ि

पप्त रिपि नाम:

मिप
मिप

अत्रि मरीचि सु आदि दे नाम सप्त रिपि जान ॥
रासिन कौ उदयोलग्न । मेप वृपादय आन ॥१३१॥

सूर्य नामः

सूर्य सूर रवि अर्जमा द्वादशात्म ग्रह पति ॥
भानु हंस इन दिवाकर विभाकर सु अभिगति ॥१३२॥
भास्वत विवस्वत चंडकर उश्नरस्मि उश्नासु ॥१३३॥
मिहर तिमर हर-प्रभाकर मित्र वृध्न सहलांसु ॥१३३॥
अर्क विरोचन वीर्भाविसु मार्तंड त्रयिअंग
अंवर मणि दिनमणि तरुणि कर्मसाक्षि सु पतंग ॥१३४॥
प्रद्योतन संविता तपन चित्रभानु हरदश्व ।
द्युमणि विभावसु विकर्तन त्वपांपति सप्ताश्व ॥१३५॥
पूषण अरुण आदित्य पुनि जगत चक्षु पद्योत ।
लोक बंधु हेलि अहस्कर । भास्कर तेज उद्योत ॥१३६॥
मावर पिगल दंडए रहै निकट निति सूर ।
सूर्य सूत गरुडात्मजः काशपि अरुण अनूर ॥१३७॥

वाडिपरिवेष नामः

सूर्य मंडल उपसूर्यकः परिधि सोई परवेप ।
द्योत प्रताप सू आतप, तिग्म तीक्ष्णपर लेप ॥१३८॥

छाह नामः

सूर्य प्रिया प्रतिविम्ब सो कांतिअनातप छाह ।
अनुतुष्त्री संतोपिनी । छावा छाजत नाह ॥१३९॥

किरणि नामः

किरणि गभस्ति मयूप कर अस्त्र मरीचि सु अंसु ।
दीधति भासू छविः दीप्ति द्युतिरोचिसोचि सुप्रसंस ॥१४०॥
रुक् रुचि त्वटू भा घृश्नि घृणि प्रभावहुरि गो धाम ।
मृगतिश्ना सु मरीचिका । हरि किरननि कौ नाम ॥१४१॥
इति दिग्दर्शनः

अथ काल वर्गः

काल नामः

वय अनीहग्रनभिप समय समाज बेला काल ।
कहै अद्ष्ट एनेहसः । जाकी गति चल चाल ॥४२

पडिवा वा दिन नामः

पक्षति प्रतिपत् प्रतिपदा तदा दयो तिथि जान ।
अहन घस्र वासर दिवस अह दिन नाम प्रवान ॥४३॥

प्रभात नामः

प्रातः प्रकृत्य प्रत्युप चप, प्रसमूपसि प्रसमूप ॥
 प्रौर प्रभात बिभातयोः प्ररुणोदय तं मुप ॥४४॥

संध्यात्रय नामः

पिन् प्रसूः संध्या सोई सायं प्रौर दिनात ।
 प्राज्ञद्रम भध्यान्ह प्रपराहृ सो, संध्यात्रय प्रनिठात ॥४५॥

रात्रि नामः

निद्या रात्रि रजनी तमी क्षणदा सया त्रियाम ।
 सर्वरी प्रौर तमस्विनी बिभावरी के नाम ॥४६॥
 निधीषनी श्री महानिधि है निधीष प्रयराति ।
 कहे तमिथा तामसी ज्योतिरना प्रतिश्रान्ति ॥४७॥
 रजनी मुपसु प्रदोष है । याम प्रहर की जान ।
 पबं संधि नाम पंचवटी पसांतो परवान ॥४८॥
 पूर्णमासी पुषिमा प्रनुमति कला जु हीन ।
 राका पूर्ण चन्द्र जहा, भापत नूर प्रबोन ॥४९॥
 प्रभावस्या भरु प्रतिपदा बीचि दहन को होइ ।
 पंचवटी द्वे होत है पुनि पसांत मुसोइ ॥५०॥
 प्रमावास्पावर्षो । सूर्य चन्द्र मिति जाय ।
 कहु नष्ट सधि जानिये सिनी बाली दरगाम ॥५१॥
 जहा प्रमावत रंनि में पन्द्र कला जो होइ ।
 सिनी बाली सो जानियो कहु कला बिन सोइ ॥५२॥

ग्रहण नामः

उपराय ग्रहराहु करि प्रस्त मूर सधिहोइ ।
 उपसव उपरसव मु दुप, उपाहित प्रभि तं सोइ ॥५३॥
 निमिष प्रठारह जन सर्ग कहे काप्टा ताहि ।
 तेनुंदात योतें कला कलानिच दिन प्राहि ॥५४॥
 शादय शय मु महूर्त इक । तेविगत दिनरात ।
 प्रहोरात्रि दस पंच गर्वे । पय पूर्व परणरात ॥५५॥
 कुन्त कुन द्यै पय को एक माग तय होइ ।
 मापादिक द्वै मास रितु प्रपयत परन मुसोइ ॥५६॥
 उधरापन दधनापन बोते परमर जान ।
 होहि यरावरि राति दिन विपनत विरसन मान ॥५७॥
 पुन्वी पुण जूत मास बिह जानहु दोषो ताहि ।
 नाम पोष मापाशिो एकनाम पुनि प्राहि ॥५८॥

मार्ग सर वा पौह चा माघ नाम :

मार्ग शीर्ष मार्ग सहा, आग्रहापिणि कहंत ।
पौष तैष सहस्प पुनि तपा माघ सलहंत ॥१५६॥

फाल्गुण वा चैत वा वैशाख व जेष्ठ नाम :

फाल्गुन तपस्पः फाल्गुनिक, मधु चैत्रक श्रीचैत ।
वैशाप राघो माघो, जेष्ठ शुकृद्वैवेत् ॥१६०॥

असाढ़ वा सावन वा भादों नाम :

श्रुचि आषाढ सु श्रावणि नभ श्रावणिकइ सोय ।
भाद्र पद, प्रोष्ट पद, नभस इनाम तिह होइ ॥१६१॥

आसौज वा कार्तिक नाम :

आश्वनि इष अश्व जु ज उहै है सोई आसोज ।
कार्तिक कः कार्तिक उर्ज वाहुल जानहु सोज ॥१६२॥

षट ऋतु नाम :

षट ऋतु छे छे मास की मंगि सिर पीप हेमंत ।
माघ फाल्गुन सिसर रितु । जामै सीत अनंत ॥१६३॥

वसंत ऋतु नाम :

कुसमाकर माघव सुरभि पुष्पसमय रितुराज ।
मधु वसंत रितु जानियै चैत्र वैसाख समाज ॥१६४॥
ग्रीषम उष्म उश्न पुनि उष्मा गम तम होइ ।
उश्नो पगम निदाघ सो जेष्ठ अषाढ सुदोइ ॥१६५॥
प्रावृट वरषा रितु कहै सावन भादों मास ।
सरद सरित्सुवषानियौ । अश्वनिकार्तिगमास ॥१६६॥
षट रितु मंगसिर आदि द्वै । मासन की दै हर्ष ।
संबत्सर बत्सर अब्द । शरत सुहायन वर्ष ॥१६७॥
अहोराति पितृनिकी एक मास की होइ ।
दे बन की एक बरस की यज जानै सब कोइ ॥१६८॥
दैवन के युग सहस छै, ब्रह्मा कल्प बषानि ।
मन्वंतर दिव्य बरष जुग, इकहत्तरि परवानि ॥१६९॥
प्रलय कल्प संबर्त्त क्षय । कल्पान्त जग होइ ।
पून्य श्रेयसी सुकृत वृष । धर्म करहु सब कोइ ॥१७०॥

पाप का नाम :

पाप पंक किल्बिष कलुष, वृजिन तुरित अघ एन ।
रंह दुःकृत कस्मल कलल कम्लष पाप भजेन ॥१७१॥

मानन्द वासुप नाम :

मानंद प्रति प्रमोद मुद संमद प्रमद उधाह ।
मानंद मुः प्रहर्ष सोई, धर्म दावनी वृत्ता जाह ॥१७२॥

कल्याण नाम :

स्वः ध्येयस्य यस्व दियः मद्र मस्य मुन धेम ।
मंगल भाविक भविक शं इष्ट कुशल सव प्रेम ॥१७३॥
मत्तल्लिका मु मध्विचक्रा मुद्रतल्ल जो प्राग ।
पैकाह वाच प्रसस्तए प्रय गुभा सुविधिमान ॥१७४॥

भाग्य नाम :

भाग्य पंथ मो निउत विधि देव दिष्टि यो कर्म ।
विशेष धवस्था काल को सोई यथंतमर्म ॥१७५॥

कारण नाम :

हेतु निमित्त मु कारणं योजं जनि निबंध ।
कारण भादि निदान है मुण उत रज तम पथ ॥१७६॥

जीव वा प्रकृति वा उत्पत्ति नाम :

शेषज्ञ आत्मा पुरुष सत्य प्रकृति समुमान् ।
पुनर्मयी चेतन सोई । जन्तु जन्तु मु प्रपान ॥१७७॥
जन्तुः जन जन्मन जनि उत्पत्ति उद्भव धान ।

प्राणी वा जाति नाम:

प्राणी जन्मो जठे जन्तु चेतन तनु भूत सोई ।
जाति जात सामान्य पुनि स्थिति वृषभ जी सोई ॥१७८॥

मन नाम:

चित्त चेतो हृदय हृद स्वांत कद्वत क्रियाहि ।
चायस मानस नूर क्रिह, युग को कारण धाहि ॥१७९॥

इति काल वर्गं च ध्येय धीवर्गं:

वृद्धि मनीषा पौषिषजा । प्रजा सोई चित ।
मन्थि चेतना वेम्पों, मति प्रेय मन्थि ॥१८०॥

वृद्धिका गुण ६ नाम:

गुधूपा नूर धना वहन धारणा गुडि ।
तर्क उक्ति ज्ञानन धर्म तान ध्यान मुन वृद्धि ॥१८१॥
मेवा धोपारंपरती, मन को धर्म मरु क्व ।
मनसहार धामोय चित ज्ञानन की गुदरहा ॥१८२॥

चर्चा वा तर्कः

चर्चा कहै विचारणा संख्या जानहुताहि ।
 अघ्या हार सुतर्क है ऊह सकवि जन आहि ॥८४॥
 विचिकित्सा सोई संसय, द्वापुर पुनि संदेह ।
 निर्णय निश्चय जानियो, नूर सिधांत सुएह ॥८५॥
 नास्तिकता मिथ्या दृष्टि २ ॥

द्वेष नाम वा भ्रम नामः

द्रोह चित व्यापाद, मिथ्या मति भ्रम भ्रांति ।
 भ्रम के नाम जगाद ॥१८६॥
 संबित आगू प्रतिज्ञा आश्रव संश्रव नेम ।
 अंगी कार समाधि अभ्युपगम प्रतिश्रव प्रेम ॥१८७॥
 मुक्ति विपै मति जासंकी नूर ज्ञान है सोइ ।
 शिल्प शास्त्र मै जो चतुर है विज्ञान सुलोइ ॥१८८॥

पंचम गति नामः

लय सु मोक्ष श्रेय अमृत निर्वाण अपवर्ग ।
 महा सिद्धि कैवल्य पुनि निःश्रेयसवर स्वर्गः ॥१८९॥

अविद्या वा विषयाः

कहै अविद्या अहंमति सोई है अज्ञान ।
 रूप शब्द औ गंध रस स्पर्श विषया आन ॥१९०॥

इंद्री नामः

गो हपीक पंकरण गुण इंद्री जानहु ताहि ।
 इंद्रियार्थ जो आनिये गोचर कहिये वाहि ॥१९१॥
 विषया इंद्रिय हपीकं कर्मेन्द्रिय पाद्वादि ।
 मन नेत्रादिक घीं न्द्रिय । अपने अपने स्वादि ॥१९१॥

षटरस नामः

तुवर सोई कपायल मधुर लवण कटु तिक्त ।
 अम्ल सुरा पट रस प्रगट अवरनही अतिरिक्त ॥१९२॥

सुगंधि नामः

आमोदी आमोद पुनि मुष वासन सो जान ।
 घ्राण तर्पण नूरमनि निर्हारी सो आन ॥
 इष्ट गंधि सुरभी उहै, है सुगन्धि जग माहि ।
 निरहारी सो नूर कहि पंडित भेद कहाहि ॥१९४॥

परिमल नामः

विमल द्रव्य मर्दन किये प्रगट परमल सोइ ।
 जो सुगंधि मन को हरै, अति निरहारी होइ ॥१९५॥

दुर्गंधि नामः

पूति गंधि दुर्गंधि सो घाम गंधि पुनि घाहि ।
विद्यनाम सो नूर कहि कोऊ करत न घाहि ॥१९६॥

उज्ज्वल नामः

शुक्ल सुभ्र सुनि बिसद सित । गौर स्वेत प्रवदात ।
मङ्गल, पांडुर, घवल, पुनि श्रीर विलस, विप्यात ॥१९७॥

काला व पीला नामः

कृत्त नील मेषक प्रथित काल. स्यामल स्याम ।
पीत हरिद्राम हरित कहि पालाध विहि नाम ॥१९८॥

मरण नाम :

रोहित सोहित रक्त भनि, कोकमद युवत ।
मध्यस्त राग सोई मरण पाटल स्वेतह रस्त ॥१९९॥
व्यायक पिश सो भूध्र पुनि घूमल कृत्त काल ।
हरिष्य पांडुर पूयर दीपत पांडु सुभास ॥२००॥

पिगल व फर्चुर नामः

पिग पिशंग सु फट्ट, पुनि कपित कजारह भाप ।
शबल चित्र किर्मीर सो कर्चुं है कत्माप ॥२०१॥

सरस्वती नामः

हृद्य माहुनो सरस्वती वाहु भार्पो जान ।
प्राप्तो भावा गिरा,गो बापी इश प्रजान ॥२०२॥

बोलण का नामः

उक्ति नपित भापित यचन बच व्याहार गु बोल ।
प्रपात्रंय प्रपचर्द पुनि माषक भूतिमय बोल ॥२०३॥

बेद नामः

बेद नियम प्राधाय भूति तद्विधि धर्म विचार ।
श्रुततामः यजुषीह इति बेदनसो विचार ॥२०४॥
सिध्दा सो उत्पत्ति जो, सो भूति घन विचार ।
कवि कोविद सब कह्य है । नूर विचार विचार ॥२०५॥

पडंगरा घोकार नामः

विधा कलसो व्याकरण तुरी भाति निरुक्ति ।
घोकार प्रसबो सयो इतिहास तुरा उति ॥२०६॥

दास्य वा पडंग का नामः

दास्य प्रवचन गुरु संव तव ताव विद्याय ।
स्वाप्नानघपोष परन, प्रवचन धनिता ॥ ३

षड् दरसन वा शास्त्र नामः

शैव वेदान्त नैयायक,
षट् दरसन षट्शास्त्रतः

बौद्ध मीमांसिक जैन ।
कह्यो ग्रंथ मत अत्र ॥२०८॥

राजनीति विद्या नामः

प्रान्विदिकी विद्या तर्क,
उपल ध्वार्थ आख्यायक
प्रवल्हिका नु प्रहेलिका
धर्म संहिता सो स्मृति
सर्गः प्रति मर्ग वदति
वंशानुचरितं कहे
प्रवल्हिका सु प्रहेलिका
धर्म संहिता सो स्मृति

दंडनी अर्थ प्रवान ।
लक्षण पंच पुरान ॥२०९॥
रचना कथा प्रपंच ।
समाहति संग्रह छंद ॥२१०॥
वंस मन्वंतर जान ।
लक्षण पंच प्रवान ॥२११॥
रचना कथा प्रवन्ध ।
समाहति संग्रह छंद ।

वात नामः

किंवदंति जन श्रुति
वार्ता प्रवृत्ति वृतांत

कहै समासार्थ समस्यासु ।
पुनि नाम उदंत सुतासु ॥२१२॥

नाम का नामः

संज्ञा आह्वयगोत्र
नाम वेद्य सोनूर

पुनि आख्याह्व अभिधान ।
कहि तारन तरन प्रवान ॥

विवाद नाम वा सपथ नामः

उपन्यास सो वाग्य
सपन सपथ सोह स्वी

मुपं विवादो अव्यवहार ।
कहै उपोद्यात उदाहार ॥२१४॥

चुप्प के नामः

तूश्रो तूश्रीकं पुनः
सद्य सपदि सुतत्क्षणः

मौन अभिषणनाम ।
तात्कालिक अभिराम ॥२१५॥

बुलावण का नाम

आह्वानं आकारणं
संहृति बहु बोल दै

हृति बुलावति कोइ ।
तिह आवन नहि होइ ॥२१६॥

उश्न वा उत्तर नामः

अनुयोग प्रछा प्रश्न
उत्तर पुन प्रति वाच्य
सव्द होत अनुराग तै
उदात्त अनुदात पुनि

मारग नूर लहंत ।
सो प्रश्नोत्तर जु कहंत ॥२१७॥
कहै प्रणाद सुताहि ।
स्वरित तीर स्वर आहि ॥२१८॥

भूठी करतूति वा भूठ वचन नामः

अभिख्यान सो जानि
अभिसाप सो जानि

मिथ्याभिजोग सुहोइ ।
मिथ्याभिसंसन सोइ ॥२१९॥

कीर्ति नामः

वर्षं गुणानि प्यात जस साधु वाद भववान् ।
कीर्ति समञ्जा स्तव स्तुति, नृतिः स्तोत्र परवान् ॥२२०॥
कहिये दोसर तीन बर तिहु घांभेडित जान ।
सोक मीत जुह है जु धुनि ताकहु काहु बवान् ॥२२१॥

कचेपुकार नामः

मू'प्यं घुष्टं घोपणा भ्रं' कृतं सनिष्टीय ।
वाघाल वाचाट जो कृत्स्नत भापो थीव ॥२२२॥

निदा नामः

गरहण कृत्सा जगुप्सा । भाक्षेप निर्बादि ॥
भपवाद बतू भवर्षं सो, उपक्षेप परीषाद ॥२२३॥
पारुष्यं प्रतिवाद सो भर्त्सर्नयो भपकार ।
निदा सहित उसाहणौ परिभाषण सुभिषार ॥२२४॥
भाक्षारभायः सोई मंभून प्रति भाक्षेय ।
भाभाषण भसाप है प्रसाप भनर्षं बचोस ॥२२५॥
भनलापो भापन मूहुः परवेबन सु भिसाप ।
विरोधोक्ति विप्रसाप है मिष भापण संसाप ॥२२६॥
सुवभन को सुप्रसाप कहि भिन्वव है भपभाप ।
शापा क्रोध कुरेफणा शसाप घाटुबटु पाप ॥२२७॥

सराप नामः

सवेस बाकू सो भाषकं क्यती है अकृतभाणि

सुम वाणी बोसैः

कस्या यवन सुभारिमका मधुरं सात्वं जापि ॥२२८॥
निष्ठुर परुष कठोर पर अश्लोसं सो ग्राम्य ।
युमपत् एक ही कान जो सून्यत प्रिय सत्य साम् ॥२२९॥

वात कहें यूक भावै ताका नामः

सनिष्टीय भं'कृतं त्वरितो दितं भिरस्त ।
भनहारं सु भवाभ्य है मुष्ट बर्णं पर प्रस्त ॥२३०॥

झूठो अर्थ जिह यचने मँ:

भाहृत कहै मूपायक भबड भनर्षक होइ ।
प्रधित्पष्ट सुभिलष्ट कहि धितप भनूड वच सोई ॥२३१॥

सांच वा झूठा नामः

सत्य तप्य सम्यक कृतं भिष्या भादि प्रकार ।
उचित भमोष यभारप भिसंवेह निरभार ॥३२॥

जथोरथ बहुरो विषामिथा मिथ्या मोघ अलीक ।
 बिलथ बितत्थ विषा अनृत मृषा असत्य अठीक ॥३३॥
 मनितं रातिकुजित सव्द श्रव्य हृद्य मनोहार
 विस्पष्टं प्रकटोदितं प्रेम्ला मृषा उचार ॥३४॥

इति धी वर्गः

अथ शब्दादिवर्गः

शब्द नाद निश्चन निनद. स्वान घोष निर्हाद ।
 धुनि रव सुन निश्चान सो ध्वान अराव निनाद ॥३५॥
 आरसं राव विराव पुनि शिजित भूषण राव ।
 स्वनित कहि पर्णादिक कौ मम्मंर वस्त्र सुभाव ॥३६॥

वीण शब्दनामः

निक्वाणा निक्वण क्वणः क्वाणः क्वणन वपान ।
 वीणा के एते क्वणत, पक्वणा दयवहु आने ॥३७॥

बहुत शब्द पछी शब्द नामः

कोलाहल कल कल रूतं, पंछी वाशित होइ ॥
 प्रति श्रुत प्रति ध्वनि नूरकहि गीत गान है सोइ ॥३८॥

इति शब्दादिवर्गः

अथ नाद्य वर्गः प्रथम ही सप्त स्वर नामः
 निषाध, रिषभ, गंधार पुनि षडग सुमध्यम जानि ।
 धैवत पंचम सप्त स्वर पंडित कहै बषानि ॥३९॥

सप्त स्वर स्थानः

स्वर निषाध गज्ज राज्ज कौ रिषभ सुचात्रिग सैन ॥
 गंधार स्वर अजा कौ षड्गसुकेका अंन ॥४०॥
 मध्यम कुंज सु उच्चरै धैवत दादुर जान ।
 पंचम कोकिल कौ वचन ए सप्त स्वर थान ॥४१॥

मनुष्य के सप्त स्वर स्थानक नामः

हिरदै उठै निषाध स्वर । सिरहरिषभ स्वर होइ ।
 सुर गंधार नासिक कहत कंठ षंग सुर सोइ ॥४२॥
 मध्यम जो उर तै प्रगट धैवत नाभि बषानि ।
 पंचम स्वर सो ज्यानियो कपै सप्त संधान ॥४३॥

तीन ग्रामनामः

सूक्ष्म मनोहर होइ धुनि तिह काकली कहंत ।
 निपट मधुर औ प्रगट नहि सो कल नाम लहंत ॥४४॥
 काकली कल.सूक्ष्म सु धुनि मधुरा स्फुट कल होइ ।
 मंद्र गभीर जु तार सुर अति उच्चै त्रय सोइ ॥

उत्तरी कठोस्थित स्वर समन्वित मय काल ।
वल्गुका बीणा विपञ्ची उत्तरी सप्तरसाल ॥४६॥

ध्यारि प्रकार वादित्र नाम

तर्त बाध बीणादिक भ्रान्तं मुरजादि ।
बंशादिक सुपिर, सोई धन कौस्तुभानादि ॥४७॥

वादित्र नामः

वादित्र घातोष्ण पुनि मुरन मूषण मुजाठि ।
धनया लिंगया उर्बका भेवत्रय विख्यात ॥४८॥
अस पटह बहवा बहुरि भेरो वृद्धि भान ।
भाणक पटह सु कोण कौ वेणु वादिनं जान ॥४९॥
सूत्रधार भट्टारक राजा नायक देव
सेना सुर सगीत के जानत विगरे मेव ॥५०॥

वादित्र भेदाः

अमक बिद्धिमकूर्धरा मर्वम पणबो धन्य
मडु बाध त्रमेदिए नर्त्तकी सात्तिकी, मन्य ॥५१॥
विलंबित द्रुत मध्य सो तस्य मोष धन जान ।
तालक्रिया परिमाण है तम साम्य सुबपान ॥५२॥

निर्त्तनामः

तांबव नटनं नर्त्तनं नाट्य सास्य तस्य सोइ ।
मूत्रगीत वादित्र मुत्त नाट्य सोनि विधि होइ ॥५३॥

निरत कारी नाम

भ्रकुंघ भ्रकुंघ पुनि भ्रकुंघ नर रूप ।
त्रियावेप धारी फिरत तर्त करत सु धनूप ॥५४॥

नृत्य भेद नाम

धमविशेष धंगहारकाहे अंजक धमिनय धाहि ।
धंग सत्या निरवत्तं ह्यै धांगिक सात्तिक धाहि ॥२५५॥
जो रानी धमियेक की देवी कहि ये धाम ।
धीर ममट्टनी जानिये नूर सुकवि धमिराम ॥२६६॥

नौ रस नाम :

सिगार धीर करुणा बहुरि, धम्भूत हास्य प्रबान ।
मयबोभस बपानीये । इद्र घांत नौ जान ॥२५७॥

अगार वा धीर वा दया नाम :

उन्जस धृषि भृंगार है । धीर धूमि उरसाह ।
धनुकोज करुणा धूभा, कृपा सु धनुकपाह ॥२५८॥

हास्य वा बिभत्स वा अद्भुत नाम :

हंस हास सों हास्य रस, बिभत्स विकृत जानि ।
अद्भुत विस्मय चित्र सो कहि आश्चर्यं प्रवान ॥२५६॥

भयानक रुद्र शान्त रस नाम :

भैरव दारुण भीष्म सो भीम भयानक घोर ।
भीषण प्रतिभय भयंकर रौद्र उग्र शम ओर ॥२६०॥

डर वा विकार नाम :

दर त्रास भीः भीति पुनि साधू सभय को नाव ।
मानस भाव विकार है, अनुभाव बोधक भाव ॥२६१॥

विकार नाम :

अपनै जी कछु और ह्वै होत और की ओर ।
तासों कहत विकार कवि, नूर सकल सिर मौर ॥२६२॥

मान वा आदर नाम :

मानसमउ अभिमान मद दर्प गर्ब अहंकार ।
गौरव अरु सन्मान पुनि आदर सोई सत्कार ॥२६३॥

अनादर का नाम :

तिरस्कार अबमानना रीढा अवज्ञा हेल ।
असूक्षणं परिभाव सो, परभव पुनि अति बेल ॥२६४॥

लज्जा वा ईर्षा वा शान्ति :

मंदाक्ष ब्रीडा त्रिपांगी अपत्रपा आन ।
अक्षांति ईर्षा बहुरि, शान्ति तितिक्षा मान ॥२६५॥
परधन की इक्षा करै ताहि ताहि अभिध्या लेषि ।
कहै असूया गुणनिमै । दोषारोपण देषि ॥२६६॥

वैर वा शोक का पश्चाताप् नाम :

वैर बिरोध बिद्वेष सो शोक मन्यु श्रुक होइ ।
बिप्रती सार अनुताप पुनि पश्चाताप् है सोइ ॥२६७॥

कोप नाम:

कोप छोभ आमर्ष क्रुध रोष मन्यु रुट क्रोध
प्रतिष्ठा कहियेपेदसो, जातैजगत विरोध ॥२६८॥
शील आचरन सुचि कहै चित्त बिभ्रम उन्मान ।
प्रेमा प्रियता हार्द पुनि प्रेम स्नेह जगाद ॥६९॥

अभिलाष नाम:

दोहद कांक्षा मनोरथ स्पृहातूटू लिप्सा काम ।
अभिलाषा ईहातर्ष वांछा लाल सनाम ॥२७०॥

चिता का नाम:

प्राधान चिता स्मृति चितम पाप उपाधि ॥
उत्कंठा उक्तमिका सोई बिया मानसी धाधि ॥२७१
सोय भीर्य प्रतिशक्ति युव प्रध्यवसाय उत्साह ॥

कपट नाम:

कुहक छद्म उपधव कितव व्याज्य दम मिप धाह ॥७२॥

सठसा वा तमाशा नाम:

घाटां कुसुमिनिःकृति, मनवधानत प्रमाद ।
कौतूहल कीतुक कुतूहल सजमाद ॥७३॥

स्त्रीणां हा वा:

स्त्री बिलास विम्बोक पुनि बिभ्रम लसित कहाव ।
क्रिया भाव शृंगार वा हेना सीसा हाव ॥७४

केलि वा बहाना वा खेलेण का नाम:

परीहास क्रीडा सु इव सीसा नर्म वपान ।
व्याज मस उपदेश पुनि क्रीडा कूर्वन भान ॥७५

पसेव के नाम:

धर्म निवाच स्वेद सो प्रसय चेतना नष्ट ।
प्रवहित्वा भाकार जिह मूठ होइ सुप्रतिष्ट ॥७६

ईपत हास्य नाम:

सोत्रास प्राछुरितकं स्मित ईपस हास ।
एई नाम सुहास के कीने मूर प्रकास ॥७७
मध्यम विहसित जानिए । षट्पठि हासन प्राहि ।

रोमांच नाम:

रोमांच रोम हम रोम हर्षण चाहि ॥७८

प्रतिहास वा परिहास नाम:

हसर्त तृप्तिन होइ जिह सो प्रसि हास उचार ।
परिहास उपहास पुनि परजन हर्षे निहार ॥७९॥

रुदन वा जंभाई नाम:

ऋष्ट रुदित रुदन रुदन, (जंभाई नाम) जूंमः जू मय जान ।

बियोग नाम:

बिसंवाद बिप्रसंभ पुनि, (षड्वचर्षनाम) रिगणस्तमन वपान ॥८१॥

सोवण का नाम:

स्वाप सैन निद्रा स्वप्न गुडा कासु सवेद
संभ्रम की सवेग कहि सद्गी प्रमोता मेस ॥८२॥

कुटिल दृष्टि नामः

कहे आदृष्टि मुतासं कौ जिह असौम्य दृग आहि ।
भ्रकुटि भ्रकुटि मूकुटि भ्रू के नाम सुचाहि ॥२८३॥

स्वभाव वा कंप नामः

संसिद्धि प्रकृति सोई वहे स्वरूप सुभाव ।
नाम निसर्ग वपानिये वेषथु कंप कहाव ॥२८४॥

उच्छाह नामः

उत्साव उद्धव महक्षण उद्धर्प उत्साह ॥
कहे नाम ए नूर कवि नाट्य वर्ग अवगाह ॥२८५॥

इतिनाट्य वर्गः समाप्तः

नाट्य वर्ग पूरन भयो वरनत नूर पताल ।
बलिराजा वाचन सहित् रहत तहा तब काल ॥८६

पाताल नामः

अधोभुवन वडवामुप । बलि सद्म रसातल जान ।
नाग लोक पुनिः (छेद नाम) : छिद्र बिल विवर रंघ्र कुहरान ॥
रोक वपा शुचि शुभ्र सुए सुपिर छेद के नाम ।
तम तमिथ ध्वांत तिमर अधकार सो स्याम ॥२८८
(गाढा ग्रन्थकार नाम)*

गडहा का नामः

अवट गर्त भुवि सुभ्र बिल अध तमस तम जोर ।
क्षीणो अवतम सतमः विष्व सं चहु ओर ॥२८९॥

सेश नामः

सर्प राज वासुकि प्रगट सेप अनंत वपान
नाग राग* श्री सहस्र मुप । नाग काद्र त्रेय आन ॥९०

जाति भेद नामः

तिलत्स गोनस अजगर । शयु वाहस जु कहत ।
अलगर्दो जल नाग है राजिल डुंडुभ हुंत ॥२९१॥

कांचुरी युत वा नामः

मालुधान मातुल अहि । सोकंचुक जुत होइ ।
मुक्त कुंचुक निर्मुक्त । मपी तजत जो कोइ ॥९२

सर्प नामः

सर्प प्रदाकु भुजंग उरग आसीविप अहि व्याल ।
भोगी पन्नग जिह्वागदंदसूक सो काल ॥९३॥

* मूल में भी राग ही है, पर सम्भवतः राज होना चाहिये ।

काकेयर पक्षुभवा फनी मणो विप धार ।
 बोधं पूष्टि पर्वा करो पवनाशन हरहार ॥१५४॥
 लेलिह श्रीर विलेशयः गूढ पाठ हरिहोह ।
 बहुरि सरोसुप भुङ्गमी नाम भुजगम सोह ॥१५५॥
 सर्प विषं जी सयहै (साफी नाम)
 ग्राह्यं विष ग्रादि सब फट फल फल के नाम ।
 कचुकि का निमोक्त कहि छूबेह गरल विष आम ॥

विष की नो जाति:

काल फूठ काफोल पुनि कहे हलाहल ताहि ।
 ब्रह्मपुत्र सौराष्ट्रिक दौकित केय सो ग्राहि ॥२६७॥
 बरसनाम दारव बहुरि, श्रीर प्रवीपन जान ।
 विष के भेद जू नो कहे पण्डित फरहु प्रमान ॥२६८॥

विष बंध नाम:

जांगुलिक विष बंध जो, करै जू विष उपचार ।
 ब्यालगाही ग्राहि तुंडिक सर्पजीव विषार ॥२६९॥
 भोमिकर्ण पाताल की बर्नसुनावी नूर ।
 नर्क बर्ग सब कहत है जो दुर्गति की मूर ॥३००॥

इति पाताल भोगिवर्गः संपूर्ण ।

भय नर्क के नाम:

नर्क नार्क दुर्गति निरम (नर्क भेद नाम): ताप बर्नोषोघात ।
 महारौरव रौरव कास सुन भेदात् ॥३०१॥

बंतर्नी नदी नर्क निकट की:

प्रेता बंतरणी सीई सिधुकहत है ताहि ॥
 बहुरि बसकमी निर्जति ग्राजूबिष्टि सुग्राहि ॥३०२॥

नरक की दरिद्रता की नाम:

नर्क बर्ग पूरन भयो है जार्न भय भूरि ।
 बारिकर्ण सुनि नूर भनि होत सकल धम दूरि ॥३०३॥

भर्म पीड़ा नाम.

तोष वेदना जातना कहे कारणा ताहि ।
 पीड़ा बाधा ब्यथा दुप फट्ट कछु सो ग्राहि ॥३०४॥
 ग्राभिल ग्रात्रिग्तानि जो ग्रादि नर्क दुप प्रास ॥ (प्रसूति पीड़ा नाम)
 ग्राभनस्य परसूति करि बाधा होत प्रकास ॥३०५॥

१. यह दोहा मूल में सात स्याही से कटा हुआ है ।

इति नर्क वर्ग समाप्तः

नर्क वर्ग पूरन भयो है जामँ भय भूरि ।
वारि वर्ग सुनि नूर भनि होत सकल भ्रम दूरि ॥३०६॥^३

अथ वारि वर्गः ॥ समुद्र नामः

अद्वि^३ सागर उदधि अर्णव सिंधु सरस्वान् ।
जादसांपतिरु अपांपतिः अमृतोद्भवउदन्वान् ॥३०७॥
पारावार सरित्पतिः इहावान् अकूपार ।
रत्नाकर जु अपार पुनि सप्त भेद सुविचार ॥ ८
लवण, ईक्षु औ सुराघृत दधिसु दुग्ध जल सात ।
अतलस्पर्श अगाध है कहत कविन के तात ॥३०९॥

पानी वा तरंग नामः

आप वारिकं सलिल पय विप की लाल सुतोय ।
उदक पाय पुष्कर कमल नीर छीर कुश होय ॥ १०
अंभु अंबु संवर अमृत अर्णवाः पानीय ।
मेघ पुष्क जीवन भुवन वनक बंध जानीय ॥११॥
घनर सपाली सर्व मुप सुजल वासी पर्युपिताहि ।
लहरी बेला वीचि भंग, उम्मितरंग सुचाहि ॥१२॥
उल्लोल कल्लोल सो उर्मी उठत महंत ।
अति जल भ्रम आवर्त्र है विप्लुप पृपती पृपंत ॥१३॥

जल चमनः

पुट भेद भ्रम चक्र पुनि ए जल निर्गम जानि ।
वाहु प्रवाहु वपानिये । वहै वेग जुत आनि ॥३१४॥

किनारा का नामः

कूल अवधि उपकंठ तठ पुलिन निकट अभ्यास ।
तीर प्रतीर वपानीये सीमनि सीमा आस ॥११॥

पारावार कौ नाम, बीच नामः

परसु कहै परतीर कौ अर्वाची सोवार
दहुतीरन विच अंतरं पात्रं ताहि विचार ॥१६॥

जल बीच की भूमिः

द्वीप अंतरीपं सौई जो अंतर तट वारि ।

जल उछलै ताका नामः

तोयोस्थित पुलिनः

-
२. ऊपर जो दोहा कटा हुआ है वह यहाँ आ गया है
३. यह शब्द मूल में इस प्रकार लिखा हुआ है 'अद्वि' ।

रेत समेत जल का नाम:

सैफ्त सिकता मय बिचारि ॥१७॥

कीच व काई नाम:

पंक सादकईम सोई निपखर: जं बास ।

नहर के थाठ का नाम:

बनोघास परिवाह कहि

सामग्री नाम:

नाम्पनीतार्य सुघाल ॥
ओ पोदत जस कारन भूमि जस्त करि कोई ।
कहै विदारक कूपक, नूर नाम ए बोइ ॥१९॥

नाव वा जहाज नाम:

तर तरिनी भि तिरंदा पादाभिल्ली भान ।
बोहिष पोष जहाज सो जान पात्र जस जान ॥२०॥

वेडा कहीर्य छुद्र नाव नाम:

उदुप प्लव सो कोल पुनि वेडा नाम उदोत ।

सोत नाम:

धंदुभवत ओ प्राप वै, धंदुभन स्वत स्रोत ॥२१॥

पेवा वा कतरी नाम:

प्रातर धर तरपभ्य पुन । पेवा जानहु सोइ ।
शोणीकाष्टी बुवाहिनी शोमी नाम सुहोइ ॥२२॥

डोगी भापा में डोगी कहे हें:

नाथ वेचै ताकी नाम:

पोत वाणिक सायात्रिक नो भ्यापारी नाम ।
कर्णधार नाविक दोऊ एपेवक जस धाम ॥२३॥

पोतवाह नाम वा पेंवक नाम वा गुग काष्ट नाम:

पोत वाह सुनि पामक जेसब पेवक धोर ।
मुण बुधक कूपक कहै बंधे नाव जिह ठौर ॥२४॥
केनिपातक: भरिद्रं शोणी नौका बंड ।
जस मापत जिह बंड सो 'नूर नाम तिह मंड ॥२५॥

नाऊं काठडी 'वा' काष्ट फुद्दाल नाम:

सेक पाप सेषन दोऊ धमिकाष्ट फुदान ।
नो समुद्रि का जानियो नर सामुद्रिक भास ॥२६॥

निर्मल व मलीन नामः

प्रसन्नाक्ष निर्मल सोई वीधविमल सलहंत ।
आविल कलुप अनभ्रक्ष, पुनि आगाघात जु कहंत ॥२७॥

श्रीडा वा उचाका नामः

निम्न गभीर गभीरता अति उन्नत उत्तान ।
अतल स्पर्ष अगाध है उथल सो उत्तान ॥२८॥
जाल अनायक पवित्रकं सनसूत्र सुजग चाहि ।
केवट धीवर दास कहि कैवर्त्तक कवि आहि ॥२९॥

कुंभिनी नामः

मत्स्याधानी वडस पुनि कहै कुवेणी ताहि ।
वनसी वेधनमीनकी मत्स्य वेधनं आहि ॥३३०॥

मछ नामः

मत्स्य ग्राह वैशारिणी अंडज सफरीमीन ।
सकलीनक्र विशारज्ञप प्रथरोमापाठीन ॥३३१॥

बढ़निका नामः

गंडक सकल अर्भक सहस्र दंष्ट्र पाठीन ।

मत्स्य भेद नामः

उलूपी शिश्रुक चिलचिमी ताहिक है नलमीन ॥
प्रोप्टी सफरी नाम द्वै कहै नूर ए जान ।
क्षुद्रांड समदाय भ्रप कहै सु पोताधान ॥३३२॥

रोहू नामः

रोहित महर शाल सोरा जीव सकुल कहंतु ।
तिमि तिमंगला दयः ते, यादांसि जल जंतु ॥३३३॥

मकरादिक मत्स्य भेद नामः

शिश्रुमा रोद्रः शंबुकहु मकरा दय ते आहि ।
कर्कटकः सुकुलीर पुनि नक्र ग्राह अबराहि ॥३३४॥

उनसों भिन्न भेद है ॥ कछ वां वा सोप नामः

कूर्म्म कछप कमठ पुनि वाहन राह सुउक्ति

सीप नामः

मुक्ता स्फोट सुक्ति सो । जंबूका जल श्रुक्ति ॥३३४॥

मोती नामः

जल सुत दधि सुत सीप सुत, मोती गोती चन्द ।
मुक्ता गुलिक सुनूर कहै जगबंद ॥*३३६॥

कैचवा नाम

रिचुकल' गडू पद । वहै गिबोसा नाम ।
नूर कहा लगुवरनीएँ । जल यज जीव विद्याम ॥३३७॥

जोक वा गोह नाम

कहै जलोका रक्तपा बहुरि जसोक सजान ।
गोवा सोई गोधिका निहाका सुपरवान ॥३३८॥

कौडी नाम

कपटिका सुबराटिका । कौडी कहिए ताहि ।
अम्बिक डबीर पुनि फेन भाग सो भाहि ॥३९॥

शख वा छोटा शख वा मीढक नाम

खख कदूम दुसंपते छंप नपा जखू मूर ।
बदुर मेक मडूक प्लव बर्पा मू सारूर ॥३४०॥

मीढकी नाम

दिली घोर गडूपदी बर्पा म्बी मेकी सु ।

काछवी नाम

कमठो दुलि (मगरी नाम) मृमी प्रिया मुत्तरस्पएकी सु ॥४१॥

जल धान नाम'

दुर्नामा दोषं कोपिका । जनाशय जलधार ।
हृवं भगाध जल जासर्म हृद वह ताहि उषार ॥३४२॥

घोवच्चा नाम वा कूप नाम

कहि घाहाव निपान सो । जनाशय उप कूप ।
कूप भयु उदपान प्रही मेमिस्विका अनूप ॥३४३॥

पुहकरनी जोहडी नाम

मुप बंपन जो कूप की । तिहि बीनाह बपान ।
पुफकरनी की पात कहि देव सरोवर नाम
अपात देव क्त जान ॥३४४॥

जोहड वा छोटो बावडो नाम

पद्मा कर सरसी सु सर ताल तबाग का सार ।
अ संत पस्वन अन्त सर । वीपिका जलधार ॥३४५॥

पाई या घाहुलो नाम

देयं परिपा धार सो सो जल धारण होइ ।
आस धाम अनास पुनि भाषापो है सोइ ॥४६॥

नदी नामः

सरित्त्ववन्ती निम्नगा सैवलनी तटनीय ।
ह्लादनी वुनी तरंगिनी, आपगा द्वीप वतीय ॥४७
स्रोतस्विनी सरस्वरी । कूलं कपा वपान ।
निर्ह्वयनी सो नूर कहि । रोवा वका ग्रान ॥३४६॥

गंगा नामः

गंगा विष्णुपदी प्रगट हैमवती हरिरूप ।
धूनंदा मंदाकिनी भागीरथी यनूप ॥४८
निगन पदी निर्जरनदी जल्लमुवा तिहि जान ।
त्रियोत्रा सुरदीयिका नुरनदी कहन वपान ॥३४७॥

कालिंद्री वा सरस्वती नामः

वन अनुजा कहन यनी । गमन स्वभा हे मंड ।
सरस्वती कून कपा रांवा वका हाट ॥३४८॥

रेवा नदी नामः

रेवा सोडे नमंदा, नोमादमवा वपास ।
इकल कवका कहुत हे वंदिन नेहू मिच्छासि ॥४९॥

कर्तोया नामः

सेत कहिनी वाहुवा कर्वाया वपास ।

रसजू नदी नामः

विष्णु कतः = विष्णु नदी नाम, विष्णु का नाम विष्णु सुभ्रं ।

कारंज नामः

कुल कान कृष्ण करी नदी का कंड ।
केवरी नु सगवरी अक्षय सुभ्र कंड ॥५०॥
कारंज कोसवरी सगरी सिंहे नु कंड ।
सिंहे सगरी का अडे सगरी कंड ॥५१॥

देविका नदी वा सगरी नदीः

सोत सोत नु के अडे सगरी कंड सगरी कंड ।
सगरी कंड सगरी कंड सगरी कंड सगरी कंड ॥५२॥

कवल की ज्ञाति नाम सगरी कंड नामः

सगरी कंड के सगरी कंड सगरी कंड सगरी कंड ।
सगरी कंड सगरी कंड सगरी कंड सगरी कंड ॥५३॥

१. मूल में 'कारंज' के स्थान पर 'कारंज' लिखा है। यह नाम 'कारंज' से आया है।

कँचवा नाम

किंचुकल' गंडू पद । वही गिठोसा नाम ।
नूर कहा लगुबरनीएँ । जल धन जीव विधाम ॥३३७॥

ओक या गोहू नाम

कहै जसोका रक्तपा बहुरि जसोक सजान ।
गोवा सोई गोषिका निहाका सुपरवान ॥३३८॥

कौडी नाम

कपदिका सुधराटिका । कौडी कहिए ताहि ।
अधिका बडीर पुनि फेन भाग सो भाहि ॥३३९॥

शस वा छोटा शस वा मीडक नामः

शस कदुख दुसंपते धंय नया जलु मूर ।
दु'र भोक मडूक प्लव वर्षा भू सासूर ॥३४०॥

मीडको नाम

भिसो भोर गडूपदी वर्षा म्बी मेकी सु ।

फाछवी नाम

कमठी बुलि (मगरी नाम) शृंगी प्रिया मुहुरत्यएकी सु ॥३४१॥

जल धान नामः

दुनामा दीर्घ कोपिका । जलाशय जलधार ।
दु'र्घ अगाध जल जासने लक्ष दह ताहि उचार ॥३४२॥

घीवच्चा नाम वा कूप नाम

कहि आहाज निपान सो । जलाशय उप कूप ।
कूप अंध उदपान प्रही नेमिस्विका अनूप ॥३४३॥

पुहकरनी जोहठी नाम

भुप बंधन जो कूप कौ । तिहि बीनाह धपान ।
पुहकरनी को पात कहि देव सरोवर नाम
अपात देव अत जान ॥३४४॥

जोहड़ वा छोटो वाबड़ो नामः

पद्मा कर सरसी सु सर ताल तभाग का सार ।
ध संत पल्लव अल्प सर । शीघिका जलधार ॥३४५॥

पाई वा घाहुली नामः

पेय परिपा धार सो सो जल धारण होइ ।
प्रान वास प्रवाल पुनि आवापो है सोइ ॥३४६॥

नदी नामः

सरित्स्त्रवंती निम्नगा सैवलनी तटनीय ।
 ह्लादनी धुनी तरंगिनी, आपगा द्वीप वतीय ॥४७
 स्रोतस्विनी सरस्वरी । कूलं कषा वपान ।
 निर्ह्यरनी सो नूर कहि । रोघा वक्रा आन ॥३४८॥

गंगा नामः

गंगा विश्नुपदी प्रगट हैमवती हरिरूप ।
 धूनंदा मंदाकिनी भागीरथी अनूप ॥४९
 निगम पदी निर्जरनदी जह्नुसुता तिहि जान ।
 त्रिश्रोत्रा सुरदीधिका सुरनदी कहत वपान ॥३५०॥

कालिंद्री वा सरस्वती नामः

जम अनुजा कृश्न यमी । शमन स्वसा है सोइ ।
 सरस्वती कूलं कषा रोघो वक्रा होइ ॥३५१॥

रेवा नदी नामः

रेवा सोई नर्मदा, सोमोद्भवा वपानि ।
 एकल कन्यका कहत है पंडित लेहु पिछानि ॥५२

करतोया नामः

सैत वाहिनी वाहुदा करतोया सदानीर ।

रसजू नदी नामः

शितुद्र शतद्रु : (विपाशा नदी नाम): विपाशा जानि विपाट सुवीर ।

कारंज नामः

कुल्पा अल्पा कृत्रिमा करी नदी जो कोइ ।
 वेत्रवती सु सरावती चन्द्रभाग पुनि सोइ ॥५४॥
 कावेरी आंसरस्वती सरिता मिलै जु जाइ ।
 सिवु संगम सो कहै सभेद कविराय ॥५५

देविका नदी वा सरजू नदी:

सोण सोण नद को कहै हिरण्य वाह पुनि सोइ ।
 "दाविक" (आविक) सोई देविका सारव सजू होइ ॥५६॥

कवल की जाति नाम लाल कवल नामः

रक्त संव्य कं हल्लकं सीगंधिक कल्ह
 इंदोवर सोती लहै : (रंक्त संविक नाम) ७८५

१. मूल में 'आविक' ही दिया हुआ है । पर मारजिन पर "दा
 हुआ है। यह न तो लिपिकार की स्याही में है और न उसके

सेत कुमद नाम

सित करैव कुमद द्वे कवस कव नाम सासूक विनकंद ।
बस नीती :: शंवास नाम :: शंवास सो शंवल बस पर बव ॥

पुरयानि नाम

पुरयानि जानहु कुमिका बारिपर्णा तिहि नाम ।
नूर कहै निहचै सुतो आकौ है बस धाम ॥५१॥

कवलनी नाम

कुमुद्वती पुनि कुमुदिनी नलिनी बिछनी मानि ।
कुमद प्रिया पदिमनी मुपा नूर सेहु पहिचानि ॥६०॥

कवल नाम

कवस नलिन भबुज पद्म । सहस्रपत्र धतपत्र ।
भ्रमोदह सरसीरह पंकेरह कहि भत्र ॥३९१॥
उत्पल कज महोत्पल तामरस, राजीव ।
कुवलय पुष्कर कोकनद धज्व सु मकरदीव ॥३९२॥
सारस जनक सरोज पुनि पकज धरु भरिविद ।
बिध प्रसून व कुक्षेण्य सहिन सकत ए इद ॥३९३॥
पुंरोक करैव कुमुद है इन को रंग सेठ ।
ईवीबर मोसोत्पल नाहिन रवि स्या ह्वै ॥३९४॥

लाल कोकनद वा कवल नाम

नाला नाम मुनास बिध ततुबंड तिहु जान ।
सिफाकद करुष्टाट सो केसर किजस्कान ॥३९५॥
नव वसं सवतिका कहि जेकवसन कै भाहि ।
वोष कोष बराटक मध्य कणिका भाहि ॥३९६॥

चीदह रतन नाम सिष्यते

लक्ष्मी, कोस्तुम, बिध, मुपा, सुपा, धन्वतरि घेनु ।
हय, गय, सुरतर, धनुष बिप सप रतन ॥३९७॥

चीदह विद्या नाम

ब्रह्मज्ञान, रसायन, सुरपुनि ज्योतिष वेद । कोक व्याकरण
कोक, व्याकरण, जसतरण, सेवन, वैद्यक भेद ॥३९८॥
नटनूति, हृषबाहन, धहुरि धनुंर परवान ।
संधोभन, वातुयंता, चीदह विद्या जान ॥३९९॥
नूर नाम की धाम मं, प्रथम कहे दस धर्म ।
स्वर्ग प्रादि तै उदयिलौ सांग सपूरन सगं ॥४००॥

इति . बारिबर्ण . । इति श्री मत्स्यकृत भक्तिपान रत्नमुपन मूपिताय
मियां नूर कुत भाषायामां नाम प्रकाश नाम मातायां प्रथम कांड . संपूर्ण ।

दोहा : स्वर्ग व्योम दिक् कालधी सब्द नाट्य पाताल ।
 निरय वारि ये नूर मनि प्रथम पंड नां माल ॥१॥
 पृथ्वी पुर गिर वन तरु मृग्गादिक नर वर्ग ।
 ब्रह्म क्षत्र विस शूद्र कहि नूरदूसरे सर्ग ॥२॥

छिति नाम:

भू भूमि अचला रसा । स्थिरा अंनंता क्षीनि ।
 विश्वंभरा वसुंधरा धाराधरनी औनि ॥३॥
 मही मेदनी कुंभिनी इला विला गो ज्याहि ।
 कु प्रथवी प्रथ्वी क्षमा, वसुधा सर्व सहाहि ॥४॥
 गोत्रा उर्वी काश्यपी भूतधात्री विपुलासु ।
 बहुरि लोर्वरा वसुमती रत्नगर्भा तिहभासु ॥४॥

सात दीप नाम:

जंबू, सात्मलि, कोंच पुनि पुष्करसार जान ।
 साकु प्लक्ष वपानिय सातों दीप प्रवान ॥५॥

नौषंड नाम

भर्तंहरि वर्ष किंपुर इलावृत रम्यकाक्ष ।
 ह्निमय कुरुपंड हरिनमै केतुमालपंडभाष ॥६॥

प्रशस्त्र नाम:

माटी मृत सो मृत्तिका और प्रसस्ता आहि ।
 मृत्सा बहुरी मृत्स्ना जो प्रसस्त्र कहि ताहि ॥७॥

उत्तम षेत नाम:

सस्या डा सो उर्वरा, ऊप मृत्युका क्षार ।
 उपवान उपर कहै, स्थली स्थल वृचार ॥८॥

स्थूल को विचार नाम:

जो अकतृमा भूमि हूँ । ताको स्थली कहंत ।
 स्थल कृत्रिमा सु जानिए नूर नाम सलहंत ॥९॥

मारवाड भूमि नाम:

निर्जल मरु मन्वान सो, पिल अप्रहत जु सुन्य ।
 लोक भुवन विष्टय जगत पुनि जगती कहि गुन्य ॥१०॥
 भारतवर्ष सुलोक. यह अवधि सरावति जानि ।
 देस प्राक दक्षिण बहुरि पश्चिम उत्तर मानि ॥११॥

पुरासान:

म्लेक्ष देस प्रत्यंत सो मध्यम देस ।
 आर्यावर्त्त पुन्य भू विव्यहिमाल मध्येत

नृपति बसै नीबूत सोई जनपद जन जुर हाह ।
बिपय देस विस्तार पुनि उपबर्तन जू कहाह ॥१९॥

जष्ठ देस नाम

नबूवात नबूवस नू है, नहू प्राय जो देस ।
कुमदान जहाँ कुमव कैं बेटे स्वान बहु बेश ॥१४॥

विस्तार देस नाम

नीबूठ जनपद राष्ट्र सो उप यर्त्तन तिहू जान ।
बिपय मंडल सो देस है और बिदेस वपान ॥१५॥

कछ देस नाम भेद

शाइल शाव हरिष्ठ पकिल सो सर्जबान
जल प्राय सु धनूप है नदी कछ बिधि भान ॥१६॥

भस्म प्रायमूत का प्राय देस नाम:

शार्करिल सो शार्करः शार्करावति देस ।
सिकता बहुरी सिकली सिकतावती बिदेस ॥१७॥
नदी भवू वृष्टवू करि पालित ब्राहि जू नित्य ।
नदी मातु को देस एक देस मातु कभिल ॥१८॥
सुष्ट राज्य जियहू देस मै राज न्वान् कहूठ ।
तारै ज्यो बिपरीति ह्यै राज्यवान सलहूठ ॥१९॥

गोसासा नाम

भूतपूर्वक गोष्ट ज्यो ।

जल बांधियै सो वष नाम

खेवुभासी सो वष ॥ गांव सीम नामः
पर्यन्त भूसुपरि सरः नगर समोप जू कथ ॥२०॥

बचई नाम

बामसूर बरुमी क पुनि नाकू कहूठ है ताहि ।
बाम्बी कूठ भपानिए, बहुरि शरद्विधर घाहि ॥२१॥

मार्ग नाम

धमनं बर्तन मार्ग धध्व. पशवी सृति पंधान ।
सरणि पद्वति बरुमनी, पया एक पदी घान ॥२२॥

सुपय नामः

घति पया सो सुपया सत्यप भचित धध्व ।

कुपय नामः

बिपय करध्या कापय ध्यध्व सोई दुरध्व ॥२३॥

चौबटा वा कुमांगं उजाडि मार्गं वा दुर्गम मार्गं नामः

श्रंगाटक सो चतुष्पथ । अथ कुपंथ उचार ।

दूर सून्य मग प्रान्तर बहुरी कहि कांतार ॥३२४॥

नल्वः हस्तच तुशतं गव्यूति युग कोश ।

गज घंटा जिह मार्ग में वाजै सी घंटा पयः

घंटा पथ संसरण पुन ।

नगर तै सैना निकसि करि विश्राम करै ताकी नामः

उपनिष्कर होश ॥३२५॥

स्वर्गं भूमि नामः

घाठा भूमी रोदसी दिवःप्रथव्यी होइ ।

घावा प्रथव्यीरो दस्याः नूर कहत कवि लोइ ॥३२६॥

लवण भूमिः लवना कर प्रगटै जहां गंजा रमा वपानि ।

भूमि वर्ग पूरन भयो नूर पुरी पुर जानि ॥३२७॥

इति भूमि वर्गः । अथ गुरस्थानीय नगरी नाम व पुरी नामः

पत्तन पुट भेदन निगम । पुरी पूः नगरीय ।

सापा नगर सुनि-कटपुरी (पुरी पुरातन नाम) : मूल नगर तैवीय ॥

पौली वा हृदनामः

विसिपा रय्या प्रतौली विपणि वीथिका पण्य ।

निपद्या सु आपन बहुरि, (गढ़का नाम) : होत दुर्ग गढ़ अन्य ॥

कोट वा भीति नामः

साल वरुण प्राकार चय वप्र वृत्ति प्राचीर ।

प्रांतत कोट सुभित्ति कहि ।

(हाड हकी भीत होइ ताकी नाम मेंडूक नाम)

कुडा मेडूक सुधीर ॥३०॥

पदसाल वा घर नामः

सदन सद्म मंदिर भुवन वेस्म निशांत अगार ।

है निकाय्य आलय निचय आस्पद वस्त्यविचार ॥३१॥

सरनायत प्रासाद कुट सौध हर्म्य संकेत ।

वासु उदविसत ग्रह ग्रह सभा सालासुप देत ॥

ज्यन पद अरु आस्थान की बहुरि अगार कहंत ॥३२२॥

आंगण नाम :

आंगण चत्वर अज्यिर पुन । भाग्यवंत सुलहंत ॥३३३॥

मुनि ग्रह नामः

पर्णशाल मुनि जनन की, उटख कहल है ताहि ।

धैत्य भायतन जग्य भूः (धुङ्गसास नाम): मंदुरा ह्य सालाहि ॥३४॥

चौवारा धा पणहडा नामः

पन्द्रसाल सोई सिरो ग्रहः संज्यवनं चतुः साल ।

सूत्रधार साला नाम सिल्प कारिकी नाम है:

ताहि सिल्प साला कहै धावे सन सुनि साल ॥३५॥

वारि सामिका कहि प्रपा, मठ सिम्प्याधिक धाम ।

सूतिका ग्रह सु परिष्ट है गंजा मदिरा ग्राम ॥३६॥

गर्भ गृह नामः

गर्भाधार सु बास ग्रह । जो घर में घर होइ ।

नूर कहल बहु ग्रहन की निपट मध्य है सोइ ॥३७॥

राज स्त्री ग्रह वा ऋरोपा नामः अंतः पुर नामः

अभरोषन बरोष सो सुबांतः पुर धाहि ।

बाठायन गनास सो ज्ञान ऋकोपा धाहि ॥३८॥

मैडा वा खानि नामः

धवुधोम कहिये घटा (खजा का नाम) बसी पटल खज्जा सु ।

पटल प्रांत कहि निघ्नू कहि खज्जा अंत प्रकासु ॥३९॥

कपोत गृह वा द्वार नामः

प्रती हार द्वारस्थ रथ्य क दर्शक सोई परवार ।

बाबक हैरिक परसरः गूङ्गपुरुष चत्वार ॥४०॥

जासूस नामः

कहै बिटंक कपोत ग्रह द्वार द्वार प्रतीहार

बहिर्द्वार तोरण बहुरि गोपुर सोपुर द्वार ॥४१॥

किचाडवान सीणी व पैठो नामः

अरर कपाट बसानिए बिष्कुंभेर्गम जान ।

निः भेणी अधिरोहणी धारोहन सोपान ॥४२॥

कोसा व देहली नामः

प्रपथ प्रपाण धनिव कहि । बहिर्द्वार जो होइ ।

प्रहाय ग्रहणी देहली मपदावण सिन सोइ ॥४३॥

किचाडहकी अटेकापथर वा काष्टविचगाडि है ताकी नामः

वहु कपाट की घटक की गङ्गोपी काठ्यापान ।

कूटहस्त, नय कहल है नूर सुबुदि निधान ॥४४॥

गाढ की ग्राम नाम वा भोहरा नाम

संवसथ जानियो, ह्वै जु गाढ की ग्राम ।
वस्तु वेस्म भू नूर कहि । भूसि ग्रेह के नास ॥४४

ग्रामांत नाम:

उपसल्प सीमा बहुरि सीम कहत कविराज ।
घोष ग्राम आभीर की, पल्ली गोष सुसाज ॥४५

बुहारी वा कूडा नाम:

समार्जनी सोई सोधनी, संकर अवकर सोइ ।
निष्कुरपण निःसरण मुष । संनिवेस पुनि होइ ॥४६

घर् द्वार बाहर कों निकसै ताकी नाम:

सवरालय तपववन जे कि रात के धाम ।
नूर कही पुरवर्ग अब सुनहु सैल के नाम ॥४७॥

इति पुर वार्गे समाप्तः महीध्र वा पापाण नाम:

सैल, शिलोच्चय अचल नग अद्रि, गोत्र, गिरि, ग्राव ।
धर, पर्वत, अग, दरीभूत, शिपी, शिपरी हरि नाव ॥४८
सान मान, निलोचय, त्रिकुट, क्षमाभूत बहुरि अहार्य ।
ग्राव अस्म प्रस्थर उपल, दृपस सिलाज पहार्य ॥४९॥
लोका लोक चक्रवाल है त्रिकूट, त्रिककुतु, जान ।
अस्तचरम गिर की कहै । उदय पूर्व निरमान ॥५०

अष्ट पर्वत नाम:

मेरु, हिमालय, विध, पुनि मलयाचल, कैपासु
उदयाद्रि, रोहण, अष्ट, लोका लोक नगासु ॥५१

पर्वत सिपर वा तट वा मध्य नाम:

कूट सिपर अरु शृंग कहि । भृगु प्रपात तट होइ ।
कटक, नितंब, सु मध्यगिर सानु प्रस्थ स्नु सोइ ॥५२

जलपरवा हवा कंदर वषानि नाम:

उत्सः प्रसवणु, भर, निभरः वारि प्रवाह बहंत ।
दरी कंदरा जानियो :: (पानि नाम) :: खजुनि आकर कहंत ॥५३
देव षात जानहु, बिला गुहा गह्वरा होइ ।
सिला गिरै गिर तै पृथुल गंडसिला है सोइ ॥५४॥
धातु मन सिला आदि दै, गैरिक धातु विशेष ।
कुंजनि कुंज लतादिकन उदरावृत अतिलेष ॥५५

इति शंन धर्मः ॥ धरष्य वा वाग नामः

घटवी, वन, कानन, गहन, कक्ष, विपन कांठार ।
निष्कृत ग्रह, धाराम, पुनि उपवन, वाग, विचार ॥१६६
मंथी गनिका ग्रन्थ, तपवन, वृक्ष वाटिका जानि ।

रागा, राजा क्रीडा वन नामः

साधारण जुवन उद्यान प्राक्रीडानि ॥१७॥

पंकति वा भ्रंकर नामः

बीबी, प्राप्ति, आवली, श्रेणी, सेपा, राजि ॥
भ्रंकर, अभिनव उद्भिदः, यन्त्रा । अतिवन प्राप्ति ॥१८॥

वृक्ष नामः

खापी, बिटपी, पूनासी, इतर फसी नगसाख ।
पावप, भनोकुह, महीरुह, कुठ घामम द्रुम माल ॥१९॥

पेठ वा शाषा वा हूडे वृक्ष नामः

स्थाणु, संक, द्रुम, पेठ कहि सिफः क्षुपः सधु साप ।

धिना गाडि वृक्ष नामः

स्तंभ गुल्म भ्रमकाड सो एक सरम सुप भाप ॥२०॥

बल्ली नामः

गुल्म, निप्रतति, विद्यानिनी, बिस्नी, बिस्ति, लसाहि ।
बल्ली, उपल, वपानिये बेलि कहुत है जाहि ॥२१॥

पर्वकादिक ऊंचा का नामः

वृक्षा विक की उद्यता, सो भारोह वपान ॥

ऊंचा का नामः

उच्छ्राय, उत्सेध, पुनि उद्य, कहत प्रमान ॥२२॥

डाला नामः

स्कंध, प्रकाड मुडामये । धड़े पेड़ सामान ।
घासा, डाला, साप, से, शिफा, जटा, को जान ॥२३॥

मूल तं निकरि बेल वृक्ष ऊपरि चढे ताकी नामः

शापा सिफाबरोह सो सता भ्रमगठ मूल ।

वृक्ष शिषा नामः

विस्तर, विरोध, वपानिये, याने कछून मूल ॥२४॥

जड़ वा मोगी या नामः

मूल, बुध्र ग्रंथि मुजब मज्जा मीमो साह ।
यल्क, बल्कल, खच, मुख्यक, काठ फाष्ट भ्रम दाह ॥२५॥

ईधन नाम वा वृक्ष क्षेदन नाम वा मौर नाम:

इध्म, एध, इंधन, समित्, मेध, कहत सब ठौर ।
निकुह, कोटर, छेदतर, वल्लरि, मंजरी, मौर ॥६६॥

पान नाम:

पत्र, पर्ण, दल, छदन, छद, बर्हि, पलास, बषानि ।
पल्लव, कोमल, पत्र, जे, किसलय, कहत प्रवानि ॥६७॥

वृक्ष बिस्तार नाम:

कहै विटप, विस्तार तर, वृक्षादिक फल सस्य ॥

बंध्य वृक्ष नाम:

वृंत प्रसव बंधन सुनो । स्तवक, गुक्ष, पुहुपस्प ॥६८॥
मूल, जाति, कहि विदारी, ब्रीह फलादि बषान ।
पुष्पादिक है पाटला नूर नाम परवान ॥६९॥

फल ऊपर जाली व जालिका घैता कौ नाम:

क्षारक, जालक, जाली का कलिका कोरक जानि ॥

बन्धी कली का नाम:

ईषत विकशित जो कली, कुञ्जल मुकुल सुजानि ॥७०॥

फूलण का वा कुमिलाण का नाम:

फूलण का वा कुमिलाण का नाम :

व्याकोशः, विकच, स्फुटः, विकसित, फुंलित, सोइ ।
उत्फुल, प्रफुल, संफुल, पुनि, परिफुल्लित, जो कोइ ॥७१॥
दलित, प्रबुद्ध, विनिद्रित, बिहसित, प्रफुलित फूल ।
सकुचित, मुद्रित, निद्रत, मिलितं, मुचितं, मूल ॥७२॥

फूल का नाम :

पुष्फ, प्रसून, प्रसव, सुमन, कूसम, सुमन सुलतांत ।
हे मकरंद, जु, फूल रस, रज, पराग, अनितांत ॥७३॥
संबत्तिका सु नौदलं केसर, किजल्प ।
कूपलि, कौप, बषानिये, जो, द्रक्षोपरि झल्क ॥७४॥

काचा फल नाम :

आद्र होइ जो वृक्ष फल । सोई आम सलाट ।
सके तांन सुनूर कहि, बीज्य कोस सु बराट ॥७५॥
उन्मूलितः, उद्धृत, लुलित, धृत, पेंखित, उत्पात ।
प्र खोलितः, तरलित, बहुरि, निर्मूलन, विष्यात ॥७६॥
आस्था पित, आरोपित, स्थिती करण, विष्यात ॥७७॥

भांघ नाम :

केवल्लभ, सहकार, सो कामांगः, मधुद्रुत ।
माकदः, पिकवल्लभः, पुनि रसात्, श्री नूत ॥७८॥

नारील वा केला नाम :

वानर सुप, पुनि भांगली, धायत, सो लांगूर
रना, मोधा, गज वसा, भानु फसा, जा, नू ऊर ॥७९॥

सुपारी वृक्ष नाम :

घाटा अमक गुभाक पूग सुपारी काम ।
ता की फल उद्वेग है । नूर कहे गुन धाम ॥८०॥

मनार नाम :

रसत बीज हालोक र विक । सुक प्रिय दाहिम नूर ।

विल्व नाम :

सासूप, सैनूप, पुनि, बिल्व, धीफल मासूर ॥८१॥

विद्रुम वा जाय नाम :

सुपिरा, नटी, नपी, धमनि, कपेलाद्रि परवास ।
जनकेसी, पुनि, मासवी, जासी, सुमना भात ॥८२॥

रायवेलि दुपहरीया नाम :

धवप्टा, प्रिय बाविनी, राजपत्रिका, जूक ।
जपा कृत्तम पुनि रक्तक बंधु जीव बंधूक ॥८३॥

सिल पुष्प नाम :

बखपुष्क, पुमि जपा कहि, एंड्र पुष्क है सोइ ।
नूर नाम एडे कहे प्रगट पुष्कतिस होइ ॥

केतकी वा चिरमठी नाम:

केतुकी, कहिये, त्रिभद्रमा, ताप, पजूरी सोइ ।
काक बिचुका, कृत्तता, गुजा, मपी सुहोइ ॥८५॥

पीपल वा बड नाम:

धस्वष, घोष, द्रुम, धसदस, कुंज रासन याहि ।
निग्रोथो, बहुपाप, बटः, जटी, रक्तफल प्राहि ॥८६॥

सूत वा चड वेर नाम:

तूस, तूद, पूप, क्रमुक, ब्रह्मदास, ब्रह्मथ्य ।
कंकंधू, बदरी, सोई, कोलि, कहत है ग्रम्य ॥८७॥

धंपा का नाम:

धापेय, सो, धपक हेमपुष्कक जानि ।
गय फली ताकी कसी पंडित करहु प्रवान ॥८८॥

तांबूल बल्ली नामः

तांबूल, बल्ली जानियो । बल्ली नाग वपानि ।
तांबूली, सोई दिवजा, प्रगट, पांत, आघानि ॥३८६॥

बडी इलाइची नामः

एला, बहुला, निष्कुटी, उहे, चंद्रसाला जु ।

छोटी इलाइची नामः छोटी एलचा धिपुटा, बुटि, उपकुंचिका, तुछा सूक्ष्मा भ्राजु ॥६०

माधवी वा कुंद नामः

वासंतो, सो, माधवी पुन्द्रक लता कहंत ।
अति मुगतः, पुनि, कुंद, को माध्यनाम, सलहंत ॥६१॥

धतूरा नामः

धूतं, कनक, मातुल, मदन, उन्मत, कितव, धतूर ।
मातुलपुत्रक जानिये या को फल परि पूर ॥६२॥

वांस नामः

वंस, वृणधुजा, वेणु, सो त्वचि सार त्वकसार ।
तेज नमस्कर जब फलां शतपर्वा, किम्भरं ॥६३॥

ऊष वा पोंडा वा कतारा नामः

इक्षु, रसाल, सु जानियो पीडा, पुञ्चक होइ ।
ताकार, जु, कंतार, सो, नूर नाम कहि सोइ ॥६४॥

सण्दायमान वा सना वा गांठि वा किनारा नामः

सव्व करत जे पीन तें वेणव को जक जान ।
गांठि, ग्रंथि, परुषी, पर्वा, गुंड्र जनक सरकान ॥६५॥

घास वा तूण वा डाभ वा ताड वृक्ष नामः

सप्प बाल वृण यवस पुनि अजुंन घास समाज ।
कुश कुय दभुं पवित्र, सो ताड ताल वृणराज ॥६६॥

पेठा नामः

कूप मांड, कर्कार सो पेठा नाम वपान ।

कर्कडी वातूंबी नामः

और वारककंटिक है तुंवि अला वू जान ॥६७॥
वृण द्रुम ताडी केतकी पज्जूरी पजूर
नामक है वन वर्ग मैं उत्तम उत्तम नूर ॥६८॥

गांडर वा षस नामः

वीरतरं, सीवीरण ताकी मूल, उसीर ।
अभय, नलद, अमृनाल, लघु, जलाशय, सु उसीर ॥६९॥

बदरी, कोली, कुबल, सी कौबल, बदर सीवीर ।
 फुनि फेनिल कंकभू सो, घोंटा सुनहु सुधीर ॥४००
 कहै भौपधी वर्ग में नाम प्रकट जे नूर ।
 सिध थगं भव बनंऊं सुनव होत बुधि पूर ॥४०१॥

इति भरभ्य वर्गं संपूर्णं : : प्रथमगुराज नामः

पुंठरीक, कंठीरब, फेसरि, हरि, पंचासि ।
 हर्यक्षः मृगदृष्टि, सो मृगासनः, पुनि भासि ॥२॥

व्याघ्र वा चीता नामः

साद्रूस द्रवीपिन् सोई कहै व्याघ्र मनिधान ।
 तरभु मृगादन बिप्रक चीता नाम प्रवान ॥३॥

सूकर नामः

सूर दृष्टि पोत्री कितिः दृष्टि घोणि किरि कोल ।
 स्तम्भ रोम भू वाह सो, काड बराह बडोल ॥४॥

वानर नामः

बनचर मकंठ, वसोय मूल सापा मृग हरि कीस ।
 प्लवग बनोक प्लबंग कपि कहिनांगूल कवीस ॥५॥

रीछ नामः

षष्ठ, भत्स भासुक पुनि, भस्सुक षष्ठ बपानि ।
 पाद्विग, पद्ग सुगंडक गंडा नाम प्रवानि ॥६॥

भेसा वा भेस नामः

बाहू विपत्, फासार, सो सैरभ महिप मुसाय ।
 महिपो स्त्री वा श्री स बव याही भाति कहाय ॥७॥

बिलाव वा विलाई नामः

होतु बिडाल सु घ्रापु, भूक, वृष वंसक मारार ।
 माजारी ताकी त्रिया स्त्री बाशी सु विचार ॥८॥

गोदड़ नामः

जंबुक, मृग, घूर्तक, शिवा वंसक क्रोष्ट सिगाल ।
 भूमिमायु, गोमायु, पुनि फेर, फेर य भाल ॥९॥

मृग नामः

हरि कुरग गारग हरिण प्रजिन जंति बातायु ।

मृग जाति नामः

कृत्त सार, रुह्यक, सो रकु एन कहायु ॥४१०॥
 संवर रोहिप गोकरन कदमी कंदली खोन ।
 धमक प्रियक सुरोहित धमरो मृग परबीन ॥११

रोक नाम:

राम सरभ गंधर्व शश :: (परहा नाम) :: गवय सूमर विष्ण्यात ।
मृगेंद्रादि इत्पाद योग वादयप सुजात ॥१२॥

छछुंदरी वा चूहा नाम:

गंध मुपी, सु, दिवांधिका, दीरघ तुंडा जानि ।
उंडुह मूपक आपु पुनि गिरिका मूपिका मानि ॥१३॥

गिरगट वा छपकली नाम:

मरट बहुरि कृकलास ए दोइ गिरगिट के नाम ।
पल्ली मुसिली गोधिका रहै छपकली धाम ॥१४॥

मकड़ी वा ममोला नाम:

तंतुवायु, लूता, सोईउर्न नाभ सूत्रा मु ।
पंजरीट पंजन बहुरि कहै ममोला तासु ॥१५॥

कान षजूरा वा कीडा वा वीछू नाम:

कर्णजलीका, शतपदी, नीलागु:, क्वमि, जानि ।
शूक कीट वृश्चिक अलि, द्रोण वृश्चिक सो आनि ॥१६॥

सिचाना नाम:

पत्री श्येन ससादन कहै सिचाना नाम ।
चाप किकी दिव नूर कहि नील पंप अभिराम ॥१६॥

धूधू नाम:

वायस, अरिपेचक, उलू, धूक, उलूक हि आहि ।
कौसिक और निशाटन दिवाभीत नहिचाहि ॥१७॥

सूवा नाम:

स्वर्ण चातक किकी दिवि चाकौ चाष वषानि ।
अनुवादी शुक कीर सो रक्त विव पहिचानि ॥१८॥

पपीहा वासारस नाम:

कालकंठ दाल्यूह हरि, सारस सोई सारंग ।
स्तोकक चातक पपीहा जपत रहत पी अंग ॥१९॥

कोइल वा कबूतर नाम:

कोकिल वन प्रिय रक्त दृग पिक परभृत एनाम ।
कलरव परावत बहुरि कहि कपोत अभिराम ॥२०॥

चकोर नाम:

विषसूचक विष भीरुक जावं जीव चकोर ।
ससि प्रिय अल अंगार भुकू कहि, गुद्राल बहोर ॥२१॥

काक नाम

बलि पुष्टः सकृत्प्रजाः । आत्म घोष परमुत्त ।
धरिट धरिष्ट सु वामस ध्याक्ष बलि नृजो नित्त ॥४२२

द्रोण काक नाम

द्रोण काक काकोल कहि काल कठ वात्सूह ।

चील्ह नाम

घातायिन् सो चिल्ल है, वक्षाय्य गृध्र समूह ॥४२३॥

मुरगा नाम

ताम्र चूड चरनायुष कृकं सो कृकुवाकृ ।

चिड्डा नामः

चटक पुनि फलविक तिहिवनिता चटिका ठाकृ ॥४२४॥

कुञ्ज नाम

धृ श्रीच “(बगसो नाम)” बक कंक कहि, (सारस नाम) पुष्कर सारस बानि ।
कार्दवकल हंस सो “(हंसनाम)” राज हंस पहिचानि ॥४२५॥
स्वेतगरस क्षतसिद्ध बहुरि मान सोक चक्रंग ।
हंस मराम वपानिए धु ष चरन प्रति स्याम ॥(घात्रं राष्ट्र मनि वांग ।)

षकवा षकई नाम

कोक चाक चक्र षक पाक रयांग ताक्री नाम ।
राम थापि, जामिनि बिघूर, सूरसपा धनिराम ॥२७

सारो वा हंस स्त्री वा सारस स्त्री वा डसि नाम.

वसाका सु बिद्यकंठिका भरटा जोपित हंस ।
सारस वनिता लक्ष्मणा बन मक्षिका सुदंस ।

मधु मक्षिका नाम

सरथा है मधु मक्षिका, (टीको नाम) सलमा साइ पतंग ।
पतंगिका सो पुत्तिका बीप निरपि दे प्रंग ॥२६॥

ततैया वा झलप दस वा भमरी नाम

गधोली भरटा बहुरि भमरी हथपानि ।
मृ गारी सोबी रुका धीरी जितिका धानि ॥३०॥

जोगिनी नाम

धागियो ज्योति मासिनी कीटमणि, इन्द्र गोप सो पाहि ।
ज्योति रंगण, पद्योत है भापा मीगल धाहि ॥३१॥

ध्रमरनाम

मधुकर मधुसिद्ध मधुप धनि मधुबल है मधु नोर ।
धनिन मृ ग पटपद धनी कीना नय सोई भोर ॥३२

चिचरी:

चिचरोक चेलंब पुनि रोलंबः सारंग ।
द्विरेफ पुष्फलिद्र सिलीमुप इंदीमद चल् अंग ॥३३॥

मयूर नाम:

नील कंठ वरहिण वहीं शिपी शिपा वलि सोइ ।
केकि कलापी शिपंडी लाशी ग्रहि भुक होइ ॥४३४॥

मोर पूछ में चंदोवा ताका नाम:

चंद्रक मेचक चंद्रिका (मोर वचन नाम): केकावाणी मोर ।

सिर ऊपर मोर कैह चूडा ताकी नाम:

चूडा शिपा त्रिपंड पुनि । (पूछ नाम) । पिक्ष वहंपुंछीर ॥

पक्षी नाम:

छिज पतत्रि पत्री पतन् अंडज विहग विहंग
पक्षिन गोक विहायस सकुनि सकुंत पतंग ॥३६॥
वाजि विकर विः विक्वर नीडोद्भव पित्संत ।
पतत्रयः पुनिपत्ररय नभ संग मगरुत्मत ॥४३७

पांप वा चूच वा उंडण का नाम:

पत्र पतत्र तनूरह गरुत पछ छदलीन ।
पक्ष मूल सपक्षति ब्रडीन उद्रीन संडीन ॥४३८॥
चंचु स्त्रोटि सृपाटिका पेशी कोशो अंड ।
नीडकुलाय सुनाम द्वै जापक्षी ग्रह मंड ॥३९॥

बालक का वा दौय का नाम:

पोत पाक अर्भक पृथुक डिभ सिसुक सिसुवाल ।
मिथुन द्वंद द्वे उभय विव वीय जमल युग भाल ॥४५०

समूह नाम:

निवंह व्यूह संदोह ब्रज स्तोम औघ संघात ।
चय संचय समुदाय गण निचय वृंद सोब्रात ॥४१
जुग युथ कंदल जाल कुल कुरव कि लाल समाज ।
वर्ण परिग्रह ग्राम पुनि कहिअ नेक कविराज ॥४२
निकरंव समुदय त्रिकर निकर वार समुवाय ।
विकर कदंब अनंतए संघ समूह कहाय ॥४३॥
वृंद भेदसमवर्गजे ॥

(येक ठौर होंहि सो संघ सार्थकहिए ।)

संघ सार्थ बहु जीव ॥

(यूथ वा कुलपक्षी समूह) सजातीय सौ कुल कहै यूथ पक्षीए कीव ॥४४

पशु समूहकी, समज, कहि घोरन की सु समाज ।
सह धर्मी सुनि काम है भेदकहत कवि राज ॥४५

रासि वा ग्रह पक्षी नाम-

पुत्र निकाम सु उत्कर कूट कूट से होइ ।
पक्षी मृग जो धरन में छेक ग्रह्यक सोइ ॥४६॥

वर्ग नाम

देपिये बस्तु अनेक जहाँ है पुनि सर्व समान ।
नूर कहत है समझिकै तासो वर्ग बयान ॥४७॥
सिष वर्ग की नूर कहि सुनत संघ बस होइ ।
सुनहु मनुष के वर्ग की नूर बयानत सोइ ॥४८
इति सिषादि वर्ग संपूर्ण ॥

अथ मनुष्य वर्गः ।

मनुष्य नाम

नर मानव पूरप पुत्रप मानव मर्त्य पुमान ।
मनुज पच जन मनुष्य सो शरीरभूत परवान ॥४९॥

स्त्री नामः

स्त्री योपित् भगुसा बभू । वासा बनिता नाम ।
प्रमुदा काता कामिनी महिमा रमणी राम ॥५०॥

कोपवती स्त्री नाम

वाम लोचना सुंदरी सीमतिनी नारी सु ।
सलना जोषी कोपना नितंबिनी प्यारी सु ॥५१॥

कृताभिपेका नाम

भामिनी भीरु भागिनी पतोप बदिनी चाहि ।
महिषी पटरानो उहै और भोगिनी चाहि ॥५२॥
पत्नी, पाभिप्रही, कहै सहस्रम्मिणी सु और ।
दार भार्या, जाया सो प्रेहिणी प्रही बहीर ॥५३॥

साधु स्त्री नाम

स्वयंपरा, सु, पतिवरा, पर्याप्तार्जा जाणि ॥
सती भाषनी सु पतिप्रता सुचरित्रा सुबपाणि ॥५४॥

उत्तम स्त्री नाम

उत्तमा सु, वर बनिनी वरारोहासतह्व ।
भामिनी कहिये कोपना बाम लोचना कहत ॥५५॥

कुटव स्त्री नाम-

पोरघ्री, सु, कुटंबिनी । कुत्तपालिक कुत्तवीय ।

कन्या वा गौरी नामः

कन्या कुमारी कौक है सात वरस ली होइ ॥५६॥

अदि व्यस्त्री नामः

दमयंती, सीता, दितीउ सची, आदि दै दिव्य ।

तारा मंदोदरी सती कहि मानुपी अदिव्य ॥५७॥

तरुण स्त्री नामः

दृष्टर जासो मध्यमा गोरीकहिये सोइ ।

तरुणी युवा सु नाम ऐ [बहू नाम] विध्रूं जनी स्नुपा होइ ॥५८॥

कामुकी स्त्री नामः

इच्छावती सुकामुका, दृप, स्पंती, सलहंत ॥

पतिहित नत संकेत की, अभिसारिका कहंत ॥५९॥

भगतना नामः

कुलटा असती बंधुकी मुक्तापला सजार

पुश्चली धपिणी ईश्वरी श्वैरणी पांशुला नारि ॥६०॥

जा स्त्री कै सीकि होइ ताकी नामः

पति पत्नी सु सभत्रिका, विश्वस्था विधवा सु ।

(त) सुत पति कों हतै ताकी नामः

अवीरा सु निष्यति सुता सीति सपत्नि प्रकासु ॥६१॥

सषी वादूती नामः

सध्रीची आली हितू वयसा सहचरी होइ

दूती कहि संचारिणी कुट्टिनी संभली सोइ ॥६२॥

वेश्या नामः

रूपाजीवा कामुकी सर्व्व बल्लभा नाम ।

वार बधू, रु, विलाशिनी लंशिका गणिका भाम ॥६३॥

रजस्वला नाम

मलिनी पुष्पवती अवी, स्त्री धमिणी बषानि ।

बीज वा गर्भवती नामः

उदक्या सु पुनि रति मती आत्रेपी पहिचानि ॥६४॥

आर्त्तंव रज, सो पुष्प है, दोहद वती श्रधालु ।

निष्कला सु बिगतार्त्तवा बहुरि गर्भिणी भालु ॥६५॥

आपन्न सत्वा गुर्विणी अंतर्वली जानि ।

बहुरि कौटवी नग्निका नग्न स्त्री पहिचानि ॥६६॥

बृद्धा स्त्री वा पंडिता स्त्री नाम :

ताहि पत्निकी कहत है, जो बृद्धातीय होइ ।
 प्राज्ञी प्रज्ञा पाज्ञा बुद्धिवंत तिय सोइ ॥४६७॥
 कन्यार्थ उपजै पुरुष तिहू कानीन कहत ।
 सुभगा सुत को सुक बिजन सो भागिनेय सलहत ॥६८॥
 भागनेय भगनी सुत सुधेय विष्णाय ।
 पितृ पिता सो पितृमह प्रपितामह तिहू तात ॥६९॥
 माता मह, जननी पिता नानामाम विषाय ।
 मातुभ्राता, मातुस, दुहितापति आमात ॥७०॥

पुत्र नाम :

पुत्र सूनु सुत तनय सो भारमज कहि भूमिधान ।

वेदी नाम :

सुता भारमजा पुत्रिका तनया नूर सुताम ।
 संतति लोकः अपत्य पुनि दुहिता जानहु सोइ ॥७१॥
 नून नाम बहोइ बहिन के भन्नी सुछा सुहोइ
 स्वपति जंपति स्त्री पुरुष भार्या पती जू होइ ॥७२

भौजाई नाम :

भौजाई सु प्रजावती, जोभाई की नारी ।
 मातुभ्राता, सो, मातुसो भागी जानि बिचारि ॥७३॥

उपपति नाम :

उपपति कहिये आर सों आरज कुंड बपानि ।
 भर्तृ रिमूठे सुगोल कहि, नूर नाम ए बपानि ॥७४॥
 सृति मास बैजनन पुनि गर्भ भ्रूण कहें सोइ ।
 त्रितीया प्रकृति, क्लीब पद पंडन पंसक होइ ॥७५॥

बाल भवस्था वा तरुण भवस्था वा वृद्धि भवस्था नाम .

बाह्य शशब शिशुत्व बालस मय भभिराम ।
 वारुण्यं पुनि यौवनं स्थाविर बृद्धत्व नामः
 केसादिक उज्ज्वल मए ताकी पलित बपानि ।
 भति धरीर जोरन सोई जरा बिभ्रसा भानि ॥७६॥
 अति पत्नी की प्रसूता स्वधू आनी छाहि ।
 बहु की पिता सुबहुम की सुखर नाम सो आहि ॥७७

बालक नाम :

उत्तान शयनिभ सो स्तनंपयी स्तनपासु
 माभवक सो भासहै, तरुण, वयस्व युवासु ॥७८॥

दसमी अवस्था नाम :

वृद्ध जीन जीर्ण जरन् प्रवयः स्थविर कहंत ।
अग्रज अग्रेय बहुर पूर्वज्ञ जेष्टह कहंत ॥७६॥

छोटा का नाम :

अनुज जवन्यज अवरज कनिष्ठ जवीयोजान ।

दुर्बल वा बलवान नाम :

दुर्बल छात अभास सो अंसल मांसज मान ॥८०॥

तुंदिल वा नीची नाम :

वृहत्कुच्छि सुपिचंडिल तुंदी तुंदिक होइ ।

चपटी नाक नाम :

अवटीटो अवनाट, अवभ्रट, नतु नासिक सोइ ॥८१॥

छोटी नाक नाम :

पर्व ह्रस्व सुवावन ।

बुग सौ नाकता का नाम :

परणस पुनि परसा स ।

नकटी नाम :

विग्र, स्तुगतनासिक कहै नूर सु प्रकास ॥८२॥

बहिरा वा कूबड़ा वा अल्प तनु वा जुरढी वा टुंड नाम :

एड बधिर गडुरा कुज्व पृश्निअल्प तनु सोइ ।

उदर उपरि पली पडै ताकौ नाम :

बलिनु बलभ कुकरः कुणिः सकुचि तांग जिह होइ ॥८३॥

श्रोण पंगु कौ कहत है मुंडन चूड़ा कर्म ।

बलिरः केकर व्यंजन षोरे षंज सु मर्म ॥८४॥

स्वयृति क्रिया सुचिकित्सा, अनामय आरोग्य ।

भैषज्यः भेषज अगद जायु औषधी योग्य ॥८५॥

रोग नाम :

आतंकः उतपात गद आमय रुक रुज ओष ।

रोग व्याधिसौ कहत है ताही जानौ दोष ॥८६॥

क्षयः शोष, यक्ष्मा बहुरि पीनस है प्रतिस्पाय ।

क्षव क्षुतं क्षुत् जानिये कास क्षवथु कहाय ॥८७॥

सोफ सोथ सोई, स्वपथु सिध्म किलास हि आहि ।

पादस्तोट बिपादिका कहै बिवाई ताहि ॥८८॥

पाम वा विवाई नाम :

पामा पाम विचर्चिका कछ्वा ताहि वपानि ।

कंडू नाम :

कडू या कडू बहुरि पजूं पाजहि जानि ॥८९॥

फोडा नाम :

फोटक विस्फोट पिटक प्रप नाडी व्रण भ्रान ।
कोठ कूट मंडल सोइ, वित्र गमित परवान ॥९०॥

ववेसी नाम:

अर्थ कहे कुर्तामिका भाना हस्तु लिबन्ध
प्रछदिका वन्यु धमि, छदि वांछि कृति भंभ ॥९१॥

बंध नाम:

बंध, रोगहारी मिपक चिकित्सिक भगदकार ।
बार्त्त बिरामय कल्प पुनि, उत्साध गद पार ॥९२॥

रोगी नाम-

आसुर, अर्म्मातः विकृत आधित अर्म्मित होइ ॥
अपट्ट आमजा, बी, बहुरि रोगी कहिये सोइ ॥९३॥

बीज नाम:

अथ अदक मूर्च्छाल सो मूर्त्तः मूर्च्छित आहि ॥
सुक तेज इंत्री बीर्य बीज रेतसा चाहि ॥९४॥

मांस नाम:

मायु, पित्त, कफ, स्लेष्मा, त्वक अस्टाद्वरा आहि ।
पित्तर्त्तरन, पलस, सुपस, ऋष्य आमिप हृ वपानि ।
खुब्क मांस उतप्त है सिद्ध बलूर सुजानि ॥९५॥

रुधिर नाम:

रक्त क्षतज शोणित असुग् सोहि तास सहनत ।

मेद वा मल वा गूद वा अंत नाम:

अपा बसा सो मेद है, मल कौ किट्ट बपानि ।
हिरवं मस सो योद पुनि [अंत नाम] अल पुरीत सुजानि ॥९६॥

नाडी नाम:

नाडी धमनी भामनी धरानशा हिषाहि ।
बीधत न्याता तनुकी स्नायु खिरा सो चाहि ॥९७॥

बस वा लाल नाम:

स्नायु पस्न साय कृती काल पंड बसु होइ ।
सातो सृणिका स्रंदिनी वृषिका दूग मस सोइ ॥९८॥

गूष वा मूत्र नाम:

विष्टा, विषरा, मस, धकृत्, गूष, पुरीय उषार ।
बर्ष, बर्षकस् धवस्कर, मूत्र प्रस्ताय बिचार ॥९९॥

संपूर्ण शरीर हाड नाम:

हाड अस्थि कीकस कुल्फ कर्पर सोई कपाल ।
पृष्ठास्थिसक सेहका सरीरास्थिन कंकाल ॥५००

अंग वा मूर्ति नाम:

अंग प्रतीक: अवयव, अपघन अंग सरीर ।
काय देह मूर्ति तनु धाम पतंग सुधीर ॥५०१॥
विग्रह उपघन संहरन वप्पम पुंगल मात्र ।
वपु संहन सरीर सो कहै कलेवर मात्र ॥५०२॥

पाउ की अग्र नाम:

फाग्र, प्रपदं बहुरि चरण अंगि पद पाद ।
गुल्फ घुटि क टकना तलइ, पार्श्विण्डी जगाद ॥३॥

गोडा वा जांघ नाम:

जानु उपर्व अष्टीवत् प्रसृता जंघा होइ ।

जंघ संधि नाम:

उरु पर्पतिह संधि की वंक्षण कहै सु लोइ ॥४॥

लिंग नाम:

मेट्रो मेहन सेफसी सिशनु लिंग तिह जान ।

आंड नाम:

अंड मुष्क, शोको वृषण [गुदा नाम] गुदा पायु सु अपान ॥५॥

जोनि नाम:

भग, बरांग, मंदिरमदन, जोनि, कूपिका, उपस्थ ।
स्त्रीचिन्ह, पुनि, कुगतिपथ, सुपनिधि, उतपति अस्थ ॥६॥

पेडू नाम:

वस्ति नाभि तल को कहत [चूतड नाम] श्रोणि फलक कट होइ ।

कटि वा नितंब नाम:

कटि पीछै सु नितंब है: [जघन वा नाम] जघन पुरस्सर सोइ ॥७॥

कट नाम:

कूपक होइ नितंब मै ताहि ककुंदर जानि ।
कटि श्रोणि सु कुकुद्मती अवलग्नं मध्यमानि ॥८॥

लिंग जोनि डिग अंत ताकौ नाम:

कटि प्रोथ, स्फिच, खोइ, जोनि उपर जो होइ ।
पीठि वंश कौ त्रिक कहै पृष्ठ चरम तन सोइ ॥९॥

पेट नाम:

तुंद पिचंड जठर उदर कुच्छी पेट प्रवान ।
वक्ष वत्स उर कौ कहै भाषा छाती जान ॥१०॥

कुच नामः

उरज, पयोधर, कुच, स्तन, संहन, पुन बछोज ।
धूसक कहै कुचाग्र की [मोद नाम], कोड मुखांतर सोज ॥११

कांथा नामः

स्कंध मूज सिरो भंस जो जंघुणी सत संधान ।
बाहु मूल खेक छहै पाषर्ष विहृत सजात ॥१२॥

मुजा वा कुहणी नामः

दोप, प्रकोष्ट, सुबाहु, भुज, सूतज, कम्बज कहत ।

कुहनी उपर प्रगंड नामः

कृ फोणी सू क्षुर्पर, उपर तिह प्रगंड ससहंत ॥१३

गोद के नामः

मोद उधंग करोत प्रक, प्रक मास उतमंग ।

सीस भूषन नामः

सीरप मनि सीरप पुहप धूडा मनि मनि धिय ॥१४॥

पहुचा नामः

पहुचा सोमधि वंध कहि, भापत नूर सुजान ।

नाडा नामः

नीबीप्रंध बंधन प्रसवन, धंवर निवस परिधान ॥१५॥

हाथ भंगुली दिखार नामः

करम कनिष्ठा सगू कहै जो कर काहिर होइ ॥
भंगुष्ट पुनि भंगुली कर सावा है सोइ ॥१६॥
उर्ध्वनी उहै प्रवेदिनी, मध्यमध्यमा जानि ।
भनाभिका सु कनिष्ठा कम तै सेहु पिछानि ॥१७॥
नपर, नप, करवह, करज, कामाकुष महाराज ।
पुनर्मवः, करसूक सो मुजा कंट सुभिराज ॥१८॥
प्रादेश ताल गोकर्ण कहि उर्ध्वनि तै बिस्तार ।
भंगुष्टसकनिष्ठा सो ताहि बिस्तार उचार ।
पाणि निकुम्भ प्रसृतिः बिबजुत धंघुलि होइ ।
पोरप, भुज बिस्तार बोड, नर प्रमाण है सोइ ॥२०

कृकाटिका ग्रीवा नामः

गस कंठ ग्रीवा सिरोधि, कंधरा मनन सजानि ।
कंधु ग्रीवरेपवय, (कांथा नाम) ककुदिवेट्ट पाटानि ॥२१॥

मुष नामः

धांसि बेदन धानन सपन धक तुंड मुष नामः

नासिका नामः

घ्राण नासिका गंध बह घोणी नासा भाम ।२२

होठ व ठोडी नामः

ओष्ठ अधर रद छद वाणित दसन बाससी होइ ।

चिवुक कहै ठोडी जुइक गंड कपोल सुदोइ ॥४२३॥

दांत नामः

दंत रदन रद द्विवज दशन (तालू नाम) तालू काकुद जान ।

जिह्वा नामः

जिव्हा रसज्ञा रसना नूर सुवचन प्रवान ॥२७॥

ओष्ठ प्रांत सो सूक्वनी गोधि अलिक ललाट ।

भाल कहत है माथ सो अर्द्ध चन्द्र भनि प्राट ॥२८॥

भ्रू नामः

दृग उपरि दोउ भ्रूक है । कूर्च भ्रूवन मध्य होइ ।

सुदेस ललाट सुसंघ है भाषत नूर सु लोइ ॥२९॥

द्विग तारिका नामः

दृग तारिका कानीनिका “(वरुणी नाम)” परुनी पक्ष कहंत ।

पलस्यौं पलक लगै जबै पल निमेष सलहंत ॥३०॥

आषि नामः

दृष्टि नेत्र लोचन नयन । दृग इक्षण चक्षु अक्षि ॥

अंबुज रूप अधीन सो जानै नूर प्रतिक्ष ॥३१॥

देषण नामः

चित्तवनि चाहनि जवनि पुनि दरस बिलोक निदृष्टि ।

अवलोकनि निरपनि लषनि दृग चारनि लषिस्टष्टि ॥३२॥

आँसू नामः

बाष्प अंश्रु नेत्रांबू अस्र रोदन मसस्त आक्ष ।

नेत्रांतः सु अपांग है तिह देषन जु कटाक्ष ॥३३॥

कान नामः

कर्ण शब्द ग्रह श्रोत्र श्रुति श्रवण श्रवः सोई कान ।

शिर नामः

मीलि मुंड मस्तक शीर्ष उत्तमांग मूर्द्धनि ॥३४॥

केस नामः

मूर्द्धज कुंतल वाल कच चिकुर सिरोरुह सोइ ।

केस वृंद कौ नाम कहि नूरसु कौसिक होइ ॥३५॥

अलक नामः

अलका चूर्ण कुंतल,

बाल वक्र सिर पर नाम

भाल भ्रमर सिर सोइ । कोई परं जु पीर मे ।

नूर कहावै जोइ ॥३६॥

गुंथी चोटी नाम

केस पासी चूडा सिपा शटा बटा कौ जामि ।

प्रवणि बेसी मांग कह सीमत सुवपानि ॥३७॥

केस' वेस कवरी म जूडा, सो घमिल्ल कहि जाइ इत्य पिपाठ ।

रोम नाम

रोम लोम तनुसह निचय स्मधु पुरुष मुप होइ ।

वेष नाम

आकल्प वेषन पश्य प्रसिक्कर्म प्रसाधन सोइ ॥५३८॥

अलंकार करे ताके बोइ नाम

अलंकार नाम

परिकृत अलंकृत सु विनूपित मंडल जामि ।

अलंकरिषु प्रसाधित अलंकराहि धयानि ॥५३९॥

भूषण ओसि नाम

रोषिषु आशिषु पुनि विभाजू रषिवत ।

अलंक्रिया भूषा सोइ [भूषण नाम] आभूषण ससहंत ॥५०॥

हार बीच मणि ताके नाम

अलंकार, परिकार, पुनि, भूषण, मंडन जान ।

सिर में मनिहूर मध्य मनि ताके नाम

जूडा मणि विरी रत्न

मुकुट नाम

मुकुट किरीट वपान ॥५१॥

फूलहू की सता सिर रचना करी ताके नाम

कही पारितष्या प्रथम बाल पादया भास ।

पथ पाख्या सताटिका रषी पुहप सिर भास ॥

कर्ण भूषण नाम

सास पत्र सो कणिका कुंडल वेदन कर्ण ।

हार मध्यगतरत्न मनि प्रियेय कठा भर्ण ॥५३॥

मोती की माला नाम

हार कहे मुक्तावली वेष धुंद घठपट्टि ।

सप्त विश मोती न की नक्षत्र मासा सुट्टि ॥५४॥

प्रकोष्ठ आभरण व मोती माला:

उर सूत्रिका सुमुक्तिका प्रालंबिका सुवर्ण ।
लंबन बहुरिललंतिका और भांति की कर्ण ॥४५॥

प्रकोष्ठ आभरण नाम:

पारिआर्य आवापक: [कंकड़ नाम] कटकं वलय [सबंद] केयूर ।
कविजन कहै अंगद बाजूबंद ॥

मुंदड़ी वाछाप नाम:

आंगुलीय कर्जूमिका अभिग्यान मुद्रासु ।
अंगुलि मुद्रा साक्षर नूर नाम सु प्रकासु ॥४७॥

छुद्र घंटा नाम:

किंकिनि रसना मेपला कांची सोई कटिजाल ।
हेम सूत्रिका सप्त की सारसनं छुद्राल ॥४८॥

बिछिया नाम:

तुला कोटि नूपुर बहुरि पादांगद मंजीर
पाद कटक सोई हंसक बिछिया वरनत घोर ॥४९॥
आभूषण जो पुरुष कटि शृंषल ताहि कहंत ।
त्वकफल कृमिरोमादिए । वस्त्र जोनि सलहंत ॥५०॥
क्षौमादिक सो वालकं कौशेयं कृमिजास
रांकव कहि मृग रोमजं फाल वादर कर्पास ॥५१॥

रेस्मीन वा वस्त्र नाम:

निः प्रवाणि आनाहतं—

तंत्रक बसनन बीन जो पुराणीं ताकी नाम:तंत्र क वस्त्र नवीन ।

उद्गमनीय होइ सो, धौत वस्त्र युग कीन ॥५२॥

रेस्मी वस्त्र घोषा नाम:

धौत करै कौशेय जे तिहपत्रोर्ण कहंत ।

अवगुंठित निचोल सो निःपीडन सलहंत ॥५३

बहूमूल्य नाम:

बहु मूल्यं सु महा धनं । [पट वस्त्र नाम] क्षोम दुकूल वषानि ।

कंट लंबित कपड़ा नाम:

प्रावृतं सु सोई निवीतं (दसी नाम) दशादसी पहिचानि ॥५४॥

लंबाई वा चौड़ाई नाम:

आनाह आयाम पुनि देर्घ्य कहत है नाहि ।

परिणा हो सुविसालता जोर्ण पट चिरं आहि ॥५५

२. मूल में यह शब्द कटा हुआ प्रतीत होता है पृष्ठ. ५२ । किन्तु दोहे के संतुलन की दृष्टि से यह रहना चाहिए और केयूर आगे की पंक्ति में जाना चाहिए ।

कपड़ा नाम:

घाछावन प्रसुक वसन चैल निचोल सुबास ।
घोर वस्त्र व सुखेलकः पोपट होइ प्रकास ॥५६॥

मोटी माड़ी नाम:

स्पूम साटकः बराधि पैसई चौसई सोइ ।

राल नाम:

प्रछद पट सु निचोल है [विछावन कौ वस्त्र नाम.]
रस्लक फवल सो होइ ॥५७॥

साड़ी नाम:

घड़ौ रुक चंवातक वर प्रसुक फसह ताहि ।
भोडें छिर रँ पाय सौ, भाव पवीन सु भाहि ॥५८॥

उछनी स्त्री की नाम:

उन सभ्यान सु अतरीय घषा प्रंसु कपरिधान ।
प्रवार वृहृतिका उत्तरीय उत्तरा सग सभ्यान ॥५९॥

घोड़नी स्त्री की नाम:

कूप्यसिक सोई कंधुकी । फोली चोल कहत ।
सोय निवारण प्रावरण नीवारः सलहंत ॥६०॥

चंदोवा नाम:

घड़ौ रुक चंवातक, बरवनिताकौ धीर ।
कहै उस्तोष पुनि दुप्यास बितान मत्त धीर ॥

पेरदा नाम:

प्रतिसीरा सो जवनिका जानि तिरकरणीय
प्रंतरपट सो नूर कहि जो प्रतरपट वीय ॥६१॥

भंग संस्कार नाम:

परिकर्म प्रतिकर्म पुनि भंग संस्कार सुहोइ ।

मर्दनी नाम:

मूजा मार्जनी माष्टि पुनि मर्दन कहिए सोइ ॥६२॥

उवटण नाम:

उद्वर्तन उत्सादनः स्नात घाम्पद घाम्पाव
चर्षा चाधिका स्थासकः चर्षित करैयनाव ॥६३॥

गोद नाम : पत्र लेपा नाम:

पत्र लेप पत्रांगुलि, प्रबोधनं भनुबोध पुनि

टीका नाम:

चित्रक तिलक विद्योपकः तमाल पत्र विद्योप ॥६४॥

केसर नामः

कास्मीर जन्मा अग्निशिष बाल्हीक पीतन होइ ।

लाल चन्दन नामः

रक्त पिशुन संकोचनः लोहित चन्दन सोइ ॥६५॥

लाष नामः

राक्षा लाक्षा द्रुमा मय यावो अलक्त बषानि ।
वृक्षालय जतु रक्तए कहै नूर सुजानि ॥६६॥

लवंग नामः

देव कुसम श्री संज्ञ सोई ए लवंग अभिधान ।

जावक नामः

जावक कालीयक बहुरि कालानु सार्य सु आन ॥६७॥

अग्रुह नामः

सामर्थक बंसिक अग्रुह राजाहः सोई लोह ।

मालती समान गंध होइ ज्जाम सोई नामः

मल्य गंधिकृमिजः वगुरु, काला गुरु जगु सोह ॥६८॥

राल नामः

यक्ष धूप पुनि सर्यरस, सर्वरसः बहुरूप ।
राल सकृ तृम धूपक ताहि कहै वृक धूप ॥६९॥

चीढ नामः

सरल' द्रव पायस बहुरि श्री बेष्ट श्रीवास ।

कस्तूरी नामः

मृगनाभि मृगमद सोई कस्तूरी सु प्रकास ॥७०॥

कर्पूर नामः

चंद्र संज्ञ हिम बालुकः सिता ओ घन सार ।

चन्दन नामः

भद्र श्री श्रीषंड हरि मलयज सो गंध सार ॥७१॥

गोरोचन रक्त चन्दनः

गो शीर्षक हरिचन्दन, तैल पर्णिक होइ ।

पतंग नामः

तिल पर्णा, पत्रांगु, पुनि रजनंकु, चंदन सोइ ॥७२॥

कंकोल नामः

कोलक, कंकोलक, बहुरि कहै कोक फलताहि ।

जायफल नामः

जातीकोष, सुजानयो जो जातीफल आहि ॥७३॥

कप्पूरा, गुड, कस्तूरी घट्टि कंकोल मिलाय ।
होठ यक्षकईम तहां नूर रचै सब नाय ॥७४॥

वाती नाम:

समानंब, भगराग, वसि सैप रसाधन सोइ ।
बनक पीर विसोपन गात्रा नु सैपनि होइ ॥७५॥

अबीर नाम:

वास आग सो चूर्ण कहि, भावित वासित जानि ।

अधिवासना नाम

गंधमाल्य संस्कार सो वस्तु सुगन्ध जु होइ ।
अवि वासन सो नूर कहि वासित सुमनस सोइ ॥७६॥

माला के नाम:

माल्य धाम सूक सूज सुगुण, ए माला के नाम ।
सोय केस मध्य होइ तिह गर्भक कहि अभिराम ॥७७॥

वदी नाम:

खिपालभि सु प्रघ्नष्टकं (बेवा नाम) खलामक पुर निस्त ।
प्रार्जव मज्जुसंब पुनि कज्जल होइ न बिस्त ॥७८॥
सैकक्षिक यग्य सूत्र ज्यौ माला पहरै कोइ ।
सिपा वीधि सैपर कहै पुनि घापीइ सु होइ ॥७९॥

रधना नाम:

परिस्वद प्रतिस्वद पुनि रधना कही बपान ।

पूर्ण नाम:

घाभोग परिपूर्णाता पूरन मूर विधान ॥८०॥

सकिया नाम.

कंबुक कटु उक्षीर पुनि उपबर्हण उपधान ।
कहै उसीसा, गौंदुक जिह सज्जा परधान ॥८१॥

नेज नाम.

पर्यंक. पत्यंक पुनि मच धमन धमनीय
पट्वा अष्ट सत्या सोई सज्जा जानहु हीय ॥८२॥
दीप सिपा तर ग्रह मणि सीत रम्य स्नेहास
कज्जल घुन दोपा विसक कौमुदी वृक्ष प्रकास ॥८३॥
वद्याकर्पं सु प्रदीप पुनि कज्जल मोचनं घाहि ।
कटा ग्याल कबिनूर कहि धाम जोति सो चाहि ॥८४॥

कज्जल नाम:

अंजन, कहिये दीप सुत, गज पाटस, तिह जान ।
नाम मपी कज्जल उहै, रजन चसु बपान ॥८५॥

स्नेह तेल बाती दसा दीपति ज्योति सुलोइ ।
 शिषा काकपछि कहत है वारे स्यौ जो होइ ॥८६॥
 संपुटकः सु समुद्र कः

आसन नामः आसन पीठ बषानि

परिग्रह नामः

पतत्ग्राह सु पतत्ग्रह परिग्रही ताहि पिछानि ॥८७॥

कंगही नामः

कंकतिका सु प्रसाधिनी पिष्ट वात कष्यात ।
 ताल वृतं कं व्यंजनं बाल विजन विष्यात ॥८८॥

दर्पण नामः

दर्पण मुकर सु आदर्श प्रतिबिंबी कहि ताहि
 प्रति छाया प्रति कृति सोई नूर आरसी चाहि ॥८९॥

इति नृ बर्गः समाप्तः

नूर रच्यौ नर वर्ग इह अपनी मति अनुसार ।
 ब्रह्म बर्ग वरनौ कहा सब्द ब्रह्म नहि पार ॥९०॥

अथ ब्रह्म बर्गः वंश नामः

गोत्र जनन कुल अभिजन अन्ववाय संतान ।
 संतति अन्वय वर्ण पुनि ब्राह्मण आदि वषान ॥९१॥

च्यारि वर्ण नामः

ब्राह्मण क्षत्रीय वैश्य पुनि सूद्र वरन ए च्यारि ।
 और पौनि वत्तीस है, पंडित लेहु विचारि ॥९२॥

राज वंशी नामः

कुल संभव सो बीज्य है राज बीजी राज वस्य ।

साधु नामः

सभ्य साधु सज्जन आर्य नाम रहस्य कुलीन ॥९३॥

आश्रम नामः

ब्रह्मचारी आश्रम प्रथम द्वितीय गृहस्थ सु होइ ।
 वानप्रस्थ है तीसरो त्याग संन्यासी सोइ ॥९४॥

ब्राह्मण नामः

अग्रजन्म भूदेव पुनि वाडव विप्र द्विजाति ।
 ब्राह्मण सो पट कर्म जुत जागादिक दिन राति ॥९५॥
 ब्राह्मण ही सौ जीविका जिह ब्राह्मण की होइ ।
 ब्राह्मणधू तासों कहै नूर सु कवि जन लोइ ॥९६॥

पण्डित नामः

ऋः प्राज्ञः ऋषिद बुधः कृती विमति विद्वान् ।
 बोधप्रः संसुधो कवि धीर सु सख्यावान् ॥१७
 सूरि विचक्षण मनोपो वूरदर्शी बुधिवत् ।
 सब वर्ण सो विपक्षियत दोषदर्शी कृपि हूत ॥१८॥
 धोत्रिय वैदिक, छांदस जो नर पाठी वेद ।
 उपाध्याय भ्रम्यापक पाठक विद्या भेद ॥१९

गुरु नामः

निपेक्षादि कर्ता गुरु, भाषार्थ मत्र यवान् ।

व्रती नामः

यग्य व्रतो यष्टा सोई

जजमान नाम-

भादेष्टा

जजमान ॥७००

जज्वा नामः

विधितेष्टा यज्वाञ्चु को, याजयूक नर होइ ।
 इज्या धीन सुगीष्यति, कह यज्या पुन सोइ ॥७०१॥
 सांग धचन गुध पं पड़े धनुचान सो भाहि ।
 लब्धानुभ समावृत्त सुत्वा कृतु कर्ताहि ॥७०२॥

शिष्य नामः

भरुषासी, धान पुनि मौड्य शिष्य जो कोइ ।
 एक ब्रह्म व्रत परस्पर ब्रह्मचारिणः सोइ ॥७०३
 भ्रातृवारभ उपक्रम उपज्ञा भादी ध्यान ।
 नाम सुनी उपदेश की पारंपर्य प्रमान ॥४

पंच महा यज्ञ नामः

पाठ होम पूजा प्रतिष तर्पण बलिये पांच ।
 महा यग्य ब्रह्म यज्ञ ए नाम कहत कवि सांच ॥५
 पाठ ब्रह्म यज्ञ जानियो हूोम देवजग्य धाम ।
 तर्पण पितृजग्य भूत बलि नृजग्य प्रतिष पूजान ॥७०६
 सभ्यायञ्च समावृत्त स्तुत्वा तीर्ण्यो नाम ।
 जो कर निवर्त्यो जाग कौ कहै नूर भनिराम ॥७

समा नामः

समा समज्या परिपठ, भास्थानी भास्थान ।
 गोष्टी सब संसद समिति, राज समाज प्रमान ॥८

समापति नामः

सामाधिकः सु समासद सम्पः समास्तार ।
 समापति नूर कहै, समार्पणित उचार ॥९

जजुर्वेद नामः

अध्वर्य उद्गात्र पुनि होता त्रयी जु सोइ ।
यजुः साम ऋग्वेद कौ क्रम तै ग्याता होइ ॥१०
धन निवारि धारै अग्नि ऋत्वजया जक आहि ।

वेदि [बिना सोधी भूमि नाम]

भूमि परि : कतका :

सोधी भूमि नामः

स्थंडिल चत्वर चाहि ॥११

त्रयो अग्नि नामः

दक्षिणाग्नि गार्हपत्या हनी । त्रय अग्निः
प्रणीत सोई संस्कृत [ज्वलिताग्नि नाम] ज्वलित होत जोजग्नि ॥१२॥

अग्नि प्रयोगी वा अग्नि त्रयी नामः

अग्नि प्रयोगी समूह्यः परिचारी उपचारि ।
आग्नायी स्वाहा बहुरि हुत भुक्प्रिया विचारि ॥१३॥
यूप अग्र को तर्म कहि हव्यापक चरु आहि ।
साश्रुत श्नेया क्षीर-मै, दधि जुत आमिक्षाहि ॥१४॥
पृषता दीव सो जानियो दही मिलत जो आज्य ।

षीर नामः

परिमानं पायस बहु हव्य कव्य सव साज ॥१५॥
वामअंग कौ सव्य कहि, दक्षिण सो अपसव्य ।
देवन कै हित हव्य है, पैत्र निहित सो कव्य ॥१६॥

होमण का नामः

जुहु ध्रुव श्रुव श्रुच उपभृत पात्र श्रुवादिक नाम ।
उपाकृतः पशु जो कियो अभिमंत्र्य हत काम ॥१७॥

मारणार्थक नामः जग्र में मारण कै अर्थ न्यौतै ताकौ नामः

प्रोक्षण कहै वधार्थ परंपरा कं शमन पुनि

मार्या का नामः

प्रमीत उपसंपन्न पुनि, प्रोक्षित हताजग्यार्थः
संनाय्यं कहिये हविष, हुतं वषट कृत अग्निः
दीक्षांतो अवभृथ ग्यान ॥

जग्यना कर्म नामः

तिस्नान सुजग्नि, कृतु कर्मार हयज्ञियं पूर्त्त कर्मपा तादि ।
यज्ञ शेष अमृत विधस भोजन सेप सुवादि ॥१९

पंडित नाम:

ज्ञः प्राज्ञः कोविद युषः फुटी विमति विष्वात ।
 बोपज्ञः संसुधी कवि धीर म् सख्यावान् ॥१७
 सूरि विचक्षण मनीषी दूरदर्शी बुधिवंत ।
 लव वर्ण सो विपश्चित बोधदर्शी रूपि हंत ॥१८॥
 श्रोत्रिय वैदिक, छांदस जो नर पाठी वेद ।
 उपाध्याय भ्रम्पापक पाठक विद्या भेद ॥१९॥

गुरु नाम:

निपेक्षादि कर्ता गुरु, प्राचार्यं मप्र यपान ।

प्रती नाम:

मम प्रती यष्टा सोई

जजमान नाम:

भादेष्टा

जजमान ॥७००

जज्या नाम:

विधिनेष्टा यज्यान् क्री, याज्युक नर होइ ।
 इग्या चीन सुगोप्यति, कहू यग्या पून सोइ ॥७०१॥
 सांग यजन गुह पं पड़े भनूचान सो प्राहि ।
 लभ्यानुज समावृत्त सुखा कुतु कर्त्ताहि ॥७०२॥

शिष्य नाम:

पंतेवासी, छात्र पुनि मोदय शिष्य जो कोइ ।
 एक प्रह्व यव परस्पर प्रह्वचारिणः सोइ ॥७०३
 ज्ञात्वारंभ उपक्रम उाज्ञा प्रादी ग्यान ।
 नाम सुनो उपदेश की पारपयं प्रमान ॥४

पंच महा यज्ञ नाम:

पाठ होम पूजा प्रतिप तर्पण बतिथे पांच ।
 महा यग्य प्रह्व यज्ञ ए नाम कहुत कवि सांच ॥५
 पाठ प्रह्व यज्ञ जानियो हूँम देवजग्य घान ।
 तर्पण पितृजग्य भूत बलि नृजग्य प्रतिप पूजान ॥७०६
 लभ्यायग्न समावृत्त स्तुर्या तीर्थो नाम ।
 जो कर नियर्यो जाग को नहे नूर धरिराम ॥७

सभा नाम:

सभा यमग्या गरिपत, घास्थानो घास्थान ।
 घोष्टो उद संतर समिति, राज यपाय प्रमान ॥८

सभापति नाम:

सामाजिकः सु गनायद मन्त्रः सभास्वार ।
 सभापति नूर कहे, सभापति उचार ॥९

जजुर्वेद नामः

अध्वर्य उद्गात्र पुनि होता त्रयी जु सोइ ।
यजुः साम ऋग्वेद कौ क्रम तै ग्याता होइ ॥१०
धन निवारि धारै अग्नि ऋश्वजया जक आहि ।

बेदि [विना सोधी भूमि नाम]

भूमि परि : कतका :

सोधी भूमि नामः

स्थंडिल चत्वर चाहि ॥११

त्रयो अग्नि नामः

दक्षिणाग्नि गार्हपत्या हनी । त्रय अग्निः
प्रणीत सोई संस्कृत [ज्वलिताग्नि नाम] ज्वलित होत जोजग्नि ॥१२॥

अग्नि प्रयोगी वा अग्नि त्रयी नामः

अग्नि प्रयोगी समूह्यः परिचारी उपचारि ।
आग्नायी स्वाहा वहुरि हुत भुक्प्रिया विचारि ॥१३॥
यूप अग्र को तर्म कहि हव्यापक चर आहि ।
साश्रुत श्नेया क्षीर-मै, दधि जुत आमिक्षाहि ॥१४॥
पृषता दीव सो जानियो दही मिलत जो आज्य ।

षीर नामः

परिमानं पायस बहु हव्य कव्य सव साज ॥१५॥
वामअंग कौं सव्य कहि, दक्षिण सो अपसव्य ।
देवन कै हित हव्य है, पैत्र निहित सो कव्य ॥१६॥

होमण का नामः

जुहु ध्रुव श्रुव श्रुच उपभृत पात्र श्रुवादिक नाम ।
उपाकृतः पशु जो कियो अभिमंत्र्य हत काम ॥१७॥

मारणार्थक नामः जग्र्य में मारण कै अर्थ न्यौतै ताकौ नामः

प्रोक्षण कहै वदार्थ परंपरा कं शमन पुनि

मार्या का नामः

प्रमीत उपसंपन्न पुनि, प्रोक्षित हताजग्यार्थः
संनाय्यं कहिये हविष, हुतं वपट कृत अग्निः
दीक्षांतो अवभृथ ग्यान ॥

जग्यना कर्म नामः

तिस्नान सुजग्नि, कृतु कर्मार ह्यन्नियं पूतं कर्मपा तादि ।
यज्ञ शेष अमृत विचस भोजन सेप मुवादि ॥१८॥

दान ग्यान नामः

त्याग विहाय त विसृज्यर्जन, उपसर्जन सुवितर्षः
प्रतिपादन प्रादेशनः विधाणन सुपकर्णः ॥२०
वर्जन निर्बपन पुनि, ग्रहति स्पर्शन दान ।

ग्यान नामः श्रवणम बोध मुक्त जगत म्यान नान जग जान ॥२१

भूतकार्यं मृतक द्योस जो देह ताकी नामः

मृत कहित ताविन जू वे ताहि भीरुं दहक जान ।
धातुं कर्म जू धास्वतः निवासः पितृदान ॥२२॥
दिन की अष्टम भाग जो कलः कृतप वपान ।
पटिका पटि द्वै पहर मै पटिका वद्विमल धान ॥२३॥

दूढणा कानाः *

अन्वेषणा, गवेषणा, पर्येषणा परिष्टि
सनिः अन्वेषणा अर्चना सृष्टि अभिपस्ति ॥७२४॥
आधुर्णिक प्राहुणक सो आर्ये सिक प्रायंत
बहुदि प्रतिभि सो जानियो प्रगट पाहुनो संत ॥२५॥
आतिथेय आतिथ्य पुनि आर्षेधिक जू भवानि ।
आर्गतु ग्रह अतिथ को पूजा करे सुजानि ॥२६॥

पूजा नामः

अर्चा, अर्चति सपर्जाः, नमस्मा, अर्चणः प्राह ।
परिचर्या सु उपासन परस्वत्या सुभूषा ह ॥२७॥

चलण व पडा रहणका नामः

ग्रह, अटग्या पर्वटन जीधिति फिरति जू कोइ ।
चर्वा इर्वा पय स्थिति मग मै ठाडी होइ ॥२८॥
उपस्पर्श सो आभमन, मोन अभापण भाग ।
सू द्दो सू थोठं जू योसत पृष कं राय ॥२९॥
पावृत अतिक्रम पर्ययः उगासय अतिपात ।
धानुपूर्वा पुनि अनुक्त सो अर्वाय दिव्यात ॥३०

परम्परा नामः

अनुपूर्वा सो अनुक्तन परपाटी पर्याय ।
धानुपूर्व्यं पावृत सोई परंपरा नू कहाय ॥३१॥

अधिकार्थ नामः

उपासय अतिपात पुनि पर्यय नाम प्रकाय ।
नोपम वत सो जानियो उतरस्य उपनाम ॥३०॥

* यहाँ 'म' धोर होना चाहिए । मूल में भी 'म' नहीं है ।

नोट—ये नाम अतिथियों के हैं ।

प्रथगात्मता विविबेक हि विधि क्रम कल्प सुयोग ।
विधि संप्रेष्यनि योग कहि फल अपूर्ण विनियोग ॥३१॥

थूक पडै नामः

ब्रह्म विद्वः विप्लष बेद पढत जु पतंत
ध्यान योग आसन विषै ब्रम्हासन सलहंत ॥३२॥

संयुक्त होइ ताको नामः

श्रुति संस्कार ग्रहै प्रथम उपाकरण सो आहि ।

पाइ प्रणाम नामः

पाद ग्रहण अभिवादन, नूर कहत बुध ताहि ॥३३॥

सन्यासी वा तपस्वी नामः

कर्मंदी पारासरी भिक्षु मस्करि परिक्राट ।

पारि रक्षकः जान सौ नामः

तापस तपसी जानियो पारकांक्षी प्राट ॥
वाचंयम जो मुनि कहै मौनव्रती मन शांत ।
ब्रह्मचारी वर्णी सोई तपेक्लेश सहोदांत ॥३५॥
रिषि सत्यभाषी व्रती स्नातक आप्लुत जान ।
जीते इंद्रिय ग्राम ये जतिनो जतयः आन ॥३६॥
बल्मीकः कुशिनो कविः वाल्मीकि वाल्मीक ।
मैत्रा वरुणनाम तिह प्रावे तस मति नीक ॥३७॥

व्यास नामः

बेदव्यास, द्वयपायन, वादरायन कानीन ।
सत्यवती सुत माठरः पारासर्ष प्रवीन ॥३८॥

जोजन गंधा नामः

गंध कालिका वासवी सत्यवती दासेय ।
सालकायन जाहै सोई जोजन गंधा भेव ॥३९॥
जामदग्नि, भार्गव, बहुरि रेणुका सुत अरु राम ।
नारद कलिकारक पिशुन देव ब्रह्मसत्य घामन ॥४०॥
अक्षमाला सु अरुंधती । विधि तै भए वसिष्ठ ।
त्रिशंक जायी कौशिक गाधेय तपनिष्ठ ॥४१॥
सतानन्द गौतम कहीं, कहीं कुशारणि दुर्वास ।
ब्रह्म रात्रि योगेश पुनि, जान वल्क स्व प्रकास ॥४२॥
प्रयतः पूत पवित्र कहि सर्व लिंगी पापंड ।
व्रतीनि कौ आसन व्रपी, अजिन चर्म कृन्धिपंड ॥४३॥
कुंडी कहै कमंडलु भिक्षा कदंब रुभैक्ष ।
जप्पं जाप्पं जाप जप स्वाध्याय सोई अक्ष ॥४४॥

दान ग्यान नाम:

त्याग बिहाय त विसर्जन, उपसर्जन सुवितर्णः
प्रतिपादन प्रादेशनः बिघ्राणन सुपरुर्णः ॥२०
वर्जन निर्वपन पुनि, भ्रंहति स्वर्धन दान ।

ग्यान नामः प्रवगम योष मुकृत जगत म्यान भान अम जान ॥२१

मृतकार्य मृतक घोस जो देइ ताकी नामः

मृत कहित तादिन जू दे ताहि प्रौर्द्ध बहक जान ।
थाद्वंकर्म जू धास्त्रतः निवापः पितृदान ॥२२॥
दिन को भ्रष्टम भाग जो फलः कृतप बपान ।
घटिका घटि द्यं पहर मं घटिका बद्धिमव भान ॥२३॥

द्वंढणा कानाः*

प्रन्धेपणा, गयेपणा, पर्येपणा परिष्टि
सनिः प्रध्वेपणा भर्षना सुष्टि भभियस्ति ॥७२४॥
धामूर्णक प्राहुणक सो धावे तिक भागंत
बहुरि भतिषि सो जानियो प्रगट पाहुनो संत ॥२५॥
धातिषेय धातिष्य पुनि धावेतिक जू बपानि ।
भागंतु प्रह भतिय को पूजा करै सुजानि ॥२६॥

पूजा नामः

भर्षा, भ्रषति उपर्षाः, नमस्या, धर्षणः धाह ।
परिभर्षा सु उपासन बरवस्या मुभ्रूया ह ॥२७॥

चलण व पछा रहणका नामः

प्रह, घटाग्या पर्वटन योषिनि फिर्षति जू कोइ ।
भर्षा इर्षा पय स्थिति मग मे ठाडी होइ ॥२८॥
उपस्वसं सो धाचमन, मोन भभापण भाव ।
धू स्तो धू धोकं जू बोतल धूप फं राप ॥२९॥
धावृत धतिक्रम पर्ययः उपात्यय धतिपाव ।
धानुपूर्षा पुनि धनुभन सो पर्याय विष्यान ॥३०॥

परम्परा नामः

धनुपूर्षा सो धनुक्रम तरपाटी पर्याय ।
धानुपूर्षं धावृत धोर्षं परंपरा जू क्हाय ॥३१॥

धधिकार्ई नामः

उपात्यय धतिपाग पुनि पर्यय नाम प्रकाय ।
नीयम वत सो जानियो उपस्वसं उपात्यय ॥३२॥

* यहाँ 'म' धोर होना पाहिइ । मृत में भी 'म' नहीं है ।

नोट—ये नाम धतिधियाँ के हैं ।

प्रथगात्मता विविबेक हि विधि क्रम कल्प सुयोग ।
विधि संप्रेष्यनि योग कहि फल अपर्ण विनियोग ॥३१॥

थूक पडै नामः

ब्रह्म विदवः विप्लष बेद पढत जु पतंत
ध्यान योग आसन विषै ब्रम्हासन सलहंत ॥३२॥

संयुक्त होइ ताको नामः

श्रुति संस्कार ग्रहै प्रथम उपाकरण सो आहि ।

पाइ प्रणाम नामः

पाद ग्रहण अभिवादन, नूर कहत बुध ताहि ॥३३॥

सन्यासी वा तपस्वी नामः

कमंडी पारासरी भिक्षु मस्करि परिव्राट ।

पारि रक्षकः जान सौ नामः

तापस तपसी जानियो पारकांक्षी प्राट ॥
वाचंयम जो मुनि कहै मौनव्रती मन शांत ।
ब्रह्मचारी वर्णी सोई तपेक्लेश सहोदांत ॥३५॥
रिषि सत्यभाषी व्रती स्नातक आप्लुत जान ।
जीते इंद्रिय ग्राम ये जतिनो जतयः आन ॥३६॥
बल्मीकः कुशिनो कविः वाल्मीकि बाल्मीक ।
मैत्रा वरुणनाम तिह प्रावे तस मति नीक ॥३७॥

व्यास नामः

बेदव्यास, द्वयपायन, वादरायन कानीन ।
सत्यवती सुत माठरः पारासर्यं प्रवीन ॥३८॥

जोजन गंधा नामः

गंध कालिका बासवी सत्यवती दासेय ।
सालकायन जाहै सोई जोजन गंधा भेव ॥३९॥
जामदग्नि, भार्गव, बहुरि रेणुका सुत अरु राम ।
नारद कलिकारक पिशुन देव ब्रह्मसत्य वामन ॥४०॥
अक्षमाला सु अरुंधती । विधि तै भए वसिष्ट ।
त्रिशंक जायी कौशिक गाधेय तपनिष्ट ॥४१॥
सतानन्द गौतम कहौ, कहौ कुशारणि दुवसि ।
ब्रह्म रात्रि योगेश पुनि, जाज्ञं वल्क स्व प्रकास ॥४२॥
प्रयतः पूत पवित्र कहि सर्व लिंगी पापंड ।
व्रतीनि कौ आसन व्रषी, अजिन चर्म कृत्निष्ट ॥४३॥
कुंडी कहै कमंडलु भिक्षा कदंब रमैश्वर ।
जपं जापं जाप जप स्वाध्याय सोई अश्र ॥४४॥

सत्य सवन प्रमिपव सोई, नूर कहत हे ताहि ।
 सर्वपाप धरसी जू जप, धध मरपण सा प्राहि ॥४५॥
 सन साधना प्रपेक्ष धरि निति जू कर्म यम जानि ॥
 नित्य कर्म प्राणंतु की साधन नियम बपानि ॥४६॥

नमस्कार नाम:

नमस्क्रिया नखि धंदन नमस्कार सु प्रणाम ।
 यग्य सूत्र उपवीत सो, दक्षण करपुत काम ॥४७॥
 ब्रह्मभूम ब्रह्मत्व पुनि ब्रह्म साजुग्य जू होइ ॥
 देव भूयाधिक संसे ही देव भाव है सोइ ॥४८॥
 कृच्छ्र सातपनादिकं, करे कष्ट ब्रत कोइ ।
 भनसन प्राय पुमान जो सन्यास वसी होइ ॥४९॥
 नष्टाम्नि सो वीरहा, पुनि कुहना तिह जानि ।
 मिष्येयां पय कल्पनां करे सोम उं प्राणि ॥५०॥
 शक्त्य हनि सस्कार जो निराकृति प्रस्थाप्याय ।
 धवकोर्षी सुदात ब्रत, धर्मध्वजी तिग वृति ॥५१॥

विवाह नाम

उपयामः उपलम विहृत परिणय सो उठाह ।
 कर पोहन, सुनि वेसनः, ताही कहत विवाह ॥५२॥

संभोग नाम:

निषदन, रत, सो मेषुनं प्राप्य धर्म सु विनाय ।
 रति संभोग बपानिए बनिता संग मुभाय ॥५३॥
 धर्म कर्म धर्म दिवर्ष पतुर बर्ष सो मुक्ति ।
 चारो बत वासो कहे बलुभंद्र सो मुक्ति ॥५४॥

इति ब्रह्म धर्म नाम समाप्तः अथ क्षत्री वर्गः

क्षत्री व राजा नाम:

मूर्धाभिपस्त, बाहुजः रात्रन्य मु विराट ।।
 नूप पापिय प्रो वमानुत् भूप महो पति राट ॥५५॥

सामंत नाम:

जा राजा की राज घर, ताहि कहे सामंत ॥
 नरै सोल सामंत जिहि सोई धोखर मंत ॥५६॥
 उहे पञ्चवर्ती मुनी सार्यभोग सो जान ।
 महंत महंत की धनी तिह महनेग बपान ॥५७॥
 गानजानि सामज सोई, सेत समाज मु प्राह ।
 नूर कहे भावम तिह पुनि पतन सो प्राह ॥५८॥

गज वय वर्नेनः

पांच बरस को बालगज दस को पोत प्रमान ।
बीस बरस कौ विष्क सो कलभ तीस कौ जान ॥५६॥

राजा की असवारी कौ हाथी वा सग्राम कौ हाथी तकौ नामः

राजवाह्य, उपवाह्य, गज, नृप चढ़ने कौ होइ ।
समरोचित, सात्राह्य सो समर लरत गज सोइ ॥६०॥
राजा अरु सामंत जिह, नमै अधीश्वर साय ।
सार्व भूमि चक्रवर्ति सो, नृप मंडलेश्वर आय ॥६१॥
जिहें मंडलेश्वर के रुदा, राज सूय करि इष्ट ।
राजा जिहि आज्ञा रहै स सम्राट् सुसृष्ट ॥६२॥

रामचन्द्र नामः

रामचन्द्र सीतापतिः दासरथिः रघुनाथ ।
रावनरिपु, काकुत्स्थ पुनि, भरताग्रज कपि साथ ॥६३॥

सीता नामः

सीता जानुकी मैथुली, वैदेही सति सोइ ।
भूतनया जनकात्मजा, सीय रघुवरतीय होइ ॥६४॥

लक्ष्मण नामः

लक्ष्मण बाल जती लक्ष्मणः सौमित्रेय सु होइ ।
सेपवतार क्षुधात्रिपा, निद्रा जेता सोइ ॥६५॥

बलि नामः

बाली बालि सु इंद्रसुत अंगद तकौ पूत ।

सुग्रीव नामः

रविसुत, सुग्रीव औ जुगराज अभूत ॥६६॥

हनुमान नामः

मरुत पुत्र अंजनी सुत, केसरी सुत हरिजान ।
अमर वज्र कटि पार्थध्वज, रामदूत हनुमान ॥६७॥

रावण नामः

दससिर, दसग्रीव, वक्रदस, पौलस्त्यः भुजबीस ।
लंकापति मंदोदरी, बशी अक्षय असुरीश ॥६८॥

जुधिष्ठिर नामः

धर्मतात, सु, अजातरिपु, कालदहन कौ तेय ।
समर प्रिय कुरराव सो, सत्यवादी जानेय ॥६९॥

अर्जुन नामः

अर्जुन, फाल्गुन, जिशु, पार्थ, धनंजय, श्वेताश्व ।
क्रीटी कपिध्वज इंद्रसुत गांडीव धनु तास ॥७०॥

सत्य सवन भूमिपव सोई, नूर कहत है ताहि ।
 सर्व पाप ध्वसी जु जप, भ्रम मर्पज ता भाहि ॥४५॥
 छन साधना भ्रमेश धरि निति जु कर्म यम जानि ॥
 नित्य कर्म भागतु की साधन नियम बपानि ॥४६॥

नमस्कार नाम:

नमस्किन्हा नलि बदन नमस्कार सु प्रणाम ।
 भग्य सूत्र उपवीच सो, दक्षण करभूठ काम ॥४७॥
 ब्रह्मभूय ब्रह्मत्व पुनि ब्रह्म साजुज्य जु होइ ॥
 देव भूमाधिक तैसे ही देव भाव है सोइ ॥४८॥
 कृष्ट सातपनादिकं, करै कष्ट बत कोइ ।
 भ्रमसन प्राय पुमान जो सन्मास बती होइ ॥४९॥
 नष्टाग्नि सो धीरहा, पुनि कुहना तिह जानि ।
 मिथ्येया पय कल्पना करै लोभ तँ धानि ॥५०॥
 ब्राह्म हनि संस्कार जो निराकृति बस्वाध्याय ।
 भवकोर्णो सुदत बत, धर्मध्वनी तिग वृत्ति ॥५१॥

विवाह नाम

उपयाम: उपयाम विहृत परिणय सो उठाह ।
 कर पीडन, सुनि वेसन; ठाही कहत विवाह ॥५२॥

संभोग नाम:

निषवन, रठ, सो मेषुमं धाम्य धर्म सु विबाय ।
 रठि संभोग बपानिए बनिता संग सुभाय ॥५३॥
 धर्म कर्म धर्म विधर्म चतुर वर्ग सो मुक्ति ।
 चारो बत दासी कहे चतुर्भद्र सो मुक्ति ॥५४॥

इति ब्रह्म वर्ग नाम समाप्त: भ्रम क्षत्री वर्ग:

क्षत्री व राजा नाम:

मूर्धाभिपक्त, वाहुज: राजन्य सु बिराट ॥
 नृप पाषिब श्री हमासू भूप मही पति राट ॥५५॥

सामंत नाम:

जा राजा की राज बड, ताहि कहे सामंत ॥
 नर्म सीस सामंत जिहि सोई धीश्वर संत ॥५६॥
 उहे पकवर्ती सुनी सार्वभौम सो जान ।
 मडल मडल को धनी तिह मंडलेश बपान ॥५७॥
 सामबोनि सामज सोई, सेव समाज सु भाह ।
 नूर कहे मातम तिह पुनि भर्तम सो भाह ॥५८॥

गज वय वर्तनः

पांच वरस की बालगज दस को पोत प्रमान ।
वीस वरस की विष्क सो कलभ तीस की जान ॥५६॥

राजा की असवारी कौ हाथो वा सग्राम को हाथी तर्की नामः

राजवाह्य, उपवाह्य, गज, नृप चढ़ने कौ होइ ।
समरोचित, सात्राह्य सो समर लरत गज सोइ ॥६०॥
राजा अरु सामंत जिह, नमै अवीश्वर साय ।
सार्व भूमि चक्रवर्ति सो, नृप मंडलेश्वर आय ॥६१॥
जिहें मंडलेश्वर के रुदा, राज सूय करि इष्ट ।
राजा जिहि आज्ञा रहे स सम्राड् सुसृष्ट ॥६२॥

रामचन्द्र नामः

रामचन्द्र सीतापतिः दासरथिः रघुनाथ ।
रावनरिपु, काकुत्स्थ पुनि, भरताग्रज कपि साथ ॥६३॥

सीता नामः

सीता जानुकी मैथुलो, वैदेही सति सोइ ।
भूतनया जनकात्मजा, सीय रघुवर्तीय होइ ॥६४॥

लक्ष्मण नामः

लक्ष्मण बाल जती लक्षनः सीमित्रेय सु होइ ।
सेपवतार क्षुवात्रिपा, निद्रा जेता सोइ ॥६५॥

बलि नामः

वाली बालि सु इंद्रसुत अंगद ताकी पूत ।

सुग्रीव नामः

रविसुत, सुग्रीव श्री जुगराज अभूत ॥६६॥

हनुमान नामः

मरुत पुत्र अंजनी सुत, केसरी सुत हरिजान ।
अमर वज्र कटि पार्यव्वज, रामदूत हनुमान ॥६७॥

रावण नामः

दससिर, दसग्रीव, वक्रदस, पीलस्त्यः भुजवीर ।
लंकापति मंदोदरो, वशी अक्षय अमुरीश ॥६८॥

जुधिष्ठिर नामः

धर्मतात, सु, अजातरिपु, कालदहन कौ तेय ।
समर प्रिय कुरराव सो, सत्यवादी जानेय ॥६९॥

अर्जुन नामः

अर्जुन, फाल्गुन, जिह्नु, पार्य, धनंजय, श्वेताश्व ।
क्रीटी कपिव्वज इंद्रसुत गांडीव वनु तास ।

गुडाकेस, वैद्यारि, तर, सव्यसाचो तिहू जान ।
ब्रह्मण्ड, विजय, कर्ममिहू, कुषण सपा परमान ॥७१॥

भीम नामः

भीम बृकोदर वायुसुत यहू भोजो धरि भंज ।
बली गवाधर धगमगम, श्रीचकारि, बकगंज ॥७२॥

द्रोपदी नामः

निरययोयना, वेदिजा, पांचाली, कृष्णासु
याय्य सेनि, सीरंघ्रि सो भर्ता पंध प्रकास ॥७३॥

कर्न नामः

भंगराट, अपाधिप, सूर्यपुत्र, पुनि कर्म ।
राधासुत, धनुतास यों, कास, पुष्ट तिहू वर्म ॥७४॥

सप्त नाग राज्य नामः

स्वामी, मन्त्री, मित्र, जन, कोस, बेस, गड सैन
यहू सप्तांग सुराज्य है कहूयो भंय मत धन ॥७५॥
पुरजन, घोषी, प्रकृति, कहि संत्र वेस पितासु ।
धरि चितन भावाप है, कहत नूर परकास ॥७६॥

परिवार नामः

परिस्पद, परिकर, परिग्रह, परिग्रह, परिवार ।
परिछद सो जानिये तत्रोपकरण उदार ॥७७॥

सिंघासन नामः

नृपघासन, मन्नासन, सिंघासन, तिजानि ।
मातप, वारण, छंत्र, है सज्या महा बयानि ॥७८॥

मंत्री नामः

सधिव, धमात्य, सुधी, सरव, समबाइक, मंत्रीस ।
नियोगी तिहू जानियो, कर्म सधिव बहुरीस ॥७९॥

प्रधान नामः

महा मात्रा सु प्रधान कहि [पुरोहित नाम] पुरोधा प्रोहित होइ ।

द्वारपाल नामः

श्रीवस्ति, क, द्वारस्य, पुनि द्वारपालक सोइ ॥८०॥
क्षता, धनुस्तारक एकी है प्रवीहार ।
रदि वगं धनीकस्य है [बकसीनाम] अधिध अधि कर्तार ॥८१॥
भौरि, कनकाधिस जो, नैष्ठिक स्थाधिस ।
स्थानाधिक, सुपानिक, शील्ककः पररयस ॥८२॥

सेवक नामः

सेवक, अर्थी, अनुचर, अनूजीवी सो भृत्ति ।
 विधिकर किंकर अनुग पुनि कह पदाति सु पत्ति ॥८३॥
 शुक्ल घटादि जु दोजिये जानहु ताहि जगाति ।
 घर्माधिक सुधार्म्यक घर्माधिक्र, णीष्याति ॥८४॥
 सेनानी, दंडनायक, जो चतुरंग बलपत्ति
 स्थायुक अधिकृत ग्राम मै गोपो ग्राम बहूत ॥८५॥
 अवरोधक अंतर्वशिक अंतपुराध्यक्ष बोध ।
 शुद्धांतः अंतः पुरः, अवरोधन, अवरोध ॥८६॥

षोजा नामः

पंढ, वर्ष वर सीविदा, कंचुकिनः स्थापत्य ।
 सौ विदला षोजा कहौ जामिनी भापा सत्य ॥८७॥

प्रछन्न नामः

विजन, विविक्त उपांसु वह निशालोक पुनिछन्न ।
 एकांतर मै होइ तिह, कहै रहस्य प्रछन्न ॥८८॥

दुसमन नामः

वैरी, रिपु, रुसपत्न, अरि शत्रु अमित्र अराति ।
 दुर्जन द्विट द्वेषण दुहद दस्यु शात्रु अभिघाति ॥८९॥
 अत्यर्थी, परिपंथी, अहित, द्विविपक्षि, परजानि ।
 प्रत्यनीक, प्रत्यपक्ष सो, प्रत्यवस्था ता मानि ॥९०॥

मित्र नामः

वयस्य सवया सुहृत्, स्निग्ध सहज रो मित्र ।
 सषा, दयित, बल्लभ, बहुरि, प्रीतम, पुन्य चरित्र ॥९१॥

प्रीति नामः

मैत्री, सख्यं सौहृदं, सौहार्दं पुनि सोइ ।
 अनुवर्त्तन, अवरोधन, साप्तपदीनं, होइ ॥९२॥

जासूस नामः

गूढ़ पुरुष, बातायिन, प्रणिधिः हेरकचार ।
 अनुरोध, अवसर्प, स्पशः आत्तंतिक उपचार ॥९३॥

ज्योतिषी नामः

ज्योतिषिकः, मौहूर्त्तिकः, गणकः, दैवज्ञ, ज्ञानि ।
 सांबत्सर, मौहूर्त्तं, पुनि कार्त्तांतिक, तिहि मानि ॥९४॥
 ज्ञात सिद्धांत सुतांत्रिक, सत्री गृहपति आहि ।

लेषक नामः

लेषक लिपिकर अक्षर चन, अक्षर चुंचु, सु, चाहि ॥९५॥

दूत नामः

संदेसह रो दूत है दूत्य कर्म करे सोइ ।
अध्वनील* पांय पयिकः अध्वग अध्वन्य सु होइ ॥१९६॥

षट् गुण नामः

संधि, विग्रहे, द्वेष, पुनि, भासन आश्रय जान ।
पङ्कगुण, ए कविजन कहे ममरकोस परवान ॥१९७॥
प्रभाव ते उत्साह ते और मंत्र ते सिद्धि : ।
शक्ति तोनि त्रय वर्ग पुनि क्षयः स्थान ग्रह बुद्धि ॥१९८॥
सेज होत जो कोस ते ताको कहत प्रताप
दंड सेज ते उप्पजै, है, प्रभाव सो आप ॥१९९॥
साध वाम दंड भेष ए आरि उपाय बपानि ।
साम सांत, वम, दंड पुनि उपयाए भेषहि जानि ॥२००॥

यथोचित नामः

भेषः, धंध, यथोचित : उचितार्थे अभेष ।
न्याय कल्प समंजस देस रूप तिहू लेप ॥२०१॥
मजमानः, अभिनीत, वत् नाय्यं मुक्तं सम्यः
न्यायानित जो साम है, औपयिकं कहि सम्यः ॥२०२॥
भागमधु अपराध जो बंधन है उद्धानि ।
संस्था मर्जादा बहुदि स्थिति धारणा बपानि ॥३

अग्या नामः

शासन, शिष्टि, नियोग, वय भावेशः निर्वर्ध ।
आयस बज धनवाच पुनि आय्या कहे निवेश ॥४

जगाति दान नामः

भागधेय, करजलि बहुदि, शुल्क घटाधिक दान ।
प्रवेशन, प्राप्त बहुदि, नूर कहत मति मान ॥५॥
भेट, उपायन, कहत कवि उपग्राह्य उपहार :
उपव नाम ए आनिये भरत जू देव बुवार ॥६॥
सकफलं सावृष्टिकं फल उत्तर सु लयकं : ।
बन्धि तोय भय अशुष्टं बुष्ट संम्य संपकं ॥७॥
सदात्वं सत्कास है, आयति उत्तर कास
प्रक्रिया सु अधिकार है, वमर प्रकीर्णक मास ॥८॥
नृप भासन भद्रासन सिंभासन सु विचार ।

आरी नामः

श्री आठपत्र, कनकासक मृंगार ॥९॥

*यह 'न' भी हो सकता है । मूल में 'न' है पर उसके ऊपर एक छोटा सा 'न' लिखा हुआ है ।

हाथी घोरा रथ पदिक, सेना अंग सुन्दारि ।
शिवर, निवेश, सु, बीणकः, बसती चमू बिचारि ॥१०

हस्ती नामः

दंती दंता चल दिवरद, दिवप करटो, गज, व्यालः
कुंजर, वारुण, करी, इभ स्तंवेरम सुंडालः ॥११
पद्मी नाग अनेकपः सिवुर हरि जु गयंद ।
कुंभी बानर पील सो पंचेरम पति इंद ॥१२॥

मस्त हाथी नामः

मदोत्कट, मदकल^१ सोई गजित मत्त प्रभिन ।
उद्धांतः निर्मद करी कलभः सावक अन्य ॥१३॥
करणी वशा सुधेनुका, कट गंडस्थल जान ।
करशी कर बमथुः, बहुरि, मद, कूदान, बषान ॥१४॥

हाथी के कुंभ स्थल नामः

कुंभ, पिड, कुंभस्थल, विहु विदी विच तासु ।
अबग्रहः सु ललाट तिह,

नेत्र आस पास नाम हाथी का :

अक्षि कूट, क ईषिका सु ॥१५
अपांग देश निर्जनि है चूडिलि का सु मूलि ।
श्रुति अधः कुभ बाहित्थ पुनि, प्रतिमानं तिह कूलि ॥१६
पुष्कर कर गज सुंडि कहि । पद्मक विदी जाल ।

गज बंधन नाम :

गज बंधन आलान पुनि, तोत्रं वेणुक भाल ॥१७॥

बेडी आकुस नाम :

निगड अंदुक श्रृषला अंकुश श्रृणि वषानि ।

काष हथी का नाम :

चूषा, कक्षया, वरत्रा (साजा हाथी नाम) कल्पना सु सज्जनानि ॥

भूल नाम :

परिस्तोम कुथ आस्तरण वर्ण प्रवेणी आहि ।
गत यौवन हस्ती तुरग वीत कहत कवि ताहि ॥१९

घोटक नाम :

अश्व तुरंगम, वाजि हय, संधव, साप्त किक्यान ।
बाह, अर्व, गंधर्व तुरि तरल धूर्ध हरि जान ॥२०

१. नोट—पीला रंग तो अक्षर मिटाने का है पहले “भ” लिखा है पर चाहिए था “क” । पुराने ग्रन्थों की यह परिपाटी है ।

वीति, तुरंग, तुपार पुनि भ्राजानेय कुलीन
 प्रश्वमेध, कौ प्रश्व मयु जवनज वाधि कलीन ॥२१॥
 सितकर्क कोतिल कहै (पोषि वाह नाम)पुष्ट्र स्पोरी होइ ।
 रप बोड़ा सो रय्य है बाल किसोर सु जोइ ॥२२॥

घोड़ी नाम

पारसीक, कांबोज, हय, बालामुज बाल्हीक ।
 बामी प्रस्वी बाइवा, गणमें, बाइव ठीक ॥२३॥
 कश्य प्रश्य कौ मध्य है बाल देस सुनि गाल ।
 ह्येपा ह्येपा सम्ब है (नाक नाम) घोपा प्रोषनि गाल ॥२४॥

कवि का वागु वा लगाम वा पूछ नाम

कविका, कहै खलीन सो, पूछ, नूम, लायून ।
 सफ़्पुर ह्याधि ताइनी, कथानक बहु भूम ॥२५॥
 आस्कंदित घोरसिक पुनि रेचित बलित प्युत ।
 सादी भ्रषास्क सो, पंच धार गति पुष्ट ॥२६॥
 बालहस्त सो बालषी केसबानी कहि ताहि ।
 पराबू त उपावृत्त सुदितसु, भूमि परत पुनि वाहि ॥२७॥

रथ नाम

रथ सतांग स्वदन सोई मुद्रायंक जो होइ ।
 चक्रबान जो पुष्करथ समर रहित है सोइ ॥२८॥
 कर्भारथ प्रबहण इयन, बेगिबाह रथ जान ।

गाडी नाम

सकट, घन, शिविका, सोई जाप्य जान तिह मान ॥२९॥

जूबा वा रथ भग नाम

धू., आनमुप, रबांग, कहै उपस्कर ताहि ।
 अक, रघाय, सु भत, तिह नेमि प्रधि जू भाहि ॥३०॥
 रक्षानामि सुपिडका

जूबी वाघीयै जिसमें ताकी नाम कृपर मयधर जान ।

भाषाय क्रीनिका है, भरणि बरूप रथ गुप्तान ॥३१॥

बाहन नाम

मुग्ग बाहन मान पुनि घोरण पत्र बपान ।
 परपरा बाहन आई बनीपक सो जान ॥३२॥

हस्ती भारोह नाम

भाघोरण, हस्तिपक, पुनि कहै निपाद निषाह ।
 सूखीर बिक्रांत जो, भट, जोध, जोधाह ॥३३॥

सारथी नामः

प्राजिता अंता नियंता, क्षंता सारथि सोऽ ।
 दक्षस्व संवेष्टु सो रज कुटंविन होऽ ॥३४

वपतर नामः

कवच भंग भृत् कंकटः जगर तनुप्र सनाह ।
 तनुप्राण टंसन वधं धार धाण कंचुकाह ॥३५॥

तनु तै उतारे ताका वपतर को नामः

आमुक्तः प्रनिमुक्त, पुनि गिगद् अगिगद् देण ॥

संनद्ध नामः

वमित दंसित मंज पुनि उडतंढक लेण ॥३६॥

सेना का नामः

पादाजय, मुपदाति, पति, पग पदातिक जान ।
 पक्षि समूह नुरे तक्षो पादातं सु वपान ॥३७॥
 सस्नात्रीधः युधितः तडस्पृष्टा सत
 क्तहस्त सु प्रवांग पुनि विसिक्त पुंत् वत्त ॥३८॥

धनुद्धर नामः

धनुष्मान् धन्वो बद्दुरि निर्गो सुधानुष्क ।
 कांश्वान, कांडीर पुनि धान हस्त नहिमुष्क ॥३९॥
 यधेत्तर, पुरस्तरः पुरोगम सु पुरोगः ।
 प्रष्टामंदगागी बद्दुरि मंधर कहे सु लोण ॥४०॥
 वेगी प्रजवो जवन जन त्वरित तरस्थी व्याधु ॥

जीत वाला का नाम :

जेता, जिशु, सु जित्वर सो जुगीनरण साधु ॥४१॥

सेना नाम :

सेना ध्वजनी वाहिनी पृतना चमू अनीकः
 अनीकिनी रु, वरुथिनी चक्र सैन्य बल ठीक ॥४२॥
 बल विन्या सु सुव्यूह कहि व्यूढारचना जानि ।
 साम दान दंड भेद ए चारों जुधे मैं आनि ॥४३॥
 एक हस्ती रथ दोइ हे तीनि सु पंच पदाति ।
 पत्यंगे त्रिगुणी करे क्रम तै अधिक विष्याति ॥४४॥
 सेना मुप श्री वाहिनी पृतना चमू वपान ।
 अनीकिनी दशानीकिनी, अक्षोहिनी प्रवान ॥४५॥

अन्यमते :

अयुत, नाग, रथ त्रिगुण, लपः जोधु अश्व दस लक्ष ।
 पटत्रिसत लप पै गजह अक्षोहिणी प्रत्यक्ष्य ॥४६॥

श्री सकमी सपति धापत् निपत् विपत्ति ।

सस्त्र नाम :

अस्त्र सस्त्र प्रहरण सोई सपति धामुव नाम सुसस्ति ॥४७

धनुष वाजिहू नाम :

धन्व धापु धनु धरासन इप्वासः कौदह ;
कामुक मौर्वीसिजती ज्या प्रत्यधि गुण मङ्ग ॥४८

तीर नाम :

वाण, प्रयक्तः कलबः, धार, पग, मार्गण, इपु कर्ण ।
घानी काह छुरप्रिय भासग सोमर हर्ण ॥४९॥
पत्री रोप अजह्यग, विधिप सिस्तीमुप प्राहि ।
प्रध्वेदन नाराज सो कहै सोहसर ताहि ॥५०॥
धराभ्यास उपासन पक्ष बाज पुपक्त ।

प्रहृत वाण सो निरस्त :

(विप वाण नाम) लिप्तक, दिग्ध, विपाक्त ॥५१

तरकस नाम :

उपासंग सुधीर पुनि तुमी तुग अपाण ।
कहै निपग सुई पधि भापा तरकस जाज ॥५२॥

षंङ्ग नाम :

रिष्ट कुपेण, कृपाण अति, मंडलात्र करवास ।
निःस्त्रिषः कौक्षेयकः अत्रहास तरवास ॥५३
पङ्गादिक की मुष्टिकी, सर कहत सब कोइ ।
छाहि निबधन भेषला [डास नाम] फलक चर्म फल सोई ॥

मोगरा नाम:

मुम्बर घन झुघन [गोफीयो नाम] मिड पास सुग ग्रन्थ ।

छोटी तरवार नाम:

ईली, है, करवासिका परिषः परिषातनः ॥५४॥

फरस नाम:

परस्वधः सुधितिः परसु कहै फुठार सु ताहि ।

सुरिका नाम:

धस्त्री अतिपुत्री, बहुरि अति घेनुका सु चाहि ॥५५॥

वरखी नाम:

प्रास कुंत धल्प सकु पुनि सर्वला सोमर हुंठ ।
कोटि अशिपाशी बहुरि कोष नाम सतहुंठ ॥५६॥

नृप सांवत नौमी महा पूजै अश्व हथ्यार ।
नीराजन विधि विविधि करि कहै सु लोहा म्यहार ॥५७॥

प्रस्थान नाम:

जात्रा, ब्रज्या, गमन, गम अभिनिर्जान सु आहि ।
आसार, प्रसरणं, प्रचक्रं चलितार्थक पुनि चाहि ॥५८॥
अरिसेना अभिगमन जो सो अभिषेकन होइ ।
भीत रहित रन में धसै कहै अभिक्रम सोइ ॥५९॥
बोधकरा वैतालिका मधुका मागध जानि ।
बंदिनःस्तुति पाठकाः सूरन करत वपानि ॥६०॥

धूलि नाम:

रेणु धूलि रज सर्करा पेह पांशु जो रेतु ।

धुजा नाम:

वैजयंतु केतन ध्वजा बहुरि पताका केतु ॥६१॥
समुत्थिंज पिंजल बहुरि भृश आकुल कहु जानि ।
वीरा संसन युद्ध भूः जो अति भय की दानि ॥६२॥

रिणोही नाम:

अहंपूर्व अहंपूर्विका आहो पुरिषको सोई
अहम हसिका जु परसपर अहंकार जो होइ ॥६३॥

बल नाम:

सौर्य सुष्म बल द्रविण तरः सहस्थाम सो प्राण ।
विक्रम कहि अति शक्तिताः सक्ति पराक्रम प्राण ॥६४॥

संग्राम नाम:

संगर समर अनीक, रण विग्रह कलि समुदाय ।
समित युद्ध संयत समित् अव्यय कलह कहाय ॥६५॥
आस्कंदन प्रविदारण सांपराय संप्रहार ।
आजोधन मृध आहव, अभ्या मर्दनु चार ॥६६॥
प्रविदारण संयुग प्रधन जन्यः आजिक दन्य
संस्फोट, समाघात, पुनि संख्य अनीक सु अन्य ॥६७॥
अभिसंपात अभ्यागम बाहु युद्ध सुनि जुद्ध ।
रण संकुल तुमलं सबद छ्वेड सिंघख बुद्ध ॥६८॥
करीनाद घटना घटा वृंहत गर्जित जान ।
क्रंदन रव जो घानि कौ विस्फारो घनु स्वान ॥६९॥

हठ वा पीडा छल नाम :

बलात्कार प्रसभ प्रसह्य हठ स्थलितं छल आहि ।
उत्पात उपसर्ग पुनि और अजन्य सुचाहि ॥७०॥

पीड़न पुनि भयमर्षकहि । मूर्छा कस्मस मोह ।
 भय्या साधन जानियो, भय्यव स्कवन कोह ॥७१
 पटह भडबर कौ कहै और विजय जय जान ।
 बँर सु, दिवप्रतीकार है वँर निर्जातम धान ॥७२॥

हारा का नाम :

प्रद्रावः उद्राव पुनि संद्रावः संद्रावः
 उपक्रमो उपजान है प्रव विप्रव के नाव ॥७३
 रणे भग सुपराजय, पराजितः पराभूत ।
 नष्टति बोहित कहत है जात रहत जो पृत ॥७४

मारण का नाम :

सप्तपनः निर्गंधनः निस्तर हृणन कृपन्तः
 उज्जासन भ्रात्रिज पुनि उन्मासन प्रमदन्तः ॥७५॥
 निर्वापनः निहृन्न क्षणन परिवर्जन वष होइ ।
 विधसन प्रतिभावन विसर पिड भपासन सोइ ॥७६॥
 प्रमापनः सुनि कारण बहुरि विस्तारण भाहि ।
 पयसन जु निहंसन उम्बासन महि चाहि ॥७७॥
 निधासन जु प्रवासन ए मारण के नाम ।
 काल पाय त्याग जु तनु सोई मरण अभिराम ॥७८५

मरण नामः

कास धर्म पुनि पचता निघन घत भय नाथ ।
 विष्टांतः प्रलय त्यय. मृत्यु पचत्व परास ॥७९॥
 प्रेत प्राप्त पचत्व मुक्त प्रमीत सस्वित जान ।
 परेत बहुरौ कृणप छव मृत्युक नाम वपान ॥८०॥
 क्रिमा मुक्त विनु सीसतनु कहै कबध सुकाहि ।
 पिसुवर्ण श्मसान है चिति चिता पिरयाहि ॥८१॥
 वंदि उपग्रह प्रग्रह काराबंदी पान ।
 असु प्राण पुनि जीव कहि असु धारण जु प्रवान ॥८२
 जीवित काल सु भायु कहि जीवनीपध जीवास ।
 यथा शक्ति कब नूर भनि छत्रीय वर्ग प्रकास ॥८३॥

इति क्षत्रिय वर्ग समाप्तः

वैश्य नामः

भूमि स्पुक विष्ट बैस्य सो उरज उरथ्य वपान ।
 ताही सौ पुनि धर्म कहि नूर सुपट अभिधान ॥८४॥

वृत्ति नामः

वार्ता वृत्ति सु जीविका जीवन चर्तन होइ ।
 भाजीवा भाजीव पुनि मूर कहत जग सोइ ॥८५॥

वैश्य की वृत्ति नामः

पासुपाल्य वाणिज्य कृषि सेवा च्यारों वृत ।
कृषि कृत शिल उद्य ग्रनृत ॥८६॥

पेती नाम :

जाचित और अजाचित मृतक अमृत सुवपान
बनिक भात्र सति ग्रनृत पुनि भाषे नूर सुजान ॥८७॥

उधार नामः

मागें पाईयै ताकी नामः

उदाह ऋण कहत हे पयुंदचन सोइ ।
मागें सो जो पाई यै जाचि तक सो होइ ॥८८॥

व्याज नामः

वृद्धि जीविका नाम तिह कहै कुसाद सु व्याज ।
उतमर्ण जो देत हे ले अघमर्ण निलाज ॥८९॥

व्याज पाइ ताकी नामः

वाद्धुपिक वाद्धुपि बहुरि वृद्धोजीव सुजान ।
कुसीदक तासों कहै व्याज पातु जु वपान ॥९०॥

पेती सेती जीवै ताकी नामः

पेती सेती जीविका सोई करै सदीव ।
कृषीवलः कृषक सोई कृषिकः क्षेत्राजीव ॥९१॥

बीज गेरो होइ जिह पेट में ताकी नामः

उपनकृष्ट बीजा कृत, बीज परयो जिह पेट ।

हल चल्या जिह पेट में ताकी नामः

सोत्यकृष्ट निहल्य सो फाडक अग्रहेत ॥

पेट नामः

पेट, वप्र, केदार, सो कैदार्य केदारि ।
हार, क्षेत्र, सी कहत नूर नाम सु विचारि ॥९२॥

ढेला का नामः

लोष्ट, निलोष्ट सु नाम ए ढेलाके जानि ।
[मंज ढेला फोरे सो ताके नाम] ॥९३॥
कोटिस, भेदन लोष्ट की कहै नूर अभिराम ।

कुदाली वह पुरपा नामः

जासी पणे पनित्र सो, अवदारन पुनि सोइ ।
दात पात्र जु लवित्र कहि, नूर नाम तिह दोइ ॥९४॥

षलिहान नामः

पल पलि वाली पलक पुन पल वालक षरहान ।
हलनिरीप पुन कुटकसी, तीन कहै अभिधान ॥९५॥

हल नामः

सीरफाल गोदारन, सांगम कृषिक कहत ।

जूवा कील नामः

जूवाकील, जगकीलक, समी नाम सलहत ॥

हन फीलीक नामः

ईपः हलके बंड की लीक सु सीठा होइ ॥१६६॥

मेढि नामः

मेधि पुनि पल दारु है, पलु पसुबंधन सोइ ॥

हरितधान नाम जवस नाम लालधान नाम ॥ तीन बहका नामः

हरित धान सी तोक्य कहि जवस कहै सिठ सूक ॥

पाटल प्रसुग्रीहि कहि साल धान सी लूक ॥१७॥

कोदव नामः

कोरवूप भद कोशब नापा कोदू होइ ।

मोठ नामः

मांगल्यक्य सु मोठ है नूर बधानी सोइ ॥१८॥

मसूर नामः

मकुष्टक सुमजुष्टक नाम मसूर प्रधान ।

सरसौ नाम

सर्पक कहै कर्बक तुम बन मूस बपान ॥१९॥

सिद्धार्थः सरसौ बबलः १

गोहू नाम :

सुमन कहत गोधूमः, कुस्माप यावक यदुर

सु कुसत्य नबवादिहि सूम ॥२०॥

चना नामः

चनक कहौ हरि मंष सो [तिल नाम] तिल पित्र विम पेज ।

भलसी नामः

चमा क्षमा भतसी सुनो नूर सुराई तेज ॥

राई नामः

शुक्ताभिजननि सु भासुरी छवराबिका कहत ।

कहै कृष्णका नाम तिह नापा राई हुंष ॥२१॥

कंगुनी नामः

कंगु प्रियंयु सु कंगुनी [भंग नाम] मातुसानी भंग पाष ॥

धान नोक के नामः

द्वे सत्य शुक किसान ॥२००॥

सस्यमंजरी नाम गुच्छ नाम पषार नाम:

सस्य मंजरी मंजरी स्थं व गुच्छ सो होइ ॥
नाम पलाल पपारि सो नूर कहत सब लोइ ॥१

धान्य नाम धान्य भेद नाम:

स्तं व करि जो धान्य हे ताकौ ब्रीहि विचार
नाडी नाल सु कांड कहि धान गांठि उचार ॥२

धान्य त्वचा नाम भूसी नामानि कन धान नाम:

धान तुचास्तु सभिपो भुस को वुस अभिधान ।
जो विनु फल को धान्य ह्वै ताहिक डंगर जान ॥३

पैना का नाम: अति पैना का नाम:

प्रदन तोत्र तोदन कहै ए पैने के नाम ।
है अति तीक्ष्ण नोक हौ सूक कहौ गुन ग्राम ॥४॥

स्याम धान नाम:

सो स तीनक: पंडक सोहरेण सु कलाप।

रिद्ध वा पूत नाम:

धान लून्यो परहान में ताकौ कहियै रिद्ध ।
जौ दै कै उत्तकीयो सोई पूत प्रसिद्ध ॥५॥

रसोई का नाम:

पक्वस्थान महानस: कहै रसवती ताहि ॥

रसोई कौ अधिकारी नाम:

ताहि कहत अघ्यक्ष पुनि पौरोगव सो आहि ॥६

रसोईया नाम:

सूपकार आरीलिक: यूपिक अदनिक जान ।
सूद, आधसिक वल्लव, कादंरिक सु वपान ॥७॥

चूल्हा नाम:

चुल्हि, अंतिका, जानियो अधिक्षपनी अस्मंत ।
उद्धांत तिह नाम ए नूर कहत सबसंत ॥८॥

अंगीठी नाम:

हसनी, अंगारधानिका, अंगरस कटी सोइ ।
हसंती सुता सौ कहै अंगेठी पुनि होइ ॥९॥

भाड नाम:

भ्राष्ट्र कंदुसो श्वेदिनी अंवरीष सो जातु ॥
लघु घट कौ जो कीजिये मणिक अलिजा आन ॥१०॥

करवा नाम:

गलंतिका सो कर्करी आल कहिए ताहि ।

हांडी नामः

कुंडो, स्याली, पिठर, सो चपा, सु, हांडी चाहि ॥१॥

कलम नामः

घट, कुट, नि प, एकलस, हिकहै मूर सुम्प्यारी नाम :

दिया नामः

यदमान, सु, सरवक जो सीया यह धाम ॥

कुप्पी नामः

कुपू कुपप सो बानियो धल्पनेह की पात्र ।
पीवन की जो पात्र है कंसकहै गृण गात्र ॥११

वासण नामः

भाजन धावापन सोई भीडा पात्र धमप ।

कलाई नामः

कछधी^१ सो विपभाज्य कहि दावी नाम सुभत्र ॥१२

चाटू नामः

काष्ट हस्त तंडू उह दाह हस्तक सोइ ।

साक वा नासो नामः हरितक, कहिये साक को क्षिप्र नालिका होइ ॥१३

सामग्री नामः

कंठक कंसंब उपस्कर बंसवार की नाम ।

कवि सामग्री सो कहै हरिआवि गुमग्राम ॥१४

पटाई नाम मिरच नामः

विचरी कपाक्षा म्मसो चूक पटाई चाहि ।

बेस्तजउ पज मरिच पुनि कोल कृपन सो चाहि ॥१५॥

ठाहि धमं पत्तन कहै (जीरा नाम) बीरक बारन जानि ।

नूर धजाजी कहव है जीरा माम प्रवान ॥१६॥

काला बीरा सूंठि धावा नामः

कषा कृपन जीरक सोई धावक है शुभ बेर ।

नागर सूंठि महीपयो विदवा जानहु फेर ॥१७॥

मेषी नामः

सुपवी, पुषवी, कारबी, उपकुंधिका सुघाहि ॥

कहै मूर उपकालि पुनि मेषी जानो चाहि ॥१८

धनीया नामः

बिहुप्रकः धान्यक सोई कस्तुंबर तिह भाप ।

छत्रा पांशो मामप भाया पनिवा धाप ॥१९॥

कांजी नाम:

आरनाल सौ बीर सो कुलज सोई कलमाष ।
धान्या, म्लकांतिक सुनो, अवंति सोम गुण लाष ॥२०

हींगु नाम:

हींगु जनुक, बाल्हीक पुन रामठ कहिए ताहि ।
सहस्त्रबेधो नूर कहि हिंगु पत्री और चाहि ॥२१।

हींगु के पत्र नाम:

पत्री पृथ्वी कारवी कारवी पृथु सो होइ ।
बाष्पिका तिह जानियो, हिंगु दृक्षी है सोइ ॥२२॥

हलद नाम:

निसा हरिद्रा कांचनी बर बर्ननी वषानि ।
पिंडा सोधा ता सोई पीता नूर सुजान ॥२३

सींघालून नाम:

मानिमंथ सिव सीत सो द्वे सैधव के नाम :
रोमक, षारी लोन सो (बिडलून नाम) बस्तक बिट बिड काम ।

सौंचल नाम:

सौबर्चल मेचक तिलक अक्षरुचक जु कहंत ।

मिश्री वा षांड नाम:

सिता शर्करा मिश्री सो षंड नाम सलहंत ॥२५

षांड नाम:

फाणित मत्स्यंडी सोई कहै षंड अभिधान ।
सकल षंड गुण आदि दै ईक्षु विकार सु जान ॥२६॥

संस्कार युक्त वस्तु नाम:

प्रणीत उपसंपन्न सो कहौ संस्कृत ताहि ।

सोधी वस्तु नाम:

संसृष्ट सोधित सोई सोधी वस्तु सु चाहि ॥२७

चिकनी वस्तु नाम:

चिक्कण, मसूण, स्निग्ध सोइ (वासी नाम) भावित वासित होइ ॥

पूरी नाम:

पौलि अभरूषा पुरी कची अपक्वह सोइ ॥

धानकी षील नाम:

लाजा, अक्षत सौ कहै (बहुरी नाम) बहुरी सो धानाजु ।

चिडवा नाम:

पृथुक सोई पिचिपित्र पुनि चिरवा कौ इह साजु ॥२८॥

रोटी नामः

पिष्टक यूप अपूप पुन, तीन्यो रोटी नामः
दधि सीधी वस्तु नामः

ओ दधि सीधो होइ कछु करम कहौ भनिराम ॥३०॥

भात नामः

भक्त सदी दिव भन्न सो, भिस्सा भोदम प्रथ ।

वासन में ओ लागि रहै भात ताको नामः

कहौ दग्धिका भिस्सपा, वासन लपट्यो बध ॥३१॥

मांड नामः

खरर साप्र, सुमड अच मणि मासरा होइ ।

रावड़ी नाम वायूस नामः

मापा, बूस, सुउदिनका, कहै विलेपी ताहि ।

तरसा, आजा बवागूः मापा खरी भाहि ॥३२॥

गव्य नामः

दूध दही घृत भादि दे, गोतै उपजै सोइ ।

गव्य नाम तासौ कहै नूर पुराने सोइ ॥३३॥

गोबर वा करस नामः

गोविट गोमय कहत है ई गोबर के नाम ।

सूके कौ अरु करस कौ है करीष गुन ग्राम ॥३४॥

दूध नामः

धीर कुम्भ पय सौ कहै (धीव नाम) घृत हवि सर्पिं सु भाज्य ।

नूनी सो नवनीत कहि सो नवत घृत साज ॥३५॥

गाड़ी दही पतली दही नामः

भाज्य कहै दध्यादि सब पुनि पायस्य भपाम ।

हो इन गाड़ी ओ दही, दुष्य कहै मति मान ॥३६॥

दूध में जो घीव नामः

गाह दुहत ओ दूध में प्रगट होत है घीव ।^१

हर्मयवीन, सुनाम तिह भापत दुध जन घीव ॥३७॥

मथी दह नामः

काससेय, सु, भरिष्ट पुनि गोरस कहिए भाहि ।

मथी मथानी में दही घीव न काढ्यौ भाहि ॥३८॥

चीपार्ई जस सहित दधि तत्र कहार्ई सोइ

भाधी जल दधि में मिले उहै उवस्वित होइ ॥३९॥

१. मूत्र में 'घ' है पर होना 'ध' चाहिये ।

निर्जल दधि सौ नूर भनि मथि त कहै कविराज ।
जानह दूध नवीन जो नाम पीयूष सुसाज ॥४०

तुल्यपान नाम:

पीवे साथि सपीति सो सखि सु भोजन साथि ।
भूप वुभुक्षा क्षुत उहै, ग्रास कवल मुष हाथि ॥४१
फैला जूठ वपानिये (प्यास नाम) प्यास नाम है तर्ष ।
तूपा पिपासा उदन्या, तूट तृशना अनर्हर्ष ॥४२

भोजन नाम:

जेमन, जग्धि सु भोजन लेह विघस आहार
नूर जगत की देपिये है तातै आघार ॥४३॥

तृप्ति नाम:

सौहित्य, तर्पण, तृप्तिः, (कहौ यथेप्सित नाम) काम प्रकाम निकाम ।
काम प्रकाम निकाम सो पर्याप्तः अभिराम ॥४४॥

गोप नाम:

गो संख्य गोधुक उहै वल्लव गोप गोपाल
नूर कहै आभीर घर पेले कृशुन कृपाल ॥४५॥

गाय समूह नाम:

गो समूह गोधन कहै बहुरी गोकुल होइ ।
धेनुक धेन समूह सुनि बत्सक बत्स सु लोइ ॥४६॥

बैल नाम:

गो उछा वृषभ वृष बली बर्द अनुड्वान ।
सौरभेय सो भद्र पुनि रिषभ बैल अभिधान ॥४७॥

बृद्ध बैल नाम:

महोक्षः वृद्धक्ष पुनि कहै जरह व ताहि ॥

बक्षा कौ नाम:

जातोक्ष शकृत्करिः तर्नक लैरु आहि
व्यधिया सौ आर्षभ्य कहि ॥४८

(कंधवह बैल नाम)

वह गोपति सुइ ठूर भार निवाहै कंध ॥
सौ ताके नाम सुनूर गल कंबल सो (मा) स्ना ॥४९॥

नांथे बैल कौ नाम:

नास्नित नस्योत प्रष्टवान युग पार्श्वक ।
नाथी बैल जु होत ॥५०॥

जुधा वालो वैल नामः

साटक सो प्रासग्य युग्य जुधानि धाई कष ॥
सौरिक हालिक नाम तिह बई वूपभ, हलबष ॥५१

सब बोम्ब लै घले वैल ताको नामः

धूर्य धुरीम धूर्वहः धीरेयः तिह जान ।
सर्व धुरंधर वैस की भंग विपाण प्रवान ॥५२॥

गाइ नामः

उषना माता श्रुगिनी सौरभेयी माहेय ।

उत्तम गाइ नामः

नूर अजुंभी राहिनी अघ्न नाम है त्रेय ॥५३॥

विध्या गाइ तुई गाइ नामः

बध्या गाइ कहै बसा, भव साका तुई जानि ।

सधिनी नामः

सग्यो वूपभ सो सधिनी सुधी सुकरा मानि ॥५४॥

बहुत बस्ता जिह गाइ कै होइ ताको नामः

बस्त घने जिह गाइ कै सो पेष्टका होइ ।
जो ब्याई बहु दिन की है बफ्कनी सोइ ॥५५

घनु नाम सुप्रता नामः

धोरे दिन ब्याये मये घेनु कहाबै पूर ।
जो दुहर्ते सुप देव है उई सुवृष्ठा नूर ॥५६॥

वरस २ मै ब्याइ ताको नामः

समासमीना होइ जो गाइ ब्याइ प्रति वपें ।

धन नामः

भोधस्य धापीन पुनि धन के नाम सुकुर्य ॥५७॥

धूँटा नामः

पूटो, सिवकः, कीलक, पसुकी रज्जु सुदाम
संवान सो दावनी पसुकी रसरी नाम :५८॥

रैई वाभेरणा का नामः

कूटर बड बिष्कंभ सो मय मधान वैशाप ।
कहै भर्गरी मंधनी नूर सु मटकी भाप ॥५९॥

ऊंट नामः

उष्ट्र फलेस यम कहे संघरीव महांग ।
करम सु बास ऊंट की देपि लेंहु तिह स्वाप ॥६०

बकरी वा बकरा नामः

बकरी, क्षागी सो अजान । क्षाग अक्ष अज होइ ।
स्तंब गलक सो जानियो भापा बोक सु लोइ ॥६१॥

मेढा नामः

मेप मेढ्र एडक व्रपय उरण सो उर्णायु ।

गदहा नामः

पर रासभ वालेय सो चक्री वंत कहायु ॥६२॥

वाणिया का नामः

परापजीवः वनविकः क्रय-विक्रयक होइ ।
सार्यबाह वैदेहक, नैगम वाणिज, सोइ ॥६३॥
विक्रेता विक्रयक सो कायक क्रयक सु आहि ।
आपनिक वनिया उहै, भापा नूर सुचाहि ॥६४॥

मोल की वस्तु कौ नामः

मूल्य अनामक नामए वस्तु बेचनी होइ ।
नाम मूलधन कौ इहै नीवी परिपण सोइ ॥६५॥

नफा का नामः

नाम नफा के नूर कहि भाल अधिक फल जान ।

गाहक कौ आदर करै ताकौ नामः

सत्याकृति सत्यापणः सत्यंकार बषान ॥६६॥

थौणी नामः

न्यास नियम नैमेय सो, उपनिधि है परिदान ।
प्रतिदातु परवर्त्त पुनि नाम धरोहरि जान ॥६७॥

बेचण वा साषी का नामः

विक्रय विपण सु बेचिवौ [बेची वस्तु कौ नाम]
क्रय पराप पण तव्य :

साषी प्रति भूलग्नकः [जमान नाम] :: अनुबंधक सो भव्य ॥६८॥

मासा का नामः

गुंजा पांच प्रमान कौ माप कहै कविराज ।
सौरह मासा कौ सोई कर्ष अछ सो साज ॥६९॥

पल नामः

चारि कर्ष कौ एक पल सो पल कौ तुल जान ।
बीस तुला कौ भार इक समझौ नूर सुजान ॥७०॥

विस्त नाम कुरु विस्त नामः

सोना कर्ष प्रमान कौ कहि सुवर्ण पुनि विस्त ।
पल सोनासौ कहत है नूर होइ कुरु विस्त ॥७१॥

प्रस्थादिक मान नामः

धारि कुड्य सो प्रस्थ कहि भाडक प्रस्थ जु धारि ।
चतुराडक सो द्रोण है सोलह द्रोण सुधारि ७२॥

हस्तादिक मान नामः

बीविस अंगुलि मान की हस्तक याहू सोइ ।
ध्यारिहस्त की दंड इफ कहत नूर सब कोइ ॥१७३॥
दोइह जासु दंड को मान करे द्वी कोस ।
दोइ कोस गोहत सोई नहै गभ्यूत कहोस ॥१७४॥
गभ्या पुनि गभ्यूति दोऊ ध्यारि कोस की नामः
ताही सौं जोवन कहै जे पंडित धनिराम ॥७५॥

चौथाई को नाम धाटे को नामः

चौथाई सो पाव कहि बटक अंस अरु भाग
नूर कहै नवपंड सौं है पञ्चमाय सु भाग ॥७६॥

द्रव्य नामः

द्रव्य बित्त वसु अर्ष अरु स्वाप ठेय सु हिरण्य ।
रैद्रव्य सो नूर भनि है बिन पै ते धन्य ॥७७॥

पंजा नामः

अस्म गर्भ गाह्यमत मरकत अहिमे सोइ ॥

लाल मणि नामः

पद्मराम सोणित रतन सोहितक पुनि होइ ॥७८॥

मूंगा नाम

मूंगा सो विद्रुम कहै उहै प्रवाल सु धाहि ।

रत्न नामः

मणि रत्न ए नाम दोइ मुक्तादिक सब धाहि ॥७९॥

सोना नामः

कांचन कंचन कर्बुर कार्तस्वर सो स्वर्ण ।
हाटक हेम हिरण्य सु कर्बुर स्वम स्ववर्ण ॥८०॥
जातरूप धामीकरः गांगेय सपनीय ॥
सात कुंभ अष्टापद जावू नद जानीय ॥८१॥

सोना का धाम्भूषण नामः

धूमि भूपन, कनकौ, कनक कहत पुनि नूर ।

रूपा का नामः

रजत रूप्य बुर्बर्ण सो स्वेत बहुरि पञ्जूर ॥८२॥

पीठरि नामः

धारकूट अरु रीति सो पीठर नाम प्रवान ।

ताम्र क नाम:

ताम्र नाम पंडित सुनौ नाम प्रकाश प्रवान ॥
 द्यष्ट बरिष्ट म्लेच्छ मुष, सुल्व उदंबर जान ॥८३॥

लोह नाम:

शस्त्रक, पिंड सुतीक्ष्ण पुनि, अस्म सार कहि नूर ।
 कालायस अयस मयल सो सिंहान मंडूर ॥८४॥

कांच नाम पारा नाम:

काच क्षार दोइ नाम है पारद सोर सराज
 सूत चपल रस जानियो, शिव वीरज सुषि साज ॥८५॥

गंधक नाम :

गंधक सो गंधिक सुनौ साँगंधिक पुनि होइ ।
 सो गेरू गैरेय पुनि अथर्य नाम तिह सोइ ॥८६॥

अभ्रक नाम :

गलव सुमाहिषशृंग कहि, गिरिज अमल तिह जान ॥
 अभ्रक नाम सु जानियो, कहत नूर भति मान ॥८६॥

रसौति नाम :

तार्क्ष, शैलरस गर्भ सो सिषि श्रीव सो वीर ।
 क्वाथोद्भवः वितुन्नकः कपोतांजन वीर ॥८७॥
 रसांजनः श्रोतोंजनः तुछांजन सो आहि ।
 मयूरकः सो कर्परी नूर दाविका चाहि ॥८८॥

हरिपाल नाम :

रोति पुष्प पुष्पक सोई पीतन पिंजर ताल ।
 पौष्कक कुसमांजन उहै, ताल कही हरिताल ॥८९॥

सिलाजतु नाम :

अस्मसार सों सिलाजतु गिरिज कहत है ताहि ।

सिंदूर नाम :

पिंडीरः सिंदूर सो नाग संभव चाहि ॥९०॥

सीसा नाम रांग नाम :

सीसा सो जो गेष्ट कहि सीसक वप्र सुनाग ।
 वंग रंग तुलत्रपु, पिच्चट पिचल वड भाग ॥९१॥

कुसुंभा नाम । मधु नाम :

वन्हि सिपः सुमहारजत नाम कसूभा जानि ।
 मधु सो क्षौद्र वपानही माक्षिक भूर वपानि ॥९२॥

मैणनाम :

मधूलिष्ट सिक्थक सोई दोइ मोम के नाम ।

मैनसिल नाम :

नागबिह्लका मनसिला नेदम गुप्ता भनिराम ॥१३॥

त्रिकुटा नाम । त्रिफला नाम :

त्रिकटु, त्र्यूपण त्र्योप सो, त्रिकुटा कहिये ताहि ।

त्रिफला बहुरि फलदिक वैश्य वर्ग में चाहि ॥१४॥

दोहा :

वैश्य वर्ग पूरन कियो नूर अमर अनुसार ।

सूद्र वर्ग अन्न वर्ग हूं पंडित सेह सुभार ॥

इति वैश्य वर्गः संपूर्णः

अथ सूद्र वर्ग वर्णनं ॥

सूद्र नामः

सूद्र अपत्यज वृषल पुनि, अन्न वर्ण सो जान ।

भाषा नाम प्रकाश में भागत नूर प्रवान ॥१५॥

संकीर्ण नाम :

आदि करण अक्षर है आठान पर्वत

इन्है सूद्र पुम जानियो ॥१७॥ संकीरन सो संत

करण नाम :

सूत्री, त्रिय अर वैश्य त्रिय इन्ह ठै पुम जु होइ ।

करण कहावै नाम तिह नूर सुनी नर कोइ ॥१८॥

अक्षर नाम :

वैश्य जाति है तीय की है त्रिय ब्राह्मण ताहि ।

जो दहुवन में उष्यजै, कहि अक्षर सुताहि ॥१९॥

उष नाम :

सूद्र जाति है तीय की पति है क्षत्रीय कोइ ।

उष नाम तासो कहै जो दहुवन में होइ ॥१००॥

मागध नाम :

क्षत्रीय की वैश्य त्रिय तिन को पुष वपानि ।

मागध तासो कह्य है नूर सुकवि जगि जानि ॥११॥

माहिष्य नाम :

वैश्याधीय क्षत्री सुपिय, जो षोऊ को पूत ।

तिह माहिष्य सु जानियो जो छन रूप संजुत ॥१२॥

क्षता नाम :

पुरुष सूद्र वैश्या त्रिया क्षता तिन को जात ।

क्षत्रीय त्रिय त्रिय ब्राह्मणी सूत नाम अरदात ॥१३॥

वैदेहिक नाम :

वैश्य और ब्राह्मणीय की, वैदेहिक उष्यजत ।

रथकार नाम :

करिनी पति माण्यहि जो रथकार सलहंत ॥४॥

चंडाल नाम :

पुरुषं सूद्र वभनी प्रिया, उपजै दहुतै सोइ ।
तिह चंडाल वषानियै नूर कहत सुन लोइ ॥५॥

कारीगर नाम :

सिल्पी कारु सुनाम द्वे, कारीगर के जान ।

सिल्पी समूह नाम :

शिल्पी गण सौ नूर कहि श्रेणी करत वषान ॥६॥

जुलाहा नाम :

तंतुवायु सुकविद है, दोइ जुलाहा के नाम

बुणावण हारा का नाम :

तुंत्रवाय सो शौचिक पटहि बुनावत काम ॥७॥

चित्राम के वासतै जो भीति कौ लीपै ताकौ नाम :

है पल गंड सु लेपक लिपै भित्त संभाल ।

कुम्हार नाम :

दंडभृत चक्री नूर कहि कुंभकार सु कुलाल ॥८॥

चितेरा नाम :

चित्रकार रंगा जीव(चमार नाम)पादुका कृत चर्मकार ।

सिकलीगर नाम :

भ्रमाशक्त सस्त्र मार्ज असि घावकःशाणा जीव विचार ॥९॥

सुनार नाम :

स्वर्णकार नाडिंधम कहै कलाद सुताहि ।

रुक्मकार पुनि मुष्टि सो, नाम सुनार सुआहि ॥१०॥

लुहार नाम :

है दोइ नाम लुहार के लोहकार व्योकार ।

ठठेरा नाम :

तांम्रकूटकः नूर कहि शैल्विक बहुरि उचार ॥११॥

षाती नाम :

बद्धकि त्वष्टा तक्ष सो काष्टतट रथकार ।

धोबी नाम :

रजक निर्नजक धुज सोई, धोबी नाम उचार ॥१२॥

माली व कलाल नाम :

दाम नाम जुत मालिक है सो मालाकार

मंडहारकः सौड़कौ जानी ताहि कलार ॥१३॥

नाई नाम : भंता घसाई नापित, पिवाकीति क्षुरि मुडि ।
 पटीक नाम : भवाजीव जावाल सो है जाकै घरि कुडि ॥१४॥
 प्रपच नाम : माया कौ परपच कहि नूर सबरी जान ।
 परपंची नाम : पर पंधो पायक बुहै मायाकार सुजान ॥१५॥
 नाचन बाला का नाम :

सँसाली सँझूप सो, भरत सु आया जीव ।
 कृसासी नाचत फिरत, बनिता लै संभ पीव ॥१६॥

नट नाम : नट कु सीलयः घरण सो तीनि नाम है तास ।
 पयावजी नाम : मौरजिकः मार्दंगिकः पयाजी सु प्रकास ॥१७॥
 तालधारी नाम : पाथिवाद पाथिभ उहै, ताल धार है सोइ
 वीनकार नाम : वीनकार सु वैनिकः
 वेणु सवारी तह कौ नाम : वेनुभ्रम संभविक होइ ॥१८॥
 चिड़ी मार नाम :

धाकुनिकः जीवाठिकः धिरींमार कहि साहि ।

वागुरिया नाम : वागुरिक. सो जालिकः जो वागुरिया भाहि ॥१९॥

चित्र लेखनी नाम :

षि भसेपनी तूलिका बहुरि कूचिका होइ ।

उनका सेवक का नाम :

बंतानिक भूषि भूत भूतकः कर्मकार है सोइ ॥२०॥

कावडि लै चलै ताके नाम :

भासा वह वैवधिक सो जो लै कावरि कंष ।

सिंकार मारि करि घाइ तिसका नाम :

वैतंसिक कौटिक सोई मारि पात करि बंध ॥२१॥

नीच नाम :

अपसवः जाल्म निहीन सो इतर प्रवचन सोइ ।

प्राकृत पामर बिबर्भ नीच नाम सिह होइ ॥२२॥

दास नाम :

परभारक परिजात सो, भूय दास दासेय ।

किंकर प्रेष्य मूजप्य पुनि, चेटक नाम नहेय ॥२३॥

परस्कंध सु पराचित है निजोग्य, दासेर ।

गोप्यक बहुरि परंभिन नाम गुसाम सुकेर ॥२४॥

भालकसी के नाम :

मंद तुंद सीतक अलस है असुल्य भालस्य ॥

परमूज नूर बपान ही जो है भालस बस्य ॥२५॥

चतुर नाम :

चतुर उप्त पट्ट पेशलः सू स्थानी जो दक्ष :
नूर नाम षट चतुर के है जाकी बुधि दक्ष : २६

सूद्र भेद नामः

प्लव मातंग जनंगम दिवाकीर्त्ति चंडाल ।
बुष्कस सु पच निषाद सुनि सवर सु अवर कलाल ॥२७॥
अंतेवासि किरात पुनि बहुरि पुर्लिद बषान ।
नीच जाति कौ भेद यह कहत नूर जग जान ॥२८॥

व्याध का नामः

बधिक व्याध लुब्धक मृगपु कही मृग बधा जीव ।

कुत्ता का नामः

सारमेय, कौलेय, सो, मृदंगसक श्वा होइ ॥
सुनषकः भषक कुर्कुर उहै सारदूल पुर सोइ ॥२९॥

रोगी कुत्ता वा सिकारी वा कुर्त्ता नामः

रोगी कूकर काट नो, ताहि अलर्क बषान ।
बिस्व कहुजु सिकार कौ सरमा सुनी सुआन ॥३०॥

तरुण पसु नाम : सूकर नामः

बक्वर जो पसु तरुण है सूकर बिटचर ग्राम

सिकार नामः

आछोदन मृगया मृगव्य आषेटक के नाम : ३१

चोर नामः

तस्कर दस्यु सुमोषक एकागरिक स्तेन ।
परास्कंदि प्रतिरोधि सो मल्लिचः चौरन ॥३२॥

चोरी का वा चोरी का घन का नामः

चौर्य चोरिका स्तैन्य पुनि जो घन चोरयो होइ ।
लो प्रस्तेय नूर कहि जानत है नर कोइ ॥३३॥

मृग वा पक्षी जासैं बाँधियें ताकौ बीतंसक है नामः

मृग पक्षी जा सौं बंधैं उपकारण बीतंस ।

रसडी नामः

बटी बराट क रज्जु गुण ताही कहै सुवस ॥३४॥

रहट नामः

घटी यंत्र उघाटन है सोई जल जंत्र ।
सलिलोद्वाहन नुर भनि भाषा रहट सुमंत्र ॥३५॥

राञ्छ वासूत नामः

वाय दह वेमा सोई बस्त्र वृत्तन की दह ।

सूत्र तंतु सो नाम द्वै नूर जगत की मड ॥१९१॥

बुणिकरि लपेटिये तुरि तह को नामः

बुणि करि बस्त्र लपेटिये, वाणि ब्यूति तिह जानि ।

नालिकी नामः

पाषाणिका सु पुत्रिका भाषा नासि बयानि ॥१७॥

मंजूसा नामः

मजूपा पेटा पिटक पेटक नूर कहत ।

सद्रूप सो जानियो भाषा नाम सहत ॥१८॥

वहंगी नामः

वहंगिका वहंगी सोइ, भार यष्टिका सोइ ।

छीका नामः

छीका के द्वै नाम हे सिक्क काष सो होइ ॥१९॥

वरस धर्म की पतही नामः

नग्री बघी वरनापाहू पादुका भाहि ।

पदायिता पुनि अनुपदी कहै उपानत ठाहि ॥४०॥

चाबुक वा साण नामः

कसा चाबनी चाबुकी साण निरूप रूप होइ ।

परशु पात्र ब्रह्मन बई [रई नाम] रूषिका सुसिका सोइ ॥४१॥

मूसि नामः

कहै तेजसा बतिनी मूपा जानहु ठाहि ।

माथड़ी नामः

माथी मस्मा सो कहै धर्म प्रवेसी फाहि ॥

करोत नामः

ककच सोई कर पत्र है फाट करत जो वोइ ।

बरमा नामः

बेघनीका भास्फोटनी बेघत बरमा सोइ ॥४३॥

रांपी भारी नामः

कहै कृपानी कर्तरी नाम कवरनी वोइ ।

भारी सो दारा बहुरि धर्म बेघिनी हाइ ॥४४॥

कुहाडा वा वसोला नामः

बृक्षमेधी बृक्षावन : जासी काटत वृक्षः ।

जो पापाण जुदारक टंक कहत प्रवस ॥४५॥

उपमा नामः

प्रतिमान उपमान सो प्रति निधि प्रतिमा ग्राहि ।
 प्रतिविव प्रति जातना प्रतिच्छा यासो चाहि ॥४६॥
 नोकास संकास निभ साधारण सम तुल्य ।
 सदृक् निकृति प्रतिकार सो नूर होत जो कुल्य ॥४७॥

सेवा नामः

पण निर्वोस भिधास वह भरण मूल्य मरराय ।
 कर्मण्यां भृत्या भृतयः भर्म वेतन कहाय ॥४८॥

मदिरा नामः

सुरा इरा वरणात्मा परिस्तुता मधु जानि ।
 हलप्रिया हाला सोई गंधोत्तमा वपानि ॥४९॥
 प्रसंना सु कादंवरी ऐरा ताह कहंत ।
 नूर हार हूरा, उहै आसव नाम लहंत ॥५०॥

गजक नामः

मद्य पिवत ही पात जो ताहि कहत अवंश ।

जा घर में मदिरा पीवै ताकौ नामः

जहां बैठि मदिरा पीवै सुंडा नाम प्रसंस ॥५१॥

महुवा कौ मद नामः

मधु क्रम मधुवारा उहै महुवा कौ मधु होइ ।
 माधवकः मद्याशवः मधुमाद्दी कसु लोइ ॥५२॥

सैंधी मधु नामः

सैंधी मदिरा मोदक सीधु जगल मैरेय ।
 मत्तिवारे वातै कहै आपा नं जानेय ॥५३॥

उन्मद नामः

किंन नग्नहू अभिषवः सुरा मंड संधान ।
 कारोत्तम सो नूर भनि सांधि अन्न मद जान ॥५४॥

प्याला नामः

पान पात्र कौ चषक काहि [तृप्ते वस्तु नाम] अनुतर्पन जु अघात ।

जुवारी नामः

अक्ष वेदी अक्ष धूर्त सो कितव द्यूत करि पात ॥५५॥

जूवा के नामः

कैतव पण सो द्यूत है कैतवती कहि ताहि ।

पासा का नामः

अक्ष पत्र पासक ग्लहः नूर देवना आहि ॥५६॥

सारि नाम पूजी सारि नामः

अष्टापद पुनि सारि पकी सारि
सो नूर कहि सो परिणाय विचारि ॥१७॥

इति सूत्र वर्गः दोहाः

सूत्र वर्ग पूरन भयो कहै सूत्र के कर्म ।
नाम बिषेप सु नूर भनि काह तीसरं मर्म ॥१८॥

इति श्री मत्सकल अभिधान रत्न भूपन भूषित मियां नूर कृष्ण भाषा नाम
प्रकाश नाम माला द्वितीय काह सपूर्णः २

दोहाः

काह तीसरे की भवहि वर्नत नूर उदार ।
सब्दविषेप समुद्र की जाई लहिए पार ॥१९॥
न्यारे न्यारे सब काहू मिसत न कोइ ।
अर्थ मिले मिसि जात ज्यौं धर्मवान् नर होइ ॥२०॥

धर्मसिमा नामः

पुन्यवान् धर्म्य मुकृती धर्मसिमा के नाम ।

बड़ी इला ह्रीह जाकी ताकी नामः

महासय सु महेश पुनि बड़ इला की धाम ॥३॥
सवा दया जाके ह्रिदं सो सहस्रय हृदयाम् ।
बड उद्यमी महोद्यमः महोत्साह सु बिसाम् ॥४॥

प्रवीण नामः

ऋतु मृप निपन अभिज्ञ सो कृती कुसल निस्तात ।
वैज्ञानिक सिद्धि सोई विज्ञ प्रवीण विख्यात ॥५॥

पूजा योग्य नामः

पूज्य प्रतीक्य सुनाम द्वे पूजा योग्य जू होइ ॥

बडा दासा की नामः

दान सौंख सुन दान्य ज्यो स्पून लक्ष है सोइ ॥६॥

बड़ी भार्वल जाकी ताकी नामः

भायुष्मान् पौषात्रिकः जाकी पूरन भायु ।

शास्त्र कहै ताके नामः

भतर्बाभि सु शास्त्रभित कहै शास्त्र समम्भयु ॥७॥

वरदाता व उत्कण्ठित नामः

वरद सोई समर्द्धक जो वर की वातार ।
उन्मन उत्कण्ठित सोई उक्त सु नूर उचार ॥८॥

पुसी नामः

हृष्यमान् विकृर्णन सो हर्षमान नर कोइ ।

दुषीमन की नामः

अंतर्मन द्रुमंन विमन जो दुष्पित मन होइ ॥६॥
चतुर नाम कवि नूर कहै दक्षन सरल उदार ।
है नर दाता भोक्ता सुकल कही उच्चार ॥१०

तत्पर का नामः

सो उत्सुक उद्यक्त पुनि विष्टार्थक कहि ताहि ।
प्रत आसक्त सु नूर कहि तत्पर नर की चाहि ॥११॥

प्रतीत का नामः

आष्यात विश्रत पृथित वित्ता सोई विज्ञात ।
है प्रतीत नर की जगत सो प्रतीत जनध्यात ॥१२

गुन की प्रतीति ताकी नामः

जाके गुन की जगत मै है सब कै परतीत ।
कृत लक्षण सो नूर कहि आहि तलनसो मीत ॥१३॥

प्रभु नामः

स्वामी ईश्वर ईशिता ईश आद्य पति सोइ ।
प्रभु अधिप क अधि भू धनी नेतापारवृढ होइ ॥१४॥

कुटुंब की पाले ताकी नामः

अभ्यागारि कहै सोई ताहि उपाधि कहंत ।
जो पालै परवार कीं नूर नाम सलहंत ॥१५॥
श्रेष्ठ रूप संयुक्त जो सो संहनन वपान ।

संपन्न नर नाम ॥ सत्वरकरि संपत्ति करि संपन्न होइ ताका नामः

ताहि कार्य कर्त्ता कहै है निधायं अभिधान ॥१६॥

पिता बराबर नर होइ ताकी नामः

मनोज वस सो जानियो पिता बराबर होइ ।

कूकुद नामः

अलंकार जुत कन्यका देत सु कूकुद सोइ ॥७॥

लक्ष्मीवंत नर की नामः

श्रीमान श्रीलः लक्ष्मण लक्ष्मीवान
लक्ष्मी जाकै है बहुत है ताकै विश्राम ॥८॥

दयावंत के नामः

सूनृत बत्सल कारुणिक स्निग्ध ऋपाल दयाल ।

स्वच्छंद नामः

स्वच्छंदः निरवग्रह स्वरी स्वतंत्र निभाल ॥९॥

पराधीन नामः

पराधीन परतंत्र सो नाथवान परवान ।

निष्ण अधीन सुगृह्यक आयत नाम सुजान ॥१०॥

मूर्ध नामः

पल्लव बहु कर नूर कहि दीर्घ सूत्र प्रपव ध्वं ।
असमीक्ष क्कारी आत्मः जो है मूरप मव ॥११॥

कुंड नामः

करं काम में काहनी कुट कहत है ताहि ।

काम विषं तत्पर रहै ताकी नामः

ताहि अक्षकर्मिण कहि कर्मक्ष सो प्राहि ।

अपने काम कौ तत्पर ताकी नामः

कर्मसीमा कर्मठ सोई कर्मसूर संकर्मः
कर्मन्य भुक् कर्मकर कर्मकार तिह धर्म ॥१३॥

मांस भोजी का नामः

आभिष्याधी शौथलः सदा मांस जो पात ।

भूषा के नामः

धूषित विदुत विधित्सु रसनायव विष्यात ।

अपनी ई पेट भरै ताकी नामः

पर पिंडा वषस्मर अद्मर कहिये ताहि ॥
है परल अक्षक सोई कुर्धभरि सो प्राहि ॥१५॥
आद्मनः प्रीवरिक सो आत्म भरि पुनि सोइ ।
सोदर पूरक नूर कहि आर्क अभिक न होइ ॥१६॥

गोघा नर कौ नाम मांसा का नामः

गर्वण गृध्र सु नाम द्वेष जो गोघो नर हुंठ ।
जीव शौड उत्कट दोऊ संजामत्त कहत ॥१७॥

लोभी का नामः

लोभूप लोभुभ लुब्ध पुनि अभिलापक के नाम ।

मतवासा का नामः

सो उन्माद उन्मदिश्नु जो मतिवारो ग्राम ॥१८॥

विनय सयुक्त ताकी नामः विनय रहित ताकी नाम

विनय प्राही विनेयः जुहै विनय संयुक्त ।
समुद्धतः अभिनीत पुन विनय रहित सो उक्त ॥१९॥

कामना सहित कौ नामः

काममिता, कामन, कामन कामित अभिक सु मीक ।
कामितानूक पुनि कभ्र सो मूर नाम ए ठीक ॥२०॥

पराये वस्य-दूभो रहै ताके नाम । अपना वधन कौ पाले ताकी नामः

निमृत् प्रणय विनीत वस्य प्रस्तित बहुरि अवस्य ।
जो पाले निज बोस कौ आश्रव नाम सुवस्य ॥२१॥

ढेठे के नाम चतुर नाम:

धृष्टः धृशु विपात पुनि जो ढेठो नर होइ ।
प्रतिभान्वितः प्रगल्भ सो नूर चतुर है सोइ ॥२२

अढीठ नाम:

सो अघृष्ट सालीन सो जो ढीठो नर नाहि ।
वस्मिय सहित विलक्ष है नूर कहत जगमाहि ॥२३॥

कायर नाम:

भीरुक भोलुक भीरु पुनि कातर त्रस्त प्रसंस ।
वात कह्यो चाहै जुसो आसंसित आसंसु ॥२४

मारन हारा का नाम: स्तुति करन हारा का नाम:

मारनहारो घातक हिंस्रः उहै सरारु ।
स्तुति कर्ता सो नूर कहि, अभिवादक वंदारु ॥२५॥
भूमि परयो चाहै जु नर सो पातक पतयालु ।
उत्पतिता उपपतिशु उठयो चहै संभालु ॥२६॥

तिसीक्षण का नाम:

भविता भूशु भविशु वर्तन है वर्तिशु ।

निरादर करयो चाहै ताको नाम:

चाहै कर्यो अनादरहि छिपु सु निराकरिशु ॥२७॥

ज्ञाता का नाम: चिकणा का नाम:

विदुर विदु ज्ञाता स्निग्धः सांद्रि सु मेदुर होइ ।

विगस्या का नाम:

विकस्वर जानी विकासी नूर नाम है सोइ ॥२८॥

पसरया का नाम:

विस्मर विसत्वर विसारि, उहै पनसारि सु आहि ।

क्रोधी नाम:

कोपी क्रोधन अमर्षण चंड कोप बहुताहि ।

सहनशील नाम:

सहन, सहिपु तितिक्ष पुनि क्षंता क्षमी वषान ।
क्षमिता तासौ नूर कहि जो सहि रहै निदान ॥३०
जागरुक जागतिता जागन हारो कोइ ।
प्रबलायित जो नीदबसि घूर्निक कहिये सोइ ॥३१॥

सोवनहारा का नाम:

स्वप्न कशयित सयालु सो निद्राण निद्रालु ।

मूर्ध नामः

पल्लव बहु कर नूर कहि दीर्घ सूत्र प्रस्व ध्वं ।
प्रसमीक्ष कारी आत्मः जो है मूरप मव ॥११॥

कुंड नामः

करे काम में काहली कुंड कहव है ताहि ।

काम विषय तत्पर रहे ताको नामः

ताहि प्रलंकर्मीम कहि कर्मक्ष सो प्राहि ।

अपने काम को तत्पर ताको नामः

कर्मसीमा कर्मठ सोई कर्मसूर संकर्मः
कर्मन्य मुक् कर्मकर कर्मकार तिहु धर्म ॥१३॥

मांस भोजी का नामः

प्रामिष्याषी शीबलः सदा मांस जो पाव ।

भूषा के नामः

क्षुधित विक्षुध भिषित्सु रसनायत विष्यात ।

अपनी ई पेट भरे ताको नामः

पर पिडा वषस्मर प्रस्मर कहिये ताहि ॥
है परल्ल भक्षक सोई कूर्खभरि सो प्राहि ॥१५॥
प्राचूनः प्रौषरिक सो प्रारम भरि पुनि सोइ ।
सोवर पूरक नूर कहि जाके अधिक न होइ ॥१६॥

गीघा नर को नाम मांता का नामः

गर्भय गृध्र सु नाम द्वे जो पीघो नरनुठ ।
जीव खौड उत्कट बोळ संज्ञामत कहत ॥१७॥

लोभी का नामः

लोनूप सोसुभ सुम्भ पुनि प्रभिसापक के नाम ।

मतवाला का नामः

सो उन्माद उन्मविशु जो मतिधारो घाम ॥१८॥

विनय संयुक्त ताको नामः विनय रहित ताको नाम

विनय प्राही विनेयः जुही विनय संयुक्त ।
समुद्धतः अधिनीत पुन विनय रहित सी उक्त ॥१९॥

कामना सहित को नामः

कामधिता, कामन, कमान कामित प्रभिक सु मीक ।
कमितानुक पुनि कप्र सो नूर नाम ए ठीक ॥२०॥

पराये बस्य-दूषो रहे ताके नाम । अपना वचन को पाले ताको नामः

निमृत् प्रजेय धिनीत बस्य प्रस्नित बहुरि प्रवस्य ।
जो पाले निज बोल को प्रायव नाम सुतस्य ॥२१॥

ढेठे के नाम चतुर नाम:

धृष्टः धृशु विपात पुनि जो ढेठो नर होइ ।
प्रतिभान्वितः प्रगल्भ सो नूर चतुर है सोइ ॥२२

अढीठ नाम:

सो अघृष्ट सालीन सो जो ढीठो नर नाहि ।
वस्मिय सहित विलक्ष है नूर कहत जगमाहि ॥२३॥

कायर नाम:

भीरुक भोलुक भीरु पुनि कातर अस्त प्रसंस ।
वात कह्यो चाहै जुसो आसंसित आसंसु ॥२४

मारन हारा का नाम: स्तुति करन हारा का नाम:

मारनहारो घातक हिंस्रः उहै सरार ।
स्तुति कर्ता सो नूर कहि, अभिवादक वंदार ॥२५॥
भूमि परयो चाहै जु नर सो पातक पतयालु ।
उत्पतिता उपपतिशु उठयो चहै संभालु ॥२६॥

तिसीक्षन का नाम:

भविता भूशु भविशु वर्तन है वर्तिशु ।

निरादर करयो चाहै ताको नाम:

चाहै कर्यो अनादरहि छिपु सु निराकरिशु ॥२७॥

ज्ञाता का नाम: चिकणा का नाम:

विदुर विदु ज्ञाता सिगवः सांद्रि सु मेदुर होइ ।

विगस्या का नाम:

विकस्वर जानी विकासी नूर नाम है सोइ ॥२८॥

पसरया का नाम:

विस्मर विसत्वर विसारि, उहै पनसारि सु आहि ।

क्रोधी नाम:

कोपी क्रोधन अमर्पण चंड कोप बहुताहि ।

सहनसील नाम:

सहन, सहिष्णु तितिक्ष पुनि क्षंता क्षमी वपान ।
क्षमिता तासौ नूर कहि जो सहि रहै निदान ॥३०॥
जागरूक जागतिता जागन हारो कोइ ।
प्रबलायित जो नीदवसि घूर्निक कहिये सोइ ॥३१॥

सोवनहारा का नाम:

स्वप्न कशयित सयालु सो निद्राण निद्रालु ।

पोठि फेरें ताकी नामः

मुप फेरें सुपरान्मूप पराचीन सो भासु ॥३२॥
नीचो मुप करि रहै, ताकी नामः

प्रथोमुप सु प्रावांमुपः जिहि नीचो मुप होइ ।

नूर कहै सु जरूर विनु ताहि न बेपी कोइ ॥३३॥

प्रति बक्ता का नामः

बावहुक धद बदावद बाग्मी बक्ता प्राहि ।

पटु सो बावो युक्ति जो बाग्पति प्रति बक्ताहि ॥३४॥

कुत्सित बोलें ताकी नामः

बाघाट, बाघाल, सो गह्वर्यक जात्मक होइ ।

दुमुंघं का नामः

भवद्व मुप बहुरौ मुप जो मुप दुमुंघं होइ ॥३५॥

मीठी बात नाम प्रगट न बोलें ताकी नामः

प्रियवद सुम्नसूचः प्राग्दी मीठी बात ।

लोहल प्रस्फुट वाक्यो नैक न समझौ भाठ ॥३६॥

कहुबो बोलें ताकी नामः

कटु बक्ता सु कटुवधः गह्वंवावी है सोइ ।

कुबचन बाला की नामः अज्ञान नामः

कुचर कुबावी कुबचनी जइ भज, ग्यान न होइ ॥

जाकी स्वर नीकी नाही ताकी नामः

प्रस्वर और प्रसौम्य स्वर जिहि स्वरनी नाहि ।

नादकरण बाभका नामः

नावी कर शब्द नखण नावी बादी प्राहि ॥३८॥

बात कहै न सुणै न आर्षं ताकी नामः

कहनी बात न प्रावई सुनी म प्रावई बात

नेइ भूक सो जानियो नूर कहत विघ्यात ॥ ३९ ॥

चुप्प रहै ताकी नामः

तूदनी शीसः तूथीकः चुप की रहै जू कोइ ।

नांगा कर नामः

नम प्रवास दिगवर नूर मुनीधवर सोइ ॥ ४० ॥

कादि दीजिये ताकी नामः

निः प्रकथितः प्रपञ्चस्त पुनि प्रपकृष्ट सो जानि ।

धिकउठ जो धिक्कारि कै कादि दियो सु बपति ॥ ४१ ॥

गुमानी की नामः

प्रासं गर्भ प्रमिमूत सो गर्भ गहै जो होइ ।

साथी नाम:

साधित दपित नाम तिहि साथि, रहै जो कोइ ॥ ४२

आग्या दीवा मने कीवो तिस कौ नाम:

निरस्त प्रत्यादिष्ट सो आग्या दीनी ताहि ।

प्रत्याष्यात निराकृत मने कर्यो जो चाहि ॥ ४३ ॥

जो ठगाइ आयौ होइ ताको नाम:

विप्रलंभ सो वंचितः प्रहुरि विप्रक्तत जान ।

मार्यो होइ तिसको नाम:

हत प्रतिहत प्रतिवद्ध पुनि मनोहत सु बषान । ४४

बांध्या का नाम:

प्रतिक्षिप्त अधिक्षिप्त पुनि कीलित संपत बद्ध ।

विपती जी कौ नाम:

आपन्न आपत्प्राप्त सो विपत्ती जीव निपद्ध ॥ ४५ ॥

भय सेती भाग्यो होइ ताकौ नाम:

कांक्षी क सु भयद्रुतः भय तै भागै कोइ ।

जो स्थिर त्राहीं ताकौ नाम:

जो स्थिरनांही नूर कहि सक शुक जानहु सोइ ॥ ४६

दुःष्यित का नाम:

ध्यसनात्त उपरक्त सो दुषित नर के नाम:

व्याकुल बा विहूल नाम:

व्याकुल कहै विहस्त सो विहूल विल्कव काम । ४७

दुष्ट बुद्धि बाला कौ नाम:

विवश अरिष्ट सु दुष्टधी दुष्ट बुद्धि जिह बुद्ध ।

संनद्ध नाम:

पहरी होइ सनाह जिन आततायी संनद्ध ॥ ४८ ॥

द्वेषी नाम:

द्वेषी जानहु अक्षिगत जो नर मारन जोग्य ।

शीर्ष छेद्य सो जानीयो बद्ध कहत सब लोग ॥ ४९

चपल नाम सठ नाम दुष्ट नाम धूर्त नाम:

चपल चिकुर जानियो अनूज सठ हि बषानि ।

दुष्ट सु खलु अरु पिसुन है, धूर्त सु वंचक जानि ॥ ५०

घातक नाम:

क्रूर नृसंस सु घातक जानहु ताकौ पाप ॥

मूर्ख नाम:

यथा जात बंधेय सो बालिस अज्ञ अघाय ॥ ५१ ॥

कृपण नामः

किंपच धनमित मितिपच कृपण मिति पच कृपण कदर्यं सु क्षुद्र

वरिणी नामः

दुर्गत दीन वरिद्र निष्व दुविष मापत वर ॥५२

पर दोष वेधे ताको नामः

पर दोषहि वेध र्हे पुरोगामी' सो घोड ।

दोषे कटुक कह्य है नूर सु कविजन होइ ॥५३

चुगल नाम सस्त्र सो छाया रह्यो हाइ ताको नामः

कर्म जप सूचक चुगल धारित जानहु चाहि ।

भाषारि सो नूर कहि, शस्त्रे र्हे बहु चाहि ॥५४

मिषारी नामः

आशक मार्गण जाचनक वनीयक सो भाहि ।

मिषुक सो भर्षी कहै नूर सुकविजन चाहि ॥५५

स्वेदतं उपजं भ्रष्टो तं उपजं भ्रकुरे तं उपजं तोन बहके नामः

स्वेदण, क्रयि, वसादि, वे, भ्रज्ज, पम सर्पादि ।

उद्भित उद्भिट भद्रमुत जानहु तह मुस्मावि ॥५६॥

नूर जरायुज जगत में है नर घोर गवादि ।

दिव्य रूप उत्पन्न ह्यै जानहु सो देवादि ॥५७॥

इति विशेष्य निघ्न वर्गः

सुंदर नामः

मञ्जु सुपम सु मञ्जु सो इष्य मनोहर पाइ ।

सोमन साधु मनोज सुनि कांत बचिर सु बिचार ॥५८॥

भासेचक नामः

भा सेवक बिह देपि कै वृष्टि भस्तिनहि होइ ।

मनोवाञ्छित नामः

प्रिय बल्लभ व भ्रमीष्ट सो इप्सित वाञ्छित सोइ ॥५९॥

निर्घंका नामः

रेफ जाप्य कुत्सित प्रथम प्रथम कुपूय निकृष्टः

प्रहृयं प्रतुक सो पेट है सो प्रषष्ट प्रति कृपि ॥६०

म्लान नामः मल दूषित नामः

मलिन मलोमस कह्य है रे मलीन के नाम ।

मल दूषित कथर सोई नूर कह्य गुन प्राप ॥६१

१. 'या' के ऊपर नून में 'भा' लिखा हुआ है । और 'नी' के ऊपर 'यी' लिखा हुआ है । इस प्रकार पुरोभागी हुआ ।

पवित्र नाम: पूतं पवित्र सु भेद्य कहि [सोधित नाम]
 अनवस्कर सो मृष्ट ।
 निः सोधित सोधि सोई है निर्निवत सुसृष्ट ॥६२

सून्य का नाम:
 तुद्य फल्गरित कशिवक, सून्यक सोई असार ।

प्रधान पुरुष नाम:
 प्रमुक प्रवंक प्रधान सो वर्य वरेण्य उचार ॥६३
 अग्र प्राग्र हर मुख्य सो उत्तम अग्रीय सोइ ।
 अननुत्तम सो नूर कहि जो प्रधान नर होइ ॥६४॥

श्रेष्ठ नाम : शोभन नाम:
 पुष्कल अरु श्रेयान कहि द्वे श्रेष्ठ के नाम ।
 अति सोभन सो सत्तम नूर कहत गुन ग्राम ॥६५॥

प्रसस्त वाचक नाम:
 व्याघ्र सिंघ पुगंन रिपभ शार्दूलगज नाम ।
 उत्तर पद दये होत है श्रेष्ठ अर्थ बड़ भाग ॥६६

अप्रधान नाम: दीर्घ नाम:
 उपसर्जन जु अप्राग्य ए अप्रधान के नाम ।
 आयत जानहु दीर्घ सो नूर कहत गुन ग्राम । ६७॥

स्थूल नाम:
 महत वृहत पीवर पृथुल पीन विसंकट होइ ।
 पीवरपीघ्नीन, उर विपुल स्थूल विसालंसु लेइ ॥६८॥

अल्प नाम:
 सूक्ष्म तनु कृश क्षुल्ल सो स्तोक दभ्र जो अल्प
 ताहि श्लक्षण कहतै नूर सकल गुण कल्प ॥६९

मात्रा का नाम:
 अक्षर एक कहैं सुने जितनी वीतत काल ।
 मात्रा त्रुटिता सी कहै नूर सभाल सभाल ॥७०॥

अति सूक्ष्म नाम:
 अणु कण पुनि लव लेश सोहे सूक्ष्म अनू सिष्टः
 कणीय सो अल्पीय सो अणीय सो अल्पिष्ट ॥७१॥

बहुत नाम:
 प्रचुर प्राज्य बहु बहुल पुरु भूरि भू य भूयिष्ट ।
 पुरुहुस्मिहरः मदभ्र प्रभूत सो सुनि इष्ट ॥७२॥

संख्या सौ जो अधिक होइ ताकी नाम । गणि वे योग्य होइ ताकी नाम :

जो संख्या षट् सौ परे ताहि पर षट् नाम ।

सो गणनीय गण्य जो गणम जोम्य भभिराम ॥७३॥

गण्यो होइ ताकी नाम : सघन नाम :

नाम गणित संख्यात सो नाम गणायो चाहि ।

सघन निरंतर सांघ सो नूर कहत सब कोई ॥७४॥

सम्पूर्ण नाम :

स्वकल समस्त समग्र सो भिद्व निमित्त निःशेषः ।

कृत्स्न संपुष्प सर्वं नूर अपंड अप्रक्षेप ॥७५॥

निकट नाम :

सबिध सदेस सबेस सो निकट सनीब समीप ।

सन्नि-कृष्ट आसन्न जो नूर कहत गुन दीप ॥७६॥

समजाव उपकंठ है अतिक्रम अतिक्रम अत्यर्थ ॥

अभ्यासा छोई सुनो मिलित होत तिहु वर्ण ॥७७॥

सीश्या का नाम :

अभ्यवहित अपवातर संसिधत हो होइ ।

अति निकट नाम :

अतिक्रम, नेदिष्ट सो अति समीप रहै सोइ ॥७८॥

दूर नाम :

दूरि दबीय ददिष्ट सो नेदिष्ट पु कहत ।

विप्रकृष्ट सो जानियो जोनिति दूर रहत ॥७९॥

बाटसा का नाम :

बहुल निस्तल वृत्त है बटसी जानहु ताहि ।

ऊंचा का नाम :

सुंय उतंग उदग्र सो उछित प्रायु भयान ।

उन्नत ऊंचे सौ कहै जानहु नूर सुजान ॥८०॥

नीचा बावन का नाम :

नीच, न्यप्र, ह्रस्व खर्ब सो भवनत बावन प्राहि ।

भवानतः सो जानियो बावन अंगूर चाहि ॥८१॥

वक्र नाम :

मुग्न वक्र बलित कृटिम वृजन जिह्वय नत जान ।

आकुंचित आबिद्ध सो मूर्ति भयान भयान ॥८२॥

ऊँचो होइ अरु न रहै ताकौ नामः

उन्नतान, त, बंधुरः उचौ नै रहै कोइ ।

सूधा का नामः

सूधौ प्रगुण अजिह्य जु सरल नाम तिह होइ ॥८३

टेढा का नामः

टेढो आकुल अप्रगुण टेढा के द्वे नाम

नित्य नामः

नित्य सनातन सदातन सास्वत ध्रुव कौ घाम ॥८४॥

ठहराय रहै ताकौ नामः

स्थिर तर स्नुस्थे यान सो जोनी कै ठहराय ।

एक रूप सौ सदा ठहराइ ताकौ नामः

काल व्यापी कूटस्थ सो, एक रूप न पराइ ॥८५

स्थावर नाम जंगम नामः

कहै जंगमेतर सोई जाको स्थावर नाम ।

जंगम त्रसचर चराचर इंगिचरिस्तु सु ग्राम ॥८६॥

चंचल नामः

चंचल चलन चलाचल कंपन कंप सु ताल ।

तरल परिप्लव नूर कहि पारिप्लव सुनि भाल ॥८७॥

अधिक नाम : दृढ नामः

अतिरिक्त समधिक सोइ अधिक नाम है दोइ ।

दृढ संधि हि संहत कहै, जानि लेहु सब कोइ ॥८८॥

कर्कस नामः

कर्कश क्रूर कठोर दृढ, निष्ठुर कठिन सु जान ।

मूर्ति नामः

मूर्ति मूर्ति मत मूर्ति के द्वेही नाम वधान ।

पुरान का नामः

प्रतन प्रत्न जु पुरातन चिरंतनः सु तुरान ।

नवीन नामः

अभिनव नूतन नूत नव प्रत्यग्र सु वपान ॥९०

कोमल का नामः

कोमल मृदु सुकुमार सो । मृदुल कहत पुनि ताहि

पीछै लाग्यौ फिरै ताकौ नामः

अनुपद अनुग अन्वक्ष सो अन्वग जानहु ताहि ।

प्रत्यक्ष वा घः। प्रत्यक्ष नामः

ऐन्द्रियक सो नूर कहि आनि जेह प्रत्यक्ष ।

ऐ नू प्रतीन्द्रिय जो कछू, सो जानहु प्रप्रत्यक्ष ॥१२२॥

एकाग्र नामः

एकस एकाग्र सो है अनन्य कृति सोइ ।

एकवान एकाग्रन एकाग्रन गत होइ ॥१२३॥

घादि वा घंत नामः

प्रथम पूर्ब पौरस्त्य सो घादि नाम समहंस ।

पश्चिम चरम जघन्य सो ग्रंथ्य घन्त कहंत ॥१२४॥

निरुक्त नाम सामान्य नामः

मोघनिरुक्त निःफल साधारण सामान्य ।

प्रगट नामः

स्फुट उत्पन्न प्रकृत सो नूर स्पष्ट सु जान्य ॥१२५॥

विपरीत नामः

सो प्रसेभ्य प्रतिकूल सोः

दधन घंग का नामः

दोइ नाम विपरीति ।

घपसभ्यह सु घपष्ट पुनि वधित घंग की रीति ॥१२६॥

नाम घंग सो सभ्य है हैवक्षण घपसभ्य ।

संकट नामः

संवाधकः संकट सोई भाषत नूर मुकृष्य ॥१२७॥

संकडाई कौ नामः

संकीर्णः संकृत सोई आकीर्ण तिह आहि ।

मुंडित नामः

मुंडित परिवर्धित उहैः

बहुत कठिन समझौ न जाइ ताको नामः

कमिष गहन सो आहि ॥१२८॥

गांठि नाम विस्तार नामः

गांठि अंधि अंधित सोई, विस्तृत तत विस्तार ।

विसृत व्याप्त सु विग्रह विस्तार नूर उचार ॥१२९॥

प्राप्त नामः

प्राप्ति तासौ कहस है प्रभिहित कहिये सोइ ।

विस्मित नाम नून्यी

विस्मित नाम नून्यीः

विस्मित सो अंतर्गतः अंतर्बर्त्सी होइ ॥१३०॥

कंपित नामः

कंपित प्रेषित वेल्लितः चलित धूत आधूत ।

युक्त कौ नामः

संजोजित सु उपाहित युक्त वस्तु जो पूत ॥१॥

जो पायो होइ ताको नामः

समासाद्य स्रुतनीन सो स्पंनगम्य जो प्राप्य ।

आप मै परस्पर जोड़ करयो ताको नामः

संगूढः—संकलित सो करयो जोड़ मिल आप्य ।

निघ नामः

निघः ख्यात व गीत सो गरहण जानहु ताहि ।

बहु विधि जाणै ताको नामः

नाम रूप पृथग्विध विवध सु बहु विध आहि ॥३॥

चूर्ण कियो ताको नामः

अवध्वस्त अवचूर्णित अवगीणं अधिकृत ।

अनायास कियो ताको नामः

अनायास कृत फांट सो नूर कहत गुन वृत्त ।

मूँद्या का नाम वाँध्यो का नामः

मुद्रित संदित मूर्णसित मूदे के अभिधान ।

संदानित वाँध्यो सोई नूर कहत सु विधान ॥५॥

पाक होइ घृत दूध मै नूर कहत सृत ताहि ।

गुणित वस्तु नामः

गुणित कहै वस्तु जो सोई आहित आहि ॥

नैक भेद उच्चावच सुद्रच नीच अभिधान ।

अकेला कौ नामः

एकाकी एकक एका एक ही नाम प्रवान ॥

अवलंबित नाम जो हुई न जाइ ताको नामः

अवलंबित उद्यंड है जो अविलंबित होइ ।

अस्पृक असह्य अरंतुदः, छुयो जात नहि सोइ ॥८॥

भिन अर्थ नामः

एक एक तर सो सुनो पुनि अन्येतर जानि ।

भिन्नार्थक सो नूर कहि भिन अर्थ सु बषानि ॥९॥

अप्रयोजक नामः

जो कछु कामिन आवई कहिअ प्रयोजक ताहि ।

सो अवाध सुनिरर्थक कहा लाभ जग वाहि ॥१०॥

मोटा का नाम : छिप्पा* का नाम:

उपचित मोटे स्पर्क है, दपत मुठित जो गुप्त ।

ब्रज नाम:

भववरन, द्रुत नूर कहि भागत कृपन सुसुप्त ॥११

जूवा सिपायो ताको नाम:

धूत सिपायो होइ जिहि सो कृत कारित जानि ।

सूंध्या का नाम:

घ्रात घ्राण सूंभ्यो सु जो (सीप्या कानाम):

विग्ध लिप्य सु बपानि ॥१२॥

सूंध्या का नाम:

भावृत बलमित, रुद्ध सो है वेधित संबीत ।

तेज कर्मो ताको नाम:

तेजिष्ठ निशिष्टी क्षुप्त सो तेज करत जो भीत ॥१३

द्वीण ह्यात सज्जित सोई [पाक नाम] पाकःपक्व बपानि ॥

युक्त सेती करयो ताको नाम:

उपाहित संजोबित युक्त करयो जो काम ॥१४

प्रभा रहित नाम:

रोक बिगत निःप्रभ सुनो प्रभा रहित जो नाम:

बिहीन नाम:

धूत बिधुत सो जानियो हूँ बिहीन रम माहि ॥

छेद्या का नाम:

कारित भेषित भिन सो कहै विदारपी ठाहि ॥१५॥

सिद्ध वस्तु नाम:

निःपत्रः निर्बुध्त सो सिद्ध वस्तु जो कीइ ।

उपासित नाम:

बरबस्तिठ उपचरित सोई करै उपासना सोइ ॥१६॥

राष्या का नाम:

भाष्य घात गोपित गुप्त भवित किये जो गोप ।

तजयो होइ ताको नाम:

त्यक्त हीन धूत बिधुत उत्सुष्ट करि कोप ॥१७॥

उक्त नाम:

भाष्यात भभिहित उदित जल्पित सपित सु उक्त ॥

भाष्यत जानहु नूर कहि जे है मान संयुक्त ॥१८॥

*मूस में छिप्पा के ऊपर 'गूँ' और निहा हुआ है ।

जान्यो होइ ताकौ नामः

बुद्ध बुधित प्रति पन्न सो मनित विदित कहि नूर ।
अवगत अव वासित सोई, जान्यो ह्वै जिन नूर ॥१६॥

काटे के नामः

छिन्न छित्त कृत कृत सो लूत दात दिति सोइ ।
काटे कौ यह नाम है नूर समझि लै कोइ ॥१६॥

अंगीकार नामः

प्रतिज्ञात उररीकृत आश्रित उरी कृत जान ।
अंकीकार करयो जु की ताके नाम वपान ॥२०॥

सुणै ताकौ नामः

संश्रुत उपश्रुत उपगत, विदित समाहित आहि ।
सुनी वात संकीर्ण सो, नूर कहत सब ताहि ॥२१॥

स्तुति करी होइ जाकी तकी नामः

वन्नित पनित पणायित ईडित शस्त वपानि ।
अपगीर्ण सु अभिष्ट सो तेडित नूर वपानि ॥२२

सुनो होय स्तुति योग्य ता के नामः अनादर वारे कौ नामः

अवज्ञात अवमानित अवगणित पुनि सोइ ।
परिभूत अवमत बहुर अनादर जुत होइ ॥२३॥

पीस्था का नामः

प्रेष्ट क्षोदिष्ट बहुरि जोपिष्टः तिहि नामः

बड़े के नामः

कहै वरिष्ट बहिष्ट सो जो वरिष्ट गुण ग्राम । २४

भक्षित नामः

भक्षित चवित लिप्त सो ग्रस्त ग्लस्त जो भुक्त ।
अशित आत्त प्सात सो जग्घ षादित युक्त । २५
प्रभ्यव द्रुत प्रत्यवसित जों षायो तिहि सोइ ।
नूर नाममाला विषै जानि लेहु सब कोइ ॥२६

छिप्रादि नामः

क्षिप्र क्षुद्र पृथ पीवर भीप्सित सो सुनि लेहु ।
नूर अर्थ पावन विषै सिघ्र अरथ कहि देहु ॥२७॥

साधिष्ठादि नामः

वाढ व्यापत वामन जु वृंदारक साधिष्ट ।
बहु गुरु पुनि वंदिष्ट सुनि है गरिष्ट द्राधिष्ट ॥२८॥
श्रेष्ट हू सिष्ट हि कहत है ए ग्यारह नामः
भाषत अतिशय अर्थ कौ समझि नूर मति धाम ॥२९॥

जो संपूर्णताकी पहुंचे ताकी नाम:

जो पहुंच्यो सपूर्ण करि सो पाराम्य होइ ।
सग वचन साकल्य सो सुपरायन है सोइ ॥३०॥

सून्य नाम:

है अदृष्टया स्वैरिता स्वैक्षाचारी जान ।
भास्या बहुरि विसक्षण शून्या सून्य प्रवान ॥३१॥
नाम जू उत्तम कर्म को कर्म वृत्त अवदात ।
करे जू उत्तम कर्म को, नूर सु उत्तम गात ॥३२॥

टोना का नाम:

संवनन, टोना सोई वशक्या सा होइ ।
मूस कर्म कामन बहुरि नूर कहत सब कोइ ॥३३॥

कामना निमित्त दान दे ताकी नाम:

काम्य दान सो जानियो कहै प्रचारन चाहि

धुननाका नाम:

धुननो सोई धिधुनन विधुधन सो चाहि ।

वर्यो नाम:

बरवृत बरिवस्तु जो धुधन कहै पण चाहि ॥३४॥

तर्पण नाम:

तर्पण प्रानन भय न सो [सीवन नाम] सेचन सीवन स्मृति ।

मांगिबे को नाम:

मिक्षा जख्या अर्चना उहै अर्चना हूति ॥३५॥

रक्षा करिबे की नाम:

परिभाष्य पज्जाप्ति है ठाके है है नाम ।
मित्त मिदर स्फुटन पुनि [बेदना नाम] संवेव जुत धाम ॥३६॥

कोसिबे की नाम:

आक्रोशन अमिच्छन सो [गहिबे की नाम] ग्रहै सु कहि ग्रह ग्राह ॥

मूर्च्छा नाम:

अभिभ्याह्य सो मूर्च्छना नूर सुबुद्धि प्रवाह ॥३७॥

भाजन नाम:

अप्रछन सभाजन आरंभन है सोइ ।
कहै होम की बस्तु सो ह्य हूत, जो होइ ॥३८॥

प्रात नाम:

ज्योप ऊप है जानियो प्रात समै को नाम ।

गुरु परंपरा नाम:

अप्रदाय धाम्नाय सो गुरु परंपरा धाम ॥३९॥

न्याय नाम: सिद्धि नाम:

न्याय, नयः, ख्याति, प्रथा (पीठि नाम) पृष्टि पृष्ट सो पीठ
यथार्थ ज्ञान नाम: प्रमिति प्रभा सुयथार्थ है नूर कहत मति ईठ ॥४०

प्रसूत नाम षेदनाम

प्रसव प्रसूति सुजानियो, क्लम थुक्लम सुपेद
श्लेष संधि सी कहत है जान नूर ए भेद ॥४२

चेष्टा नाम:

चेष्टा इंगि, सु इंगित नूर कहत आकार ।
बंधन को प्रथत सुनी नाम प्रकास उचार ॥४२

उद्वेग के नाम:

उड्रम कहि उद्वेग सो मुष्ट बंध संग्राह ।
है विरोध सो निग्रह (डिभ नाम) डमर सुविप्लव आह ॥४३॥

जासूस नाम:

उपत प्रास्पष्ट सीहे स्पर्श पुनि चारु ।
कहिवे के द्वे नाम है निगद निगाद विचार ॥४४

अनुग्रह नाम:

अभ्यपत्ति सो अनुग्रह (पाका का नाम) है परिनाम विकार ।

तिरस्कार के नाम:

द्वै वि प्रकार सुनिकार ॥४५॥

छीजिवे को नाम:

छीजन के अभिधान ये अपवय अरु अपकार ।

लेणका नाम:

लेवे कू यी कहत है अभिग्रहण अभिहार ॥४६
समाहार सु समुच्चय संचय कीयो जु होइ ॥
अनुकार अनुहार सो जो उनहारै होइ* ॥४७

लीवै कौ नाम:

अपादान जो लीजिए वहुरी प्रत्याहार ।

काहू बस्तु निमित्त नियम करै ताकी नाम:

अभिग्रह अभियोग जो करै नियम वृत धार ॥४८

बिहार नाम

कहै बिहार परिक्रम (वाह्य संका नाम) अभ्यवकर्षण होइ ।
सो निहार तुम जानियो वाह्य संका होइ ॥४९

प्रवास नाम:

घर तँ बाहर गमन कै नाम प्रवास उचार ।

प्रवाह नाम:

उहै प्रवाह प्रवृत्ति सो नूर सु जगत विचार ॥५०

*मूल में इसके स्थान पर 'सोई' लिखा हुआ है ।

संजम सो संजाम यम नूर कहत है नाम ।
ब्यायाम जो जाम है विजम सोई विजाम ॥११

जीव बध कौ नाम:

जीवबध हिंसा क्रमं बहुरि कही भनिवार ।

बिघ्न नाम:

भंतराय प्रत्यूह पुनि बिघ्न नाम उच्चार ॥१२

नजीक घर होइ ताको नाम:

प्रतिकाम्य उपन्न जा घर होइ नजीक ।

उपभोग नाम:

उपभोग सु निबेध सो, भोग नाम है ठीक ॥१३

सर्वं कार्यं कौ नाम:

परिक्रया (या) परिसर्प सो सकल कार्य कौ नाम ।

संक्षेप नाम:

संक्षेप, समसन सुनो जो संक्षेप प्रनाम ॥१४

हीया की बात कौ नाम:

अभिप्राय आशय बिधुर प्रबिम्भोप कहि ताहि ।
जो हिरदै की बात है नूर कहत है ताहि ॥१५
परीसार परिसर्प सो जो पेटे पर ठौर ।

स्थिति नाम:

जानहु आस्था आसना, मापत पिति चिर मोर ॥१६
नाम शब्द विस्तार कौ बिस्तर मापत नूर ।
मर्दम कौ संबहन कह जे पूरम मति पूर ॥१७
कहै विनाश अदर्शन हे विनास अभिधान ।

पहिषानि नाम:

पहिषानहि परचय कहै सोई संस्तव जान ॥१८
नाम पसरिबेके सुनो प्रसर बिचर्जन दोइ ।

बहुत बर्क ताके नाम:

सुनि प्रयाम नीवाक पुनि बहुत बर्क है सोइ ॥१९

निकट नाम:

संनिद्ध संनिकर्षण निकट नाम ए दोइ ।

धवसर नाम:

प्रसर प्रलय प्रस्ताप सो धवसर जानहु सोइ ॥२०

उद्यम नाम:

प्रक्रम बहुरि उपक्रम उद्यम जानहु ताहि ।

और कने ले ताकी नाम:

उद्घात लै और पह अम्यादान सु आहि ॥६१

आरंभ नाम : उराहनौ नाम:

आरंभ संभ्रम त्वरा पुनि उराहनो आहि ।

उपालंभ अनुभव सोई जो उराहनो चाहि ॥६२

गढ़े सै संचरै ताकौ नाम:

संकम संचर नाम द्वै करै दुर्ग संचार ।

प्रयोगार्थ नाम:

प्रयोगार्थ प्रत्युत्कर्म प्रयोगार्थ उचार ॥६३

वियोग नाम:

विप्रलंभ सु वियोग कहि विछुरि जात जो कोइ ।

निकासिवे कौ नाम:

निक्रम सोई निकासिवी धी शक्ति: पुनि होइ ॥६४

बहुत कारन कौ नाम:

अतिसर्जन सु विलंब है बहुत करत जो वार ।

विश्वास नाम:

प्रतिस्थाति विश्वाव पुनि जो विश्वास आगार ॥६५

अटक का नाम:

प्रतिष्टंभ प्रतिबंध सो जो नर अटिक्यो होइ ।

किसी कै अर्थ जागै ताकौ नाम:

प्रति जागर पुनि अवक्षा परहित जागै सोइ ॥६६

फिरि जुबाव दे ताकौ नाम:

समालंभ सु विलेव सुनि फिरि जुबाव जो देत ॥

पंडित पढ़ै ताकौ नाम:

पाठ निपाठनि पठ बहुरि जो पंडित पढ़ि लेत ॥६७

क्लेश नाम:

आदीन वा श्रम बहुरि द्वे क्लेश के नाम ।

मिलाप का नाम:

संगम कहै मिलाप सो नूर जुहै जुगु घाम ॥६८

मांगिवे कौ नाम:

मार्गण मृगण सुमांगिवी अन्वीक्षण मृग आहि ।

विचयन नूर वषाँतही निज बुधि बल अवगाहि ॥६९

आलिगन नाम:

परिष्वंग परिरंभ सो उपगूहन संश्लेष ॥

एक एक सौ जो मिलै नूर मिलन सो देष ॥७०

देखिबे की नाम:

बरसन भालोकन उहे, हक्षण पुनि भाष्यान ।
निर्बर्णन सो नूर कहि जो देपत करि म्यान ॥७१

अनादर का नाम:

प्रत्यादेश निराकृति निरसन प्रत्यास्थान ।

शयन नाम:

उपशाय सु विधाय पुन सूते नरहि बपान ॥७२

बदला का नाम:

अन बिपर्ययः अतिक्रम उपात्पयः पर्जाय ।
बिपर्जा सु अतिपात पुनि भ्यत्या पसटत काय ॥७३

मिक्षा का नाम:

सिद्धा परिसासन सोई (प्रेषण नाम) वै जु पठायो कोइ ।
प्रेषण ठाकी कहत है नूर सु कवि अन सोइ ॥७४

अन्न पिछोरन की नाम:

करै अन्न की उछिपन उत्कारः सुनिकार ।

पूर्व पक्ष नाम:

पक्षापः उद्गार सो उद्गाह जु निगार ॥७५

बात करत चुपकी होइ रहै ताकी नाम:

बिर्तति बिरस्यय गरम पुनि आरस्य उपराम ।
बात कहत चुप ह्यै रहै नूर कहत तित नाम ॥७६

लार वा झुक नाम:

निष्पूतिः निष्ठीवनः निष्ठीव सो जान ।

अंत नाम:

तीनि नाम है अंत के साति बहुरि अदसान ॥७७

दोहा:

और नाम सुनि अमर में है आदेश विशेष ।
असौ संपूरन नूर कृत जो कछु लिप्यो सुसेव ॥७८
बहुत न कहिये जगत में गहिये मन विधाम ।
नूर कयन तितनो असौ जितनो आसो काम ॥७९
असौ जान्यो वृद्धि वस नूर अपान्यो सोइ ।
पंडित ह्यै सुसधारियो पंडित दोस न कोइ ॥८०
पुनि पुनि मुक्ता नाम सब रचो जु दाम सुदार ।
नूर अर्म बहु अर्म की करै सु कंठ उदार ॥८१
तीनि काइ है अमर के मा के तीन प्रकासु ।
कोस उहे मालाय है नूर प्रगट कर आसु ॥८२

उत्तम उत्तम नाम ले मिले सुमन उल्हास ।
नूर कहै जग मैं रहे ज्यी परमारथ वास ॥८३

इति श्री श्रीमत्सकल अभिधान रत्न भूषण भूषित अमर भाषा मियाँ
नूर कृत नाम प्रकाश नाममाला तृतीयः प्रकाशः संपूर्णः ॥ ३ ॥
दोहाः

अमर कोप के भाय सों कीने नाम प्रकाश ।
अनेकार्य के अर्थ लै कहों अनेक उलास ॥१
शुद्ध वरन बहु अर्थजुत मुकता सबद सुढार ॥
कंठ करहु गुनवंत नर नूर अपूरव हार ॥२

अथ हरि शब्दः

इंद्र विष्णु सूरज मरुत, सिंघ भेक हय जानि ।
कायर कपि जम चंद्रमा शुक किरिनि अहिमानि ॥३
सुवरन रंग हरि जानि यै मन सुमति लेहु अवधारि ॥४

अथ गो शब्दः ॥

वचन भूमि दिग दृष्टि सर किरनि स्वर्ग जल सोइ ।
गाइ वज्र सुप सत्य गो मातरि अग्नि सो होइ ॥५

शिव शब्दः

रुद्र शुभ्र, पशु काल पुनि शिव कल्याण वपानि ।
गीरी स्यारी शिवा भनि शिवा सुहरडै जानि ॥६

मधुशब्दः

सहत सुरा अरु पुहपरस चैत मास रितुराज ।
नूर कहत मधु दैत्य इक, ताहि वध्यो ब्रजराज ॥७

क्षुद्र शब्दः

वारवधू, मधु मक्षिका कंटकारिका जानि ।
क्षुद्रा नटी सु नूर कहि क्षुद्र तुछ पहिचानि ॥८

'बाहु' शब्द

बाहु प्रवाह वषानिये घन अरु जुगम प्रमान ।
वाह सो मान विशेष है नूर सुजानहु जान ॥९

हार शब्दः

ईट को संचय, रजत, पुनि मान बिसेष न घेत ।
मुवता माला नूर भनि हार शब्द कहि देत ॥१०

भाव शब्दः

आत्मा सत्ता शंभु मन भाव पदारथ जानि ।
भाव के पूजक लोक में हाव भाव पहिचानि ॥११

देखिये को नाम:

बरसन भासोरुन उहै, इक्षण पुनि भाष्यान ।
निर्वर्णन सो नूर कहि जो देपत करि ग्यान ॥७१

अनादर का नाम:

प्रत्यादेश निराकृति निरसन प्रत्याख्यान ।

शयन नाम:

उपशाय सु विद्याय पुन सूते नरहि क्षपान ॥७२

बदला का नाम:

अन विपर्ययः अतिक्रम उपाख्ययः पर्जाय ।
विपर्जा सु अतिपात पुनि अत्या पलटत काम ॥७३

सिखा का नाम:

सिखा परिसासन सोई (प्रेषण नाम) दै जू पठायो कोइ ।
प्रेषण ताको कहत है नूर सु कबि अन सोइ ॥७४

अन्न पिछोरन को नाम:

करै अन्न को उछिपन उत्कारः सुनिकार ।

पूर्व पक्ष नाम:

पक्षाभः उद्धार सो उद्गाह जू निगार ॥७५

बात करत चुपको होइ रहै ताकी नाम:

विरति विरत्यम गरम पुनि भारत्य उपराम ।
बात कहत चुप छै खै मूर कहत सिंह नाम ॥७६

लार वा धूक नाम:

निष्पृतिः निष्ठीवनः निष्ठीव सो धान ।

अंत नाम:

तीनि नाम है अंत के साति बहुरि प्रवसान ॥७७

दोहा:

धीर नाम सुनि अमर मैं है आदेश विधेय ।
मयो संपूरन नूर कृत जो कछु लिप्यो सुनेय ॥७८
बहुत न कहिये जगस मैं गहिये मन विधाम ।
नूर कयन ठितनो भसो जितनो जासो काम ॥७९
जैसे जान्यो बुद्धि बस नूर बर्षान्यो सोइ ।
पंडित छै सुसवारियो पंडित दोस न कोइ ॥८०
पुनि पुनि मुक्ता नाम सब रषो जू दाम सुठार ।
नूर धर्म बहु धर्म को करै सु कंठ उदार ॥८१
तीनि कांड है अमर के या के तीन प्रकाश ।
कोस उहै मासाय है मूर प्रगट कर जासु ॥८२

उत्तम उत्तम नाम लें मिले सुमन उल्हास ।
नूर कहे जग मैं रहे ज्यो परभारथ वास ॥८३

इति श्री श्रीमत्सकल अभिधान रत्न भूपन भूपित अमर भाषा मियाँ

नूर कृत नाम प्रकाश नाममाला तृतीयः प्रकाशः संपूर्णः ॥ ३ ॥

दोहा:

अमर कोष के भाषा सों कोने नाम प्रकाश ।
अनेकार्थ के अर्थ लें कहों अनेक उलास ॥१
शुद्ध धरन बहु अर्थजुत मुक्ता सखद नुडार ॥
कंठ करहु गुनवंत नर नूर अपूरव हार ॥२

अथ हरि शब्द:

इंद्र विष्णु नूरज महत, सिंघ भेक हय जानि ।
कायर कर्ण जम चंद्रमा शुक्र किरिनि अहिमानि ॥३
सुवरन रंग हरि जानि ये मन मुगति लेहु अघारि ॥४

अथ गो शब्दः ॥

वचन भूमि दिग दृष्टि सर किरनि स्वर्ग जल सोद ।
गाइ वच्य सुग सत्य गो मातरि अग्नि सो होइ ॥५

शिव शब्द:

रुद्र शुभ्र, पशु काल पुनि शिव कल्याण वपानि ।
गोरी स्वारी शिवा भनि शिवा मुहरउं जानि ॥६

मधुशब्द:

सहत सुरा अरु पुहपरस चैत मास रितुराज ।
नूर कहत मधु दैत्य इक, ताहि वच्यो अजरराज ॥७

क्षुद्र शब्द:

वारखधू, मधु मक्षिका कंटकारिका जानि ।
क्षुद्रा नटी सु नूर कहि क्षुद्र तुछ पहिचानि ॥८

'वाहु' शब्द

वाहु प्रवाह वपानिये घन अरु जुगम प्रमान ।
वाह सो मान विशेष है नूर सुजानहु जान ॥९

हार शब्द:

ईट को संचय, रजत, पुनि मान विसेप न पेत ।
मुक्ता माला नूर भनि हार शब्द कहि देत ॥१०

भाव शब्द:

आत्मा सत्ता शंभु मन भाव पदारथ जानि ।
भाव के पूजक लोक में हाव भाव पहिचानि ॥११

कृयशब्द (प्रात')

कृष स्नायी विप्रकृष वर्म कीट कहि सोइ ।
कृष सो कवल हस्ति पर कुंया सो कया होइ ॥१२

कुतपा शब्द:

दर्भ काल तिल छाग पुनि कवल सलिल प्रकास ।
पङ्ग पात्र कुहिता सनय कुतपा नाम प्रकास ॥३

भग शब्द:

भयु स्त्री भय वाक भू माता भर विग्भाग ।
थो महिमा यक्ष काठि पुनि नूर जससि सीमाय ॥१४
भय पुनि कहिमे ज्योनि सों प्रकट जयत मँ जानि
पंड्रह ठौर सर्ग भरष भग मह शब्द बपानि ॥१५

हस शब्द:

सपसीराजा जीव पुनि धर्म तुरगम जानि ।
सुखलपछु भौ बिषेय पुनि, नूर सुहंस बपानि ॥१६

रस शब्द:

पारव विष जल हयं पुनि रस सिंगार की भाति ।
नूर कहत पट रस प्रगट जिहूवा जानति भाति ॥१७

कीलाल शब्द:

छीर पुहप रस लोय मय रुधिर माब पूव होइ ॥
नूर कहत कीलाल भुनि साठ अर्थ मँ सोइ ॥१८

देव शब्द:

राजा वादर वेधता मर्ता भौ ध्यनहार ॥
मूरप बालक कुपिनर देव शब्द भवधार ॥१९

पुष्कर शब्द:

बाजन मुप ठर वारि पुनि काम कमल को जानि ।
कुंचर मुडि को अग्र धल स्वर्ग द्वीप मन भानि ॥२०
पुष्कर तीरष नाम सो पुष्कर सबद मुजानि ।
भाठनाम ए कोप मठ नूर सो कहे बपानि ॥२१

पल्लवशब्द:

तिसपीठी मल मास पुनि क्रोमस पापर सोइ ।
मूठक सेवार मनित्य बस पंडित पल्ल सु होइ ॥२२

ललामशब्द:

ध्वजा पूछ हय जानिये घर प्रकास को फूल ।
चूरी भौ मूनबंधनर भौ परबत को मूल ॥२३

विष अरु घाम सु नूर कहि इतने होंहि ललाम ।
अनेकार्य ध्वनिमंजरी छपनक कहे ए नाम २४।

वसु शब्द:

सूरज देव घरा अग्नि रतन द्रव्य पहिचानि ।
आठों वसु वसु जानिए, नूर सो कहत वपानि ॥२५

वर्ण शब्द:

गाइ वजावत साथ एक, तासों वर्ण वपानि ।
अछर वर्ण स्वेतादि पुनि चारि वर्ण पहिचान ॥२६

अर्जुन शब्द:

सुकल वरन अरजुन कहत अरजुन पंडव जानि ।
अरजुन है दिन जाति पुनि कुनिक कुभ द्रुम मानि ॥२७

वलि शब्द:

वलि त्रिवली कों जानिए अरु बूढ़े के गात ।
वलि पूजा उपहार है वलि दान वधिपात ॥२८

पट्ट शब्द:

पट्ट सिंघासन सों कहत हैं पट्ट कपाट वपानि ।
पट्ट सिंघासन सों कहत भूप अंक को जानि ॥२९
घाउ बाधिवे को वसन पट्ट कहावत सोइ ।
नूर कहत सुनि कोप मत छमियहु पंडित लोइ ॥३०

अंतर शब्द:

रघ वस्त्र व्यवधान पुनि अंतरात्मा सोइ ।
वहियोग अवकाश पुनि व्यसन सु अंतर होइ ॥३१

अरिष्ट शब्द:

कहत अरिष्ट सो ग्रेह सो पुनि अपभासुर नाम ।
कौआ जीव अरिष्ट है छेम अरिष्ट प्रमान ॥३२

मंडल शब्द:

भूमि भाग मंडल कहै सूरज मंडल भाषि ।
मंडल है उनचासदिन अरु समूह अभिलाषि ॥३३
मंडल गोल सुजानिए नूर कहत मतिमान ।
पंच अर्थ मंडल प्रगट जानो कोस प्रमान ॥३४

कंवल शब्द:

कंवल कंवल जानिए कंवल इंद्री होइ ।
गोचारन सों कहत है कंवल सों बल जोइ ॥३५

कुंतल शब्द:

कुंतल केस श्री देस इक और महाउत जानि ।
कुंतल बढई सोक है नूर कोस मति मानि ॥३६

मणि शब्दः

मणि कहियति है कूप सुप हीरादिक मणि होइ ।
लिंग को अधिक भाग मणि राजा मणि कहि सोइ ॥३७
सपन के सिर होति है ताहू को मणि जानि ।
मणि के अर्थ भए प्रगट नूर सो कहै बपानि ॥३८

तंत्र शब्दः

तंत्र कहत है शास्त्र सों अरु कुत तंत्र कहाय ।
सिद्ध मंत्र औपघ क्रिया सुप बल तंत्र बनाय ॥३९
पयन को शासन तंत्र है नूर कहत उर धारि ।
कीनो सुमति विचारि कै सीजो सुमति विचारि ॥४०

नेत्र शब्दः

नेत्र कहत है नयन सों । अरु पुनि बस्त्र बिसेप ।
परिवर्तक गुण नेत्र है कस्तूरिया मृग सेप ॥४१

धातु शब्दः

बात धारि वे प्रकृति है ता कह धातु कहत ।
धातु क्रिया बपानिए वेह सार सुमहंत ॥४२
धातु राग तासों कहै उपजत पर्वत माहि ।
गेरु धारिक जानिए नूर कहत है ताहि ॥४३

सुधा शब्दः

सुधा अमृत पबित सुधा सुधा सुसोजन एक ।
आमसनी र हरीतकी पुत्र बभू सृ धियेक ॥४४
देवराज की क्रिया से पायो धन जो होइ ।
सुधा कहत है ताहि सों नूर कोस मस सोइ ॥४५

कांड शब्दः

कांड वान सों कहत ह तुला दंड को जानि ।
कांड समूह सुकास बल तरुजरि कांड बपानि ॥४६

वेला शब्दः

वेला कहत कखार सो वेला काल विसेपि ।
नौकातर जत पुनि चठे । अगुलि रेपा सेपि ॥४७

काल शब्दः

उत्सव समय प्रकोष्ट पुनि । क्रियो मूर्तरत जोन ।
काल सबद ए धारि है नूर कहत सुनि वोन ॥४८

धून शब्दः

धून विप्र अरु अर्थ पुनि अरुज धून बपानि ।
वालक धून औ विकल नर धून बेरानो जानि ॥४९

अहि शब्द:

राहु भुजंगम सूर अहि श्री पैडोई जान ।
अहि नामा इक दैत्य है जानतु नूर सुजान ॥५०

व्याल शब्द:

व्याल जानिए सर्प कों रोभादिक है व्याल ।
कुटिककरी, सो, व्याल कहि और व्याल है वाल ॥५१
और प्रमादी नरन सों व्याल कहत गुन धाम ।
नूर कहे ए कोपमत पांच व्याल के नाम ॥५२

इंद्र नाम:

इन्द्र इन्द्र को जानिए श्रेष्ठ इन्द्र पुनि होइ ।
पंच इंद्री कौ इंद्री कहै नूर कहत बुध लोइ ॥५३

धेनु शब्द:

गाइ दुधारी धेनु कहि, आंगज गामिनि नारि ।
छोटी असि सों धेनु कहि धेनु सुवृत्ति विचारि ॥५३

वृष शब्द:

वृष जो कहिए धर्म सो बहुरि श्रेष्ठ वृष सोइ ।
वृष पुनि जानो वृषभ को मूपक काम सो होइ ॥५४
अंड और वल जानि ए सात भांति वृष मानि ।
नूर कहे एकोप मत लीजो बुध जन जानि ॥५५

योग शब्द:

जुगुति विशेष सो योग भनि जोग संजोग बषानि ।
जोग आगामिक लाभ है जोग सूंयोनि सुजानि ॥५६

शलि शब्द:

शलि मूपक शलि गर्भ पुनि भृंग, गदा शलि होइ ।
सर्प विपैकों शलि कहै शलि कलि जुग पुनि सोइ ॥५७

सीता शब्द:

सीता लक्ष्मी उमा सीता सीता है अधिदेव ।
सीता तनया जनक की पुनि मंदाकिनी भेव ॥५८

नाभि शब्द:

बड़ी होइ परिवार में ताकों नाभि वषानि ।
पहिआ वीच की कुंडली नाभि सो नाभी जानि ॥५९
छत्री आदि सो नाभि भनि चारि भांति यह होइ ।
सुन्यो जो छपनक^१ कवि कह्यो नूर कहत अब सोइ ॥६०

गोत्र शब्द:

गोत्र कहत है गोत सो सोइ जानु पहार ।
गोत्रप्रवर सों जानिए, गोत्रा भूमि प्रकार ॥६१

१. इसका मूल रूप क्षपणक है । इस शब्द से किसी जैन कोप की ओर संकेत किया जान पड़ता है ।

घन शब्दः

घन लोहे को मोगरा और मेष घन होइ ।
सिध मित्य चिन्कन सहित कांस ताल घन सोइ ॥

शुक्र शब्दः

शुक्र ग्रामि को जानिए शुक्र सो चारक होइ ।
शुक्र सो तेजविशेष है मूर कहत सुनि सोइ ॥६३
जेठ मास कों शुक्र मनि देह बीज सोइ जानि ।
शुक्र नेश को रोग है रैत्य पुरोहित मानि ॥६४

राम शब्दः

वधरथ नंदन राम है परसराम पुनि राम ।
पशु विशेष हक राम है और राम बसराम ॥६५
राम सो सेत असेत है, रामा जानो धाम ।
अनेकार्य में देपि कं नूर कहै ए नाम ॥६६

द्रोण शब्द

द्रोण अक्षय इक विदित है द्रोण काक को नाम ।
कौरव को गुरु द्रोण है द्रोण सोल कछु जान ॥६७

जिन शब्दः

बीतराय जिन जानिए नारायन जिन होइ ।
जिन कंवर्यं बपानिए अरु सामान्य बस सोइ ॥६७

जयंती शब्द : चौपाई:

नगरी एक जयंती होइ । गवरईया के बच्चा सोइ ।
श्रीपति भेद जयंती जानि । इंद्र को पूत जयंत बपानि ॥६८

रोहित शब्दः

इंद्र धनुष सोहित बहुरि सोहित मूग की जाति ।
सोहित रोहू मस्त पुनि रंग भगोहों भाति ॥७०

धानी शब्दः

धानी कहत बसुंधरा धानी हरे होइ ।
धानी जानो भावत धाय धानी सोइ ॥७१

प्रवाल शब्दः

वीना दंड प्रवाल है नव पत्सव विप्र जानि ।
पुनि प्रवास विप्रुम कहै हस्तो मत्त बपानि ॥७२

कोण शब्दः

कोण बधिर को जानिए भैंसा कोण कहूँ ।
गनती कोटि सों कोण कहि पर को कोण सहूँ ॥७३

वीनादिक जे साज हैं तेऊ कोण उदोत ।
नूर कहै ए कोष मत सुनत श्रवण सुप होत ॥७४

ताल शब्द:

ताल मूल है गान कौ ताल वृद्ध जग जानि ।
ताल तलाव^१ पताल धुनि करतल ताल वषानि ॥७५

काष्ठा शब्द:

पृथ्वी निशा दिशा काष्ठा काष्ठा काल विसेषि ।
ए सब काष्ठा नूर कहि काष्ठा काठ कों लेषि ॥७६

पलाश शब्द:

ढाक पलास वषानिए पुनि राकस कों जानि ।
हरित वरण पालास है फासी कों पहिचानि । ७७

सत्र शब्द

धन गृह और पवित्रता सत्र आयुध को नाम ।
निद्रा जुत सो सत्र कहि सत्र तेज को धाम ॥७८
वन कहियत है सत्र सों दान सत्र पुनि होइ ।
सत्र शब्द: ए नूर भनि समुझि लेहु सब कोइ ॥७९

कल्प शब्द:

कला कुसल सो कल्प कहि काया कल्प वषानि ।
मदिरा कल्प कहावइ केश कल्प पहिचानि ॥८०
बहुत वरष वीतै जबै तासों कल्प कहाय ।
अनेकार्य मत जानियो कहै सो नूर सुनाय ॥८१

विष्टर शब्द:

विष्टर त्रिण पूला कह्यो विष्टर आसन जानि
विष्टर कोऊ बृद्ध है विष्टर यज्ञ वषानि ॥८२

समिति शब्द:

सभा समिति संगर समिति समय समिति पुनि होइ ।
नारिन में आगे चलै समिति कहावै सोइ ॥८३

शित शब्द:

वृद्ध होइ शित रजत शित रजत सेत रंग जानि ।
शित कहिए पुनि बान सो दैत्य गुरु शित मानि ॥८४

चित्रक शब्द:

चित्रक सर्प की जाति इक चित्रक तिलक कहंत ।
चीता चित्रक जानिये औपधी नाम लहंत ॥८५
चित्रक मूरप राज को कहत सयाने लोइ ।
नूर कहै ए प्रगट करि और न चित्रक होइ ॥८६

१. मूल में 'व' कटा हुआ है ।

बल शब्दः

कुर्वति सुना भीषणी सत्पररत बल जानि ।
बल कहिए बलमद्र सों बल सो वैश्य बपानि ॥८७॥
बला जानि बसुंधरा, बला सु लक्ष्मी होइ ।
कोप शब्द मत समुक्ति के नूर कह्यो यह सोइ ॥८८॥

परिग्रह शब्दः

द्विभ्र भंगी कृत होइ जो, ताहि परिग्रह जानि ।
सेना पीठि से जानिए, भ्रव बंधन को मानि ॥८९॥
गिरत पकरिए भ्रम विधा उहो परिग्रह होइ ।
इस्त्री भावि व्यवहार ग्रह नूर परिग्रह सोइ ॥९०॥

कदंब शब्दः

कहत कदंब कुमातु सों और निगूँन नर होइ ।
सरि सौ जानु कदंब को कदम वृक्ष पुनि सोइ ॥९१॥

प्रियक शब्दः

देह बीज सो प्रियक कहि, हाथी प्रियक बपानि ।
प्रीतम सों पुनि प्रियक कहि प्रियक सो जोता जानि ॥९२॥
जाके इच्छा मुकुति की सोऊ प्रियक कहाय ।
प्रियक शब्द के नाम ए, कहै सु नूर बनाय ॥९३॥

भ्रस शब्दः

भ्रस बहेरा सों कहै और भ्रस है यापि ।
भ्रस कहत ब्रह्मस सों पासा भ्रस सुमापि ।
भ्रस सो रायस पुत्र है भ्रस सो गहिरो जानि ।
भ्रस शब्द के नेव ए कहै सो नूर बपानि ॥९४॥

चक्र शब्दः

चक्रवाक सों चक्र कहि पहिया चक्र बपानि,
वेस चक्र सों जानिए चाक चक्र को मानि ॥९५॥
चक्र हृष्यार सो कृष्ण को जानत है सब कोइ ।
जो कछु बस्तु फिरै जगत चक्र नूर पुनि सोइ ॥९६॥

खर शब्दः

सत्यवत खर जानिए व्यवहार पट्ट सोइ ।
खर कहियत है पुष्प सो पर रासम पुनि होइ ॥९७॥

कृपिशब्दः

कृपि कोउ इक गोत है, कृपि पेटी कों जानि ।
सोइ कान भावक सोइ, सोइ भग्नि मणि जानि ॥९८॥

भूत शब्दः

भूत कहत संतान सों पंच भूत पुनि होइ ।
समय वितीत सो भूत कहि प्रेत भूत है सोइ ॥१०१॥
भूत सो प्राणी मात्र है औ जमराज वपान
भूत शब्द कीने प्रगट नूर मुजानहु जान ॥१०२॥

अष्टापद शब्दः

अष्टापद टीडी कही अष्टापद है सोन
अष्टापद फल भेद है, कोट भेद पुनि सोन ॥१०३॥

बालक शब्दः

बालक हैं आकास चर बालक बानक ज्ञानि ।
बालक बाव मुगंघ पुनि जटा नूट पहिचानि ॥१०४॥

जाति शब्दः

जाति जाति सब जगत् में और चबेयी जानि ।
गोत्रादि जन्म सोइ जाति है जटा जाति पहिचानि ॥१०५॥

फणा शब्दः

१ फणा बँध की सोंग है अहि उग फणा बरानि
२ फणा जटा सों कहत है वृष्णा फणा सुबानि ।
फणा चबानी कुंडली जानहि मंडित सोइ
नूर कहे न प्रगट करि पड़त सुख सुद होइ ॥१०६॥

तिलक शब्दः

बृहन्नेद को तिलक कहे साधे तिलक से होइ
सब से होइ प्रवान को तिलक बहाड़े सोइ ॥१०७॥

चित्रक शब्दः

जिसे चित्रक को मदी चित्रक कहिनु सोइ
चित्रक चित्र चित्रिक हे सोइ कहे हे सोइ ॥१०८॥

गन्धर्व शब्दः

गन्धर्व बहैसा वेद के और सुगंध कहे
राम और सुगंध सुगंध सुगंध सुगंध बरानि ॥१०९॥

शृंग शब्दः

सब से होइ प्रवान को शृंग सोइ सोइ होइ
सब से होइ प्रवान को शृंग सोइ सोइ होइ ॥११०॥

शारंग शब्दः

शृंग सोइ प्रवान को शृंग सोइ सोइ होइ
सब से होइ प्रवान को शृंग सोइ सोइ होइ ॥१११॥

दूपम वायु सोरह सबद ए सारंग कहंत
नूर कहे ए कोय मत सो बुधिवंत लहत ॥११३

कांतार शब्द :

कांतार बन जानिए बहुरि इंद्र उर धारि ।
कांतार कतारा जानिए सोई काताल विचारि ॥११४

करण शब्द :

कारण करण बपानिए इंद्री करण सुजानि ।
जाति भेद पुनि करन है, क्षेत्र करन मन मानि ॥११५
वच भादिक जे कर्न है तिथि पत्रा में सोइ ।
करन कहसु हैं साहि सों तीसब रस में होइ ॥११६
करन कषा भारष सुन्यो सोऊ करनहि जानि ।
भौर करन ए काल है नूर सो कहे बपानि ॥११७

स्यामा शब्द :

स्यामा कहिए राति सों स्यामा होइ निसोत ।
स्यामा सांधा जानिए बहुरि विषाय होव ॥११८
स्यामा नारि कहावइ नव जोवना जो होइ ।
स्यामा स्याम घन जानिए नूर कहे ए सोइ ॥११९

सुभा शब्द :

सुभा, सुधा, सुभा, सोभा सुभा, सु हरब होइ ।
सुभा जो कहिए भाइ सों सुभ कल्याण पुनि होइ ॥१२०

गुरु शब्द :

गुरुः पिता गुरु श्रेष्ठ पुनि बभूत गुरु गुध होइ ।
गुरु सुर गुरु सों कहते है सिष्य करे गुरु सोइ ॥१२१

माधव शब्द :

माधव भबर बपानिए माधव है पैसाप ।
माधव मदिरा जानिए माधव माधव भाप ॥१२२

वाल्हीक शब्द :

हिंगू होइ वाल्हीक पुनि घास घोरे की जाति ।
देस कोऊ वाल्हीक है पुण्य जानु इहि भाति ॥१२३

पुंढरीक शब्द :

भ्याघ्र, सरोरुह स्वेत रंग पुंढरीक ए जानि ।
बहुरि कमंडल सों कहे नूर कोय मत मानि ॥१२४

राजिव शब्द :

सतिम सरोरुह मोन सति, मुक्ता राजिव होइ ।

पंच ठौर राजिव प्रगट, नूर कहे ए सोइ ॥१२५

इति सोयां नूर विरचिते नाम प्रकासे ग्रनेकार्यं प्रकारे दसोकापिकारो धर्मः

तल्प शब्द :

सेज तल्प दारा तल्प और अटारी जानि ।
तल्प शब्द ए जानिए नूर सु कहै बषानि ॥१२५

वप्र शब्द :

पिता वप्र तट वप्र पुनि । आगन वप्र सुजान ।
वप्र शब्द के अर्थ भनि नूर सो कोष प्रमान ॥१२७

मोचा शब्द :

मोचा सेवर वृछ है कदली मोचा होइ ।
मोचा शब्द वषानि कै नूर कहे हैं सोइ ॥१२८

कक्षा शब्द :

घर के आंगन सों कहै, कक्षा शब्द वषानि ।
गज बंधन की रज्जु सों कक्षा किकिनि जानि ॥१२९
कक्षा कहत कछार सो, काछ सो कछा होइ ।
कछा देस कछा कहें कहे नूर सुनि सोइ ॥१३०

पुलाक शब्द :

है पुलाक संछेप सो भात सीथ सो होइ ।
तुछ धान्य पुलाक है नूर कोष मत सोइ ॥१३१

पक्ष शब्द :

एक मास को पक्ष द्वै । अरु पछी के पक्ष ।
पक्ष मांस अरु गरुड पुनि और पठघा पक्ष ॥१३२

शुचि शब्द :

शुचि असाढ़ को मास है निर्मल और पवित्र ।
शुचि कहिए पुनि अग्नि सो नूर कहत सुनि मित्र ॥१३३

घनाघन शब्द :

इंद्र घनाघन जानिए मेघ जे वर्षन हार ।
मत्त नाग पुनि नूर भनि जानहु एहि व्यवहार ॥१३४

अभिष्य शब्द :

कीर्ति कांति अरु नाम सों, शब्द अभिष्य वषानि ।
नूर कहे ए कोष मत सुमति लेहु जिय जानि ॥१३५

करीर शब्द :

कहत करीर करील सों, वांस के अंकुर जानि ।
पुनि अंकुर बट वृछ के नूर कहत वषानि ॥१३६

रंभा शब्द :

रंभा होइ देवंगना अरु केला को वृक्ष ।
गुप्त कोष में धरे हैं कीने नूर समझ ॥१३७

क्षेत्र शब्द :

क्षेत्र कहत है पेत सो भोर काठ सों जानि ।
क्षेत्र धृष्टि कर देह पुनि क्षेत्र प्रयाग बपानि ॥१३८

निर्व्यूह शब्द :

गयो होय दुख जाहि को सो निर्व्यूह कहत ।
द्वार भय की भूमि भय सो निर्व्यूह कहत ॥१३९

संवर शब्द :

मृग पर्वत संवर सुगो भय गढ़ संवर होइ ।
संवर जानो सुम सों नूर कहे सुनि सोइ ॥१४०

कल्प वाक शब्द :

न्याम बरावरि विधि विपे चित्त बढ पुनि सोइ ।
नूर कहे ए शब्द जे कल्प वाक सब होइ ॥१४१

भात्मा शब्द :

ब्रह्म भात्मा यत्न पुनि वेह वाक मन होइ ।
बहुरि भात्मा धृष्टि विपे नूर कहे सुनि सोइ ॥१४२

कुशल शब्द :

सकल कला सीस्यो जो नर पुन्य श्री छेम बपानि ।
इन सम्बन कों कुशल भनि नूर कहे मन मानि ॥१४३

प्रत्यय शब्द :

सपथ छिद्र विश्वास में प्रत्यय शब्द प्रमाण ।
सत्य हेतु व्याकर्न में, प्रत्यय जानहु जान ॥१४४

अप्रत्यय शब्द :

दोषा धनुष भागम बहुरि, बढ शब्द ए चारि ।
अप्रत्यय कहिए ए सकल नूर सो सेहु विचारि ॥१४५

धाम शब्द :

धाम प्रसाप बपानिये धाम तेज को नाम ।
नूर कहे ए कोप मठ पर सों कहिए धाम ॥१४६

स्व शब्द

स्व आपनि सो जानिए स्व पुनि भात्मा होइ ।
स्व कहिए धन सों बहुरि नूर समाने सोइ ॥१४७

चूडा शब्द

चूडा बाधे केस हें करके चूडा जानि ।
धन माया उत्कट बहुरि चूडा कर्म बपानि ॥१४८

मात्र शब्द

परिछेद प्रमान में मात्र शब्द जो होइ ।

इडा शब्द:

भूमि वाक नाड़ी वरय इडा कहावे सोइ ॥१४९॥

सत् शब्द

साधु विषे सत्ता विषे श्रेष्ठ विषे पुनि जानि ।
स्तुत करिवे के जोग्य जो सत् यह शब्द बपानि ॥१५०

ककुत शब्द

सवतें होइ प्रधान जो राज चिन्ह अनुमान ।
ककुत शब्द ए जानिए नूर सो कहे वषान ॥१५१

निष्क शब्द

निष्क कहत है मोहर सों निष्क रजत पुनि सोइ ।
निष्क कहावै मांस पुनि भूषन कहिए होइ ॥१५२

अंक शब्द

युद्ध वसै जाके हिए । अंक कहावै गोद ।
अंक चिन्ह पुनि अंक सो नूर लपेतें मोद ॥१५३

कबंध शब्द

विनु मस्तक की देह कों औ जलफेन कहंत ।
दून सों कहैं कबंध रव वुध जन भेद लहंत ॥१५४

वर शब्द:

वर कहियतु है मेरु सो वृक्ष भेद वर होइ ।
वर जानहु पुनि श्रेष्ठ सो अग्नि घनुष पुनि सोइ ॥१५५

वर्त्म शब्द

वर्त्म वरौनी सोक है मारग वर्त्म वषानि ।

वर्ष्म शब्द

वर्ष्म आयु प्रमाण है वर्ष्म देह कों जानि ॥१५६

दायाद शब्द

भाई सो दायाद भनि सोई पुत्र प्रमान

विग्रह शब्द

युद्ध भेद विग्रह कहै विग्रह देह सुजान ॥१५७

प्रकोष्ठ शब्द

कहुनी पहुंचा वीच अंग तासों कहें प्रकोष्ठ ।
नूर प्रकोष्ठ सो जानिए जासों कहैं वरौठ ॥१५८

वितान शब्द:

शून्य वितान कहावइ शमिआना सु वितान ।
नूर कह्यो सुनि कोष मत जानि लेहु नर जान ॥१५९

वधू शब्द

वधू कहावै नारि सब इस्त्री वधू विचारि ।
पुत्र वधू सो वधू है कहत नूर अवधारि ॥१६०

कशिपु शब्द:

कशिपु राक्षस होइ पुनि कशिपु पामरी जानि ।

आडंबर शब्द:

आडंबर हस्ती वचन औ मृदंग घुनि मानि ॥१६१

कपर्दक शब्द:

कौडी जानु कपर्दकों शिव को जटा कपर्द ॥

तूवर शब्द:

तूवर मुंडिलौ वैल औ विनु डाढ़ी को मर्द ॥१६२

क्षेत्र शब्द :

क्षेत्र कहत है पेत सो भौर काठ सों जानि ।
क्षेत्र वृद्धि कर देह पुनि क्षेत्र प्रयाग बपानि ॥१३८

निर्व्यूह शब्द .

गयो होय दुख जाहि को सो निर्ब्यूह सहंत ।
द्वार धर की भूमि धर सो निर्ब्यूह कहंत ॥१३९

सवर शब्द :

मृग पर्वत सवर सुनो धर गढ़ सवर होइ ।
सवर जानो मूम सों नूर कहे सुनि सोइ ॥१४०

कल्प वाक शब्द

न्याय बरावरि विधि विषे चिस बड पुनि सोइ ।
नूर कहे ए शब्द जे कल्प वाक सब होइ ॥१४१

भात्मा शब्द :

ब्रह्म भात्मा यत्न पुनि देह वाक मन होइ ।
बहुरि भात्मा घृति विषे नूर कहे सुनि सोइ ॥१४२

कुसल शब्द :

सकल कला सीस्यो जो नर पुन्य श्री छेम बपानि ।
इन सब्दन कों कुसल भनि नूर कहे मन मानि ॥१४३

प्रत्यय शब्द :

सपथ छिद्र विस्वास में प्रत्यय शब्द प्रमान ।
सत्य हेतु ब्याकर्न में, प्रत्यय जानहु जान ॥१४४

भ्रत्यय शब्द :

दोषा धनुष भागम बहुरि, बड शब्द ए चारि ।
भ्रत्यय कहिए ए सकल नूर सो सेहु विचारि ॥१४५

धाम शब्द :

धाम प्रताप बपानिये धाम तेज को नाम ।
नूर कहे ए कोप मत घर सों कहिए धाम ॥१४६

स्व शब्द

स्व आपनि सो जानिए स्व पुनि धारमा होइ ।
स्व कहिए पन सों बहुरि नूर सपाने सोइ ॥१४७

चूडा शब्द

चूडा बांधे केस हें करके चूडा जानि ।
धन माया उत्कट बहुरि चूडा कर्म बपानि ॥१४८

माय शब्द

परिछेद प्रमान में माय शब्द जो होइ ।

इडा शब्द:

भूमि वाक नाड़ी धरप इडा कहावे सोइ ॥१४९॥

सत् शब्द

साधु विपें सत्ता विपें श्रेष्ठ विपें पुनि जानि ।
स्तुत करिवे के जोग्य जो सत् यह शब्द वपानि ॥१५०

कक्रुत शब्द

सवतें होइ प्रधान जो राज चिन्ह अनुमान ।
कक्रुत शब्द ए जानिए नूर सो कहें वपान ॥१५१

निष्क शब्द

निष्क कहत हैं मोहर सां निष्क रजत पुनि सोइ ।
निष्क कहावै गांस पुनि भूपन कहिए होइ ॥१५२

ग्रंशब्द

युद्ध वसैं जाके हिए । ग्रंशब्द कहावै गोद ।
ग्रंशब्द चिन्ह पुनि ग्रंशब्द सो नूर लपेतें मोद ॥१५३

कवंध शब्द

विनु मस्तक की देह कों श्री जलफेन कहंत ।
दून सां कहैं कवंध ख बुध जन भेद लहंत ॥१५४

वर शब्द:

वर कहियतु है मेरु सो वृक्ष भेद वर होइ ।
वर जानहु पुनि श्रेष्ठ सो अग्नि धनुष पुनि सोइ ॥१५५

वर्त्म शब्द

वर्त्म वरोनी सोक है मारग वर्त्म वपानि ।

वर्ष्म शब्द

वर्ष्म आयु प्रमाण है वर्ष्म देह कों जानि ॥१५६

दायाद शब्द

भाई सो दायाद भनि सोई पुत्र प्रमान

विग्रह शब्द

युद्ध भेद विग्रह कहै विग्रह देह सुजान ॥१५७

प्रकोष्ठ शब्द

कहुनी पहुंचा वीच अंग तासों कहें प्रकोष्ठ ।
नूर प्रकोष्ठ सो जानिए जासों कहैं वरोठ ॥१५८

वितान शब्द:

शून्य वितान कहावइ शमिआना सु वितान ।
नूर कह्यो सुनि कोप मत जानि लेहु नर जान ॥१५९

वधू शब्द

वधू कहावै नारि सव इस्त्री वधू विचारि ।
पुत्र वधू सो वधू है कहत नूर अवधारि ॥१६०

कशिपु शब्द:

कशिपु राक्षस होइ पुनि कशिपु पामरी जानि ।

आडंबर शब्द:

आडंबर हस्ती वचन श्री मृदंग धुनि मानि ॥१६१

कपर्दक शब्द:

कौडी जानु कपर्दकों शिव को जटा कपर्द ॥

तूवर शब्द:

तूवर मुंडिली वैल श्री विनु डाढ़ी को मर्द ॥१६२

नृशंसा शब्दः होइ नृशंसा धाजनी भति सय पापी सोइ ।
 शारदा शब्दः सरस्काल सारद समुक्ति श्रीर विचक्षण कोइ ॥१९३
 उपबृह शब्दः उपबृह संकेत यत्त श्री परोस को धाम ।
 निदाघ शब्दः रिनु श्रीपम प्रस्वेद पुनि द्वे निदाघ के नाम ॥१९४
 कश्मलवा केतु शब्दः

कश्मल कहत पिशाच सों कश्मल तेज बपानि ।
 केतु एक ग्रह जानिए केतु ध्वजा पहिजानि ॥१९५

रीढा वा वर्द्धन शब्दः

रीढा गति को जानिए श्रीर भवज्ञा सोइ ।
 वर्द्धन बढिबे सों कहत वर्द्धन कारन होइ ॥१९६

नाग बाकी नाश शब्दः

नाग बृल को भेद ए सर्प सु कुंजर नाम ।
 कीनाश, यम क्रोध पुनि बोज जानहु बडनाग ॥१९७

कुलवा पूग शब्दः । । ।

कुल संघात श्री योत्र पुनि कुल करीर द्रुम होइ ।
 पूगीफल सों पूम भनि पूग कर्दवक सोइ ॥१९८

सुमन शब्दः

।।

सुमनस वेब बपानिए सुमनस फूल सुजान ।
 सुमनस सज्जन जानिए, नूर कोप परवान ॥१९९

कुसुम शब्दः कुसुम पुष्प जानहु प्रगट स्त्री रज कुसुम कहत ।

धव शब्दः धव पति धव द्रुम मर्त्य पुनि धव संघा स सहत ॥२००

श्र्यंबक शब्दः श्र्यंबक तमचूर जानिए । श्र्यंबक जानु महेश ।

पुन्य शब्दः सुकृत कर्म सों पुन्य है पुन्य पवित्र सुबेस ॥२०१

शिफा शब्द

शिफा बछकी जटा भनि धापा शिफा बपानि ।

शिफा-सो कंव विघ्नेप है शिफा विजय जिय जानि ॥२०२

कसेरुक शब्दः

कसेरुक कसेरु कहै । सोई पीठी की रीर ।

नूर कह्यो जो कष्ट सुनो धब्ब समुद्र गंभीर ॥२०३

पल शब्दः

पल कहियत है नीच सों पल पतिहान बपानि ।

पल कहिए पुनि धुगल सो पल कूटक को जानि ॥२०४

धासा शब्द

इछा, धासा, जानिए, धासा धिमा मुहोइ ।

धासा सापा जानिए यह धासा कहि सोइ ॥२०५

माल्य शब्दः

माल्य माला जानिए सो पुनि मस्तक होइ ।
नूर कहै ए प्रगट करि माल्य माल कहि सोइ ॥१७६

गडा तथा आली शब्दः

राढा देस विशेष है राढा कहिए कांति ।
आली जानों सहचरी आली होइ सो पांति ॥१७७

पल शब्दः

पल जमास पल तौल है पल मूरप कों जानि ।
पल सो पलक गति जानिए सोई तराजू मानि ॥१७८

दल शब्दः

दल आधे को नाव है वृक्ष पत्र दल जानि ।
दल सेना को भेद है नूर सुहै विचारि ॥१७९

आजि शब्दः

आजि नाम संग्राम को अग्नि भूमि सम होइ ।

संगर शब्दः

संगर है संग्राम पुनि और प्रतिज्ञा सोइ ॥१८०

पुरूहूत शब्दः

पुरूहूत शब्द उलूक है सोई इंद्र सुजान ।

मृत्यु शब्दः

यम अजगरे वरछी मरण, मृत्यु शब्द पहिचानि ॥१८१

शंपा शब्दः

विजुली वज्र सु शंप घुनि शंपा शष्क प्रमान ।

मन्यु शब्दः

यज्ञ क्रोध अरु दीनता मन्यु शब्द अनुमान ॥१८२

अभ्रशब्दः

ऊपर अभ्र कहावइ अभ्र मेघ पुनि सोइ ।
अभ्रक अभ्र बपानिए अभ्र सु चूरन होइ ॥१८३

प्राध्व शब्दः

प्राध्व शब्द वंधन विषय । प्राध्व विनीतता होइ ।
नूर कहत पंडित विषे प्राध्व आख्यो सोइ ॥१८४

हरिण शब्दः

हरिण पांडुर रंग है । हरिण सो सारंग होइ ।

करट शब्दः

कातर सों कहिए करट करट प्रतिध्वानि होइ ॥१८५

कर्क रेदु शब्दः

कर्करेदु कहि ग्रीध्र सों पुनि क्रोधी नर सोइ ।

तुषार शब्दः

लघु पाषाण तुषार है सीत तुषार सो होइ ॥१८६

अमृत शब्दः

अमृत सलिल पुनि सुधामृत जो देवन मथि लीन ।

कुंत्या शब्दः

कुंत्या भूमि वषानिए कुंत्य वरछा चीन ॥१८७

दुरोदर शब्दः

पासा चतुर जो होइ नर और धूर्त कों जानि ।
ज्वारी सों कहिए बहुरि दुरोदर जिय आनि ॥१८८

ज्योति शब्दः

ज्योति बीप्ति भरु दृष्टि पुनि, नपत ज्योति पहवानि ।
जाकी ज्योति प्रकाश जग नूर सो कहत वपानि ॥१८९

मंद शब्दः

रोगी भी घटि भास्य जो मंद विलखित जानु ।
मंद सनीषर सों कहै मंद कुंद पहिचानु ॥१९०

प्रमाण शब्दः

शास्त्र प्रमाण वपानिए हेतु प्रमान सो होइ ।
स्तिथि को कहत प्रमान सो, भरु कोविद पुनि सोइ ॥१९१
जस सों विप कहिए प्रगट विप जो सार्प भुप होइ ।

वाज शब्दः

वाज धन्त्र भरु गरुड पुनि वाज भ्रमूत कहि सोइ ॥१९२

व्रज शब्दः

व्रज मारग वृज गोप पुनि वृज कहिए पुनि वृंद ।
मयूरा मंडल प्रगट वृज जहाँ बसे व्रजचंद ॥१९३

वीर्य शब्दः

वीरज, बल, सों कहत हैं वीरज देह को सार ।
वीर्य फलादिक वीज है नूर प्रगट संसार ॥१९४

मघा शब्दः

मघा नाम नक्षत्र इक कुंद कली पुनि सोइ ।

शय्या शब्दः

शय्या पुस्तक संचयन सोवत सय्या सोइ ॥१९५

तरस शब्दः

तरस मासु कों जानिए बलकों तरस कहंत ।

वास्नी शब्दः

पश्चिम दिग है वास्नी वास्नी सुरा सहंत ॥१९६

मंबुरा शब्दः

मंबुरा कहि घोर सार सो भरु मंदरा भवास ।

सूनूत शब्दः

सूनूत सीधित सों कहै साधु बोलै सु प्रकाश ॥१९७

कीकस शब्दः

कीकस बानर होइ पुनि कीकस मिदुक जानि ।

रोमंथ शब्दः

बहुरि भस्त्रि सों कहत हैं कीकस नूर वपानि ॥१९८

रजनी शब्दः

रोमंथ पशु मार्ग है कीबी कीस सो होइ ।

परिघ शब्दः

रजनी राति कहावइ रजनी हरषी सोइ ॥१९९

धरा शब्दः

परिघ ध्यार को भेद है परिघ जोग एक भाहि ।

परिघ जोह कोदंड है नूर कहत भय ताहि ॥२००

धरा जानि धसुं धरा धारा धरा वपानि ।

धरा कहिए धृति बहुरि धर पवंत सो जानि ॥२०१

कंद शब्द:

भूमि विषे फल कंद है कंद शर्करा आहि ।

कर शब्द

कर है किरिणि सु हस्त कर कर जगति को चाहि ॥२०२

दुन्दुभि शब्द:

दोइ सो दुंदुंभि जानिए, दुंदुंभि राकस होइ ।

वसुदेव दुंदुभि है प्रगट दुंदुभि वाजत सोइ ॥२०३॥

उद्यान शब्द:

वन उद्यान कहावइ गमन कहै उद्यान ।

वर्द्धनी शब्द:

वर्द्धनी चरपी प्रगट सोई बृहारी जान ॥२०४

रुधिर शब्द:

रुधिर सु कुंकुम सों कहत, लोहू रुधिर सो होइ ।

नन्दन शब्द

नंदन सु जन सु पुत्र पुनि, स्वर्ग वाटिका सोइ ।

मानस शब्द:

मानस कहिए चित्त सों मानसरोवर सोइ ।

घावन शब्द:

घावन सों धन जानिए घावन तुरत सु होइ ॥२०५

स्यन्दन शब्द

स्यंदन दुम वच्चा सोइ स्यंदन रथ पुनि होइ ।

तुरायण शब्द:

तुरायण कहैं असंग सों कृपा हीन पुनि सोइ ॥२०६

पारायण शब्द:

पारायण रिपु थान है औ तत्पर को जानि ।

विना अर्थ पढ़ियै कछू सो पारायण मानि ॥२०७

वंश शब्द

हस्त पीठि सों वंश भनि औ कुलवंश बषानि ।

नूर कहे ए प्रगट करि वांस वंश पहिचानि ॥२०८

शिषंड शब्द:

मोर शिषंडी जानिए जटा जूट पुनि सोइ ।

पिप्पल शब्द:

पिप्पल पीपल जानिए अरु जल पिप्पल होइ ॥२०९

पात्र शब्द:

दान पात्र द्विज आदि दै वासन पात्र कहंत ।

पात्र कहत पुनि देह सों पातुर प्रगट लहंत ॥२१०

पत्र शब्द

पंष पत्र ओरु पात पुनि कागद पत्र प्रमान ।

पत्र उपानह सों कहैं जानहु चतुर सुजान ॥२११

करेश शब्द:

कोश षजाना जानिए औ परिवार बषानि ।

उदर कोश कों कोश भनि शब्द कोश पहिचानि ॥२१२

द्विज राज शब्दः

हंस होइ द्विजराज पुनि सोइ अग्नि जिय जानि ।
होइ गरुड द्विजराज पुनि सोई अन्न बपानि ॥२१३॥

करवीर शब्दः

करवीर कहत हई चवर सों और अंगूठा जानि ।
करवीर शब्द कनइल अंगट नूर कहत जिय जानि ॥२१४

वारि शब्दः

कुंजर बाघे जेहि ठौर सोषन वारि बपानि ।
जन सों वारि सबे कहै मूर सो भानहु जानि ॥२१५

मूरि शब्दः

मूरि कहत है बहुत सों, मूरि कांचन होइ ।

सूव शब्दः

सूव रसोई जे करे सूव कुटुंबी सोइ ॥२१६

भयक शब्दः

बुर्जन भयक बपानि भयक जराकस जानि ।

सूर शब्दः

सूर सु सूरज है अंगट, सूर सारथी मानि ॥२१७

भंग शब्दः

भंग मागिवे सो कहै लहरी भंग सो होइ ।
धाम्य भेद सों भंग है, और टूटिवी सोइ ॥२१८॥

तीक्ष्ण शब्दः

पेने सो तीक्ष्ण कहै तीक्ष्ण तीव्र सु होइ ।

मारगण शब्दः

मारगण पाचक सों कहै और शिलीमुख सोइ ॥२१९

शिलीमुख शब्दः

भवर शिलीमुख जानिए, वान शिलीमुख मानि

मूकुंडी शब्दः

मूकुंडी कहत किसान सों मूकुंडी सुवर जानि ॥२२०

रुम शब्दः

रुम जो कहिए हेम सों रुमा रुम विचारि ।

उत्पल शब्दः

उत्पल कुसपी जानिए, उत्पल कवल मुषारि ॥२२१

वासुरा शब्दः

दीवक प्रो पत्तनी बोळ होहि वा सुर स्थान ।

कलघौत शब्दः

सोना रूपा दूहं को करि, कलघौत वषान ॥२२२

प्रधान शब्दः

प्रकृति प्रधान कहावइ उत्तम कहै प्रधान ।

अरविद शब्दः

चक्रवाक अरविद है सोई कमल बषान ॥२२३

शृगाल शब्दः

स्यार शृगाल बषानियै अरु कातर जो कहाय ।

दानव होइ शृगाल पुनि नूर सु कहै वनाय ॥२२४

मरुत शब्दः

मरुत देवता सों कहें, मरुत सु वायु प्रकार ।

कुंडल शब्दः

कुंडल मंडल जानिए कुंडल कर्ण शृंगार ॥२२५

प्रतिबंध शब्दः

प्रतिबंध कहें कुल रीति सों सेना की ततवीर ।

प्रतिबंध जानहु प्रगट नूर कहे मति घोर ॥२२६

वार्त्ति शब्दः

वार्त्ति शब्द वाती प्रगट, चितवनि वार्त्ति वषानि ।

कलिंग शब्दः

देस एक कलिंग है और घुआरा जानि ॥२२७

गर्मुद शब्दः

गर्मुद शैल सु जानिए गर्मुद सूरज होइ ।

गर्मुद है त्रिण जाति इक जानहु बुधि जन लोइ ॥२२८

वाल्मीक शब्दः

वाल्मीक रिषि जानिए बचन चतुर पुनि सोइ ।

सामज शब्दः

सामज कहिए समय सो, सामज कुंजर सोइ ॥२२९

बाजिका शब्दः

पक्षि भद है बाजिका नीली मापी सोइ ।

लक्ष्मण शब्दः

राम बंधु लक्ष्मण प्रगट लक्ष्मण सारस होइ ॥२३०

लक्ष्म शब्दः

लक्ष्म चिन्ह सों कहत, लक्ष्म कंद की जाति ।

पय शब्दः

छीर सलिल सों पय सवद, कहे नूर द्वै भाति ॥२३१

कज शब्दः

कज केस भर कज निधि कज भ्रमृत को जानि ।

कज कमल जग विवित हे कहै सो नूर बपानि ॥२३२

इति मियाँ नूर विरचिते नाम प्रकासे भनेकार्य प्रकरणे भईं स्तोत्राधिकार वर्म्यः

राजा शब्दः

राजा राजा जानिए राजा है द्विष राज ।

मित्र शब्दः

मित्र सो सूरज जानिए मित्र सो मित्र समाज ॥२३३

दर वा श्रीकठ शब्दः

दर कहिए पुनि छिद्र सों, दर पुनि भय कों जानि ।

स्थावर है श्रीकठ पुनि शिव श्रीकठ बपानि ॥२३४

गोविन्द वा तेज शब्दः

हरि गोविन्द बपानिये गाइ गोविन्द सों होइ ।

तेज तेज सों कहत हैं तेज बीठ पुनि सोइ ॥२३५

सिन्धु शब्द तथा शाला शब्दः

सिन्धु नदी का नाम है सिन्धु सों सागर होइ ।

शाला भर पटशाल, पुनि शाल सो शास्य सोइ ॥२३६

तूष्मा वा शष्य शब्दः

तूष्मा कहिए प्यास से तूष्मा सोम मुजानि ।

शष्य शब्द दोठ जानिए तूष्म भर केध बपानि ॥२३७

वाहव वा निस्त्रिष शब्दः

वाहव कहिए विप्र सो, वाहव भनि सा हाइ ।

निस्त्रिष होइ तरवार पुनि निस्त्रिष पापी सोइ ॥२३८

वेग वा इला शब्दः

उचे सो रू प्रवाह साँ वेग शब्द भवधारि ॥

मत्तगाइ भर भूमि कों इला मुलेहु विचारि ॥२३९

वन वा पीलू शब्दः

वन कानन पुनि सलिल पुनि नूर कहत मति मान ।

बूछ जाति कुंजर प्रगट, पीलू शष्य प्रमान ॥२४०

संज्ञा शब्दः

संज्ञा कहिए पिस सों संज्ञा नाम कहंत ।

भानु शब्दः

भानु पहार बपानिए दिनकर भानु सहत ॥२४१

करभ शब्दः

भुकर करभ ह उष्ट्र पुनि करभ दह को घम ।

हाव शब्दः

हाव फदन सों कहत है हाव सों विभ्रम संग ॥२४२

जीमूत वा चिकुर शब्दः

बादर यो पर्वत धिरो कहि जीमूत सो दोई ।

चिकुर केत सों कहत है ग्रह बंधन पुनि सोइ ॥२४३

वृत्त वा उदार शब्दः

वृत्त नाम इह देख्य है वृत्त सो वैरि विचारि ।

उदार बड़े सों कहत है ग्रीर दंत उरधारि ॥२४४

पंगु वा अंबर शब्दः

पंगु पंज सों कहत है पंगु अरुण पुनि होइ ।

अंबर कहत अकास सों, अंबर कपरा सोइ ॥२४५

ध्वांक्ष शब्दः

कौवा बगला प्रतिध्वनि ध्वांक्ष शब्द जिअ जानि ।

नियोध शब्दः

नियोध धनुष बट वृक्ष पुनि नूर सु कहे वपानि ॥२४६

नग शब्दः

नग पर्वत नग होइ द्रुम नूर कहे द्वय भांति ।

छिति शब्दः

छिति पृथिवी छिति छय कहत, शब्द कोस की कांति ॥२४७

कंठ शब्दः

कंठ गरेकों कहत है जल सों कंठ वपाने ।

प्रहि शब्दः

प्रहि जानिए कूपकों, प्रहि पुनि वान सु जानि ॥२४८

कोल शब्दः

कोल जो जाति विसेप है, कोल सो सूकर होइ ।

श्रम शब्दः

श्रम कहिए प्रस्वेदसों श्रम जो परिश्रम सोइ ॥२४९

कलि शब्दः

कलि जानो पुनि कलह सों कलि जानो पुनि काल ।

नूर कह्यो जो प्रगट करि जानों यह कलि काल ॥२५०

क्षय शब्दः

क्षय कहियतु है ग्रेहसों क्षय सो हास वपानि ।

नूर कह्यो यह कोप मत क्षय सो विपर्यय जानि ॥२५१

शशा वा कीटि शब्दः

शशा सुवर्ण सु जानिए, शशा चंद्र पुनि होइ ।

कीटि लोह को चूर्ण है, सकर कीटि कहि ॥

वहि शब्दः

वहि दर्म पुनि वहि जल ए दोळ वहि बपानि ।

हेतु शब्दः

हेतु निमित्त कहावह हेतु हृदय सों जानि ॥२५३

वष्य शब्दः

हीरा वष्य बपानिए वष्य ईश को नाम ।

वष्य ईश आयुष प्रगट, नूर कहे ए नाम ॥२५४॥

वीर शब्दः

वीर बाधव जानिए वीर सु विक्रम वीर ।

वीर जानि रस भेद है, मूर वीर रष्य वीर ॥२५५

कौशिक शब्द

कौशिक भाई सों कहें कौशिक उसू होइ ।

परसराम कौशिक, सुनौ जग प्रसिद्ध है सोइ ॥२५६

शिपिनि शब्दः

शिपिण मयूर कहावह शिपिनि भग्नि कों जानि ॥

वीर सात्विक जानिए वीर होइ मति मानि ॥२५७

घोर शब्दः

क्रोड शब्दः

क्रोड शंकभरि सेन कों क्रोड बराह जो होइ ।

द्रुम शब्दः

द्रुम कहियत है वृक्ष सों द्रुम पर्वत कहि सोइ ॥२५८

ध्रुव शब्दः

ध्रुव कहिए नक्षत्र सों ध्रुव निरचम पुनि सोइ

कहै रसाल सु ऊप रस भाव रसाल सु होइ ।

पूर शब्दः

पूर कहत संभाल सों पूरण पूर सुजानि ॥२५९

सूर शब्दः

राजा सूर बपानिए सूर सो सूर्य मानि ॥

सुकर शब्दः

कोमल सुकर कहावह सुकर सुकाश्य प्रमान ॥२६०

पतंग शब्दः

कहि पतंग टोडी प्रगट सूर्य पतंग सुजान ।

भर्क शब्दः

भर्क स्फटिक बपानिए, भर्क सूर्य मन मानि ॥

भर्क भाक कों कहत है नूर सुमति मति मानि ॥२६१

मधुर शब्दः

मधुर मिठाई जानिए मधुर प्रिय को मानि ।

शंभू शब्दः

शंभू ब्रह्मा जानिए, शंभू दिव उर मानि ॥२६२

हायन शब्दः

हायन कहिये वेज सों, हायन वर्ष सुजान ॥

पयोधर शब्दः

कहत पयोधर कुचन सों मेघ पयोधर जान ॥२६३

बन्धि शब्दः

बन्धि जानिए सूर्य सों, बन्धि भग्नि पुनि होइ ।

अध्यक्ष शब्दः

अध्यक्ष समर्थ बपानिए अधिकारी पुनि सोइ ॥२६४

प्लवग शब्दः

प्लवग कहत है भैंस सों प्लवग सों बाहर जानि ।

भीरु शब्दः

भूपक भीरु बराह सों, भीरु सो कहत बपानि ॥२६५

- दृष्टि शब्दः दृष्टि आंषि कों कहत है दृष्टि बुद्धि पहिचानि ।
- चीवर शब्दः चीवर वस्त्र विशेष है चीवर बरकल जानि ॥२६६॥
- कर्ण शब्दः
पारय अरि सों कर्ण कहि प्रोर कान सों कर्ण्य ।
- सुनु शब्दः
सुनु सुकहिए पुत्र सों सुनु बंधु सो बंध्य ॥२६७॥
- कुस्थान शब्दः
कुस्थान समर कों कहत है कुस्थान मत्न पुनि होइ ।
- अवट शब्दः
अवट कूप को जानिए गर्त अवट पुनि मोइ ॥२६८॥
- स्थूना वा विप्र शब्दः
स्थूना जानि महें तों स्थूना ब्रह्मा होइ ।
गुनाहगार' जहां गारिए स्थूना ठोर है मोइ ।
देवदत्त कों विप्र कहि विप्र आत्मन मोइ ॥२६९॥
- व्यलीक शब्दः
अप्रिय प्रोर असत्य हो जानु व्यलीक प्रमान ।
- वच शब्दः
वच कहिए जो वचन नों वच बानी अनुमान ॥२७०॥
अनेकार्थ सुनि वधा नति कस्यो सु नूर विचारि ।
चूक होइ नो भाक करि नीजो मुमति सुधारि ॥२७१॥
इति मियां नूर धिरचिते नाम प्रकाने अनेकार्थ प्रकरणे
चतुर्थे वरणाधिकारे चतुर्थे प्रकाने नमोः ॥
- अथ एकाक्षर शब्दाः कथ्यन्ते ॥
- शब्द समुद्र अगाध अति अर्थ रत्न भरि पूर
ताम्रें डूढत हाथ में प्रायो जो कछु नूर ॥२७॥
मोइ माला प्रति धर्म को, रची मुमति अनुभार ।
कंठ करें गुनवंतनर मोना बड़े असार ॥२७॥
प्रथमहि कृष्ण अकार है पुनि ब्रह्मा अकार
जानहु कान इकार कों दोरव श्री इंकार ॥२७॥
उ ईश्वर पहिचानिए उ रवक अनुमानि ।
रु मुरमानु वेपानिए रु दानव को जानि ॥२७॥
लू देवकन्या प्रगट प्रोर बराही होइ ।
विष्णु अर्थ ए कार है ऐ शिव कहि मोइ ॥२७॥
ओ वेधा नृ अंत ओ पर ब्रह्म अं जानि ।
अः शंकर ओ मानिए नूर सो इहे जानि ॥२७॥

क कारः

मस्तक चित्त जल काय मूय । ब्रह्मा माहृत काम ।
कंचन जिम विपि अग्नि भनि ए ककार के नाम ॥७-

कू शब्दः

कू कहियत है भूमि सों, कू निन्वा कों जानि ।
कूवितर्क प्रक्षेप पुनि कूपुनि प्रज्ज वपानि ॥८

ख कारः

स्वर्ग व्योम नूप सून्य रवि समीचीन सुष होइ ।
एते अर्ष सकार के नूर कहे सुनि सोइ ॥९

गकारः

गायन गीत गंधर्व मों होइ गकार प्रमान ।
गौ विनायक सों कहे आनहु आन सुजान ॥१०

गोशब्दः

वचन भूमि दिगदृष्टि घर किरिणि स्वर्ग जल सोइ ।
गाइ वज्र सुष सत्य पुनि मातरि अग्नि सु होइ ॥११

घ कार

चौपाईः
गरकी पांटी होइ घ कार । सोइ किंकिनी सेतु विचार ।
वचन श्री मुनि ताहि वपान । नूर कहत है कोप प्रमान ॥१२

ङ कारः

भैरव होइ ङकार रव विषय ङ कार वपानि ।
पुनि इछा सोई प्रगट कहत ङ कार प्रमानि ॥१३

च कारः

चन्द्र चकार चकार पुनि चौर चकार सु होइ ।
नूर कहे सुनि कोप मत, जानो बुध कवि सोइ ॥१४

छकारः

सूरज श्री निर्मल रावव दोऊ होंहि छकार ।
छेवक सोई जानिए, कहे सो सीनि प्रकार ॥१५

ज कार

जीवन वाले सों कहें, बुधजन दम्य जकार ।

जू शब्दः

वचन गगन जू दम्य पुनि जमन पिशाच जू कार ॥१६

झकारः

नष्ट होइ जो यस्तु कछु घोर पाव जो होइ ।
वायु गाइ वो घोर पुनि, कहि झकार पुनि सोइ ॥१७

